Machine Translated by Google

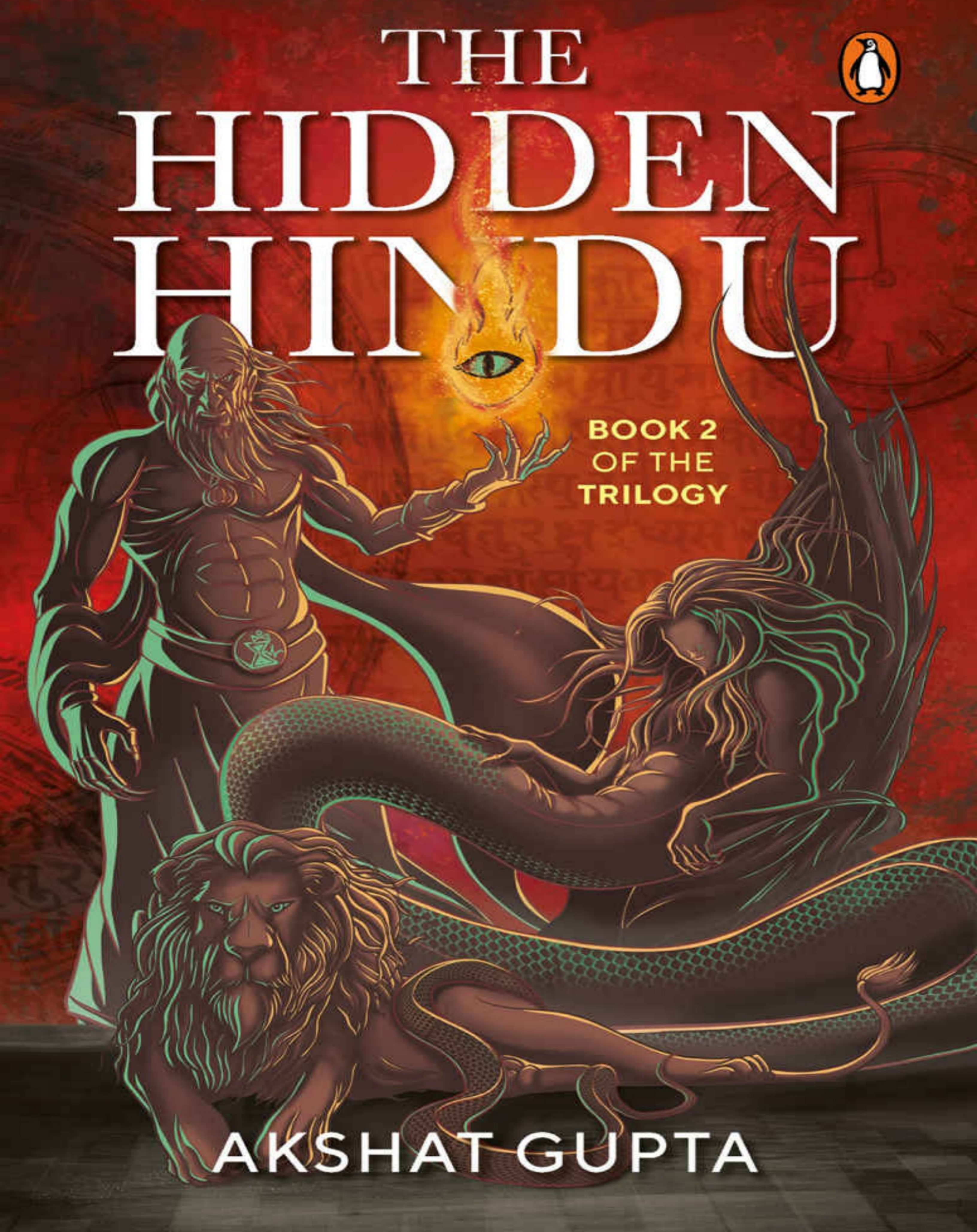

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अक्षत गुप्ता

छिपा हुआ हिंदू 2

त्रयी की पुस्तक 2

पेंगुइन किताबें

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

1. विलुप्त की भूमि

2. अतीत की किंवदंतियाँ

3. नानशाद

4. एक शब्द और दो झीलें

5. नागों का वंशज 6. नौ

7. अभिशाप और इलाज

8. खोया और पाया

9. चौथा अमर

10. छाया चित्र 11. काले जन्मचिह्न

वाला लड़का 12. एक अनौपचारिक दाह संस्कार

13. देवध्वज 14. बूढ़े

आदमी का पालतू

फुटनोट

3. नानशाद

5. नागों का वंशज 9. चौथा अमर

11. ब्लैक बर्थमार्क वाला लड़का 12. एक

अनौपचारिक दाह संस्कार

प्रतीक

स्वीकृतियाँ

पेंगुइन का पालन करें

कॉपीराइट

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अक्षत गुप्ता होटल व्यवसायियों के परिवार से हैं और अब एक स्थापित बॉलीवुड पटकथा लेखक, कवि और गीतकार हैं। वह एक द्विभाषी लेखक हैं और वर्षों से द हिडन हिंदू ट्राइलॉजी पर काम कर रहे हैं। उनका जन्म छत्तीसगढ़ में हुआ, वे मध्य प्रदेश में पले-बढ़े और अब मुंबई में रहते हैं। आप इंस्टाग्राम पर लेखकक्षतगुप्ता से जुड़ सकते हैं या उन्हें aakshat.गुप्तa0204@gmail.com पर ईमेल भेज सकते हैं ।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 1

विलुप्त की भूमि

पृथ्वी काफी समय से रॉस द्वीप का वृतांत सुना रहा था।
मृत संजीवनी की किताबों के बारे में पूछताछ के लिए ओम का अपहरण, ओम के अतीत को उजागर करना, अश्वत्थामा और परशुराम का फिर से सामने आना, नागेंद्र के साथ उनकी प्रतिद्वंद्विता, और परिमल और एलएसडी की वास्तविकता, नागेंद्र के लेफ्टिनेंट, जो की आड़ में छिपे हुए थे एक भारतीय इतिहास के प्रोफेसर और एक हैकर, पहले से ही श्रीमती बत्रा के सिर पर मंडरा रहे थे। जबकि वह यह सब आत्मसात करने के लिए संघर्ष कर रही थी, पृथ्वी के नए रहस्योद्घाटन ने उत्तर देने की तुलना में अधिक प्रश्न खड़े कर दिए। पृथ्वी के इस दावे से कि वह ओम का बेटा है, चौंककर श्रीमती बत्रा घबराकर उठ बैठीं और बोलीं, 'ओम शास्त्री आपके पिता हैं?'
'ठीक है, मुझे एक ब्रेक चाहिए,' उसने विचलित होकर कहा। 'क्या आप को कुछ चाहिए?

तुम्हें पता है क्या, मैं जल्दी से कुछ सूप गर्म कर दूँगा।' 'यह बहुत अच्छा होगा,
धन्यवाद,' पृथ्वी मुस्कुराया।
जब श्रीमती बत्रा रसोई में अपने काम में व्यस्त थीं, तब पृथ्वी रसोई में काम कर रहा था परिवेश. उसका घर काफ़ी सघन था। लिविंग रूम में साधारण फर्नीचर था, जिसकी कांच की खिड़कियों से एक छोटा बगीचा और बरामदा दिखाई देता था। वहाँ दो शयनकक्ष के दरवाज़े थे और एक अन्य दरवाज़ा नीचे उतरती हुई सीढ़ी की ओर जाता था। उनके पीछे चिकित्सा के क्षेत्र में श्री बत्रा की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाली एक दीवार थी। फ़्रेम की गई तस्वीरों से संकेत मिलता है कि दंपति की कोई संतान नहीं थी, कि वे केवल दो ही थे।

पृथ्वी की टिप्पणियाँ तब रुक गईं जब श्रीमती बत्रा अपने हाथों में भाप से भरे सूप के दो कटोरे और मन में एक सवाल लेकर दाखिल हुईं।
'तो, रॉस द्वीप पर यह सब उजागर होने के बाद आप कहाँ थे?' भाप उड़ाते हुए पृथ्वी ने एक पल के लिए सोचा और एक घूंट पी लिया। 'इसका
थोड़ा जटिल. मैं एक ही समय में समुद्र तल से 21,780 फीट ऊपर और 25,938 फीट नीचे था। आप सबसे पहले कहाँ जाना चाहेंगे-पहाड़ों के ऊपर या समुद्र के नीचे?'

पहेली पर मुँह बनाते हुए श्रीमती बत्रा ने कहा, 'चलो ऊपर से शुरू करते हैं।'

Machine Translated by Google

समुद्र तल से 21,780 फीट ऊपर, ओम एक अपरिचित स्थान पर बेहोश पड़ा था। उसके होश अभी भी दुरुस्त थे जब उसने दूर से चिल्लाने की आवाज सुनी।

'जल्दी करो! 'उसे तुरंत आने के लिए कहो।' ओम ने मानो
अतीत के किसी सपने से जागकर धीरे से अपनी आँखें खोलीं।
उसके चारों ओर कुछ बूढ़े आदमी थे जो उसे देखकर प्रसन्नता से मुस्कुरा रहे थे, उनमें से किसी को भी उसने नहीं पहचाना, फिर भी वह उनकी निगाहों में अजीब तरह से सुरक्षित महसूस कर रहा था। वह उत्सुकता से उठा और अपने नीचे जूट की पतली चटाई पर सीधा बैठ गया।
मिट्टी की दीवार वाली झोपड़ी में बहुत ठंड थी। उसके आस-पास के पुरुष भूरे ऊनी वस्त्रों से ढके हुए थे। सभी ने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे और ओम को एहसास हुआ कि उसने भी एक जैसे ही कपड़े पहने थे। उन्होंने आकलन किया, यह अवश्य ही एक मठ होगा।
जब उसने चारों ओर देखा, तो उसे कोने में लगे दर्पण में अपने ही प्रतिबिंब का सामना करना पड़ा। उसने अपने सिर पर सामान्य उलझी हुई जटाएँ या चेहरे पर असमान, झालरदार मूंछें और दाढ़ी नहीं देखीं। इसके बजाय, उसने छंटे हुए बाल और एक मुंडा चेहरा देखा जिसने उसकी विशेषताओं पर अधिक ध्यान आकर्षित किया: नंगे गाल और लिपलाइन, माथा, आँखें - उसे एक पूर्ण बदलाव दिया गया था।

ओम ने लकड़ी की ग्रिल वाली छोटी सी खिड़की से बाहर झाँका और देखा कि बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े धीरे-धीरे गिर रहे थे और चमकीले सफेद कंबल के साथ मिल रहे थे जिसने जहाँ तक वह देख सकता था ज़मीन को ढँक दिया था। अचानक, डेजा वु की एक लहर उसके ऊपर छा गई। एक झोपड़ी में जागना, अज्ञात चेहरों द्वारा स्वागत किया जाना, बाहर बर्फबारी - सब कुछ उसे उस समय की याद दिलाता है जब वह पहली बार धन्वंतरि और सुश्रुत से मिला था। . . ओम की पहली स्मृति. हालाँकि यह युगों पहले की बात है, एक बात अभी भी अपरिवर्तित है - मृत्युंजय बनने से पहले उन्हें अभी भी अपनी पहचान के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

वह कम्बल हटाकर खड़ा हो गया और दरवाजे की ओर चलते हुए अपने आस-पास के बूढ़ों से पूछताछ की। 'मैं कहाँ हूँ? वह कौन है जो मेरे लिये बुलाया गया है?' अजनबियों से पूछताछ करते समय, उसे आश्चर्य हुआ कि वे कौन थे, लेकिन इससे पहले कि वह अपने दिमाग में अनुमान लगा पाता, उसके विचारों को एक मजबूत, तेज आवाज ने बाधित कर दिया, एक ऐसी आवाज जो हाल ही में ओम से परिचित हुई थी।

'उन्होंने मुझे बुलाया,' सभी युगों के सबसे शक्तिशाली लड़ाकों में से एक की आवाज़ ने उत्तर दिया। शापित अमर अश्वत्थामा ने पीछा किया। रॉस द्वीप पर बेहोश होने से पहले ओम ने उनसे मुलाकात की थी, जहां अश्वत्थामा उन्नत युद्ध गियर में था। यहां, उसे ओम और बाकी सभी लोगों की तरह ही कपड़े पहनाए गए थे। यहाँ, कोई मतभेद नहीं थे; हर आत्मा

Machine Translated by Google

समानता थी, और शांति और आपसी सम्मान की एक अनकही भावना कायम थी। जब अश्वत्थामा उनके पास से गुजरा तो सभी वृद्धों ने सम्मान में अपना सिर झुका लिया। उन्होंने भी उसी तरह जवाब दिया. वह ओम के गोली के घाव को देखने के लिए धीरे-धीरे अंदर गया, लेकिन वह नहीं मिला। चोट बिना कोई स्पष्ट निशान छोड़े चमत्कारिक रूप से ठीक हो गई थी। ऐसा लगता है कि अश्वत्थामा को इसकी उम्मीद थी और उसने ओम के चेहरे की ओर देखा, लेकिन ओम के पास पहले से ही अन्य प्रश्न थे।

'यह जगह जानी-पहचानी लगती है... मैं कहां हूं?' अश्वत्थामा मुस्कुराया.

'हाँ, आप पहले भी यहाँ आ चुके हैं। अभिभावक के रूप में मृतसंजीवनी के अनुसार, आप पुनः जागृति के बाद लगभग नौ वर्षों तक हिमालय में भटकते रहे। यह आपके पहले घर, धन्वंतरि और सुश्रुत के निवास स्थान, जहां आप पुनर्जीवित हुए थे, के बहुत करीब है।' जब ओम ने अश्वत्थामा को ये शब्द कहते हुए सुना तो वह अंदर तक हिल गया। अंदर ही अंदर, वह इस उत्तर के लिए तरस रहा था, लेकिन उसने अभी भी इसके लिए खुद को तैयार नहीं किया था। आख़िरकार, वह स्थान जो हमेशा उससे छिपा रहता था, मिल गया, जिससे उसकी सदियों से चली आ रही खोज पर विराम लग गया। उसके दिमाग में हज़ारों सवाल घूम रहे थे और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे प्रतिक्रिया दे। ओम ने खुद को संभाला और आख़िरकार बोला।

'तो, हम हिमालय पर्वतमाला में हैं! मुझे यह जगह कभी नहीं मिल सकी. कौन पहाड़ यह है?'

अश्वत्थामा ने श्रद्धापूर्वक उत्तर दिया।

'परम राम्य गिरिवर कैलसु, सदा जहां

शिव उमा निवासु।।' ओम ने समझ लिया

कि अवधी कविता उस पवित्र पर्वत की ओर इशारा कर रही थी जिस पर वह खड़ा था। उसने हाथ जोड़े, विस्मय से ऊपर देखा और कहा, 'कैलाश पर्वत! भगवान शिव का निवास, ब्रह्मांड का केंद्र, क्षेत्र की नाभि, दुनिया का स्तंभ, स्वस्तिक पर्वत, तिब्बती में "बर्फ का अनमोल रत्न"; ये सभी नाम दुनिया के सबसे रहस्यमय और पवित्र पर्वतों में से एक-कैलाश पर्वत के हैं।'

'हाँ, कैलाश पर्वत,' अश्वत्थामा ने सिर हिलाया।

अधिक स्पष्टता प्राप्त करने की आशा करते हुए, ओम ने जारी रखा। 'मैं पहले भी कैलाश आ चुका हूं लेकिन मुझे कभी अपना घर नहीं मिला।' 'मुझे पता है,' अश्वत्थामा ने आत्मविश्वास से

कहा, जिससे ओम ने अगला सवाल पूछा, 'मैं क्यों नहीं कर सका?' 'अभी तक, कोई भी श्रद्धेय कैलाश पर्वत पर चढ़ने में सफल नहीं हुआ है और न ही कभी करेगा।

अनेक अभियान असफल रहे हैं

Machine Translated by Google

इसके शिखर तक पहुंचें; जो लोग इस पर चढ़ना चाहते हैं उनके लिए यह पहाड़ रहस्यमय तरीके से अपनी पटरियों की दिशा बदल देता है। ऐसा माना जाता है कि यह धुरी मुंडी है, जिसका शाब्दिक अर्थ दुनिया की "धुरी" है, जो पृथ्वी, स्वर्ग और नर्क के बीच, भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच संबंध प्रदान करती है-'

ओम ने चिल्लाकर कहा, 'हां, मुझे पता है कि भव्य कैलाश पर्वत में भगवान शिव और देवी पार्वती का निवास सहस्राब्दियों से तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यह दुनिया का दिव्य केंद्र है, जहां स्वर्ग पृथ्वी को काटता है, और इसे हिंदू, बौद्ध और जैनियों द्वारा पवित्र माना जाता है। जैसा कि कुछ संतों का मानना है, ये आकर्षक पर्वतमालाएं 500 आत्माओं का भी घर हैं, और केवल जब एक निवासी आत्मा मोक्ष की कामना करती है, तो कोई अन्य आत्मा यहां निवास कर सकती है।'

'हाँ, और उनमें से कुछ पवित्र आत्माएँ अभी आपके साथ खड़ी हैं,'
अश्वत्थामा ने उत्तर दिया, और पुष्टि की कि ओम ने जो सोचा था वह सिर्फ एक मिथक था।

ओम ने तपस्वियों के समूह पर एक और लंबी नज़र डाली और उनके चेहरे पर सजी शांत मुस्कान देखी।

'ये व्यापक रूप से मानी जाने वाली दंतकथाएँ वास्तव में सच हैं। ये जगह है
ज्ञानगंज, विलुप्त होने का शहर,' अश्वत्थामा ने पुष्टि की।

ओम के विचार प्रति मिनट एक मील उड़ रहे थे। ऐसा करना उसके लिए असंभव था
शांत रहो, और उसने अश्वत्थामा को फिर से रोका।

'ज्ञानगंज को अक्सर एक प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक भारतीय और तिब्बती शहर के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, जो रहस्यमय शाश्वत प्राणियों का साम्राज्य है, जो दुनिया से छिपा हुआ है।
हिमालय की गहरी दरारों में मौजूद होने के बावजूद, इसका मानव जाति पर कई गुप्त तरीकों से प्रभाव है। यह वह स्थान है जहां ऋषि न केवल मानव जाति बल्कि सभी चेतन प्राणियों के विकास का सूत्रपात करते हैं।' 'इसे अक्सर शांगरी-ला और सिद्धाश्रम जैसे विभिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। यह वह पवित्र क्षेत्र है जो सभी के भाग्य

का मसौदा तैयार करता है। अश्वत्थामा ने कहा, ''कोई भी व्यक्ति तब तक ज्ञानगंज तक नहीं
पहुंच सकता, जब तक उसका इससे कोई कर्म संबंधी संबंध न हो।''

ओम अभी पूरा नहीं हुआ था; वह अनुत्तरित प्रश्नों से भरा हुआ था। 'यह है
क्या यह सच है कि यहां कोई मृत्यु नहीं है और चेतना सदैव जीवित रहती है?' अश्वत्थामा ने बिल्कुल वही शब्द कहे

जिन्हें ओम अपने पूरे जीवन सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था। 'जैसा कि मैंने कहा, इस जगह के बारे में आपने जो भी मिथक सुने हैं वे सभी सच हैं। ओम, आप अंततः उस कबीले के बीच हैं जिसे आप खोज रहे थे।'

'लेकिन मैं इसे इतने सालों में क्यों नहीं ढूंढ सका?'

Machine Translated by Google

जब ओम ने ज्ञानगंज की मायावी प्रकृति को समझाना शुरू किया तो अश्वत्थामा ने ओम को कुटिया से बाहर जाने का मार्गदर्शन किया।

'हमारा शहर एक आध्यात्मिक छलावरण में अंतर्निहित है और वास्तविकता के एक पूरी तरह से अलग विमान, अभिव्यक्ति के एक आयाम में मौजूद है, यही कारण है कि यह आधुनिक मानचित्रण तकनीकों, विभिन्न प्रौद्योगिकियों और उपग्रहों से छिपा रहने में कामयाब रहा है।'

अश्वत्थामा को पकड़ते हुए, ओम ने रहस्यमय स्थान को अपने ऊपर हावी होने दिया क्योंकि उसे एक दिव्य और शक्तिशाली मौन का अनुभव हुआ। पहाड़ के दक्षिणी किनारे से गुजरते हुए, उसने चट्टान से नीचे देखा और अपने सामने मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य देखकर खुद को रोक नहीं सका। अश्वत्थामा ने पीछे मुड़कर देखा तो ओम स्तब्ध खड़ा था और उसने उसकी निगाहों का पीछा किया।

'वह मानसरोवर झील है। इसकी कल्पना सबसे पहले ब्रह्मा के मन में हुई थी, जिसके बाद यह पृथ्वी पर प्रकट हुई,' अश्वत्थामा ने समझाया जब ओम की आँखों ने अलौकिक सौंदर्य को ग्रहण कर लिया; जैसे ही सूरज की रोशनी पानी की सतह से टकराई, झील को एक पवित्र चमक देते हुए उसका चेहरा विस्मय से चमक उठा। पानी अधिकतर शांत था, लेकिन फिर भी छोटी-छोटी लहरें इसकी शांति को बढ़ा रही थीं। उन बर्फ से ढकी चोटियों के बीच में बैठा गहरा नीला रंग ब्रह्मा द्वारा पृथ्वी के लिए चित्रित सबसे अच्छे दृश्यों में से एक था।

'इसका । . . सुंदर,' ओम अपनी इंद्रियों पर हावी अवर्णनीय दृश्य के बावजूद कुछ जुटाने में कामयाब रहा।

'आओ, हमारे पास रहने के लिए एक और जगह है,' अश्वत्थामा ने ओम को उसकी चिंता से बाहर निकाला।

थोड़ी दूर चलने के बाद वे एक गुफा के द्वार पर आये। द ओपनिंग उन्हें एक सुरंग में ले जाया गया जहाँ चमकदार प्राकृतिक चमक की उपस्थिति के कारण वे आसानी से नेविगेट कर सकते थे। ओम इस प्रकाश को देखकर थोड़ा चकित हो गया क्योंकि सुरंग के शीर्ष को सील कर दिया गया था, और स्रोत का पता नहीं चल सका था।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, सुरंग का विस्तार होता गया। दूसरी तरफ भव्य उद्घाटन हुआ. जब वे बाहर निकले तो शाम हो चुकी थी। ओम ने पीछे मुड़कर देखा कि सुरंग के अंदरूनी हिस्से में अभी भी तेज रोशनी थी। उन्होंने अनुमान लगाया, शायद ये दो अलग-अलग समय क्षेत्र हैं।

ओम फिर से अश्वत्थामा की ओर मुड़ा और उसे अपने घुटनों पर प्रार्थना करते हुए पाया, उसका सिर झुका हुआ था और हाथ एक सपाट चट्टानी मंच के सामने जुड़े हुए थे।

मंच पूरी तरह से बाघ की खाल से ढका हुआ था जिस पर अभी भी एक क्रूर बिल्ली का सिर लगा हुआ था। इसके बगल में एक अलौकिक, शानदार ढंग से नक्काशीदार, विशाल त्रिशूल मंडरा रहा था, जो गुरुत्वाकर्षण के नियमों को चुनौती देता था। राजसी त्रिशूल की रक्षा 40 फीट लंबा सांप करता था। पूरा सेट-अप इससे अलग नहीं था

Machine Translated by Google

लोकप्रिय चित्रों में भगवान शिव का ध्यान करते हुए चित्रण। ओम ने हमेशा सोचा था कि ये विचार भगवान शिव के भक्तों की कल्पना के टुकड़े रहे होंगे, लेकिन वह गलत था। वे सभी प्रामाणिक थे. अब जब वह वहां खड़ा था, तो वह देख सकता था कि जिन चित्रों की उसने युगों में प्रशंसा की थी, वे वास्तव में शिव के घर के सटीक चित्रण थे; अब उन चित्रों और वास्तविकता के बीच एकमात्र अंतर स्वयं भगवान शिव की अनुपस्थिति थी।

ओम ने यह पुष्टि करने से पहले कि क्या यह स्थान वास्तव में वही है जो उसे विश्वास करने के लिए मजबूर किया गया था, अश्वत्थामा के अपनी पूजा पूरी करने तक प्रतीक्षा की। स्वयं को अपने से अधिक शक्तिशाली शक्तियों - सृजन, विनाश और परिवर्तन की शक्तियों, जिन्होंने संयुक्त रूप से ब्रह्मांड को कायम रखा है - की गोद में खुद को पाना कितना अवास्तविक लग रहा था। वह महसूस कर सकता था कि उदात्त सौंदर्य लहरों के रूप में उसके बीच से गुजर रहा है, उसके अस्तित्व के मूल ढाँचे को और उसके बाद पूरे ज्ञानगंज को चार्ज कर रहा है।

एक अजीब ध्वनि से ओम इस समाधि से बाहर आ गया। वह चारों ओर घुमा यह पता लगाने के लिए कि यह एक उड़ने में असमर्थ पक्षी से आया है जो अपने भूरे-भूरे पंखों को लहराता है, अपने पीले पैरों को थपथपाता है, और इसकी पूंछ के पंखों का गुच्छा, एक भूरे, नग्न सिर और एक काली चोंच है। पक्षी लगभग एक मीटर लंबा था, और उसकी चाल को देखकर, ओम ने अनुमान लगाया कि इसका वजन लगभग 15 किलोग्राम था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह वही पक्षी है जिसके धरती पर आखिरी बार देखे जाने की पुष्टि वर्ष 1662 में हुई थी।

'डोडो!' उसने जोर से फुसफुसा कर कहा.

पक्षी ने तुरंत देखा कि अपरिचित आदमी उसे घूर रहा है और झाड़ियों में आगे चला गया। ओम ने पाया कि अश्वत्थामा अभी भी अपनी आँखें बंद करके घुटनों पर बैठा है, इसलिए उसने उस पक्षी को करीब से देखने का फैसला किया, जो सदियों पहले गायब हो गया था और जिसे विलुप्त घोषित कर दिया गया था।

अपने लंबे जीवनकाल के दौरान कई जानवरों और पक्षियों का सामना करने के बाद, ओम अपने आसपास के अन्य प्राणियों को पहचानने और उन पर प्रतिक्रिया करने में माहिर हो गए थे। वह पक्षी की दिशा में दबे पाँव चला गया और उन झाड़ियों के पास खड़ा हो गया जिनमें वह गायब हो गया था। वहां उन्हें लगभग ढाई फीट लंबा एक और बड़ा और उड़ने में असमर्थ पक्षी मिला। वह अपनी काली पीठ और सफेद पेट के साथ इधर-उधर घूम रहा था, उसकी सतह पर खांचे वाली भारी काली चोंच के कारण वह लगभग दबा हुआ लग रहा था। आंखों के बीच खींची गई एक सफेद पट्टी ने पक्षी को लगभग अंधा बना दिया, लेकिन गहरी नजर से देखने पर छोटी-छोटी काली आंखों की चमकती मालाएं दिखाई दीं। पंख केवल लगभग 15 सेमी लंबे दिखाई दिए, जिससे पक्षी उड़ने में असमर्थ हो गया। यह पक्षी की एक और विलुप्त प्रजाति थी, जिसे आखिरी बार 1852 में देखा गया था, जिसे ग्रेट औक कहा जाता था। महान औक्स प्रतिभाशाली तैराक थे,

Machine Translated by Google

जिसने उन्हें पानी के भीतर बेदाग शिकारी बना दिया। डोडो की तरह, इसने भी, ओम की घूरती निगाहों को महसूस किया और दूर चला गया।

कुछ ही मिनटों में दो विलुप्त प्रजातियों को देखकर ओम का आश्चर्य बढ़ गया और इसलिए उसने अपनी जिज्ञासा को पक्षी का पीछा करने के लिए प्रेरित किया।

जब महान औक एक चट्टान से नीचे चला गया, तो ओम अप्रत्याशित भूमि के अंत में अचानक रुक गया। किनारे पर कहीं से एक झील दिखाई दी। उन्होंने इस दिशा में सतर्क कदम उठाए. झील बिल्कुल सपाट धातु की डिस्क जैसी दिख रही थी। इसके चारों ओर झिलमिलाती खाली जगह के कारण यह असाधारण रूप से शांत था। शांत दृश्य ने ओम की सांसें छीन लीं। स्वर्ग से टपकने वाली रोशनी ने झील के चेहरे पर एक सुनहरा रंग जोड़ दिया। ओम को धरती पर स्वर्ग जैसा महसूस हुआ, हालाँकि वह निश्चित नहीं था कि वह अभी भी धरती पर है या नहीं। शायद यह सच था.

शायद कैलाश पर्वत वास्तव में भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच एकमात्र संबंध था। ओम अपनी ही अनुभूति से चौंका। उसने पहले कभी ऐसी शक्तिशाली शांति और सुंदरता का अनुभव नहीं किया था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं ताकि आसपास की शांति उस पर हावी हो जाए, लेकिन ठीक उसी क्षण, किसी चीज़ ने शांत पानी में बाधा डाल दी, जिससे उसकी आँखें खुल गईं। आंदोलन अपेक्षाकृत उनके करीब था.

धातु की डिस्क तब पिघलती हुई दिखाई दी जब 40 फीट से अधिक लंबा एक विशाल जीव, जिसका वजन कई टन लग रहा था, पानी से बाहर आया। यह स्टेलर की समुद्री गाय थी, जो एक और विलुप्त शाकाहारी स्तनपायी थी। आखिरी बार रिकॉर्ड की गई स्टेलर की समुद्री गाय सत्रहवीं शताब्दी के अंत में देखी गई थी!

इससे पहले कि ओम लुप्त हो चुके जीव-जंतुओं के विचित्र दृश्यों को दर्ज कर पाता दुनिया के बाकी हिस्सों से, उन्होंने देखा कि समुद्री गाय के साथ 20 फीट लंबी बाईजी सफेद डॉल्फ़िन, जिन्हें चीनी नदी डॉल्फ़िन भी कहा जाता है, का एक समूह किनारे की ओर बढ़ रहा था। ओम की जानकारी के अनुसार, इन प्राणियों को 2002 में आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित कर दिया गया था। जैसे ही उनकी नज़र किनारे के पास डॉल्फ़िन पर पड़ी, उन्होंने मोटी, हल्की हरी पत्तियों और हल्के बैंगनी फूलों के साथ एक विशाल क्राय वायलेट पौधा देखा। इस खूबसूरत प्रजाति को आखिरी बार पचास के दशक में देखा गया था। ओम फिर से दृश्य में तल्लीन हो गया, लेकिन शांति ज्यादा देर तक नहीं रही।

अचानक उसके पीछे सूखी पत्तियाँ खड़खड़ाने लगीं और ओम उसकी ओर मुड़ गया आवाज़, जो कुछ दूर झाड़ियों से आ रही थी। झाड़ियाँ कॉफ़िया लेम्ब्लिनी थीं, जो सफ़ेद फूलों वाली और छीलने वाली, कागजी छाल वाली लंबी थीं। उन्हें आखिरी बार 1907 में देखा गया था। वह झाड़ियों की ओर कुछ कदम चले, उन्हें उम्मीद थी कि डोडो या ग्रेट औक उनके पीछे होंगे, लेकिन जब उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने जो देखा वह कोई उड़ने में असमर्थ पक्षी नहीं था, तो उन्होंने अपने कदम रोक दिए।

Machine Translated by Google

लेकिन एक मांसाहारी प्राणी जो शेर से लगभग दोगुना आकार का था और 11,700 साल पहले रहता था। यह शानदार जंगली, कृपाण-दांतेदार बाघ था।
ओम को एहसास हुआ कि वह उस जानवर का शिकार बन गया है जो आसानी से टुकड़े-टुकड़े कर सकता है, और उनके बीच बहुत कम दूरी थी। शिकारी पहले से ही अपने डर को महसूस कर सकता था और उसके अंदर प्रवाहित होने वाले एड्रेनालाईन के कारण उसके दिल की धड़कन सुन सकता था; जानवर के लिए जो कुछ बचा था वह था झपटना और खा जाना।
अब प्रत्याशित हमले का समय आ गया था। ओम जानता था कि यह एक अपरिहार्य आधार है जिस पर वह खड़ा है; वह इस विशाल भूभाग में स्वाभाविक रूप से कुशल जानवर से कैसे आगे निकल सकता है? वह स्तब्ध था. उसके पैर धरती से चिपके हुए महसूस हुए। तभी जानवर ने वही किया जो वह सबसे अच्छी तरह जानता था—हमला। उनके बीच की दूरी कुछ ही समय में कम हो गई क्योंकि वह अपने भारी और विशाल पंजों के साथ, नुकीले नाखून और खुले हुए पंजे के साथ ओम की ओर दौड़ा। जानवर की गड़गड़ाहट, जो कि ओम ने सदियों में सबसे ऊंची दहाड़ सुनी थी, ओम की रीढ़ की हड्डी तक पहुंच गई, और अपने पीछे रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़ छोड़ गई। अब कुछ ही सेकंड का समय था जब ओम को असहनीय दर्द का अनुभव होगा जो एक इंसान की जान लेने के लिए पर्याप्त होगा। जानवर ने अपने शिकार पर छलांग लगाने से पहले अपना अंतिम कदम उठाया। ओम की जीवित रहने की प्रवृत्ति ने धरती पर उसके पैरों की पकड़ ढीली कर दी और वह जानता था कि चाहे कुछ भी हो उसे अपनी रक्षा करनी होगी।

दोनों भयंकर क्रोध में टकराये; सेबरटूथ स्वाइप और लैश के साथ ओम पर हावी हो रहा है और ओम लड़ाई से जीवित बाहर निकलने के लिए सदियों से सीखे गए सभी युद्ध कौशल का उपयोग कर रहा है। वह जानता था कि वह अधिक समय तक टिक नहीं पाएगा, लेकिन तभी, एक औसत इंसान से भी लंबी एक अपिश इकाई, शिकारी और शिकार के बीच आसमान से गड़गड़ाहट की तरह आई। सेबरटूथ नए प्रवेशी से टकराया, और प्रभाव ने जानवर और एपिश आदमी दोनों को एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर जमीन पर फेंक दिया। नया लड़ाकू जाहिरा तौर पर ओम की रक्षा कर रहा था, जिस तरह से वह सेबरटूथ से पहले अपने पैरों पर वापस उछला था। इसके बाद ओम ने जो देखा उस पर उसके जैसे आदमी के लिए भी विश्वास करना थोड़ा मुश्किल था। जैसे ही एपिश आदमी उसकी ओर बढ़ा, जानवर पीछे गिरने लगा। वह बहुत हद तक एक इंसान की तरह चलता था और उसकी वानर जैसी विशेषताओं के बावजूद, उसने बिना किसी अजीब हरकत के, खुद को सराहनीय ढंग से संभाल रखा था। उसकी वजह से जानवर वापस झाड़ियों में चला गया और ओम सुरक्षित था। रक्षक ओम की ओर मुड़ा, जो अब उसकी विशेषताओं पर बेहतर नज़र डाल सकता था। वह बंदर के सिर वाला इंसान था और उसकी पूंछ बंदर जैसी थी। वह काफी हद तक भगवान हनुमान से मिलता जुलता था, लेकिन यह वह नहीं था। ओम अंतर बता सकते हैं क्योंकि वह रामायण युग में सुषेण के रूप में भगवान हनुमान से मिले थे, जिन्होंने लक्ष्मण के जीवन को बचाने के लिए संजीवनी बूटी का सुझाव दिया था।

Machine Translated by Google

'और ये हो गया!' शापित अमर की भारी आवाज ने ओम को विश्व प्रसिद्ध कैलाश पर्वत के अंदर छिपे शहर के विचित्र अनुभव से बाहर निकाला। ओम ने पलटकर देखा तो अश्वत्थामा वानर मैन की ओर देखकर मुस्कुरा रहा था। वानर पुरुष अश्वत्थामा के पास आया और सम्मान में हाथ जोड़कर नीचे झुककर उसका स्वागत किया।

'ये सभी आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित हैं!' ओम आश्चर्य से बोल उठा।

'हाँ! यही कारण है कि उनमें से हर एक को यहां संरक्षित किया गया है।' अश्वत्थामा ने जमीन से एक भटकी हुई टहनी उठा ली। 'हमारी समयरेखा यहां सत्य युग से शुरू होती है,' उन्होंने एक कीचड़दार जगह पर एक छोटा सा शिलालेख बनाते हुए समझाया। 'फिर त्रेता युग आता है,' उसने बाएं से दाएं एक तिरछी रेखा खींची, 'जिसके बाद द्वापर युग आता है।' उसने टहनी को उठाए बिना एक सीधी रेखा खींचते हुए उस विकर्ण के सिरे को ऊपर की ओर खींचा। 'और फिर कलियुग।' वहां से, उसने दाएं से बाएं ओर एक और विकर्ण खींचा।

'एक बार जब यह कलियुग समाप्त हो जाएगा, तो यह सभी वनस्पतियां और जीव-जंतु अगले सत्ययुग को फिर से शुरू कर देंगे।' उन्होंने इसे शुरुआती बिंदु से जोड़ते हुए एक अंतिम सीधी रेखा खींची। 'और इस प्रकार चक्र स्वयं को दोहराता रहता है।' जैसे ही उसने यह कहा, उसने बार-बार आरेख के माध्यम से छड़ी को घुमाया, जिससे स्ट्रोक गहरे हो गए। यह अनंत का प्रतीक था.

ओम ने अपने चारों ओर देखा और ऐसी और भी लुप्त हो चुकी प्रजातियाँ पाईं - अकलिफा वाइल्डरी की एक छोटी झाड़ी, जिसे 2014 में विलुप्त घोषित कर दिया गया था, उसके बगल में एक लंबा सिगिलेरिया पेड़ था, जो 383 मिलियन वर्ष पहले अस्तित्व में था। 1.5-2 टन वजनी और दो सींगों वाला पश्चिम अफ़्रीकी काला गैंडा, आखिरी बार 2006 में कैमरून में देखा गया था और 2011 में आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित कर दिया गया था। पाइरेनियन आइबेक्स, जो मुख्य रूप से घास और जड़ी-बूटियाँ खाता था, अपनी तरह का आखिरी गैंडा 2000 में मारा गया।

ओम ने खुद को सबसे समृद्ध प्राकृतिक आवास के बीच खड़ा पाया, जो हर विलुप्त जानवर और पक्षी से घिरा हुआ था जो कभी इस धरती पर रहते थे।

अश्वत्थामा वापस उस ओर जाने लगा जहां ओम ने बस्ती में प्रवेश किया था। जबकि ओम और वानर व्यक्ति ने उसका पीछा किया, अश्वत्थामा ने ओम से बात की।

ॐ यह वृषभपि है। वह अपने वंश का अंतिम है, जिसे किंपुरुष या कपि कहा जाता है।' 'कपि!' ओम दोहराया.

मानो संकेत मिलने पर, विशाल वानर आदमी दहाड़ने लगा,

Machine Translated by Google

'जय हनुमान् ज्ञान गुण सागर।'
जय कपीस तिहुं लोक संपर्क।।'

वानर आदमी ने आदमी की बास से भी भारी आवाज में बात की। उन्होंने आगे कहा, 'मैं हनुमान चालीसा की पहली पंक्तियों में वर्णित कपि प्रजातियों में से अंतिम हूं और-'

'और हमारे शहर के इस क्षेत्र के संरक्षक भी,' पूरा हुआ अश्वत्थामा, कपि द्वारा प्रत्युत्तर में मुस्कुराहट के साथ।

'मेरी रक्षा करने के लिए धन्यवाद, वृषभपि। ओम ने विनम्रतापूर्वक कहा, ''मुझे यकीन नहीं था कि मैं इसे बना पाऊंगा।''

'वह सिर्फ मेरी प्यारी थी। उसे शिकार करना पसंद है. मैंने बस उसे यह बता दिया वृषभपि ने मासूम मुस्कान के साथ कहा, आप हद से बाहर हैं।

'आप उस विशाल को प्यारी कहते हैं?' ओम ने उपनाम से गुदगुदी करते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

'वृषकापि नामों को लेकर बहुत रचनात्मक है,' अश्वत्थामा ने हंसते हुए समझाया।

'और आप कौन है? आप यहां पर क्या कर रहे हैं?' कपि ने ओम की ओर रुख किया।

'मैं ... मैं हूँ ...उसे समझने की कोशिश कर रहा हूं,' भ्रमित ओम ने हकलाते हुए कहा।

जब अश्वत्थामा ने सुरंग में कदम रखा, तो वह अंधेरे में बाहर चला गया मात्र एक कदम में आकाश को प्रचुर धूप में ले जाना। एक पल के लिए, ऐसा लगा कि वास्तव में अलग-अलग समय क्षेत्र थे - मुश्किल से कुछ मीटर की दूरी समय की धारणा में एक बड़ा अंतर पैदा करने में कामयाब रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो ओम और अश्वत्थामा के बीच एक पारदर्शी दीवार थी, जो सूर्य और चंद्रमा, दिन और रात, वास्तविकता और स्वप्न के क्षेत्रों का सीमांकन कर रही थी। वृषभपि अदृश्य सीमा पर खड़ा हो गया और उन दोनों को अलविदा कह दिया। उसने अपने दाहिनी ओर एक हलचल देखी और डोडो पर चिल्लाया, 'तारा! मैंने तुमसे कई बार कहा है कि इस तरफ न चलो।'

कुछ ही समय में, अश्वत्थामा और ओम खाली पत्थर के मंच पर वापस आ गए। ओम ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए एक और प्रश्न पूछा।

'आपने मेरे पहले घर, धन्वंतरि के निवास का उल्लेख किया। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ हिमालय में रहता हूँ?'

'हमें आपके अस्तित्व के बारे में तब तक नहीं पता था जब तक हम उससे नहीं मिले जो जानता था आप के बारे में सब कुछ।'

ओम अनभिज्ञ खड़ा था क्योंकि उसे नहीं पता था कि अश्वत्थामा किसका जिक्र कर रहा था। उसके चेहरे पर चिंता देखकर अश्वत्थामा ने पूछा, 'क्या आप उससे मिलना चाहेंगे?'

Machine Translated by Google

समुद्र तल से 21,780 फीट ऊपर, ओम उत्तर की तलाश में एकमात्र जिज्ञासु व्यक्ति नहीं था। समुद्र तल से 25,938 फीट नीचे कैलाश पर्वत से लगभग 2772 किमी की दूरी पर भी सवाल उठ रहे थे। नागेन्द्र ने अपनी गोद में खुली मृतसंजीवनी की दोनों किताबों को घूरकर देखा।

उसने वह हासिल कर लिया था जो वह चाहता था, अमरता का रहस्य, लेकिन उसके पास अभी भी एक महत्वपूर्ण तत्व की कमी थी - ओम के रक्त का एक नमूना। उसके बिना, उसकी योजनाएँ व्यर्थ थीं। उसने ज़ोर से थप्पड़ मारकर किताबें बंद कर दीं। उसके पीछे, परिमल और एलएसडी क्रोधित नागेंद्र को चिल्लाते हुए देख कर घबरा गए और सोचने लगे कि आगे उसके मन में क्या है।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय दो

अतीत की किंवदंतियाँ

10°N 90°E पर, इंदिरा प्वाइंट (भारत के क्षेत्र का सबसे दक्षिणी भाग) से लगभग 560 किमी दूर, एक विशाल पनडुब्बी समुद्र की गहराई में अपना रास्ता बना रही थी। यह पनडुब्बी लगभग दो फुटबॉल मैदानों जितनी लंबी और तीन लेन के राजमार्ग जितनी चौड़ी थी। 50,000 अश्वशक्ति का उत्पादन करने वाले दो भाप टर्बाइन और चार 3200 किलोवाट टर्बो जनरेटर ने सतह पर 41.1144 किमी प्रति घंटे और पानी के भीतर 53.708 किमी प्रति घंटे की नौकायन गति प्रदान की। इस भयावह जहाज का रखरखाव और संचालन लगभग 100 लोगों के दल द्वारा किया जाता था, जो पाली में काम करते थे।

पनडुब्बी की आम लॉबी में नागेंद्र एक साजिश रचने में व्यस्त थे परिमल और एलएसडी के साथ नई योजना।

नागेंद्र ने संजीदगी से आदेश दिया, 'कैलाश पर्वत के निकटतम तट के लिए रास्ता तय करें।' वह खड़े हुए और तेजी से अपने कक्ष की ओर चलने लगे, यह संकेत देते हुए कि उनकी संक्षिप्त बैठक समाप्त हो गई थी। परिमल और एलएसडी ने पीछा किया और कमांड सेंटर तक पहुंच गए। उन्हें भारतीय नौसेना से बचते हुए अपने वर्तमान स्थान से दीघा समुद्र तट तक का सबसे छोटा मार्ग निर्धारित करना होगा।

मार्ग के स्वतः परिवर्तन से परिमल के भीतर चिंता की लहर दौड़ गई, जो उसके बोलते ही स्पष्ट हो गई। 'कैलाश पर्वत पर चढ़ना वर्जित है. किंवदंतियों और लेखों के अनुसार, कोई भी इंसान कैलाश पर्वत पर नहीं चढ़ सकता, जहां बादलों के बीच देवताओं का निवास है। जो कोई पहाड़ की चोटी की ओर यात्रा शुरू करने और देवताओं के चेहरे देखने का साहस करेगा, वह मौत के मुंह में समा जाएगा! ऐसा कहा जाता है कि पवित्र पर्वत पर चढ़ने वाला एकमात्र व्यक्ति मिलारेपा था, और—'

'उस बदमाश के बारे में फिर कभी मेरे सामने बात मत करना!' नागेन्द्र का मिलारेपा के उल्लेख पर तीव्र आपत्ति के कारण भाषण बाधित हो गया। परिमल डर से कांप उठा और एलएसडी भी।

नागेंद्र अचानक लॉबी में बने एक बंद दरवाजे के सामने रुक गए भारी धातु और एक मजबूत ताले से सुरक्षित। एक सफ़ेद साइनबोर्ड वर्तनी

Machine Translated by Google

गहरे लाल रंग में 'प्रतिबंधित' ने यह स्पष्ट कर दिया कि जहाज पर किसी अन्य व्यक्ति को दरवाजे तक पहुंचने की अनुमति नहीं थी। दरवाजे के ऊपरी हिस्से पर कुछ रहस्यमय प्रतीक और अक्षर खुदे हुए थे, मानो किसी प्राचीन भाषा से लिए गए हों।

जैसे ही नागेंद्र का हाथ इसे खोलने के लिए करीब आया, एलएसडी और परिमल ने एक गहरी सांस लेने से पहले एक-दूसरे पर नज़र डाली और जो आने वाला था उसके लिए खुद को तैयार किया। जैसे ही दरवाज़ा खोला गया, प्रतिबंधित कक्ष से एक असाधारण और प्रभावशाली बल क्षेत्र उत्सर्जित हुआ और उनके आस-पास का स्थान विकृत हो गया। एक अदृश्य ऊर्जा किसी पुराने पेड़ की जड़ों की तरह उनमें लिपटी हुई थी। उनके कंधों पर पूरे समुद्र का भार महसूस हुआ और आंसुओं का झरना उनके गालों पर बह निकला। रक्त वाहिकाओं का जाल उनकी त्वचा के अंदरूनी भाग पर उकेरा हुआ था, जो बाहर से मोटा और झिल्लीदार दिखाई दे रहा था, मानो वे किसी भी क्षण फट सकते थे, जबकि उनकी नाक और कानों से खून बह रहा था। वे स्तब्ध खड़े थे, उनकी आँखें खुली हुई थीं, जैसे मूर्तियों में फँसी हुई आत्माएँ, और वे महसूस कर सकते थे कि उनके दिल उनकी पसलियों पर चोट कर रहे हैं। उनकी रगों में रक्त का प्रवाह पनडुब्बी की गति से भी अधिक तेज था।

दरवाज़ा बंद करने से ठीक पहले जैसे ही नागेंद्र की भौंहें ऊपर उठीं, उनकी भौंहें सिकुड़ गईं उसकी आवाज़, 'मैंने कहा था कि मुझे कैलाश पर्वत के निकटतम तट पर ले चलो, कैलाश पर्वत पर नहीं।'

आख़िरकार दरवाज़ा बंद कर दिया गया, और जादू टूट गया। परिमल और एलएसडी वहीं अस्त-व्यस्त खड़े थे जबकि दरवाज़ा अंदर से बंद था। एलएसडी को बहुत पसीना आ रहा था। उसने अपनी कांपती हथेली से अपना चेहरा पोंछा और परिमल की ओर मुड़ी, जिसकी नाक और कान से खून के निशान बह रहे थे और उसकी शर्ट पर बूंदें गिर रही थीं। एलएसडी ने हड़बड़ाहट में रुई का एक बड़ा गुच्छा लिया और खून पोंछने में उसकी मदद की। परिमल ने खून रोकने के लिए कपड़े का एक और टुकड़ा अपनी नाक पर रखा।

यह सुनिश्चित करने के बाद कि परिमल स्थिर है, एलएसडी ने चुप्पी तोड़ी। 'इसलिए, मुझे कैलाश पर्वत के बारे में और बताओ।'

परिमल ने अभी भी कपड़ा, जो अब आंशिक रूप से लाल रंग में भीगा हुआ था, अपनी नाक पर रखा हुआ था और धीमी आवाज में बताना जारी रखा, 'कैलाश पर्वत को एक्सिस मुंडी, या आकाशीय ध्रुवों के बीच निलंबित पृथ्वी की धुरी के रूप में जाना जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र सभी जीवित प्राणियों के लिए रहने योग्य वातावरण बनाने के लिए स्वाभाविक रूप से खुद को नियंत्रित करता है। तीर्थयात्रियों और पर्वत के आसपास के क्षेत्र का दौरा करने वाले अन्य लोगों ने बारह घंटों की अवधि के भीतर बालों और नाखूनों के तेजी से बढ़ने की सूचना दी है, सामान्य परिस्थितियों में विकास में आमतौर पर दो सप्ताह लगते हैं। पहाड़ के आसपास रहते हुए भी समय यात्रा करता है

Machine Translated by Google

और तेज; कुछ ऐसा जो दुनिया में कहीं और नहीं देखा जाता है। पहाड़ में हवा है जो तेजी से उम्र बढ़ने का कारण बनती है।'

नाक से खून कम हुआ और परिमल ने पहले ही लापरवाही से कपड़ा उतार दिया अपना लैपटॉप खोल रहा हूँ. उन्होंने आगे बोलना जारी रखा, 'कैलाश पर्वत का एक और गहरा रहस्य पृथ्वी के ध्रुवों और अन्य प्राचीन स्मारकों के संबंध में इसकी भौगोलिक स्थिति है। किसी अज्ञात कारण से यह संयोग नहीं हो सकता कि कैलाश पर्वत से उत्तरी ध्रुव की दूरी 6666 किमी है, और दक्षिणी ध्रुव की दूरी 13,332 किमी है, जो उत्तरी ध्रुव से ठीक दोगुनी है। रहस्यमयी बात यह है कि मिस्र के पिरामिडों और उत्तरी ध्रुव के बीच की दूरी भी 6666 किमी है।'

परिमल ने अपना लैपटॉप एलएसडी की ओर घुमाया। 'यह देखो।' स्क्रीन पर जो कुछ था उसे पढ़कर एलएसडी आश्चर्यचकित रह गया।

कैलाश पर्वत से उत्तरी ध्रुव: 6666 किमी

कैलाश पर्वत से स्टोनहेंज: 6666 किमी

स्टोनहेंज से डेविल्स टॉवर: 6666 किमी

स्टोनहेंज से बरमूडा ट्रायंगल: 6666 किमी

बरमूडा ट्रायंगल से ईस्टर द्वीप: 6666 किमी

ईस्टर द्वीप से तजुमल: 6666 किमी

जैसे ही एलएसडी ने संख्याओं को अविश्वास से देखा, परिमल ने रहस्यमय पर्वत के बारे में जो कुछ भी वह जानता था, उसका जप करना जारी रखा, 'दुनिया की सबसे ऊंची चोटी, माउंट एवरेस्ट, 29,029 फीट ऊंची है और फिर भी इसके शिखर पर 4000 से अधिक लोगों ने चढ़ाई की है। कैलाश पर्वत लगभग 21,780 फीट ऊंचा है, जो माउंट एवरेस्ट से 7251 फीट कम है, फिर भी पर्वत पर चढ़ने में कई अभियान विफल रहे हैं। कई व्यापक अध्ययनों और सिद्धांतों के बाद भी, यह माना जाता है कि कोई भी सही कारण नहीं समझ सका कि कैलाश पर्वत पर क्यों नहीं चढ़ा जा सकता, कुशल पर्वतारोहियों के लिए काफी स्केलेबल ऊंचाई होने के बावजूद कई लोगों ने प्रयास क्यों किया और असफल रहे। मुझे लगता है कि कुछ रहस्यों को अनसुलझा ही छोड़ देना बेहतर है, चाहे वे कितने भी डरावने क्यों न लगें या उनका इतिहास कितना भी विस्तृत क्यों न हो। ऐसी किंवदंतियाँ हैं कि मिलारेपा नाम का एक तिब्बती एकमात्र इंसान था जिसने 900 साल पहले कैलाश पर्वत की चोटी पर चढ़ाई की थी।'

पनडुब्बी 21.42°N 87.30°E की ओर बढ़ी, जो पश्चिम बंगाल में दीघा समुद्र तट के लिए निर्देशांक है, जो कैलाश पर्वत के निकटतम तट है। परिमल,

Machine Translated by Google

स्वभाव से एक इतिहासकार होने के नाते, उन्होंने लगभग एक सहस्राब्दी समय पहले की एक कथा भी लिखी।

'मिलारेपा का जीवन तिब्बत की सबसे बहुमूल्य किंवदंतियों में से एक है। संरक्षित सदियों से मौखिक रूप से, हम यह नहीं जान सकते कि कहानी का कितना भाग तथ्यात्मक रूप से सत्य है। फिर भी, सदियों से, मिलारेपा के जीवन के उदाहरण असंख्य बौद्धों को शिक्षा और प्रेरणा देते रहे हैं। तिब्बत के महानतम रहस्यवादी का यह इतिहास लालच, प्रतिशोध, राक्षसों, जादू, हत्या और पुनर्स्थापना की गाथा है।

'मिलारेपा का जन्म 1052 ई. में एक प्रांत क्या नगात्सा गांव में हुआ था पश्चिमी तिब्बत का. उनका नाम मिला थोपागा रखा गया, जिसका अर्थ है "सुनकर आनंद आना"। उनका परिवार समृद्ध था और उनके परिवार का नाम, जोसे, ईगल कबीले से कुलीन वंश का संकेत देता था। थोपागा और उसकी छोटी बहन को गाँव वाले बहुत प्यार करते थे। आख़िरकार, उनके पिता बहुत बीमार हो गए और उन्हें एहसास हुआ कि वह मर रहे हैं। थोपागा के पिता ने अपने विस्तृत परिवार को अपनी मृत्यु शय्या पर बुलाते हुए निर्देश दिया कि जब तक मिलारेपा वयस्क नहीं हो जाता और उसकी शादी नहीं हो जाती, तब तक उसकी संपत्ति की देखभाल उसके भाई और बहन द्वारा की जाएगी। लेकिन जैसे ही उनकी मृत्यु हुई, मिलारेपा की चाची और चाचा ने बिना एक बार भी सोचे अपने भाई के भरोसे को धोखा दिया। उन्होंने संपत्ति को आपस में बाँट लिया और थोपागा को उसकी माँ और बहन सहित बेदखल कर दिया।

'अब बहिष्कृत, छोटा परिवार नौकर क्वार्टर में रहता था। उन्हें दिया गया अल्प भोजन और कपड़े दिए गए और उनसे खेतों में मजदूरी कराई गई। बच्चे कुपोषित, चिथड़े-चिथड़े और जूँ से ढके हुए थे। जो लोग कभी उन्हें स्नेह से नहलाते थे, वे अब उन्हें प्रसन्नतापूर्वक अपमानित कर रहे थे।

'जब थोपागा पंद्रह वर्ष का हुआ, तो उसकी माँ ने उसकी विरासत को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया। बड़ी मेहनत से, उसने अपने छोटे-छोटे संसाधनों का पूरा-पूरा हिस्सा इकट्ठा करके अपने विस्तारित परिवार और पूर्व दोस्तों के लिए एक दावत तैयार की। जब मेहमान खा चुके तो वह बोलने के लिए खड़ी हुई। अपना सिर ऊंचा करते हुए, उसे ठीक वही याद आया जो उसके पति ने अपनी मृत्यु शय्या पर कहा था, और उसने मांग की कि थोपागा को वह विरासत दी जाए जो उसके पिता ने उसके लिए सोची थी। लेकिन लालची चाची और चाचा ने स्पष्ट रूप से झूठ बोला कि संपत्ति वास्तव में उनकी कभी नहीं थी, और इसलिए थोपागा के पास दावा करने के लिए कुछ भी नहीं था।

उन्होंने माँ और बच्चों को नौकर क्वार्टर से बाहर और सड़कों पर आने के लिए मजबूर किया। परिवार ने जीवित रहने के लिए भीख मांगने और छोटी-मोटी नौकरियों का सहारा लिया।

'मां ने अपने थोपागा के लिए सितारों की तलाश की थी और उनकी रक्षा करने वाली टूटी छत को भी खो दिया था। अब वह अपने पति के प्रति घृणा से उबलने लगी

Machine Translated by Google

परिवार ने अपने बेटे से जादू-टोना सीखने का आग्रह किया। उसने उससे कहा, "अगर तुमने बदला नहीं लिया तो मैं तुम्हारी आंखों के सामने खुद को मार डालूंगी।"

'अपनी माँ की प्रतिशोध भरी विनती से मजबूर होकर, थोपागा को एक जादूगरनी मिली, एक न्यायप्रिय व्यक्ति जिसने काली कला में महारत हासिल कर ली थी, और उसका प्रशिक्षु बन गया। प्रारंभ में, जादूगर ने उसे केवल अप्रभावी जादू सिखाया, लेकिन एक बार जब उसे थोपागा के साथ हुए अन्याय के बारे में पता चला और सत्यापित किया गया, तो उसने लगन से गुप्त शक्तिशाली मंत्रों और अनुष्ठानों के बारे में अपना सारा ज्ञान उसे दे दिया।

'थोपागा ने एक भूमिगत कोठरी में काले जादू का अभ्यास करते हुए एक पखवाड़ा बिताया। जब उनकी संक्षिप्त शीतनिद्रा समाप्त हुई, तो उन्हें पता चला कि एक घर उनके विस्तृत परिवार पर गिर गया था, जब वे एक शादी में इकट्ठे हुए थे।

मलबे ने लालची जोड़े को छोड़कर सभी को कुचल कर मार डाला। थोपागा ने यह उचित समझा कि वे आपदा से बच गए, क्योंकि अब उन्हें उन्हें अपने लोभ द्वारा लिखित अंतिम परिणाम का सामना करने का मौका मिला।

'उनकी मां ने उन्हें परफेक्ट प्लान दिया। उसने अपने बेटे को पत्र लिखा और मांग की कि वह उनकी फसलों को भी नष्ट कर दे। थोपागा अपने गृहनगर के सामने पहाड़ों में छिप गया और जौ की फसल को नष्ट करने के लिए भयंकर ओलावृष्टि हुई।

'ग्रामीणों को काले जादू का संदेह हुआ और वे गुस्से में अपराधी को ढूंढने के लिए पहाड़ों में घुस गए। अभी भी छिपे हुए, थोपागा ने उन्हें बर्बाद फसलों के बारे में बात करते हुए सुना। तब उसे एहसास हुआ कि उसने बदले की भावना से निर्दोष लोगों को नुकसान पहुंचाया है। अपराध बोध से जलते हुए, उन्होंने अपने कृत्य पर पश्चाताप किया, दूसरे शिक्षक की तलाश में यात्रा की और अंततः, उनका अंतर्ज्ञान उन्हें भारत ले आया।

'कोई नहीं जानता कि उन्होंने भारत में क्या किया और उन वर्षों के दौरान वे वास्तव में किससे मिले। ऐसा कहा जाता है कि केवल बिछुआ सूप पीने से उनकी त्वचा हरी हो गई थी। उनकी तपस्या - सफेद सूती वस्त्र पहनना, चाहे मौसम कितना भी कठोर या सौम्य हो - ने उन्हें मिलारेपा नाम दिया, जिसका अर्थ है "कपास से ढका मिला"।' एलएसडी कहानी को एक साथ जोड़ने के लिए इंतजार नहीं कर सका। 'यदि कैलाश का शिखर

पर्वत तो अप्राप्य है, उसने असंभव को कैसे प्राप्त कर लिया?'

'मुझे नहीं पता, लेकिन ऐसा माना जाता है कि कोई भी कैलाश पर्वत तक तब तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसका इससे कोई कर्म संबंधी संबंध न हो। मिलारेपा ने जीवन में बाद में अपने दुष्ट अतीत पर शोक व्यक्त किया।

'किंवदंती के अनुसार, उन्होंने यही कहा था, 'मैंने अपनी युवावस्था में काले काम किए थे। परिपक्वता में, मैंने निर्दोषता का अभ्यास किया। अब, अच्छे और बुरे दोनों से मुक्त होकर, मैंने कर्म की जड़ को नष्ट कर दिया है

Machine Translated by Google

भविष्य में कार्रवाई का कोई कारण नहीं होगा। इससे अधिक कहने पर रोना और हँसी ही आएगी। बताने से क्या फायदा? मैं एक बूढ़ा आदमी हूं. मैं शांति से रहना चाहता हूं।''

'हो सकता है कि कैलाश पर्वत पर चढ़ने के पीछे का रहस्य कुछ और हो इन शब्दों के साथ,' एलएसडी ने सुझाव दिया।

'हाँ शायद । . . लेकिन नागेंद्र का मिलारेपा से क्या लेना-देना है?' परिमल बुदबुदाया.

'क्या? आपने कुछ कहा?' एलएसडी ने भ्रमित होते हुए पूछा।

'नहीं! मैं आपसे नहीं पूछ रहा था. वैसे भी, जैसा कि कहानी कहती है, उनकी मृत्यु 1135 में हुई,' परिमल ने आह भरी।

एक पनडुब्बी के अंदर कैद, मिलारेपा और नागेंद्र के बीच संबंधों के बारे में परिमल का प्रश्न अनुत्तरित था, लेकिन ज्ञानगंज में, ओम यह समझने वाला था कि अश्वत्थामा और परशुराम को उसके अस्तित्व के बारे में कैसे पता चला। अश्वत्थामा ओम को वापस उस कुटिया में ले गया जहाँ वह जागा था।

वहाँ एक संत खड़े थे जिनकी त्वचा हरी थी और उन्होंने सफ़ेद सूती वस्त्र पहना हुआ था।

'मिलारेपा से मिलो,' अश्वत्थामा ने उस आदमी की ओर इशारा किया और उसका परिचय ओम से कराया।

इतिहासकारों के अनुसार, मिलारेपा, वह व्यक्ति जिसकी मृत्यु 1135 में हुई थी, वास्तव में विलुप्त भूमि में स्वस्थ और स्वस्थ था!

इस समय, ओम अपनी भूली हुई पहचान के बारे में सब कुछ सुनने के लिए तैयार था उनकी मुलाकात नागेंद्र से महान धन्वंतरि की कुटिया में हुई थी। पानी के अंदर, नागेंद्र अपने प्रतिबंधित कक्ष में बैठकर दीघा समुद्र तट पर पनडुब्बी के आगमन की आशा कर रहे थे।

जैसे ही पृथ्वी रुका और कटोरे से अपना आखिरी घूंट लिया, श्रीमती बत्रा ने देखा कि सूप का ठंडा कटोरा उसके हाथों में भरा हुआ है। इसे एक तरफ रखते हुए, उसने जोर देकर कहा, 'पहाड़ की चोटियों और समुद्र तल के बीच एक तीसरा स्थान था जहां महत्वपूर्ण खोजें की जा रही थीं। डॉ. तेज बत्रा, मेरे पति, ने ओम के रक्त के नमूने की जांच करते समय कुछ बेहद असामान्य चीज़ देखी थी, जिसे रॉस द्वीप पर सुविधा नष्ट होने पर वह चुपचाप बाहर निकालने में कामयाब रहे थे। सामान्य रक्त के विपरीत, जिसमें लाल और सफेद रक्त कोशिकाएं होती हैं, ओम के नमूने में उसके पूरे रक्त में अद्वितीय काली रक्त कोशिकाएं पाई गईं। इस अजीब खोज का पता लगाने के लिए तेज ने उन्हें विभिन्न परीक्षणों से गुज़रने का फैसला किया। रॉस द्वीप पर उनकी परिकल्पना के अनुसार, यीस्ट और चूहों में जीवनकाल के दोगुना होने की तरह, ओम के जीन उम्र बढ़ने का मुकाबला करने के लिए खुद को बदल रहे होंगे। जैसा कि अनुमान लगाया गया था, नमूने में काली रक्त कोशिकाएं उत्परिवर्तित हो गईं और दीर्घायु परीक्षण में सफल हो गईं।

Machine Translated by Google

'इसे एक कदम आगे बढ़ाने के लिए, उसने इसे कई संक्रमित रक्त नमूनों के साथ मिलाया। उन्होंने साल्मोनेला टाइफी (टाइफाइड पैदा करने वाले बैक्टीरिया), स्ट्रेप्टोकोकस निमोनिया, विब्रियो कोलेरा, इबोला, इन्फ्लूएंजा आदि के खिलाफ इसका परीक्षण किया। तेज यह देखकर बिल्कुल स्तब्ध रह गया कि ओम की रक्त कोशिकाएं सभी रोगजनकों के प्रति पूरी तरह से प्रतिरक्षित थीं, जिसके परिणामस्वरूप रक्त सभी प्रकार के एंटीबॉडी से भरपूर था।

'स्थिति की बेतुकी स्थिति से ऐसा लग रहा था मानो काली रक्त कोशिकाएं तेज और उसकी क्षमता का मज़ाक उड़ा रही हों। उन्होंने इस रहस्योद्घाटन को एक अवसर के रूप में छिपा हुआ वरदान मानने के बजाय इसे एक चुनौती समझ लिया।

इससे पहले कि वह यह जानता, डॉ. तेज काली रक्त कोशिकाओं के साथ एक अनचाहे युद्ध में थे और उन्होंने हार मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने रक्त को 2500 डिग्री सेल्सियस पर रखा, यह तापमान लोहे को पिघलाने के लिए पर्याप्त गर्म था, और नमूने पर प्रभाव दर्ज किया।

आश्चर्यजनक रूप से, काली रक्त कोशिकाओं ने एक साथ मिलकर अन्य रक्त कोशिकाओं के चारों ओर एक प्रकार का इन्सुलेशन तैयार किया और खुद को -2500 डिग्री सेल्सियस पर बिल्कुल विपरीत तापमान पर जमा दिया, जिससे वे गर्मी से बच गईं।

इसके बाद तेज ने नमूने को बेहद कम तापमान पर रखा, लेकिन पाया कि काली रक्त कोशिकाएं फिर से बंध गईं और खुद को गर्म करके विपरीत तरीके से काम करने लगीं, इस बार बाहरी स्थितियों को बेअसर करने के लिए, जिससे लाल और सफेद रक्त कोशिकाएं सुरक्षित रहीं। जिस तरह से परशुराम और अश्वत्थामा ओम की रक्षा कर रहे थे। लेकिन परशुराम और अश्वत्थामा ओम को किस लिए तैयार कर रहे थे?' उत्तेजित श्रीमती बत्रा ने ज़ोर से सोचा।

'अपनी मौत के लिए,' पृथ्वी ने कंधे उचकाए।

उसकी लापरवाही से श्रीमती बत्रा का पारा थोड़ा नीचे गिर गया। लेकिन वह जानती थी कि कोई सरल उत्तर नहीं थे। उसे बस आराम से बैठना होगा और तब तक इंतजार करना होगा जब तक पृथ्वी को वह सब याद न हो जाए जो उसने देखा था, भले ही किसी आदमी को समानांतर घटनाओं के बारे में बात करते हुए सुनना कितना भी अस्पष्ट क्यों न हो, जिसे देखने के लिए वह पैदा भी नहीं हुआ था।

'जब पनडुब्बी अपने गंतव्य पर पहुंची तब सुबह के तीन बज रहे थे,' पृथ्वी कथा फिर से शुरू की.

दीघा समुद्रतट पास ही था तो परिमल ने उस जलरोधी दरवाजे पर दस्तक दी प्रतिबंधित कक्ष का. तीसरी दस्तक से पहले जब नागेंद्र ने दरवाजा खोला तो वह पहले से ही एक पैक्ड बैग और गले में एक गोल धातु की बोतल लटकाए तैयार था। वही क्रोध बाहर भी उसका पीछा करता रहा, जिससे एलएसडी और परिमल को फिर से निर्दयी पीड़ा हुई। दर्द इतना असहनीय था कि उस दुर्भाग्यपूर्ण क्षण में लॉबी पार कर रहा एक चालक दल का सदस्य लुगदी में बदल गया और तुरंत मर गया।

Machine Translated by Google

अचंभित नागेंद्र ने मौत के ढेर को चैंबर के अंदर धकेल दिया तेजी से कदम बढ़ाए और दरवाज़ा बंद कर दिया, जिससे बचे हुए अन्य दो लोगों को उनके आतंकित रूप से राहत मिली।

पनडुब्बी ने पानी की सतह को चीर डाला। परिमल की नाव, जिसका उपयोग उन्होंने रॉस द्वीप पर किया था, को टीम को छोड़ने के लिए फिर से काम पर लगाया गया।
नागेंद्र तट पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति थे और आंखों पर पट्टी बांधे घोड़े की तरह आगे बढ़ना शुरू कर दिया, जिसकी दृष्टि रेखा में जीत के अलावा कुछ नहीं था।

एलएसडी ने परिमल को देखने के लिए पीछे देखा, जो अभी भी अपने बैग उतार रहा था नाव से. उनकी शिथिलता को देखते हुए, नागेंद्र ने अपनी गरजती लेकिन अशुभ आवाज में उन पर चिल्लाया, 'यह समय के खिलाफ एक दौड़ है। समय मेरे लिए नहीं रुकेगा और मैं किसी के लिए नहीं रुकूंगा। मेरे पास पहुंचने के लिए केवल नौ दिन हैं।'

'हमें नौ दिनों में कहाँ रहना है?' एलएसडी ने कांपती आवाज़ में पूछा और वह नागेंद्र की ओर दौड़ती हुई आगे बढ़ने लगी।

नागेंद्र ने उसे एक पुराने, उभरे हुए कागज का एक मुड़ा हुआ टुकड़ा दिया।

जब तक परिमल उनके साथ आया, नागेंद्र फिर से चलने लगा था।
एलएसडी ने झुककर कागज को अच्छे से देखने के लिए खोला। मृत संजीवनी की किताबों से कागज का टुकड़ा फाड़ दिया गया था, जिसके दाहिने छोर पर समुद्र, उसके शीर्ष पर पहाड़ और उनके बीच खींची गई एक लाल रेखा का चित्रण था। यह बताना मुश्किल था कि यह दुनिया का कौन सा हिस्सा था। परिमल ने एलएसडी के चेहरे पर भ्रम को पढ़ा, उसके पास एक टूटी हुई शराब की बोतल का कांच का टुकड़ा उठाया और इस नक्शे के फटे हुए हिस्से के आसपास क्या हो सकता है, इसकी रूपरेखा तैयार करना शुरू कर दिया। इससे पहले कि परिमल पूरी तरह से चित्र बनाना बंद कर दे, एलएसडी ने रहस्यमयी नज़र से उसके स्ट्रोक्स को डिकोड किया।

यह नहीं हो सकता, परिमल ने सोचा। वह भटका हुआ टुकड़ा भारत के मानचित्र का था। वह छोटा सा टुकड़ा एक छोर पर भारत के पूर्वी तट और दूसरे छोर पर हिमालय श्रृंखला का चित्रण था। लाल रेखा, जो दीघा समुद्र तट से रहस्यमय पर्वत कैलाश की तलहटी तक जाती थी, वह मार्ग था जिसे उन्हें अगले नौ दिनों में ट्रेक करना था। अभी भी इस बात की अधूरी जानकारी से चिंतित थे कि वे कहाँ जा रहे थे, परिमल और एलएसडी ने नागेंद्र को देखा, जो पहले ही काफी दूरी तय कर चुके थे। एलएसडी ने मानचित्र को सुरक्षित रूप से अपने बैग में रख लिया और वे नागेंद्र को पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 3
ननशाद

इस बीच, कैलाश पर्वत पर, ओम पौराणिक मिलारेपा के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक थे, और इसलिए उन्होंने पूछा, 'मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना और पढ़ा है। कुछ कहानियाँ कहती हैं कि आप अंततः गुफाओं में रहने के लिए पीछे हट गए, लेकिन यह अटकलें हैं और पूरी सच्चाई नहीं है, है ना? लेकिन सबसे पहले, आप मेरे बारे में कैसे जानते हैं?'

मिलारेपा ने अश्वत्थामा की ओर ऐसे देखा मानो उसकी स्वीकृति चाह रहा हो और अश्वत्थामा ने आश्वस्त होकर सिर हिलाया।

'मैं आपको शुरुआत में वापस ले चलता हूं। अपने युवा दिनों में, शुद्ध प्रतिशोध से प्रेरित होकर, मैंने कई जिंदगियाँ नष्ट कर दीं। मैंने अपनी मां के अनुरोध पर घर छोड़ दिया और अपनी नफरत को दूर करने के लिए जादू-टोना सीखा। मेरी माँ का निधन हो गया, लेकिन मैंने अपना बदला लेना जारी रखा, यह मानते हुए कि कर्तव्यपरायण बेटे यही करते हैं - वे अपनी माँ की पीड़ा का बदला लेते हैं। मेरी हिंसा का खामियाजा असंख्य निर्दोष आत्माओं को भुगतना पड़ा।

'अपने एकांतवास के वर्षों में, मुझे अपने कृत्य पर पश्चाताप हुआ और मैं अनुवादक मार्पा का छात्र बन गया। मार्पा द्वारा मुझे स्वीकार करने से पहले, मुझे उसके द्वारा तैयार किए गए कार्यों को करने में बहुत कठिन परिश्रम सहना पड़ा था। उनके आदेश पर, मैं एक टावर बनाना शुरू कर दूंगा लेकिन आधे रास्ते में, वह मुझसे इसे तोड़ने और नए सिरे से काम शुरू करने के लिए कहेंगे। ऐसा बार-बार हुआ. मैं स्तंभ खड़ा करूंगा, केवल उसे जमीन पर गिराने के लिए। निर्माण और विध्वंस के तीसरे दौर के बाद, मुझे तिब्बत के लोद्रग के से गांव में एक अंतिम बहुमंजिला टावर बनाने के लिए कहा गया, जो अभी भी खड़ा है।

'अंततः मार्पा ने मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया। उन्होंने बताया कि निर्माण और विनाश मेरे लिए अपने नकारात्मक कर्मों का प्रायश्चित करने का एक तरीका था। हालाँकि मैं यह समझता था, फिर भी मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि उसने हमेशा मुझसे ही मीनारें क्यों बनवाईं। जब मैं भारत आया तभी मुझे इसका उत्तर मिला। हालाँकि, उस समय भारत का गठन करने वाला क्षेत्र अब के क्षेत्र से बहुत अलग था। . .

Machine Translated by Google

'मार्पा ने मुझे वह सब कुछ सिखाया जो वह जानता था और जब उसका पाठ समाप्त हो गया, तो वह मुझे अपने शिक्षक नरोपा के पास ले गया, जो बंगाल में एक उच्च वर्गीय ब्राह्मण घराने में पैदा हुए थे। यह मुझे पहली बार भारत ले आया। मेरे जैसे विभिन्न युगों के कई विद्वान सूत्र और तंत्र का अभ्यास कर रहे थे। नरोपा की शिक्षाएँ पूरी होने पर, जाने का समय आ गया। मैं अनिश्चित था कि आगे कैसे बढ़ूं इसलिए मैंने अपनी दुविधा उनके सामने रखी।

''मैं आपके मार्गदर्शन के लिए आभारी हूं, लेकिन मैं अभी भी अपना असली उद्देश्य नहीं देख पा रहा हूं,'' मैंने नरोपा से कहा।

''मैंने तुम्हें वह सब कुछ सिखाया है जो मैं कर सकता था। अब समय आ गया है कि आप फिर से अपना रास्ता खोजने के लिए निकल पड़ें। आपको नानशाद नाम के एक व्यक्ति को ढूंढने और उसकी सलाह लेने के लिए पूरे भारत की यात्रा करनी चाहिए,'' उन्होंने कहा।

'मैंने उन्हें विदाई दी और भारत की यात्रा पर निकल पड़ा। बाद ननशाद की खोज में कुछ वर्षों तक भटकते हुए, मैं साकेत नामक शहर में पहुंचा, जिसका संस्कृत में अर्थ स्वर्ग होता है। इसे भगवान राम की भूमि के रूप में जाना जाता था और वर्तमान में इसे अयोध्या कहा जाता है। वहाँ, आख़िरकार मुझे नानशाद का पता पता चला। मुझे अयोध्या से लगभग 640 किलोमीटर दूर उनके गांव में जाने का निर्देश दिया गया, जो आधुनिक बिसरख है। कई दिनों की थका देने वाली यात्रा के बाद, मैं अंततः आशा से लबालब होकर बिसरख पहुँच गया।

'गाँव के प्रवेश द्वार पर सबसे पहले मेरी नज़र एक बूढ़े आदमी से पड़ी जो एक अधूरे भवन का निर्माण कार्य कर रहा था। मैं आगे बढ़ा और उससे पूछा, "क्या आप जानते हैं कि ननशाद यहाँ कौन है?"

'जमीन से एक सूखा पत्ता उठाकर उससे बात करने से पहले उसने मुझे अजीब तरह से देखा। मैंने अपना प्रश्न दोहराया, अगर पहली बार उसने मुझे ठीक से नहीं सुना होता, लेकिन उसने मुझे बेरहमी से खारिज कर दिया और फिर अपने हाथ में सूखे पत्ते से बात करना जारी रखा! मैंने यह देखने के लिए चारों ओर देखा कि क्या कोई और है जो मेरी मदद कर सकता है, लेकिन वह सिर्फ अपनी आधी-निर्मित संरचना के साथ था, और इसलिए मैं अपनी खोज जारी रखने के लिए आगे बढ़ा।

'अगले तीन दिनों तक, मैंने मूल निवासियों से उस आदमी के बारे में पूछा, जिसने मुझसे पूरे देश में उसकी तलाश कराई थी। यह एक छोटा सा गाँव था, इसलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि मैं हर जगह अपनी किस्मत आज़माऊँ। लेकिन मुझे घोर निराशा हुई, एक भी व्यक्ति ननशाद के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। जब कोई अन्य विकल्प नहीं बचा तो मैंने भारी मन से तिब्बत लौटने का फैसला किया।

'वापस जाते समय, मैं उसी बूढ़े आदमी के पास से गुज़रा जो अभी भी अधूरे ढांचे पर काम करने में व्यस्त था। ग्रामीणों ने मुझे बताया कि वह अकेला था

Machine Translated by Google

जो कुछ भी संरचना का खड़ा था उसका मजदूर। उसकी सिकुड़ी हालत को देखते हुए यह स्पष्ट था कि मौत किसी भी क्षण उसके दरवाजे पर दस्तक दे सकती है। मुझे उस पर दया आ गई. मैं मार्पा के लिए टावर बनाने में काफी कुशल हो गया था, और मैं नानशाद की खोज के अंतिम छोर पर भी था।

इमारत के पूरा होने को बूढ़े व्यक्ति की आखिरी इच्छा मानते हुए, मैंने उसे निर्माण पूरा करने में मदद करने का फैसला किया।

'मैंने उसे अपनी मदद की पेशकश की, लेकिन उसने साफ तौर पर इनकार कर दिया। मैंने उसे आश्वासन दिया कि मुझे बदले में कुछ नहीं चाहिए। उनकी उम्र और कमज़ोरी ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया कि उनके जीवन में उस बिंदु पर कुछ भी बनाने के लिए उनके पास कितना धैर्य और प्रेरणा थी। बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए, मैंने उससे यूँ ही पूछ लिया कि वह इसे किसके लिए बना रहा है।

'वह अचानक मेरी ओर मुड़े और पूछा, ''आप यह किसके लिए करने की योजना बना रहे हैं? अपने लिए या मेरे लिए?”

'मैं उस प्रश्न के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था। मैं अवाक खड़ा प्रयास कर रहा था किसी प्रतिक्रिया की संतुष्टि के बजाय अपने लिए उत्तर ढूंढना। उन्हें अपनी सेवा देने से पहले, मैंने वास्तव में इसके लिए अपनी प्रेरणा के बारे में नहीं सोचा था। बूढ़ा आदमी कुछ देर तक मेरे चिंतित चेहरे को देखता रहा और फिर एक शर्त रखी-मानो उसे मेरी मदद से ज्यादा उसकी मदद की जरूरत हो! उन्होंने कहा कि जब तक मैं अपनी बात पूरी नहीं कर लेता तब तक मैं उनसे किसी भी बारे में सवाल नहीं करूंगा। मैं सहमत।

'मैं यह किसके लिए कर रहा था? यही सवाल मेरे लिए बिना किसी सवाल के ढांचे को ख़त्म करने का कारण बन गया। मैंने उसकी शर्त मान ली और उसने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

'जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, बूढ़े व्यक्ति ने मालती नाम की किसी व्यक्ति को बुलाया। में वहाँ पत्थर का बना हुआ एक बड़ा दरवाज़ा था। वह बंद था, इसलिए मैंने सोचा कि मालती वहां से चली जाएगी, लेकिन फिर मैंने उसे यह कहते हुए सुना, “तुम यहाँ हो।
यहाँ आओ।"

'मैंने उसकी निगाहों का पीछा किया यह देखने के लिए कि मालती कहाँ है। मैं केवल ज़मीन पर एक मरा हुआ पत्ता देख सकता था। वह यह देख कर मुस्कुरा रहा था। . . और मृत पत्ता उसकी हथेली पर बैठने के लिए फड़फड़ाया! तभी मुझे एहसास हुआ कि यह वास्तव में एक तितली थी जो सूखे पत्ते की तरह दिखती थी जब उसके पंख आराम पर थे।

''मालती से मिलो,'' उन्होंने कहा।

''आपने एक जंगली तितली को वश में करने का प्रबंधन कैसे किया?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा अभी क्या हुआ था.

'उसकी खोखली आँखों से गंभीर घूरना मुझे उस शर्त की याद दिलाने के लिए काफी था जिस पर हम अभी सहमत हुए थे; किसी भी प्रश्न की कोई गुंजाइश नहीं थी.

Machine Translated by Google

फिर उन्होंने विशाल पत्थर के दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा, “आपको उस कमरे के अंदर जाने की अनुमति नहीं है। इसकी कोशिश भी मत करना. मालती, उस पर नजर रखना।”

'काम के लिए पूरी तरह तैयार होकर, मैंने अगली सुबह निर्माण कार्य शुरू कर दिया।

'अगले कुछ महीनों में, हमने चुपचाप काम किया। आखिरी दिन तक उनकी कड़वाहट बरकरार रही. उन्होंने मुझसे कभी बात नहीं की. हर दिन, वह अंदर जाने के लिए ही दरवाज़ा खोलता था और सूर्यास्त के बाद छह घंटे तक बंद रहता था। इस बीच, मैं हम दोनों के लिए खाना बनाऊंगी और अपना ध्यान और नियमित अभ्यास जारी रखूंगी। मालती हमेशा दीवार पर एक खास नमी वाली जगह पर मेरी तरफ मुंह करके बैठती थी। मैंने उससे दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन वह कभी टस से मस नहीं हुई। कभी-कभी ऐसा महसूस होता था जैसे वह सचमुच आदेशों का पालन कर रही थी और मुझ पर नज़र रख रही थी जब बूढ़ा आदमी आसपास नहीं था।

'मालती हर दिन लगन से उसकी तलाश में रहती, जब तक कि एक अप्रिय सुबह नहीं हो जाती जब मैं उठा और देखा कि वह मर रही है। यह स्पष्ट था कि वे उसके आखिरी कुछ घंटे थे। मैं पहले से ही नुकसान महसूस कर रहा था, लेकिन बूढ़ा व्यक्ति निःशब्द और उदासीन बना रहा। वह दीवार पर छिपकली पकड़ने की कोशिश में व्यस्त था और उसे लुभाने के लिए एक कीट की जरूरत थी। अगली बात जो मुझे पता चली, वह यह कि उसने मरती हुई मालती को उठाया और उसे चारे के रूप में इस्तेमाल किया। वह हृदयहीन कमीने!

मेरी भाषा के लिए क्षमा करें, लेकिन यह बहुत क्रोधित करने वाली थी। जैसे ही छिपकली मालती के करीब पहुंची, वह मेरी ओर मुड़ गई और मैंने उसकी असुरक्षा की कल्पना की। पलक झपकते ही छिपकली ने मालती को जिंदा निगल लिया। उसके मृत पत्ते के पंख जमीन पर गिर गए और छिपकली ने उसके अवशेषों को चबा लिया, जबकि बूढ़ा व्यक्ति बहुत उत्साह के साथ इस भयानक दृश्य को देख रहा था। उसने सावधानी से छिपकली को दीवार से उतारा और अपने कमरे की ओर चलने लगा। जब उसने पीछे मुड़कर मेरी ओर देखा, तो उसकी आँखें चमक रही थीं और उसने सरीसृप को अपनी हथेलियों में पकड़ लिया था।

"वह गर्भवती है। उसकी संतान मेरी अगली पालतू होगी,'' उसने कहा, एक शरारती बच्चे की तरह वापस निषिद्ध कमरे में चला गया, और खुद को फिर से बंद कर लिया।

'मालती के अलग-अलग पंख हवा के साथ उड़ रहे थे, जैसे आमतौर पर सूखे पत्ते उड़ते हैं। मैं था निराश. लेकिन उससे भी ज़्यादा, मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि आख़िर वह उस दरवाज़े के पीछे क्या करता था। लेकिन उनसे पूछताछ करना मना था. मैंने कई महीनों तक उसके साथ पसीना बहाया, फिर भी उसने मुझसे मेरा नाम पूछने की जहमत तक नहीं उठाई।

बावजूद इसके, मैंने वादे के मुताबिक अपना काम जारी रखा। कुछ दिनों बाद, वह अपनी हथेली पर एक छोटी छिपकली लेकर मेरे पास आया। इस बार यह एक नर छिपकली थी, जिसने अपनी माँ को कभी नहीं देखा था क्योंकि उसने उसे उसके बाकी कूड़े के साथ मार डाला था और उन्हें खा लिया था। उन्होंने अपने नए पालतू जानवर का नाम कर्क रखा। कुछ हफ़्ते बीत गए और कर्क मालती के नम स्थान का नया निवासी बन गया, और बूढ़े आदमी की अनुपस्थिति में मुझ पर नज़र रखता था।

Machine Translated by Google

'अगले छह महीनों में, मैंने बरामदे के खंभे, छत के ऊपर केंद्रीय संरचना और किनारों पर रास्ते बनाए। निर्माण के दौरान कुछ बिंदु पर मुझे यह आशंका होने लगी कि यह कोई साधारण इमारत नहीं है; इसका एक विशेष उद्देश्य था. बूढ़े व्यक्ति की कमज़ोर काया को देखते हुए, मुझे संदेह था कि मैं उसके असली इरादों को कभी नहीं जान पाऊँगा - उसका दाह संस्कार निर्माण कार्य पूरा होने से पहले ही हो सकता है! उन महीनों के दौरान, मैंने कई अन्य जादूगरों और योगियों को भी ननशाद की तलाश में बिसरख आते देखा। बूढ़े आदमी ने उनकी सारी पूछताछ को वैसे ही नजरअंदाज कर दिया जैसे उसने मेरी पूछताछ को नजरअंदाज किया था और मैंने उन सभी को एक ही जवाब दिया कि गांव में ऐसा कोई आदमी नहीं है। दिन रात में बदल गए और पूरे एक साल के बाद आखिरकार निर्माण पूरा हो गया। उस दिन, अंततः मुझे एहसास हुआ कि वह संरचना वास्तव में किसी देवता का मंदिर था। बाहरी वास्तुकला से पता चलता है कि निषिद्ध कक्ष वास्तव में गर्भगृह था, और इसका डिज़ाइन किसी भी अन्य हिंदू मंदिर के विपरीत था जिसे मैंने पहले देखा या सुना था। उस रात, मैं उस जगह की सफ़ाई करने के लिए देर तक जागता रहा जबकि बूढ़ा आदमी हमेशा की तरह कमरे में बंद रहा।

'मुझे तिब्बत से भारत आए कुछ ही साल हुए थे और मैं अभी भी इसकी विशाल संस्कृति और धर्मों के बारे में सीखने की प्रक्रिया में था। मुझे पता चला कि हिंदू रीति-रिवाजों में मंदिर में देवता की मूर्ति स्थापित करने की रस्म को स्थापना कहा जाता है , जो अगले दिन होने वाली थी।

'सुबह हो चुकी थी. बूढ़े आदमी ने मुझे जगाया और तुरंत वहाँ से चले जाने को कहा जैसे मेरा काम ख़त्म हो गया. मुझे एहसास हुआ कि मैं अब कोई सवाल न पूछने की उनकी शर्त से बंधा नहीं हूं। उस सवाल को याद करते हुए जो उसने शुरुआत में मुझसे पूछा था, आखिरकार मैंने उसका जवाब दे दिया। “आपने मुझसे पूछा था कि मैं यह किसके लिए कर रहा था, याद है? मुझे नहीं पता था कि यह मंदिर किस देवता के लिए बनाया जा रहा है, इसलिए मैंने इसे देवत्व के लिए नहीं बनाया। इस जगह को छोड़ने के बाद, मैं अपने जीवन के साथ आगे बढ़ूंगा, इसलिए मैंने निश्चित रूप से यह अपने लिए नहीं किया। वह तुम्हें छोड़ देता है, इसलिए मैंने इसे तुम्हारे लिए बनाया है।”

'भारी पत्थर के दरवाजे पर नजर डालते हुए मैंने पूछा, " तुमने इसे किसके लिए बनवाया है?"

''मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं लेकिन आप दो उत्तर चाहते हैं। मैं केवल एक ही उत्तर दूँगा, उसके बाद तुम्हें चले जाना होगा। स्वयं निर्णय करें कि कौन सा प्रश्न आपके लिए अधिक महत्वपूर्ण है,'' असभ्य और जिद्दी बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।

'लेकिन मैंने उनसे सिर्फ एक ही सवाल पूछा था, इसलिए मैं उलझन में था। मैं उनसे पूछना चाहता था कि दूसरा क्या था, लेकिन उनके रूखे व्यवहार को देखते हुए, मुझे पता था कि मेरे पास मेरे प्रश्न और शून्य उत्तर दोनों रह जाएंगे।

'"जल्दी करो! मुझे स्थापना की कार्यवाही शुरू करनी है। मेरे पास नहीं है आपको जवाब देने के लिए सारा दिन इंतजार करना पड़ा,'' बूढ़ा धैर्य खो रहा था।

Machine Translated by Google

'इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, एक भटकता हुआ विद्वान वहां रुका और उससे पूछा, "क्या आप जानते हैं कि नानशाद यहां कौन है?"

'मैंने चौंका देने वाले एहसास के साथ बूढ़े आदमी की ओर देखा - दो सवालों से उसका यही मतलब था ! विद्वान ने कुछ क्षण तक प्रतीक्षा की लेकिन जब उसे कोई उत्तर नहीं मिला तो वह किसी और से पूछने के लिए दूसरी ओर चला गया। मैंने अपना मौका लेने का फैसला किया।

''मेरे पहले प्रश्न का उत्तर दो,'' मैंने चौड़ी, आशा भरी आँखों से कहा।

'कर्क उस पर चढ़ गया और उसके कंधे पर बैठ गया। उसने कर्क की ओर देखा, उसे अपनी ठुड्डी के नीचे सहलाया और आह भरते हुए कहा, "मैं वह नाम हूं जो तुम्हें बिसरख तक लाया। मैं नानशाद हूं!

'और फिर वह मुझे चकित छोड़कर वर्जित कमरे में चला गया मेरी नजर उस पर टिक गयी. मैं जिस आदमी की तलाश में आया था, उसके लिए मैं पूरे साल काम करता रहा, बिना यह जाने कि वह वास्तव में वही था।

'भोर से शाम हो गई और जल्द ही तारे निकल आए। मैं बस वहीं बैठा रहा, उसके बाहर आने का इंतज़ार करता रहा। उस दिन से पहले कभी ननशाद इतनी देर तक घर के अंदर नहीं रहा था। आधी रात के काफी समय बाद, वह अंततः बाहर आया और मुझे वहीं खड़ा पाया जहां उसने मुझे छोड़ा था, उसकी अभिव्यक्ति में आश्चर्य का कोई निशान नहीं था। वह दरवाज़ा खुला छोड़कर वापस अंदर चला गया। एक साल में पहली बार मैंने अंदर झाँका। गर्भगृह से निकलने वाली ऊर्जा की एक अविश्वसनीय शक्ति ने मुझे घेर लिया। कई वर्षों के बाद, मैंने महसूस किया कि मेरे अंदर भी उसी स्तर का द्वेष और घृणा आ रही है, लेकिन इस बार क्रोध के साथ अपार शक्ति भी थी। मैं इतनी अधिक शक्ति अवशोषित कर रहा था कि मेरी नाक से खून बहने लगा। कुछ ही क्षणों में मेरी चेतना मेरे शरीर से निकल गई और मैं जमीन पर गिर पड़ा। मेरी आँखें पूरी तरह से बंद होने से पहले मैंने जो आखिरी चीज़ देखी वह एक धुंधली आकृति थी, और वह निश्चित रूप से नानशाद नहीं थी।

'जब मुझे होश आया तो मेरे आधे कपड़े खून से लथपथ थे। कर्क मेरी छाती पर बैठा था, मेरी आँखों में देख रहा था, और स्थापना पहले ही हो चुकी थी। मैं एक विशाल मूर्ति के सामने खड़ा हुआ, जो लगभग 20 फीट ऊंची थी, जिसके दस सिर थे और हथियार लहराते कई हाथ थे। इसे सोने के आभूषणों से ढककर उस मंच पर रखा गया था जिसे मैंने देवता के लिए बनवाया था। मूर्तिकला अपनी अभिव्यक्ति और मुद्रा में अत्यधिक तीव्रता प्रकट करती है।

''यह किसकी मूर्ति है?'' मैंने आश्चर्य की सांस लेते हुए पूछा।' इससे पहले कि

मिलारेपा नानशाद को उद्धृत कर सके, अश्वत्थामा ने चिल्लाकर कहा, 'रावण, लंका का राक्षस राजा।' ओम से नजरें मिलाते हुए उन्होंने आगे कहा, 'बिसरख उत्तर प्रदेश में अब ग्रेटर नोएडा में स्थित है और है

Machine Translated by Google

राजा रावण का जन्मस्थान माना जाता है। इस भूमि पर बहुतायत में प्राचीन मंदिर हैं। स्वयंभू* शिव लिंग, जिसकी पूजा रावण और उसके पिता विश्रवा द्वारा की जाती थी, एक शताब्दी पहले वहां पाया गया था। यह आकार में अष्टकोणीय है। लिंग जमीन से 2.5 फीट ऊपर फैला हुआ है और कथित तौर पर नीचे 8 फीट तक फैला हुआ है। यह एक बड़े बरगद के पेड़ के पास बने मंदिर में प्रतिष्ठित है और इसमें संगमरमर से बना एक आंगन है जहां भक्त रोजाना पूजा करते हैं।' मिलारेपा ने सहमति में सिर हिलाया और कहा, 'मैंने इसे खोदकर बनाया है

1135 से पहले का गर्भगृह। अब, राक्षस राजा को समर्पित एक नया मंदिर निर्माणाधीन है, जिसमें 42 फीट का शिव लिंग और 5.5 फीट की रावण की मूर्ति शामिल है। मुझे कभी पता नहीं चला कि मैं रावण के मंदिर के विकास पर मेहनत कर रहा हूं।'

'लेकिन मैंने आपसे पूछा कि आप मेरे बारे में कैसे जानते हैं। इन सबका क्या लेना देना मेरे और मेरे प्रश्न के साथ क्या करें?' ओम की अधीरता स्पष्ट थी.

'तुम्हारे लिए यह जानना जरूरी है कि मैं नानशाद से क्यों और कैसे मिला और वह कौन था, क्योंकि इसका सब कुछ तुमसे और तुम्हारे सवाल से जुड़ा है। तो ध्यान से सुनो. रावण को दासीस रावण, दासिस सकविथी, महा रावण, दशानन, लंकेश्वर, लंकेश्वरन, रावणासुर, रावणेश्वरन, ईला वेंधर और रावुला जैसे कई नामों से जाना जाता है।' 'हाँ मुझे पता है। इसलिए?' 'तो, "नानशाद" लिखो और इसे पीछे की ओर पढ़ो।' ओम ने अनुपालन किया। एक बार उल्टा लिखने और पढ़ने के बाद, ननशाद का नाम

दशानन हो गया, जो रावण के

लोकप्रिय नामों में से एक था।

मिलारेपा ने आगे कहा, 'रावण की तरह ननशाद के पास भी कई उपाधियां थीं। एक उनमें से नागेंद्र है - वह नाम जिससे आप उसे एक बार जानते थे।'

मिलारेपा के मुंह से नागेंद्र का नाम सुनकर ओम लड़खड़ा गया।

'फिर क्या हुआ?'

'तब? फिर दशानन की स्थापना के बाद मैं बिसरख से खाली हाथ चला गया,' मिलारेपा ने उत्तर दिया। इसके साथ ही, ओम की जिज्ञासा पहले से कहीं अधिक बढ़ गई। लेकिन वह इसमें अकेला नहीं था - वही जिज्ञासा परिमल और एलएसडी को उत्तेजित कर रही थी, जो उस समय कैलाश की ओर जा रहे थे।

दीघा समुद्र तट से यात्रा पूर्ण अर्धचंद्र से नौ दिन पहले शुरू हुई थी। अपने पहले पड़ाव के लिए नाथू ला दर्रे तक पहुँचने के लिए उन्होंने बाईस घंटे की यात्रा की थी।

Machine Translated by Google

रात में, वे एक एकांत मोटल में रुके। जल्दी-जल्दी खाना खाने के बाद उन्होंने नागेंद्र के कमरे में मिलने का फैसला किया। परिमल एलएसडी के पास खड़ा था, नागेंद्र के अगले निर्देशों की प्रतीक्षा कर रहा था, जिसका ध्यान एक पुरानी लकड़ी की मेज पर फैले नक्शे के फटे टुकड़े पर था।

नागेंद्र ने शुरुआत की. 'भारत से कैलाश पहुंचने के दो रास्ते हैं। कोई है उत्तराखंड में लिपुलेख दर्रे के माध्यम से और दूसरा सिक्किम में नाथू ला दर्रे के माध्यम से। लिपुलेख दर्रा पहले एक लोकप्रिय विकल्प हुआ करता था, लेकिन अब उत्तराखंड में बाढ़ के कारण यह क्षतिग्रस्त हो गया है। सिक्किम से होकर जाने वाला मार्ग नाथू ला दर्रे पर भारत-चीन सीमा को पार करता है।' नागेंद्र मार्ग पर अंकित बिंदुओं की ओर इशारा करते हुए रोडमैप समझाने लगे।

'कल नाथू ला से, हम कांगमा की यात्रा करेंगे, जो 185 किमी दूर है। फिर हम लाज़ी तक 295 किमी की दूरी तय करेंगे, और फिर झोंगबा तक 477 किमी की दूरी तय करेंगे। झोंगबा से अतिरिक्त 477 किमी हमें दारचेन और बाद में कुगु तक ले जाएगा।

'नाथू ला दर्रा से इस मार्ग में लगभग पांच दिन लगते हैं और एक रास्ता भी मिलता है कैलाश के लिए छोटा पारगमन। हम नाथू ला तक पहुंचने के लिए पहले ही नौ में से एक दिन बिता चुके हैं, जिससे हमें अर्धचंद्राकार रात में कैलाश तक पहुंचने के लिए आठ दिन बचे हैं। इसका मतलब है कि हमारे पास तीन दिन बचे हैं,' परिमल ने तर्क दिया।

'नहीं। हम पहले ही दो दिन देरी से चल रहे हैं और हमें इसकी भरपाई करनी होगी,'नागेंद्र ने उसे सुधारा।

'लेकिन आपने कहा था पांच दिन,' एलएसडी ने हस्तक्षेप किया।

'पहियों पर पाँच दिन। हम पैदल जा रहे हैं. कैलाश की यात्रा आदर्श रूप से ख (अप्रैल-मई) और कार्तिक वै नवंबर के महीनों के बीच किया गया)। ट्रेकर्स को सलाह (अक्टूबर-) है। दी जाती है कि वे मार्गशीर्ष (नवंबर-दिसंबर) से चैत्रचै (मार्च-अप्रैल) तक पांच महीनों में कोई अभियान न चलाएं क्योंकि वहां सांस लेना और जीवित रहना कठिन हो जाता है। हमने माघ (जनवरी-फरवरी) में यात्रा करने के लिए चुना है, जो उस अवधि में वर्ष का सबसे ठंडा और सबसे कठिन समय होता है। सड़कें अवरुद्ध हैं और हमारे गंतव्य तक कोई आवागमन नहीं है। यही कारण है कि हमें दस दिन या उससे भी अधिक की आवश्यकता है। वैसे भी, रात गहराती जा रही है। जाओ थोड़ा आराम करो, क्योंकि आज रात के बाद तुम्हें बहुत देर तक आराम नहीं मिलेगा। हम कल सूर्योदय से पहले निकलेंगे।'

नागेंद्र ने अपनी आँखें बंद कर लीं और ध्यान करने के लिए बैठ गए, यह दर्शाता है कि उन्होंने दिन के आखिरी प्रश्न का उत्तर दे दिया है। सुबह चार बजे, टीम कांगमा के लिए रवाना हुई और फिर लाज़ी के लिए रवाना हुई, जो कैलाश के रास्ते में अगले दो जंक्शन हैं।

नागेंद्र से लगभग 100 मीटर पीछे एलएसडी के साथ चल रहे परिमल ने देखा

Machine Translated by Google

आकाश में एक ढलता हुआ चंद्रमा दिखाई दिया, जिसका अर्थ यह था कि अर्धचंद्र को देखने के लिए मुश्किल से आठ दिन बचे थे।

'अर्धचंद्र की रात से क्या मतलब?' परिमल ने एलएसडी से पूछा.

'सही समय आने पर आपको उत्तर मिल जाएगा,' एलएसडी ने चलते समय संक्षेप में उत्तर दिया।

'और आप कौन है? इसका उत्तर पाने का सही समय कब है?' उनकी भौंहों पर बल पड़े।

एलएसडी ने अपनी ठुड्डी नागेंद्र की ओर बढ़ा दी, जो उनके आगे चल रहा था। 'आप उससे ये सारे सवाल क्यों नहीं पूछते ?' उसने यह मानते हुए चुनौती दी कि इससे वह चुप हो जाएगा।

जैसा कि उसका स्वभाव था, परिमल सोच रहा था कि नागेंद्र और मिलारेपा के बीच क्या संबंध हो सकता है। इसका कोई ऐतिहासिक विवरण नहीं था। वह अच्छी तरह जानता था कि वह सीधे तौर पर उससे मिलारेपा के बारे में नहीं पूछ सकता था। इसलिए उन्होंने इस प्रश्न को अर्धचंद्र के बारे में प्रश्न के रूप में छिपाने का निर्णय लिया।

इसलिए, उन्होंने अपने दिमाग में प्रश्न का मसौदा तैयार करना शुरू कर दिया। अर्धचंद्राकार रात करीब आ रही थी, इसलिए कम से कम यह प्रश्न पूछने का समय वास्तव में सही था; हो सकता है कि इससे उसे मिलारेपा के बारे में भी कुछ उत्तर जानने का रास्ता मिल जाए।

भ्रमित एलएसडी ने परिमल को नागेंद्र की ओर अधिक तेजी से चलते देखा।

'आप क्या कर रहे हो?' वह फुफकार उठी.

'सही समय आने पर तुम्हें उत्तर मिल जाएगा,' परिमल ने नागेंद्र और अपने बीच की दूरी को कम करते हुए विजयी भाव से पीछे देखा। वह नागेंद्र के ठीक पीछे पहुंचा और बोला, 'तुम्हें हम पर भरोसा नहीं है, है ना?' नागेंद्र चलते रहे और उन्होंने जवाब दिया, 'यह सच नहीं है।' परिमल को यकीन था कि उसने

एक ऐसी बातचीत शुरू की है जो उसे मिल सकती है

कुछ उत्तर, और इसलिए उन्होंने आगे कहा, 'एलएसडी का कहना है कि आप हमें कुछ भी नहीं बताते हैं क्योंकि आप हम पर भरोसा नहीं करते हैं।' नागेंद्र

के चेहरे पर कोई भाव नहीं था और उन्होंने जवाब दिया, 'और वह क्या है जो आप जानना चाहते हैं?' परिमल ने चारों ओर एलएसडी की ओर देखा, जो अभी भी दूरी बनाए रखने और कुछ भी सवाल न करने के प्रोटोकॉल का पालन कर रहा था।

'मैं जानना चाहता हूं कि अर्धचंद्राकार रात्रि से कैलाश पर्वत का क्या संबंध है। वह आपसे आपके और कैलाश पर्वत पर चढ़ने वाले व्यक्ति के बीच संबंध के बारे में पूछने से डरती है।'

नागेन्द्र अचानक रुके और बोले, 'आपके दो प्रश्न हैं; मैं उनमें से केवल एक का उत्तर दूँगा। आप स्वयं निर्णय करें कि कौन सा प्रश्न अधिक है

Machine Translated by Google

आपके लिए महत्वपूर्ण है, और मैं इसका उत्तर दूंगा।'

नागेंद्र के ठहराव को प्रतिबिंबित करते हुए, परिमल भी दूरी बनाए रखते हुए अपने ट्रैक पर रुक गया। उन्होंने एक पल के लिए सोचा और फैसला किया कि अर्धचंद्र का रहस्य तब सुलझ सकता है जब वे अपने गंतव्य पर पहुंचेंगे, लेकिन उस आदमी के बारे में पूछने के लिए शायद कोई और खिड़की नहीं होगी जो रहस्यमय कैलाश पर्वत पर चढ़ गया था। तो उन्होंने घोषणा की, 'मुझे उनके प्रश्न का उत्तर चाहिए।'

'अचे से।' नागेन्द्र ने परिमल को पास आने का इशारा किया और मुँह सिकोड़ने लगा उसकी दासता के स्मरण पर. 'सबसे पुराने दशानन मंदिरों में से एक का निर्माण करते समय मेरी मुलाकात बिसरख में मिलारेपा से हुई। उन्होंने निस्वार्थ भाव से मंदिर निर्माण में मेरी मदद करके मेरा दिल जीत लिया और स्थापना के बाद खाली हाथ चले गए। लेकिन मैं । . . हम उसे जाने नहीं दे सकते थे. उन्हें पता ही नहीं चला कि बिसरख में उनका ही नहीं हमारा भी काम पूरा हो गया। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि जब वे एक मार्गदर्शक और गुरु की तलाश कर रहे थे, तो हम भी वहां सही प्रतिभावान और साथी की प्रतीक्षा कर रहे थे। मिलारेपा को इस बात का अहसास नहीं था कि वह हमें ढूंढने वाला व्यक्ति नहीं था; हमने उसे ढूंढ लिया। तो, गाइड ने पथिक का पीछा किया। हाँ, हमने बिसरख से लेकर इस देश की उत्तरी सीमाओं तक महीनों तक मिलारेपा का पीछा किया जब तक हमें विश्वास नहीं हो गया कि वह विश्वसनीय हो सकता है। आख़िरकार, जब उसने पूरी तरह से हार मान ली और सीमा पार जाने ही वाला था, हमने फिर से उसका रास्ता पार किया और उसे अपने कब्जे में ले लिया। वह पहले एक अच्छे छात्र थे। बाद में, वह हमारे दो सबसे प्रतिभाशाली लोगों में से एक बन गया और फिर दूसरा सबसे भरोसेमंद विश्वासपात्र बन गया, जब तक कि उसने हमें विश्वासघात का सबसे गहरा झटका नहीं दिया।'

'हम? हम? दो सर्वोत्तम प्रतिभाओं में से एक? दूसरा सबसे भरोसेमंद विश्वासपात्र? तुम किस बारे में बात कर रहे हो? पहला कौन था? क्या मुझसे कुछ छूटा?' परिमल हैरान था.

नागेंद्र ने उनकी सभी ताजा शंकाओं को शांति से सुना और कहा, 'मैंने तुमसे कहा था कि मैं ऐसा करूंगा केवल एक प्रश्न का उत्तर दो।' परिमल के पास अपने प्रश्नों को दबाने और नागेंद्र को बात पूरी करने देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

'हमारे निर्णयों पर कभी संदेह न करने का उनमें एक महान गुण था और इसलिए उन्होंने हम जो कुछ भी कर रहे थे उस पर कभी सवाल नहीं उठाया या तर्क नहीं किया। उसने हमारा विश्वास हासिल किया और हमने उसे वह सब कुछ सिखाया जो हम जानते थे जब तक कि वह मेरे जैसा उत्साही नहीं बन गया। हमने मिलकर ओम को ट्रैक किया, उन स्थानों का सावधानीपूर्वक पता लगाया जहां हमें उसके बारे में संकेत मिले या उसकी उपस्थिति पर संदेह हुआ। हालाँकि, वह अपना नाम, पहचान और स्थान बदलता रहा, इसलिए मैंने भी ऐसा किया, लेकिन मिलारेपा ऐसा नहीं कर सका क्योंकि झूठ बोलना उसकी नैतिकता और नैतिकता के सिद्धांतों के अनुसार पाप था,

Machine Translated by Google

इसलिए उन्होंने चुप रहना ही चुना। वह हमारे मिशन के प्रति इतना शांत और विनम्र था कि उसने कभी उस आदमी का नाम भी नहीं पूछा जिसका हम पीछा कर रहे थे, या क्यों।
मिलारेपा, आदर्श साथी,' नागेंद्र उन दिनों को याद करते हुए आगे बढ़े।

'उनकी चुप्पी इतनी स्थिर थी कि लोगों ने मान लिया कि वह मूक हैं। लेकिन उनकी शांति को हमने अपने उद्देश्य के प्रति उनका ईमानदारी से अनुपालन समझ लिया।
ओम को पकड़ने में अनगिनत बार असफल होने के बाद, एक दिन, मिलारेपा ने कई वर्षों के बाद बात की। "शायद मैं आपकी बेहतर सेवा कर सकता अगर मुझे पता होता कि वह आदमी कौन है और उसके पास ऐसा क्या है जिसे हम इतनी शिद्दत से चाहते हैं।" हमने सोचा , अगर उसे पता होता तो शायद वह वास्तव में हमारी बेहतर सेवा कर सकता था , और इस तरह मिलारेपा के सामने हमारा सबसे बड़ा रहस्य खुल गया। हम उसे धारागिरी ले गए।' जबकि नागेंद्र ने परिमल से मिलारेपा
के बारे में बात की, वह कैलाश पर्वत की ओर जा रहा था, ऊपर पर्वत पर मिलारेपा था, वह ओम से नागेंद्र के बारे में बात कर रहा था।

'धारागिरी क्या है?' मिलारेपा ने उत्तर देने से पहले ओम की ओर देखा। उन्होंने इस भाग के बारे में बोलने का साहस जुटाया और अश्वत्थामा की ओर देखा, जिन्होंने ओम की ओर भी देखा। फिर उन्होंने संकेत दिया कि मिलारेपा को अपनी कहानी फिर से शुरू करनी चाहिए।

'धारागिरी झारखंड के घाटशिला जिले में एक झरना है। पूरा क्षेत्र जंगलों और पहाड़ियों से समृद्ध था, और मुझे नहीं पता था कि इतनी शानदार जगह इतनी बर्बरता का स्थल भी हो सकती है! झरने के पीछे छिपी हुई एक गुफा थी, जहाँ मैंने पहली बार एक आदमी को सबसे भयानक शारीरिक स्थिति में देखा, जिसकी किसी इंसान ने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैंने चट्टानों के बीच एक दरार से उसे देखा, जहाँ वह नहीं देख सकता था मुझे।

वह साँस ले रहा था लेकिन न तो जीवित था और न ही मृत। वह इतना पतला और विकृत था कि मुझे उसे देखते रहने में भी तकलीफ होती थी। मैंने ननशाद से पूछा, "वह कौन है?"

''वह वही है जिसने ओम को भागने दिया। वह धन्वंतरि हैं,'' ननशाद ने समझाया।

ओम को उन बेतुके शब्दों पर विश्वास नहीं हो रहा था जो वह सुन रहा था। कोई उन्हें बता रहा था कि धन्वन्तरि इतने समय तक जीवित रहे थे!

'उस समय, मुझे तुम्हारे और तुम्हारे अनंत अस्तित्व के बारे में कोई अंदाज़ा नहीं था। ननशाद ने आपकी रचना से लेकर आपके भागने तक की सारी बात बताई जब उसने धन्वंतरि पर आक्रमण किया था और -'

'सुश्रुत. . .' ओम ने कहा, उसकी भावनाएँ उसकी आवाज़ को दबा रही थीं।

Machine Translated by Google

'उसने तब से धन्वंतरि को जीवित रखा था, प्रताड़ित किया और उसके लिए फिर से मृत संजीवनी की पुस्तक लिखने के लिए मजबूर किया क्योंकि मृत्यु से बचने के लिए उसके पास केवल यही दो विकल्प थे।' धन्वंतरि की स्थिति के बारे में जानना ओम के लिए न केवल कष्टकारी था, बल्कि हतप्रभ भी था।

कैलाश के रास्ते में, नागेंद्र ने बताया, 'मैं जीवित था लेकिन मेरा शरीर भीतर से सड़ रहा था, क्योंकि ओम के विपरीत, मैं उम्र बढ़ने से नहीं रोक सकता। हालाँकि मैं इस प्रक्रिया को इस हद तक धीमा करने में कामयाब रहा कि मैं कई वर्षों की अवधि में एक दिन के बराबर बूढ़ा हो रहा था, लेकिन मेरे शारीरिक रूप में समय की कमी हो रही थी। मैंने मिलारेपा के साथ सब कुछ साझा किया ताकि वह ओम की खोज और धन्वंतरि से जानकारी प्राप्त करने, दोनों की तात्कालिकता को समझ सके। मिलारेपा ने वादा किया कि वह मेरे लिए किताबें लाने के लिए सब कुछ करेगा। हमने मिलकर मिलारेपा को गुप्त रूप से धन्वंतरि के कक्ष में एक अन्य कैदी के रूप में भेजने की योजना बनाई।

'चैंबर के अंदर, मिलारेपा ने ऐसा दिखावा किया कि वह बोल नहीं सकता। जीतने के लिए उन्होंने धन्वंतरि के हृदय की देखभाल की, उसे साफ किया और खाना खिलाया, लेकिन धन्वंतरि ने एक शब्द भी नहीं कहा। यह उन दोनों के बीच मौन का एक सूक्ष्म युद्ध था जबकि कार्क उनकी जेल की दीवारों पर मेरी आंखें और कान थे। दिन हफ्तों में और हफ्ते महीनों में बदल गये और जल्द ही कर्क की उस कालकोठरी में स्वाभाविक मौत हो गयी, लेकिन दोनों कैदियों के बीच कुछ भी ख़राब नहीं हुआ: न तो मिलारेपा का समर्पण और न ही धन्वंतरि की चुप्पी। आख़िरकार मैंने कार्क की जगह कुरूप को ले लिया।' 'कुरूप? इस बार कौन था?' परिमल ने पूछा.

'मेरा नया पालतू जानवर, एक

लकड़बग्घा!' 'उनमें एक चीज समान थी- जिद।' नागेन्द्र का जब वह मिलारेपा की कल्पना करता रहा तो उसका गुस्सा उबल रहा था लेकिन उसने अपनी हताशा पर काबू पाते हुए खुद को शांत किया।

'धन्वंतरि एक भी शब्द नहीं बोलते थे और मिलारेपा उनकी बात सुने बिना हिलते नहीं थे। दोनों में से कोई भी हार नहीं मान रहा था. अंततः, अठारह महीने की चुप्पी के बाद, धन्वंतरि ने मिलारेपा से बात की। हम उनकी बातें तो नहीं सुन सके, लेकिन कम से कम संचार की पहली बाधा तो टूट गई।

ठीक उसी समय, मिलारेपा द्वारा डिकोड किए गए ओम के यात्रा इतिहास के पैटर्न के आधार पर, हमें पता चला कि ओम को आखिरी बार अवंती में देखा गया था, जिसे अब उज्जैन के नाम से जाना जाता है और यह मध्य भारत में है।

'इस प्रकार, हमने कुछ दिनों के लिए धन्वंतरि और मिलारेपा की रक्षा के लिए कुरूप को छोड़ दिया और जानकारी की जांच करने के लिए अवंती की ओर चल पड़े।'

'तो इस तरह नागेंद्र ने मुझे अवंती में ढूंढ लिया?' ओम को एहसास हुआ.

Machine Translated by Google

मिलारेपा ने उत्तर दिया, 'हाँ! जब नानशाद ने मुझे उन शहरों के बारे में बताया जहां आप उस समय जा रहे थे, तो मैंने सोचा कि आपका प्रवास मनमाना नहीं था और मैंने उस पैटर्न को देखा जिसमें आप यात्रा कर रहे थे। आप प्रत्येक स्थान पर एक निश्चित संख्या में वर्षों के बाद एक नए नाम के साथ लौट रहे थे। , इलाके के सभी बूढ़े लोगों से मिलना, अपने बेटे के रूप में प्रस्तुत करना, और अगर मैं सही था, तो आप जिस अगली जगह की ओर यात्रा कर रहे थे वह फिर से अवंती थी।' 'मैं केवल भाग्य के कारण उस छापे से बाल-बाल बच गया। क्या हुआ जब वह

वापस आया?' ओम ने मिलारेपा से पूछा। वहीं, नागेंद्र परिमल के उस सवाल का जवाब दे रहे थे.

'जब हम वापस आये तो मिलारेपा जा चुका था। सब कुछ पाकर वह भाग गया था धन्वंतरि से जानकारी. मुझे प्रवेश द्वार पर कुरूप का शव मिला। कुरूप की हत्या कर दी गई. उसने हमें धोखा दिया; हमने उसे हमेशा गलत समझा था। वह सहयोगी के भेष में गद्दार था। वह चला गया था और उसके साथ, मृत संजीवनी तक पहुंचने के दो अवसरों में से एक भी चला गया था।' नागेंद्र के शब्द तो रुक गए लेकिन कदम फिर भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ गए।

'तो क्या उसने धन्वंतरि को बचाने के लिए कुरूप को मार डाला?' परिमल ने स्पष्टता प्राप्त करने के लिए उत्सुक होकर पूछताछ की। नागेंद्र ने परिमल की ओर देखा, जो उत्तर पाने के लिए उसके पास आ रहा था। यह याद करते हुए कि मिलारेपा के विश्वासघात के कारण उसकी हार हुई, नागेंद्र ने अचानक परिमल का गला पकड़ लिया। परिमल को होश नहीं आया और उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। नागेंद्र ने झटके से उसे अपने चेहरे के पास खींच लिया और उपहास किया, 'तुम्हें पता है, लकड़बग्घे सभी प्रकार के जानवरों को खाने में सक्षम हैं, चाहे वह उनका अपना शिकार हो या सड़ती हुई लाश - जंगली जानवरों और पक्षियों से लेकर छिपकलियों और सांपों तक, सब कुछ! इनके जबड़े हड्डियों को कुचलने के लिए काफी मजबूत होते हैं। लेकिन कुरूप ने कर्क नहीं खाया, मैंने खा लिया।'

परिमल का दम घुटने लगा. नागेंद्र की मौत की चपेट में आने के बावजूद उन्हें बोलने में संघर्ष करना पड़ा। 'मैं । . . सीए-साँस नहीं ले सकता!' एलएसडी एक दर्शक मात्र था और चुपचाप वहीं खड़ा रहा।

नागेंद्र ने अपने दूसरे हाथ से परिमल की जीभ को अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच कसकर दबाया और कहा, 'अगर तुम बोल नहीं सकते तो तुम एक बेहतर नौकर हो सकते हो। कुरूप की तरह. लेकिन आवाज़ की अनुपस्थिति आपको यह बताने की अनुमति नहीं देगी कि आप साँस नहीं ले सकते। आप अपना बचाव नहीं करेंगे. तो, आप देखिए, हर चीज़ दोधारी है, अच्छा और बुरा पक्ष, यहाँ तक कि आपकी जीभ भी।

यह आज आपको बचाता है, लेकिन कल यह आपको मौत की ओर धकेल सकता है।' नागेंद्र ने परिमल की गर्दन और जीभ को छोड़ दिया और वह तुरंत अपने घुटनों पर गिर गया, जोर से हांफने लगा। कहने से पहले नागेन्द्र उसके बगल में बैठ गया,

Machine Translated by Google

'एलएसडी ने उनमें से कोई भी प्रश्न नहीं पूछा—आपने किया! अगली बार जब तुम झूठ बोलोगे तो मर जाओगे।' उसे वहीं छोड़कर वह आगे बढ़ गया।

परिमल को अपनी बुद्धि एकत्रित करने में एक मिनट का समय लगा। एलएसडी ने आकर उसे हाथ देने की पेशकश की। उसने खुद को ऊपर खींचने के लिए उसकी धुंधली हथेली पकड़ ली और नागेंद्र को आगे बढ़ते देखा। नागेंद्र की अंगुलियों के गले पर गहरे निशान पड़ गए थे। अब उसे अपनी जगह का पता चल गया था क्योंकि वह फिर से एलएसडी के साथ चल रहा था, उसके दिमाग में धन्वंतरी के साथ क्या हुआ था के बारे में आखिरी सवाल घूम रहा था।

'तो धन्वंतरि ने तुमसे क्या कहा?' ओम ने पूछा.

'धन्वंतरि ने रोते हुए मुझसे कहा कि तुम इस दुनिया में अकेले हो
यह आवश्यक था कि परशुराम को आपके बारे में और यह भी पता हो कि आपके पास क्या है। तब मुझे अपने जीवन के उद्देश्य का एहसास हुआ, जिसे खोजने के लिए मैं सबसे पहले निकला था। यह नानशाद नहीं था जहां मेरी किस्मत छिपी थी; वह केवल यात्रा का एक हिस्सा था। मेरे जीवन में जो कुछ भी घटित हुआ वह मुझे धन्वंतरि तक ले गया ताकि मैं अपने जन्म का अंतिम कारण जान सकूं।

धन्वंतरि ही थे जिन्होंने मुझे ज्ञानगंज शहर के बारे में बताया और बताया कि परशुराम तक कैसे पहुंचा जाए, जिससे मुझे महान कैलाश पर चढ़ना पड़ा और मोक्ष प्राप्त हुआ। इसलिए, इतिहास की ये किताबें मिलारेपा को एकमात्र व्यक्ति के रूप में पहचानती हैं जो कभी कैलाश पर्वत पर चढ़ा था। ओम, अब तुम्हें पता चल गया होगा कि मैंने यह तुम्हारे लिए किया है। मैं तुम्हारे लिए परशुराम के पास पहुंचा।'
'धन्वंतरि के बारे में क्या? क्या तुमने उसे आज़ाद कर दिया?' ओम ने पूछा.

'मैं धन्वंतरि को पृथ्वी पर उस नरक में कैसे छोड़ सकता था? बेशक मैंने सेट किया
वह मुक्त. 'मैंने उसे मार डाला,' मिलारेपा ने पश्चाताप के संकेत के साथ उत्तर दिया।

ओम को ऐसा लगा मानो किसी ने उसके पेट में आग लगा दी हो। इससे पहले कि वह जानकारी को तर्कसंगत रूप से संसाधित कर पाता, वह जलते हुए गुस्से से मिलारेपा पर हमला करने लगा। अश्वत्थामा ने ओम को पकड़ने की जल्दी की, लेकिन बल मिलारेपा को जमीन पर गिराने के लिए पर्याप्त था। यह समझ कर कि ओम का गुस्सा जायज़ था, वह शांत होकर उठ गया। अश्वत्थामा ने ओम को सांत्वना देने के लिए उसके कंधों पर हाथ रखा, क्योंकि वह खुद को संभालने की कोशिश कर रहा था। ओम ने डबडबाती आँखों से पलट कर कहा, 'किताबें चली गईं। धन्वन्तरि की मृत्यु व्यर्थ हुई। हम युद्ध लड़ने से पहले ही हार चुके हैं। अब हमारे पास लड़ने के लिए कुछ नहीं है।' अश्वत्थामा धीरे से बोला, 'आप हमारे पास हैं। अब तक जो कुछ भी हुआ है वह बस हिमशैल का टिप है। तुम्हें यह अवश्य मालूम होगा कि जब तुम रॉस द्वीप पर समुद्र तट के पास चट्टानों पर मूर्छित पड़ी थी तो परशुराम ने मुझसे क्या कहा था। अगली बार जब हम नागेंद्र का सामना करेंगे तो आप ही हमारी रक्षा करेंगे। केवल आपमें ही यह याद रखने की क्षमता है कि आप पहले कौन थे

Machine Translated by Google

अमर हो जाना. यदि अभी भी लड़ने लायक कुछ है तो क्या होगा?
जब तक दुनिया है तब तक युद्ध ख़त्म नहीं होता. अगर अभी भी लड़ने लायक कुछ बचा है तो क्या आप लड़ सकते हैं?' 'और वह क्या हो सकता है?'

ओम ने निराशाजनक ढंग से उपहास किया।

'सवाल यह नहीं है कि इसके लायक क्या है ; सवाल यह है कि क्या आप लड़ सकते हैं?' ओम

निरुत्तर खड़ा रह गया। अश्वत्थामा ने आगे कहा, 'युद्ध का एक ही उद्देश्य होता है और वह है विजय। आपकी जीत की जिम्मेदारी मेरे हाथों में है।' आपको युद्ध के लिए प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आप तैयार हों।
आपकी ट्रेनिंग कल से शुरू होगी।'

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 4

एक शब्द और दो झीलें

'ओम के रक्त के नमूने की प्रकृति की पूरी तरह से जांच करने और इसकी अविनाशी प्रकृति का पूरा प्रमाण प्राप्त करने के बाद, तेज रोगजनकों के खिलाफ इसके प्रतिरोध का विश्लेषण करना चाहता था। उन्होंने प्रयोग करने के लिए अपनी प्रयोगशाला में मौजूद एक स्वस्थ गिनी पिग पूह को लिया और उसमें मारबर्ग वायरस का इंजेक्शन लगाया। श्रीमती बत्रा ने बताया, ''इसे कमरे में छोड़कर, तेज ने अपने पीछे का दरवाजा बंद कर लिया ताकि गिनी पिग बाहर न निकल सके।'' ऊपर का कमरा ढेर सारे उच्च-स्तरीय चिकित्सा उपकरणों और अलग-अलग दवाओं से भरा हुआ था, लेकिन किसी तरह अभी भी खाली लग रहा था। बीपिंग मॉनिटर की हल्की गड़गड़ाहट से हवा भर गई।

'यह उन दिनों के दौरान लिया गया था,' श्रीमती बत्रा ने आगे कहा
पृथ्वी को चित्र. पृथ्वी ने लंगड़ाती, नन्हीं श्रीमती बत्रा को बिस्तर पर दवाओं और मॉनिटरों से घिरी हुई देखा। उसका शरीर ऐसा लग रहा था मानो शून्य हो गया हो। 'मैंने तेज को आरामदायक मुस्कान के साथ कमरे में प्रवेश करते देखा, और बस एक पल के लिए मुझे शांति महसूस हुई। मैंने तुम्हें प्रेम किया। लेकिन अगले ही पल, दर्दनाक धड़कन वापस आ गई। मेरा सिर घूम गया और दर्द की एक ताजा लहर ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया, जबकि मेरी पीठ की मांसपेशियों में बेतहाशा ऐंठन होने लगी। कोई भी बाहरी व्यक्ति आसानी से इसे जब्ती समझने की भूल कर सकता था, लेकिन यह अलग था।

मल्टीपल स्केलेरोसिस के बारे में व्यापक शोध के बावजूद, मैं बचाये जाने के दायरे से बाहर था।

'तेज लगभग सेना की शक्ल में लाइन में लगे दवाओं के बड़े डिब्बे में पहुंचा और एक इंजेक्शन निकाला। उसने मेरा हाथ मजबूती से पकड़ रखा था और जैसे ही मेरी नसों में तरल पदार्थ भर गया, मैं फिर से स्थिर हो गई। उसे बेहतर महसूस कराने के लिए मैंने मुस्कुराहट जुटाई, लेकिन मेरी आंखें झूठ नहीं बोल सकती थीं। तेज उनमें देख सकता था कि वह मुझे खो रहा है, मेरी याददाश्त ख़त्म हो रही है। वह मेरे साथ बिस्तर पर चढ़ गया और मुझे एक बच्चे की तरह पकड़ लिया। मैं वहीं स्तब्ध पड़ी थी, मुझे कुछ भी पता नहीं था कि वह मेरा क्या इलाज कर रहा है, जबकि वह जानता था कि कोई भी दवा ऐसा नहीं कर सकती

मुझे बचाओ।

Machine Translated by Google

'कुछ घंटों तक तेज मेरे पास रहे। मेरे दुख को देखकर उसका दिल टूट गया, लेकिन मेरे साथ ही यह सब खत्म होने के विचार से वह और भी टूट गया।
जब भी दर्द असहनीय हो जाता था तो वह मेरे हाथों को कसकर पकड़ लेता था। मैं उसके साथ जीवन का एक और दिन जीने के लिए सांस लेता रहा और लड़ता रहा। जब उन्होंने बाद में घटना का जिक्र किया, तो उन्होंने बताया कि मुझे खोकर उन्हें कैसा महसूस हुआ था। पूह और मैं अपने जीवन के एक ही पड़ाव पर थे। हम दोनों मुश्किल से सांस ले पा रहे थे, हम मुश्किल से हिल पा रहे थे, हमारे प्राण तेजी से बिगड़ रहे थे। तेज अपनी बेसमेंट लैब में लौट आया। उसने पूह को अपनी कार्य-मेज पर रखा। यह चमत्कार का परीक्षण करने का समय था!

'तेज ने एक सिरिंज में ओम के खून के नमूने की एक बूंद ली और मरने वाले को इंजेक्शन लगा दिया इसके साथ गिनी पिग. पहले से अपराजित काली रक्त कोशिकाएं तेज की आखिरी उम्मीद थीं, उन्हें आना ही था!

'जब तेज ने गिनी पिग को दोबारा जांचा, तो उसने संघर्ष करना बंद कर दिया था
इसके लक्षणों की गंभीरता कम होती दिख रही है। प्रगति से खुश होकर उन्होंने राहत की सांस ली। आख़िरकार, वह अपने जीवन के प्यार को बचा सकता था।' मिसेज बत्रा ने ठंडी सांस लेते हुए पृथ्वी से कहा, 'वैसे भी, ओम और नागेंद्र के साथ आगे क्या हुआ?' पृथ्वी को अंदाज़ा हो गया था कि वह आगे कुछ भी कहने से झिझक रही है और उसे उस पर पूरा भरोसा करने के लिए

और समय चाहिए, इसलिए पृथ्वी ने अपनी कहानी सुनाना जारी रखा।

कई दिनों तक निर्बाध रूप से पदयात्रा करते हुए, नागेंद्र और उनकी टीम ने भोर में कांगमा और लाज़ी को पार किया। अगले पड़ाव झोंगबा और दारचेन थे, जो उन्हें कैलाश पर्वत के करीब ले आए।

इस बीच, कैलाश पर, सुबह की हवा हमेशा की तरह ठंडी थी और खुला मैदान ओम के प्रशिक्षण के पहले दिन के लिए पूरी तरह तैयार था। सूरज की उभरती हुई लालिमा रात की लुप्त होती कालीता के साथ सहजता से मिश्रित हो गई। अश्वत्थामा ओम को एक अस्थायी चट्टानी मंच पर ले आए जहां प्राचीन धातु के हथियारों का एक समूह सीधा रखा गया था। ओम आश्चर्यचकित खड़ा रह गया और उन्हें अंधेरे में चमकता हुआ देखता रहा। यह सेटअप उनकी उम्मीदों के बिल्कुल विपरीत था। उन्हें उम्मीद थी कि ऐसे हथियार उन्हें चलाने वाले योद्धाओं के साथ हमेशा के लिए गायब हो गए होंगे, या कम से कम अब तक पूरी तरह से जंग खा चुके होंगे, अगर उन्हें संरक्षित किया गया होता। लेकिन वे उसकी आंखों के ठीक सामने, गायब हुए योद्धाओं में से एक के साथ थे, जिन्होंने एक बार इन हथियारों का इस्तेमाल किया था।

ओम सावधानी से करीब आया, उसकी आँखें उन हथियारों में से प्रत्येक को स्कैन कर रही थीं बारीकी से. आख़िरकार उसकी नज़र बाणों से भरे तरकश पर पड़ी।

Machine Translated by Google

उसने ज़ोर से आश्चर्य किया, 'उन आधुनिक हथियारों का क्या जो आप मुझे द्वीप पर बचाने के लिए साथ लाए थे? वे पिस्तौलें और राइफलें इन साधारण तीरों से कहीं अधिक उन्नत और परिष्कृत थीं। क्या आप मुझे उनसे प्रशिक्षित नहीं करने जा रहे हैं? तुम क्यों लाए हो—'अचानक, जिस तीर की नोक को उसने अभी-अभी छुआ था, उसने उसे 40 फीट ऊपर हवा में उड़ा दिया। एक मिलीसेकंड में, 7,00,000 वोल्ट से अधिक, जो एक उच्च-तनाव ट्रांसमिशन तार में पाया जाता है, उसके पूरे शरीर में प्रवाहित हुआ और उसे जले हुए टोस्ट की तरह वापस जमीन पर फेंक दिया। यह सदमा एक सामान्य आदमी की जान लेने के लिए काफी था और ओम होते हुए भी ओम भी बमुश्किल बच पाया। उसके शरीर का दाहिना हिस्सा पूरी तरह से जल गया था, जिससे उसकी हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं, जिन पर उसकी त्वचा चिपकी हुई थी और उसकी नसें स्याही की तरह काली थीं। वह इतना गंभीर रूप से बर्बाद हो गया था कि वह अपने पैरों पर वापस खड़ा नहीं हो सका। वह ज़मीन पर लेटा हुआ कराह रहा था और समझने की कोशिश कर रहा था कि अभी क्या हुआ था।

जैसे ही ओम के घाव धीरे-धीरे अपने आप ठीक हो गए, अश्वत्थामा ने उसी तीर को अपने हाथ में पकड़ लिया, ओम की ओर चला और समझाया, 'क्योंकि आज कभी भी कल पर विजय नहीं पा सकता, और न ही आने वाला कल कभी जीत सकता है। सभी विज्ञानों की नींव प्राचीन विज्ञान है, जो अब ज्यादातर दुनिया भर में बिखरी किताबों में कैद है - कई तो नष्ट भी हो चुकी हैं। आधे से अधिक प्राचीन विज्ञान की खोज और व्याख्या अभी भी बाकी है। जो घोषित किया गया है वह वास्तव में उन सिद्धांतों और आविष्कारों की खोज है जिनके बारे में प्राचीन वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, चिकित्सकों और इंजीनियरों ने सहस्राब्दियों पहले ही प्रयोग किया था और उनके बारे में लिखा था।

सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा प्रशिक्षण, उपकरणों और प्रक्रियाओं का विशिष्ट वर्णन करते हुए सुश्रुत संहिता लिखी , जिसका आज भी शल्य चिकित्सा के समकालीन विज्ञान द्वारा पालन किया जाता है। आधुनिक आविष्कार प्रागैतिहासिक युग के दौरान विज्ञान की खोजों के अलावा और कुछ नहीं हैं, जिन्हें दुनिया अब पौराणिक कथा कहती है।
1903 में राइट बंधुओं द्वारा दावा किए गए तथाकथित हवाई जहाज के आविष्कार से पहले ही ग्रह के इस हिस्से में विमान उड़ाए गए थे। पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी, यानी 149,597,870 किमी, की गणना पहले ही की जा चुकी थी और हनुमान चालीसा में लिखी गई थी। युगों पहले, मेरे जन्म से भी पहले, 1653 के बाद नहीं। हम रामायण के पहले से ही नौ ग्रहों की प्रार्थना कर रहे हैं, 1608 में दूरबीन के आविष्कार के बाद से नहीं। क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि जिन लोगों ने विमान जैसी जटिल किताबें लिखी और लागू कीं जिस पुराण में आज के वैज्ञानिक भी प्रासंगिकता खोजने लगे हैं, उसमें कभी गुरुत्वाकर्षण की उपस्थिति पर विचार नहीं किया गया था, जिसे बाद में गुरुत्वाकर्षण बल कहा गया? क्या आपको लगता है कि एक व्यापक लेखन

Machine Translated by Google

क्या गुरुत्वाकर्षण बल की सटीक समझ के बिना उड़ान पर पुराण संभव होता? ब्रह्मगुप्त की पुस्तक ब्रह्मस्फुटसिद्धांत के एक संस्कृत श्लोक में कहा गया है, "एक पिंड पृथ्वी की ओर गिरता है क्योंकि यह पृथ्वी का स्वभाव है कि वह पिंडों को आकर्षित करता है, जैसे पानी का स्वभाव है बहना।"

यह कथन ब्रह्मगुप्त की गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा की समझ को इंगित करता है, जिसे बाद में एक अन्य भारतीय खगोलशास्त्री, भास्कर द्वितीय ने 1150 में अपनी पुस्तक सूर्य सिद्धांत में विस्तृत किया था। यह सब आइजैक न्यूटन से बहुत पहले हुआ था। ब्रह्मगुप्त की मृत्यु 668 ई. में हुई और भास्कर द्वितीय ने 1150 में अपनी पुस्तक लिखी। न्यूटन की प्रिंसिपिया, जो गुरुत्वाकर्षण का वर्णन करती है, 1687 में प्रकाशित हुई थी, जो 500 साल से भी अधिक समय बाद प्रकाशित हुई थी।

'समकालीन विज्ञान और आधुनिक तोपखाने का प्राचीन विज्ञान के ज्ञान और इन प्राचीन हथियारों की शक्ति और विनाश से कोई मुकाबला नहीं है। मैंने रॉस द्वीप पर आधुनिक हथियारों का उपयोग किया क्योंकि वे उन सभी हथियारों में सबसे कमजोर थे जिनमें मैंने महारत हासिल की थी। वे तुम्हें इंसानों से बचाने के लिए काफी थे, लेकिन आगे जो होने वाला है, उससे उन खिलौनों से नहीं लड़ा जा सकता।' इस समय तक, ओम के अधिकांश ऊतक ठीक हो चुके थे, लेकिन उसे अभी भी अपने पैरों पर खड़े होने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। अश्वत्थामा ने झुककर

अपनी बायीं बांह पर रुद्राक्ष बांध लिया। 'इसके साथ ही हम गुरु-शिष्य परंपरा की शुरुआत करते हैं।' अश्वत्थामा ने अपनी शिक्षा आरंभ करते हुए कहा, '' मैं तुम्हें उन सभी अस्त्रों के बारे में सिखाऊंगा जो मेरे पास हैं।''

'नियम नंबर एक: कभी भी ऐसे हथियार को न छुएं जो आपके पास नहीं है।
आप इसे तब तक नहीं पकड़ सकते जब तक यह आपको अनुमति न दे। अपने मालिक, वृषकापी के साथ पट्टे पर बंधे एक उग्र सेबरटूथ की कल्पना करें। यदि आप बाघ का पट्टा पकड़ने की कोशिश करेंगे तो क्या होगा? सेबरटूथ तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर देगा। वह अपने मालिक के अलावा किसी को भी अपने करीब नहीं आने देगा। आप उससे दोस्ती करने के बाद ही उसके साथ बातचीत कर सकते हैं। आप उसे तभी ऑर्डर कर सकते हैं जब आप उस पर महारत हासिल कर लें। ये हथियार, वे आपको सौंप देते हैं। लेकिन उससे पहले, आपको उन्हें जानना होगा, सीखना होगा और उन पर जीत हासिल करनी होगी। ये हथियार दिव्य हथियार हैं जिन्हें अस्त्र कहा जाता है और इन हथियारों के धारक को अस्त्रधारी कहा जाता है, जो कि आप स्पष्ट रूप से अब तक नहीं हैं।' इस समय तक, सूर्य आकाश में ऊँचा उठ चुका था, जिससे चमकता हुआ धातु का तीर अपनी चमक खो बैठा और एक साधारण, क्षत-विक्षत तीर में बदल गया, ठीक वैसे ही जैसे ओम ने पहले कल्पना की थी।

ओम ने चकित होकर उत्तर दिया, 'आपने अभी मुझे एस्ट्रा के बारे में जो बताया, वह मुझे पता था, लेकिन मैं नहीं जानता था कि वे अभी भी अस्तित्व में हो सकते हैं।' उसका शेष भाग जल गया

Machine Translated by Google

और खरोंचें ठीक होती रहीं और अश्वत्थामा ने उसे अपने पैरों पर फिर से खड़ा होने में मदद करने के लिए एक हाथ दिया।

'अस्त्र को बुलाने के लिए एक विशिष्ट मंत्र के उपयोग की आवश्यकता होती है। हर एस्ट्रा में है एक मंत्र जो इसे आदेश देता है और नियंत्रित करता है। एक बार जब मंत्र का पाठ किया जाता है, तो संबंधित देवता हथियार को दैवीय शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे नियमित तरीकों से मुकाबला करना असंभव हो जाता है। एस्ट्रा के उपयोग के लिए विशिष्ट शर्तें हैं, जिनका उल्लंघन घातक हो सकता है। इसमें शामिल महान शक्ति के कारण, गुरु-शिष्य परंपरा में अस्त्र का ज्ञान केवल मौखिक निर्देश द्वारा और छात्र की क्षमताओं का आकलन करने के बाद ही गुरु (गुरु) से शिष्य (अनुयायी) को दिया जाता है। कुछ अस्त्र इतने शक्तिशाली थे कि मंत्र का मात्र ज्ञान अपर्याप्त था, इसलिए उन्हें संबंधित देवता द्वारा सीधे सौंपना पड़ता था।

'अस्त्रों का व्यापक प्रयोग रामायण काल में आरंभ हुआ
महाभारत. फिर भी, हर योद्धा के पास अस्त्र नहीं थे। आप उनमें से कुछ लोगों से मिल चुके हैं जिन्होंने ऐसा किया था।'

अश्वत्थामा सही थे. ओम ने वास्तव में उनमें से कुछ से मुलाकात की थी, जिनमें शामिल हैं भगवान राम और भगवान लक्ष्मण; गंगा नदी के पुत्र भीष्म; द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा के पिता; कर्ण, सूर्य का आध्यात्मिक पुत्र; और अर्जुन, इंद्र के आध्यात्मिक पुत्र।

'तीन जिनके पास अभी भी अस्त्र हैं, वे हैं-परशुराम, कृपाचार्य और मैं।' जैसे ही हिंदू पौराणिक कथाओं के तीसरे अमर का नाम ओम के कानों पर पड़ा, उसकी आंखें चमक उठीं। 'कृपाचार्य? कहाँ है वह?' 'यह तो पता नहीं. वह तभी आता है जब जरूरत होती है और केवल मैं ही उसे

बुला सकता हूं

अश्वत्थामा ने गर्व के संकेत के साथ उत्तर दिया।

'खगोलीय अस्त्रों को आम तौर पर तीरों का उपयोग करके निकाला जाता है, हालाँकि वे ऐसा कर सकते हैं संभावित रूप से किसी हथियार या किसी अन्य चीज़ से उकसाया जा सकता है। मैंने अपने हथियार के रूप में घास के एक तिनके का उपयोग करके ब्रह्मशीर्ष अस्त्र का प्रयोग किया। इंद्र के पुत्र अर्जुन अकेले अपने मन की शक्ति से अपने सभी दिव्यास्त्रों को चलाने में सक्षम थे। अस्त्र को प्रकट होने के लिए उसे किसी भौतिक पात्र की आवश्यकता नहीं थी।' फिर अश्वत्थामा ने ओम को उन हथियारों के पास वापस लाया जो दिखने में अच्छे थे

सूरज की रोशनी में अहानिकर प्राचीन हथियार। वे केवल खाली बर्तन थे; उनकी शक्ति को दिव्य अस्त्रों के माध्यम से प्रसारित किया गया था।

'ये कुछ अस्त्र हैं जो मेरे पास हैं,' अश्वत्थामा ने एक हाथ में उठाते हुए कहा। 'यह वायुस्त्र है. यह एक तूफ़ान लाता है जो पूरी सेनाओं को ज़मीन से उठाने में सक्षम है। युद्ध के चौदहवें दिन

Machine Translated by Google

कुरुक्षेत्र, जब युद्ध सूर्यास्त के बाद भी जारी रहा, तो मैंने भीम के पोते और घटोत्कच के पुत्र अंजनपर्वन द्वारा बनाए गए भ्रम को तोड़ने के लिए इस हथियार का इस्तेमाल किया। अंतिम युद्ध में अर्जुन ने कर्ण के विरुद्ध वायुस्त्र का भी प्रयोग किया।' इतना कहकर अश्वत्थामा ने तीर वापस तरकश में रख दिया।

'अब, बैठ जाओ और पवन के देवता वायु का आह्वान करने के लिए ध्यान करो। यह करेगा
पूरे पांच दिन लग जाएं, इसलिए खुद को तैयार करें। मेरे बाद मंत्र दोहराओ।' अश्वत्थामा बैठ गया और जप करने लगा, ओम अपने शब्दों को दोहरा रहा था।
सारा खुला मैदान उनकी कम्पन से गूँज उठा। ज़मीन, घास, हवा, आकाश - सब कुछ एक जैसा लग रहा था।

दिन बीतते गए और मंत्र लगातार कैलाश पर गूँजता रहा। इस बीच, नागेंद्र और उनकी टीम, अपने भारी बैग के साथ, झोंगबा और दारचेन से आगे निकल गए, और अपने अंतिम गंतव्य के करीब पहुंच गए।

-14 डिग्री सेल्सियस के ठंडे तापमान में एलएसडी लगातार कांप रहा था और परिमल के साथ नागेंद्र के पीछे इलाके के अंतिम उतार-चढ़ाव में चल रहा था।

परिमल ने देखा कि नागेन्द्र रुक गया था और सामने का नजारा देख रहा था। परिमल और एलएसडी उनके साथ जुड़ गए। भव्य झील की सतह पर कैलाश पर्वत का प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था। वे कुछ देर तक वहाँ खड़े रहे, प्रशंसा करते रहे और शांति में डूबते रहे। डूबते सूरज के क्षितिज के साथ विलीन होने से झील की सतह पर एक अद्भुत, झिलमिलाता रंग जुड़ गया और ऐसा लगा कि पूरा ब्रह्मांड इसमें पिघल गया है। उनके आस-पास के वातावरण की ताजगी ने उनके संघर्षों और थकावट को दूर कर दिया।

समुद्र तल से 22,028 फीट की ऊंचाई पर, प्रकृति की गोद में बसे पवित्रता के उस निवास का दृश्य, एलएसडी और परिमल दोनों को आश्चर्यचकित कर गया।
किनारों के चारों ओर साफ नीले पानी और केंद्र में पन्ना-हरा रंग वाली रहस्यमयी झील ने उन्हें आनंद का एक क्षण दिया।

अपनी श्रद्धा से बाहर आते हुए, एलएसडी ने हांफते हुए कहा, 'तो, हम नहीं थे
कैलाश पर्वत की ओर जा रहे हैं? हम कहाँ हे?'

परिमल अब भी मंत्रमुग्ध होकर समझाने लगा.

'यह मानसरोवर झील है। संस्कृत में मानस का अर्थ है "मन" और सरोवर का अर्थ है "झील", जो संयुक्त रूप से "मन की झील" बनता है। हिंदू धर्मग्रंथों में कहा गया है कि ब्रह्मा ने अपने मन में इस झील की कल्पना की थी और बाद में इसे दृश्य रूप मिला, इसलिए इसे यह नाम दिया गया। मानसरोवर झील पवित्रता का प्रतीक है, और जो इसका पानी पीता है वह मृत्यु के बाद सीधे शिव के निवास पर जाता है। ऐसा माना जाता है कि उन्हें शुद्ध किया जाता है

Machine Translated by Google

सौ जन्मों में भी किये गये सभी पापों में से। समुद्र तल से इतनी ऊंचाई पर इतनी शानदार मीठे पानी की झील का अस्तित्व वास्तव में उल्लेखनीय है।' एलएसडी और परिमल दोनों अब नागेंद्र की ओर मुड़े, लेकिन उनमें से किसी ने भी

उनसे मौजूदा गतिरोध के बारे में कोई सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की।

नागेन्द्र ने उनकी ओर देखा और उनकी जिज्ञासा पढ़ी।

उन्होंने कहा, 'हम यहां एक शब्द की खोज के लिए हैं। . . रहस्यवादी का पहला शब्द वह जादू जो उन सभी को मुक्त कर देगा। चट्टानों के बीच एक ठिकाने की तलाश करें जो रात में हमारी रोशनी को छुपा सके, दो तंबू लगाएं और सही समय का इंतजार करें।' एलएसडी और परिमल बिना यह पूछे चुपचाप काम पर लग गए, 'किस रहस्यवादी जादू का पहला शब्द और किसको मुक्त करता है?' अर्धचंद्र की पूर्व संध्या पर, सूर्यास्त से ठीक पहले, ओम ने पांच दिनों के बाद अपनी आँखें खोलीं और

अश्वत्थामा को देखा, जिसने उसे खड़े होकर वायुस्त्र उठाने का निर्देश दिया। ओम थोड़ा झिझक रहा था। अश्वत्थामा मुस्कुराए और उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें दोबारा चोट नहीं पहुंचेगी। ओम ने वायुस्त्र उठाया और महसूस किया कि उसकी शक्ति उसके रक्त में प्रवाहित हो रही है। उसने यह किया था! अश्वत्थामा गर्व से अपने शिष्य की ओर देखकर मुस्कुराया और उसे गर्मजोशी से गले लगाया।

'बहुत अच्छा, ओम। अब सो जाओ। आप पाँच वर्षों से एक पलक भी नहीं सोए हैं रातें आपको आराम करने की जरूरत है। मैं तुम्हें कल भोर में देखूंगा,' अश्वत्थामा ने ओम को उनके लंबे ध्यान से मुक्त करते हुए कहा। ओम ने उसी तरह आदेश का पालन किया जैसे एलएसडी और परिमल ने अपने वरिष्ठ का पालन किया था।

सूरज वापस चला गया और धुंधलके की जगह अंधेरे ने ले ली। मानसरोवर का तापमान और भी कम हो गया। एलएसडी और परिमल को चट्टानों के बीच एक उपयुक्त ठिकाने में तंबू स्थापित करने का काम पूरा किया गया। जैसे ही वे समाप्त हुए, यह सोचकर कि उन्हें तीन के बजाय दो तंबू क्यों लगाने चाहिए, नागेंद्र आए और उन दोनों को मानसरोवर के पश्चिम में अपने साथ चलने का आदेश दिया। उन्होंने एक नज़र साझा की और अंधेरी रात में नागेंद्र के साथ शामिल हो गए। आकाश तारों से भरा था, लेकिन चंद्रमा अभी भी दिखाई नहीं दे रहा था। वे नागेंद्र के साथ घने अंधेरे में दौड़ते रहे। एलएसडी ने एक टॉर्च निकाली, लेकिन इससे पहले कि वह उसे चालू कर पाती, नागेंद्र ने उसे रोक दिया। 'उजाले का जश्न अंधेरे के डर से ही मनाया जाता है।' 'बुराई के बिना अच्छाई का कोई मूल्य नहीं है।'

चूंकि मानसरोवर सभी झीलों में से सबसे शांत थी, यहां तक कि सबसे खराब जलवायु परिस्थितियों में भी, शांति उनके चारों ओर की हवा में तब तक लिपटी रहती थी जब तक कि लहरों की आवाज शांति को चीर नहीं देती थी। वे कुछ और कदम आगे बढ़े। 'हम यहां मानसरोवर या कैलाश पर्वत के लिए नहीं आए हैं,' लहरों की आवाज के करीब जाते हुए नागेंद्र ने कहा।

Machine Translated by Google

जब वे मानसरोवर के पश्चिमी तट पर चल रहे थे, परिमल और एलएसडी को आश्चर्य हुआ कि आवाज़ संभवतः कहाँ से आ रही होगी। हर कदम के साथ लहरों का टकराना तेज़ होता गया। कुछ मिनटों के बाद उन्हें ऐसा लगा मानो वे किसी विशाल तट पर पहुँच गये हों। नागेन्द्र रुका और आसमान की ओर देखने लगा। एलएसडी और परिमल को आश्चर्य हुआ कि नागेंद्र क्या खोज रहा था। वे लगभग एक घंटे तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे जब आकाश चांदनी से धीरे-धीरे चमकने लगा, और फिर चंद्रमा अपने पूर्ण अर्धचंद्राकार रूप में उभरा, जिसने उनके चारों ओर की भूमि को चांदी की धुंध में रोशन कर दिया।

एलएसडी और परिमल की नज़र टकराती हुई लहरों की आवाज़ के स्रोत पर पड़ी जब नागेंद्र ने उन्हें संबोधित किया, 'हम यहां पहले शब्द के लिए आए हैं।' यह एक और झील थी जिसके पास वे अब खड़े थे, इसका किनारा सुंदर लेकिन जहरीले यूफोरबिया फूलों से ढका हुआ था जो रेत और बजरी के बीच उगे थे।

नागेंद्र ने आगे बताया, 'यह राक्षसताल है, जिसे रावण भी कहा जाता है झील या राक्षसों की झील. कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले भगवान शिव के प्रति भक्ति और ध्यान के माध्यम से महाशक्तियाँ प्राप्त करने के स्पष्ट उद्देश्य के लिए रावण द्वारा राक्षसताल का निर्माण किया गया था। वह शिव को प्रसन्न करने के लिए प्रतिदिन अपने दस सिरों में से एक सिर की बलि देता था। अंत में, दसवीं रात को, जब रावण ने अपना अंतिम सिर चढ़ाने का इरादा किया, तो शिव इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रावण को महाशक्तियों का उपयोग करने की उसकी इच्छा पूरी कर दी। यह एक अर्धचंद्राकार रात थी जब उनकी इच्छा पूरी हुई और इसलिए झील ने अर्धचंद्राकार आकार प्राप्त कर लिया। आज रात, सभी ग्रह और चंद्रमा उस रात की तरह बिल्कुल उसी स्थिति में संरेखित होंगे।

हजारों साल पहले, यह वही रात थी, वही महीना था जिसमें अर्धचंद्राकार चंद्रमा था जब रावण यहां शिव से मिला था। ऐसा कहा जाता है कि राक्षसताल चंद्रमा से काफी मिलता जुलता है। झील के सूनेपन की तुलना अक्सर चंद्रमा के खालीपन से की जाती है। मानसरोवर हमेशा शांत और अविचल रहता है, जबकि बहुत छोटा, अर्धचंद्राकार राक्षसताल हमेशा अशांत रहता है, चाहे मौसम कोई भी हो। जबकि मानसरोवर एक आकर्षक आभा बिखेरता है और स्नान और पीने के लिए प्रचुर मात्रा में अपना पानी देता है, कोई भी निकटवर्ती राक्षसताल के पास आने की हिम्मत भी नहीं करता है। वे इसके तूफ़ानी रूप से डरे हुए हैं। राक्षसताल के जल को छूना भी सख्त वर्जित है।' नागेंद्र ने अपने सारे कपड़े उतार दिए और अकेले ही ठंडे पानी में नग्न होकर चलने लगा। अपना आधा शरीर राक्षसताल में डुबाकर वह मुड़ा और परिमल को तैयार होने का आदेश दिया। परिमल ने अपने पास मौजूद बैग खोला

Machine Translated by Google

उसके साथ और एक गोताखोर का सूट निकाला। परिमल ने सूट पहना तो नागेंद्र प्रार्थना करने लगा. निषिद्ध जल में प्रवेश करने से पहले एलएसडी ने अपना बैग खोला और उसे दो पानी के अंदर बम दिए। नागेंद्र ने उन्हें आगे निर्देश दिया.

'मानसरोवर और राक्षसताल पर्वतों की पतली गर्दन से विभाजित हैं
यहाँ। यह गर्दन सदियों से इन जलों के नाम और प्रकृति में अंतर करती रही है, लेकिन अब नहीं। जाओ और पानी के भीतर सबसे कमजोर कड़ी की तलाश करो और उसे तोड़ दो। आपके पास अधिकतम तीन घंटे हैं. पहले शब्द की खोज आपका काम ख़त्म होने के बाद ही शुरू हो सकती है. हमें आज रात चाँद डूबने से पहले यह बात बतानी होगी। कोई दूसरा मौका नहीं है और इसलिए गलती की कोई गुंजाइश नहीं है। तीन घंटे हो गये! आप दूसरी तरफ देखिए।' परिमल ने आदेश का पालन किया और अपना ऑक्सीजन मास्क बांध लिया। पहले वह

डूबते हुए, वह एलएसडी की ओर देखने लगा और फिर भावशून्यता से उसमें डूब गया।
नागेंद्र पानी से बाहर निकले और अपने कपड़े पकड़कर एलएसडी की ओर चल दिए।
उसने कपड़े पहने और अपने पीछे एलएसडी लेकर वापस चला गया। वह अपने हाथ में पकड़े मॉनिटर पर परिमल पर नज़र रख रही थी। एक चमकता हुआ बिंदु परिमल की गतिविधियों और सटीक स्थान को दर्शाता है।

गहरे गहरे पानी में, परिमल को सबसे कमजोर स्थान मिला और उसने एक उन्नत और शक्तिशाली अर्थ बरमा के साथ सुरंग खोदना शुरू कर दिया। उसने लगभग दो घंटे में लगभग 20 फीट की खुदाई की और पानी के तल में एक प्राकृतिक गुहा पाया जहां वह एक बम रख सकता था, जिसके विस्फोट से व्यापक प्रभाव पैदा हो सकता था। उसने बम को ठीक किया और सुरक्षित दूरी बनाए रखते हुए डेटोनेटर हाथ में लेकर वापस तैर गया।

जब नागेंद्र मानसरोवर के शांत तट पर परिमल की प्रतीक्षा में ध्यान कर रहा था, एलएसडी का दिल हर गुजरते पल के साथ धड़क रहा था, उसकी आँखें मॉनिटर पर टिकी हुई थीं। इसमें मानसरोवर और राक्षसताल के बीच विशाल दीवार और उसके निकट जल में परिमल की स्थिति का संकेत दिया गया था। नागेंद्र आँखें बंद करके ध्यान करते रहे। अचानक, उन्हें महसूस हुआ कि उनके नीचे की धरती कांप रही है। एलएसडी तनावग्रस्त हो गया लेकिन नागेंद्र ने अपनी आँखें खोलीं और मानसरोवर की ओर मुस्कुराते हुए खड़े हो गए, किसी भी क्षण परिमल को देखने की उम्मीद में। लेकिन एलएसडी के मॉनिटर ने कुछ और ही प्रदर्शित किया।

परिमल पानी में वापस चला गया और विस्फोट वाले स्थान पर तैरकर पहुंच गया
जांचें कि काम पूरा हुआ या नहीं. यह नहीं था। झीलों के बीच की दीवार ने विस्फोट को झेला था। उसने अपनी घड़ी की जाँच की और जान गया कि समय समाप्त हो रहा है। उसने दीवार को छुआ और अपने तरंग पैमाने से उस मोटाई को मापा जिसे अभी तक भेदना बाकी था। शेष मोटाई हाल ही में नष्ट हुई दीवार से अधिक थी! उसने तुरंत दूसरे को बाहर निकाला

Machine Translated by Google

बम को नवगठित छेद के सबसे गहरे बिंदु पर लगाया और विस्फोट कर दिया।

एलएसडी और नागेंद्र को एक और भूकंप महसूस हुआ। यह झटका पिछले झटके से थोड़ा ही तेज था. एलएसडी के चेहरे पर छाया तनाव अब नागेंद्र के माथे पर भी दिखने लगा था।

तीन घंटे लगभग बीत चुके थे। नागेंद्र की नज़रें चंद्रमा और मानसरोवर के बीच इधर-उधर घूमती रहीं, जो अभी भी शांत था और परिमल के उभरने का कोई संकेत नहीं था। वह अभी भी राक्षसताल में था क्योंकि दूसरा बम भी दीवार को पूरी तरह से नष्ट करने में विफल रहा था। अब पानी के नीचे सिर्फ परिमल और उसके औज़ार थे। बिना समय बर्बाद किए, परिमल ने अंतिम परत को तोड़ने के लिए और खुदाई शुरू कर दी, जो कभी न खत्म होने वाला काम लग रहा था। उनकी ऑक्सीजन आपूर्ति तेजी से ख़त्म हो रही थी और उनका हाल भी ऐसा ही था।

नागेंद्र ने एलएसडी का संकेत दिया. उसने एक और डेटोनेटर और अपना डाइविंग सूट निकाला लेकिन उसे एहसास हुआ कि परिमल का समय खत्म हो रहा है। वह बस मानसरोवर में भाग गई और बम और डेटोनेटर हाथ में लिए बिना सूट के वहां पहुंच गई। मॉनिटर के सिग्नल के बाद, जो परिमल के सटीक स्थान और गहराई का संकेत देता था, एलएसडी परिमल के ठीक अनुरूप था, जो दीवार के विपरीत दिशा में था। उसकी सांसें फूल रही थीं और उसका दम घुटने लगा था, लेकिन उसने बम ठीक करना जारी रखा और अंत में डेटोनेटर दबा दिया। लेकिन जल्दबाजी में वह खुद को विस्फोटक से दूर नहीं कर पाई. यह फट गया; प्रभाव ने एलएसडी को झील की गहराई में फेंक दिया। इसके ठीक मुहाने पर होने के कारण, परिमल राक्षसताल की पहली भयंकर लहर के साथ मानसरोवर में बहता हुआ आया और उसने एलएसडी को बेहोश और डूबते हुए देखा। वह बेताबी से पानी पर चला, उसके करीब गया और उसकी डूबती हुई आकृति को पकड़ लिया। अंततः दीवार ढह गई और भयंकर राक्षसताल की लहरें शांत मानसरोवर की शांति को हमेशा के लिए नष्ट करने लगीं। वह झील जो कभी चमकते चाँद की तरह शांत थी, अब तीव्र कोलाहल से भरी एक गहन झील में बदल गई थी। नागेंद्र पहले व्यक्ति बने जिन्होंने मानसरोवर को अपना पूजनीय अस्तित्व खोते हुए और पृथ्वी के शेष जीवन के लिए राक्षसताल की ऊंची लहरों में पूरी तरह विलीन होते हुए देखा। यदि यह माना जाए कि मानसरोवर और राक्षसताल क्रमशः अच्छाई और बुराई के प्रतीक थे, तो उस रात बुराई ने निर्विवाद रूप से अच्छे को बेरहमी से हरा दिया था।

कुछ ही मिनटों में, परिमल पानी से बाहर निकली, एलएसडी को अपने बाएं हाथ से खींचकर किनारे पर ले आई, उसका शरीर एक लाश की तरह लंगड़ा था। उसने उसे लिटाया और तुरंत उसे मुँह से मुँह देकर पुनर्जीवन दिया। नागेंद्र दौड़कर पहुंचे

Machine Translated by Google

परिमल को एलएसडी पर सीपीआर करते हुए देखें। जैसे ही वह जीवित हुई एलएसडी जोर से हांफने लगी। नागेंद्र ने परिमल को उससे दूर खींच लिया, उसे ऑक्सीजन सिलेंडर का एक और सेट दिया और उसे अर्धचंद्र दिखाया जो तेजी से नीचे उतर रहा था, और उसे जल्दी से अपने साथ पानी में वापस जाने का आदेश दिया। परिमल ने डूबते चंद्रमा को देखा और जान लिया कि उसे नागेंद्र की आज्ञा का पालन करना होगा, इसलिए उसने एलएसडी को किनारे की चट्टानों पर छोड़ दिया।

जब एलएसडी ने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने परिमल और नागेंद्र को प्रवेश करते देखा फिर मानसरोवर की विशाल लहरों में लुप्त हो गई। उसे ऐसा लग रहा था मानों मानसरोवर शांति की आखिरी सांसों के साथ अपने अस्तित्व की हारी हुई लड़ाई लड़ रहा हो।

चमकदार अर्धचंद्राकार चंद्रमा उनके ठीक ऊपर था, अपनी चरम सीमा पर चमक रहा था, मानो किसी असाधारण घटना की सूचना दे रहा हो। वे पानी की गहराई में तैर गए, जहां नागेंद्र ने परिमल को अपनी हथेली चांदनी की ओर करने का इशारा किया, और उसे चेतावनी दी कि उसका हाथ बिल्कुल स्थिर रहना चाहिए।

जैसे ही परिमल ने निर्देशों का पालन किया, जैसे ही किरणों ने उसकी हथेली को छुआ, उसे असहनीय दर्द महसूस हुआ, जिससे वह लगभग पिघली हुई लोहे की छड़ की तरह लाल हो गई। वह पीड़ा से छटपटा रहा था और बमुश्किल अपनी चीख को नियंत्रित कर पा रहा था, लेकिन अपने हाथ को तब तक स्थिर रखने में कामयाब रहा जब तक कि उसकी हथेली का एक हिस्सा वास्तव में पिघल नहीं गया। प्रकाश अंदर घुस गया और उसके हाथ में एक छेद हो गया। उसकी हथेली के ऊपर बिखरी चांदनी प्रकाश की एक केंद्रित किरण में बदल गई। प्रकाश अपवर्तित होकर उनके दाहिनी ओर दूर एक स्थान पर गिरा।

नागेंद्र ने झील के तल तक किरण का पीछा किया और वहां आखिरकार उसे वह चीज़ मिल गई जो उसे वहां ले आई थी। चमकीली नीली लपटें समुद्र तल से थोड़ा ऊपर नृत्य कर रही थीं। वह लौ के करीब तैर गया और उस शब्द के चमकते अक्षरों को देखा जिसे वह इतने समय से खोज रहा था। यह शब्द 'अविनसी' (अविनसी) पढ़ता है। जैसे ही नागेंद्र ने चमकते शब्द को छुआ, अक्षर बिखर गए और जुगनू में बदल गए। वे अंधेरे आकाश में आतिशबाजी की फूटती चिंगारियों के समान थे। नागेन्द्र पानी के अंदर इस आश्चर्यजनक घटना को देखते रहे। फिर चमकते जुगनू नागेंद्र के शरीर में प्रवेश कर गए और वह बेहोश हो गए। परिमल ने उसे उठाया और किनारे पर लौट आया, जहां एलएसडी इंतजार कर रहा था। उनमें से प्रत्येक ने अपनी जान बचाने के लिए एक-दूसरे को धन्यवाद दिया।

जैसे ही एलएसडी ने परिमल की हथेली में घाव का पता लगाया, परिमल ने यह भी देखा कि जिस हाथ से नागेंद्र ने शब्द को छुआ था वह चांदनी में ठंढ की तरह चमक रहा था, जैसे कि सभी जुगनू उसने गहरे, शांत पानी में देखे हों

Machine Translated by Google

उसके हाथ के अंदर फंस गया था। इसका तात्पर्य यह था कि नागेन्द्र ने 'अविनसी' शब्द का प्रयोग किया था, जिसका अर्थ 'अविनाशी' होता था।

नागेन्द्र ने आँखें खोलीं तो देखा कि चाँद डूब गया था। आकाश अब केवल तारों से ही धँसा हुआ था। वह अपने पहले ही शिकार में सफल हो गया था।

एलएसडी और परिमल उसके ठीक बगल में खड़े थे, जबकि राक्षसताल मृत मानसरोवर के तट पर टकराती लहरों की आवाज के साथ गर्जना कर रहा था, मानो नागेंद्र के लिए तालियाँ बजा रहा हो। वह धीरे से खड़ा हुआ और उसने परिमल की बुरी तरह जली हुई हथेली को देखा।

नागेंद्र ने परिमल की हथेली पर अपना चमकता हुआ हाथ रखते हुए कहा, 'तितलियां मानव आंखों के लिए अदृश्य पराबैंगनी रंगों की एक श्रृंखला देख सकती हैं।' जैसे ही उसने ऐसा किया, छेद भरने लगा और आंशिक रूप से ठीक हो गया। 'एलएसडी! ठीक हो रहे घाव को साफ करके ढक दें, कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएगा,'' नागेंद्र ने हिदायत दी।

फिर वह रात के लिए लगाए गए दो तंबुओं में से एक की ओर गया। एलएसडी और परिमल वहीं खड़े होकर अपने अगले ऑर्डर के सेट का इंतजार कर रहे थे।

अपने तंबू में प्रवेश करने से ठीक पहले, नागेंद्र ने कहा, 'एलएसडी, क्योंकि आप ओव्यूलेट कर रहे हैं आज रात, यह आपके अंडे को निषेचित करने का सही समय है। मैं आपसे कार्तिक मास में परिमल की संतान चाहता हूँ; आपके पास नौ महीने हैं.

कल हम सूर्योदय से पहले निकल जायेंगे. एलएसडी के बच्चे के जन्म से पहले हमारे पास खोजने के लिए और भी शब्द हैं।' अंदर जाते ही नागेंद्र ने अपनी गोल धातु की बोतल से पानी का एक घूँट लिया, जिससे एलएसडी और परिमल स्तब्ध रह गए।

अब उन्हें पता चला कि नागेंद्र ने उन्हें केवल दो तंबू लगाने का आदेश क्यों दिया था।

एलएसडी ने चुप्पी तोड़ी और कहा, 'हाय! हमारा परिचय ठीक से नहीं कराया गया. हालाँकि मैं अभी आपको अपना नाम नहीं बता सकता, लेकिन आप यह जानने के पात्र हैं कि एलएसडी असली नहीं है। तो, आपकी कहानी क्या है?'

परिमल ने कंधे उचकाए, 'मैं तुम्हारे बारे में ऐसा नहीं सोचता।' 'मैं भी नहीं,'

एलएसडी ने आगे बढ़ने से पहले सौहार्दपूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए कहा, 'उसने हमें एक बच्चा पैदा करने के लिए कहा है, और शुक्र है कि प्यार में पड़ना गर्भवती होने की प्राकृतिक प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है।'

तंबू में घुसते ही गरजती हवा और चीखती लहरें रात के सन्नाटे को सताती रहीं।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 5
नागों का वंश

सुबह करीब पांच बजे ओम ने अपनी झोपड़ी के बाहर हंगामा सुना और झटके से जाग गया। उन्होंने सभी ऋषियों को किसी चीज़ की ओर भागते देखा और भीड़ में वृषभपि और मिलारेपा को देखा। उसने झट से अपना लबादा पहना और उन्हें पकड़ लिया।

'सब लोग कहाँ भाग रहे हैं?' उसने मिलारेपा से पूछा।

'मुझे यकीन नहीं है, लेकिन कुछ भयानक हुआ है।' ओम ने हवा की थपेड़ों के बावजूद मिलारेपा को पसीना बहाते देखा।

उसे जल्द ही एहसास हुआ कि वे पहाड़ के दक्षिणी किनारे की ओर जा रहे थे, जहाँ वह अश्वत्थामा और परशुराम की पीठ को अस्पष्ट रूप से देख सकता था। ओम द्वारा उठाए गए हर कदम के साथ लहरों की दूर की आवाज़ तेज़ होती गई।

'क्या हुआ है? यह शोर कहां से आ रहा है?' ओम ने पहुंचते ही पूछा.

परशुराम चुप खड़े रहे। उसकी आंखों से साफ लग रहा था कि भले ही वह स्थिर खड़ा था, उसके विचार सामने कठोर लहरों की तरह अशांत थे। उसके स्थान पर अश्वत्थामा बोला। 'किसी ने मानसरोवर को नष्ट कर दिया है।'

मिलारेपा असमंजस में था। 'नष्ट किया हुआ? आपका क्या मतलब है? मानसरोवर है एक नहीं. . . पानी का बर्तन! यह एक जलराशि है! 400 वर्ग किमी के सतह क्षेत्र के साथ!' किसी ने जवाब नहीं दिया. तब तक चट्टान पर भीड़ जमा हो गई थी, सभी संत गंभीर और व्यथित दिख रहे थे। हर कोई निश्चल खड़ा था, मानो किसी प्रियजन की मृत्यु पर मौन धारण कर रहा हो।

जैसे-जैसे सूर्योदय करीब आ रहा था और आकाश हर गुजरते पल के साथ उज्जवल हो रहा था, अंततः सभी ने कैलाश की चोटी से तबाही देखी। जहां कभी मानसरोवर था, वहां अब एक और भी बड़ी झील दिखाई दे रही थी। ब्रह्मा की कल्पना से उत्पन्न झील अब रावण झील द्वारा भस्म हो गई थी।

Machine Translated by Google

'यह बर्तन के आकार के बारे में नहीं है, बल्कि यह है कि भीतर क्या संरक्षित है,' परशुराम बोले। 'झील की आत्मा का अपहरण कर लिया गया है। आत्मा के बिना शरीर कैसा? यह अब जल निकाय नहीं रहा; यह एक मृत शरीर है,' उसने गंभीर रूप से घोषणा की और अचानक चला गया।

ओम ने देखा कि परशुराम एक अज्ञात रास्ते पर लड़खड़ाते हुए चले गए। 'कौन इसे किया? क्या हो रहा है? और ऐसे समय में परशुराम कहां जा रहे हैं?' इस विनाशकारी घटनाक्रम से वह पूरी तरह घबरा गये।

अश्वत्थामा की दृष्टि भी प्रस्थान कर रहे परशुराम पर टिकी थी। 'वह उस आदमी को लाने जा रहा है जिसके पास हमारे सवालों के जवाब हो सकते हैं। धन्वंतरि के बाद केवल एक ही व्यक्ति है, जिसके पास सभी उत्तर हैं। वह पिछले 5400 वर्षों से अमरनाथ की एक गुप्त गुफा में गहन तपस्या कर रहे हैं और अब परशुराम उन्हें जगाने जा रहे हैं।' 'कौन?' ओम ने आश्चर्य करते हुए पूछा।

'अभी जो मायने रखता है वह आपका प्रशिक्षण है। हम इसमें तेजी लाएंगे,' अश्वत्थामा ने उत्तर दिया।

ओम की चेतना में कई सवाल घूम रहे थे, लेकिन इससे पहले कि वह उस जाल में उलझ पाता, वृषभपि ने उस पर हमला कर दिया। अचंभित होकर, ओम ने खुद का बचाव करने की कोशिश की, लेकिन वह अपने हमलों का मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं था; प्रभाव ने ओम को जमीन पर धकेल दिया। यह सोचकर कि अश्वत्थामा उसकी मदद क्यों नहीं कर रहा है, वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसने देखा कि अश्वत्थामा चुपचाप खड़ा था, अपनी अगली चाल का इंतजार कर रहा था क्योंकि वृश्चिक ने फिर से ओम पर हमला किया था। सूरज उग चुका था और ओम को एहसास हुआ कि दिन के लिए उसका प्रशिक्षण पहले ही शुरू हो चुका था, बिना किसी चेतावनी के, और वह हनुमान के कबीले के बचे हुए प्राणियों में से अंतिम के साथ युद्ध के बीच में था, जो एक सेबरटूथ से भी अधिक मजबूत था।

परशुराम मानसरोवर के तट पर खड़े थे। उसे खाली मिला ऑक्सीजन सिलेंडर, भोजन के पैकेट, तम्बू के लंगर और माचिस की डिब्बी जैसी अन्य चीजें, लेकिन उन पर दावा करने वाला कोई आदमी नजर नहीं आया। जब परशुराम वहां खड़े थे, सोच रहे थे कि यह कौन हो सकता है, परिमल उसी फटे हुए नक्शे का एक और टुकड़ा पकड़े हुए मानसरोवर के पश्चिम की ओर जा रहा था, जो नागेंद्र ने उसे दिया था, और जो उनके अगले गंतव्य को उजागर करता था।

नागेंद्र उसके पीछे-पीछे चल रहा था जबकि एलएसडी दोनों के पीछे-पीछे चल रहा था।

जबकि ये दोनों पक्ष अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभा रहे थे, किसी को नहीं पता था कि डॉ. बत्रा किस काम में व्यस्त थे। यह डॉ. बत्रा की प्रगति और विफलता की कहानी बताने के लिए पृथ्वी की ओर से श्रीमती बत्रा को दिया गया बयान कम और संकेत अधिक था।

Machine Translated by Google

दो और दिनों के बाद, डॉ. बत्रा फिर से गिनी पिग की जांच करने गए। 'एक सप्ताह हो गया था और वह पूह को पूरी तरह से ठीक होते देखने की उम्मीद कर रहा था।
लेकिन लैब में प्रवेश करने पर उन्होंने देखा कि यह टेबल के नीचे बेहोश पड़ा हुआ था। उन्होंने इसकी जांच करने के लिए इसे उठाया और यह स्पष्ट था कि ये ठीक होने के नहीं बल्कि मृत्यु के संकेत थे। और फिर, वहीं तेज के हाथ में, पूह का निधन हो गया,' श्रीमती बत्रा ने बताया।

'यह नहीं हो सकता, ' तेज ने सोचा और उसका दिमाग तेजी से दौड़ने लगा। यह बेहतर हो रहा था; लक्षण कम हो गये थे; यह दर्द से संघर्ष नहीं कर रहा था। उनका प्रयोग अपनी पत्नी को बचाने का इलाज खोजने के इतना करीब पहुंच गया था, लेकिन क्या यह सब व्यर्थ था? यह नहीं हो सकता!

'उसने पूह की लाश को अपने हाथों में पकड़ रखा था। वह इतना टूट गया कि पूरी तरह टूट गया। तेज एक वैज्ञानिक व्यक्ति थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन चिकित्सा के क्षेत्र में समर्पित कर दिया था, और जिन्होंने शुरू में ओम की "कहानियों" पर विश्वास करने से इनकार कर दिया था लेकिन फिर भी उन्होंने उन पर अपना विश्वास रखा था; उसने सब कुछ पर विश्वास किया, लेकिन अंत में हार गया। वह ख़ुद से नाराज़ था, हालात से नाराज़ था, नाराज़ था कि वह मुझे बचा नहीं पाएगा। क्रोध और हताशा की भारी सिसकियाँ उसके अंदर फूट पड़ीं। वह वास्तव में सबसे निचले पायदान पर पहुंच गया था।

'वह मुझे दर्द से छटपटाता हुआ देखकर ऊपर की मंजिल पर लौटा। तमाम इंजेक्शनों और दर्दनिवारकों के बावजूद दर्द सहन करना असंभव था। लेकिन तेज के दर्द का परिमाण मेरे दर्द से कहीं ज़्यादा था क्योंकि वह बेबसी का दर्द झेल रहा था। मैं इसे उसके चेहरे पर देख सकता था।

''तेज, मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम्हें मुझे जाने देना होगा!" मैं भी उसकी तरह बुदबुदाया मेरा हाथ मजबूती से पकड़ लिया. तेज अपना दुःख रोक नहीं सका। जैसे ही वह मुड़ा और कमरे से बाहर चला गया, उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

'वह कुछ मिनटों के लिए तहखाने में चुपचाप बैठा रहा, खुद को शांत किया और दृढ़तापूर्वक उठ गया। उसने वह फ्रीजर खोला जहां ओम का खून का नमूना रखा हुआ था। उसने बचा हुआ सारा खून एक सिरिंज में ले लिया, शयनकक्ष में आया और मुझे लाड़-प्यार करने लगा और उसके होंठ एक उदास मुस्कान में बदल गए।

''कृपया तेज, मुझे इस दर्द से छुटकारा दिलाओ। कृपया मुझे मरने दीजिए।''

'उसने नींद की दो गोलियाँ निकालीं और एक गिलास पानी लाया। उसने सहारा दिया मुझे ध्यान से तकिए पर बिठाया और उन्हें मुझे सौंप दिया। जैसे ही मैंने उन्हें निगल लिया, तेज अपने आंसुओं के बीच मुस्कुराया और मेरा हाथ दबा दिया। मैं फिर लेट गया और देखा कि उसका फिगर फीका पड़ रहा है। आखिरी बात जो मुझे याद है वह है उसकी ओर मंद-मंद मुस्कुराना। मैं जानती थी कि तेज भी मुझे अब और तड़पता नहीं देख सकता और वह सचमुच मुझे रिहा कर रहा है। जब मैं सो गई तो उसने मुझे ओम का खून लगाया। यह मात्रा कम से कम मुझे दर्द रहित मौत देने के लिए पर्याप्त थी

Machine Translated by Google

और कुछ नहीं तो गिनी पिग में देखा गया। जैसे ही मैं दूसरी दुनिया में पहुंचा, वह मेरे पास बैठा। हृदय मॉनिटर के सपाट हो जाने से मशीनों की बीप बंद हो गई। कई दिनों तक मेरे पास जागने के कारण तेज थकावट के कारण मेरे पास ही सो गया।' पृथ्वी की कथा के अनुसार, परशुराम हिंदू तीर्थस्थल अमरनाथ की यात्रा के लिए पहलगाम शहर जा रहे थे, जो मानसरोवर के

उत्तर-पश्चिम में 683 किमी दूर था। इस बीच, नागेंद्र अपने अगले गंतव्य 173 किमी दूर दक्षिण-पश्चिम में छिप गए।

'अब जब हमने पहला शब्द सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है और मानसरोवर हमेशा के लिए नष्ट हो गया है, तो यहां से अगले शब्द को निकालने की यात्रा जोखिम भरी होगी क्योंकि वे अब सतर्क होंगे। हमें अब से अधिक सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वे पहले से ही हमारी तलाश में होंगे; यदि नहीं, तो वे जल्द ही शुरू हो जायेंगे। हमारी अगली मंजिल करीब है,' नागेंद्र ने कहा, और एलएसडी को एक पर्ची दी। 'श्श!' नागेंद्र ने जो इशारा किया वह परिमल और एलएसडी के लिए यह समझने के लिए पर्याप्त था कि कुछ भी ज़ोर से नहीं कहा जाना चाहिए।

पर्ची में एक रहस्यमयी झील की खूबियां बताई गईं। 'अभी समय ठीक नहीं है. हमें अगले अर्धचंद्र की रात को इस स्थान पर पहुंचना है। हमें तब तक नज़रों से दूर रहना चाहिए,'नागेंद्र ने निष्कर्ष निकाला।

उत्तर में परशुराम अमरनाथ पहुँच गये थे। अमरनाथ यात्रा केवल मई और अगस्त के महीनों के बीच भक्तों के लिए खुली रहती थी, क्योंकि उस अवधि के दौरान ही गुफा में बर्फ से बना शिव लिंग प्रकट होता था। यह फरवरी के मध्य का समय था, इसलिए आसपास कोई नहीं था और जगह बिल्कुल शांत थी। वह अंदर दाखिल हुआ और मुख्य क्षेत्र से तब तक चलता रहा जब तक कि वह गुफा के अंदर आखिरी सुलभ कोने तक नहीं पहुंच गया। वहां की दीवारें ऊबड़-खाबड़ थीं, जिनमें विषम दरारें थीं। उस कोने में चट्टानों में एक अगोचर उभार था। परशुराम ने अपनी हथेलियों से खुरदरी सतह को तब तक महसूस किया जब तक उन्हें एक विशेष स्थान नहीं मिल गया। उसने अपना परशु बुलाया और कुल्हाड़ी प्रकट हुई और अपने बट से चट्टान पर हल्के से प्रहार किया। कुछ टुकड़े बाहर गिरे और एक बंद आँख दिखाई दी। उसने अपने हाथ से इसके चारों ओर खुदाई करना शुरू कर दिया, चट्टानों को साफ किया जब तक कि एक ध्यानमग्न आकृति प्रकट नहीं हुई।

यह वही आदमी था जिसकी तलाश में वह आया था, आँखें बंद करके चुपचाप बैठा हुआ। जितनी शताब्दियों तक वह वहाँ बैठा रहा, वह गुफा का एक हिस्सा बन गया था, पूरी तरह से प्रकृति के साथ एकीकृत हो गया था। उसका शरीर अधिकतर कंकाल जैसा था, उसकी पतली त्वचा पर छोटे-छोटे कीड़े-मकौड़े उगे हुए थे जो वहाँ रहते थे। उसके चेहरे के बाकी हिस्से के साथ-साथ उसके बाल भी मिट्टी और गंदगी से सने हुए थे।

Machine Translated by Google

परशुराम ने उसे उसकी गहरी समाधि से जगाया और उस व्यक्ति ने अपनी आँखें खोलीं। उन्होंने परशुराम की ओर देखा और महसूस किया कि यह कोई जरूरी बात होगी क्योंकि स्वयं परशुराम उनके सामने खड़े थे। वह चुपचाप अपने आगंतुक के बोलने का इंतजार करता रहा।

'राक्षसताल ने मानसरोवर को पराजित कर दिया है। मानसरोवर की आत्मा है गुम। हमने मृतसंजीवनी की किताबें भी खो दी हैं,'परशुराम ने कहा।

जबकि परशुराम ने बूढ़े व्यक्ति को स्थिति के बारे में जानकारी देना जारी रखा

कैलाश, नागेंद्र और उनकी टीम एक सुदूर होटल में पहुंची, जहां उन्होंने कुछ आराम करने के लिए एक छोटे से कमरे में प्रवेश किया। जबकि अन्य लोग बस गए, एलएसडी ने रहस्यमय झील पर शोध किया। उसे पता चला कि रूपकुंड एक उच्च ऊंचाई वाली हिमनद झील थी, जो चट्टानों से घिरे ग्लेशियरों और बर्फ से ढके पहाड़ों से घिरी हुई थी और इसके किनारे पर पाए जाने वाले सैकड़ों प्राचीन मानव कंकालों के लिए व्यापक रूप से जानी जाती थी, जिससे हाल के दिनों में झील को कंकाल झील कहा जाने लगा। . ये शव अभी भी उथली झील के साफ पानी में दिखाई देते हैं, लेकिन केवल एक महीने के लिए, जब बर्फ पिघल जाती है। कंकालों की खोज के साथ-साथ लकड़ी की कलाकृतियाँ, लोहे के भाले, चमड़े की चप्पलें और अंगूठियाँ भी मिलीं। रेडियोकार्बन डेटिंग ने निर्धारित किया था कि अवशेष दक्षिण में एक सुदूर बिंदु से थे। दक्षिण एशियाई वंश के सभी अवशेष सत्य युग के हैं। कंकालों के अध्ययन से मृत्यु का एक सामान्य कारण सामने आया: सिर के पिछले हिस्से पर कुंद बल का आघात। अगस्त 2019 में प्रकाशित एक अध्ययन में, अड़तीस कंकालों से निकाले गए डीएनए की जांच से पता चला कि आबादी ने युगों पहले झील पर नश्वर घटनाओं का अनुभव किया था।

तभी नागेंद्र ने अपनी पुरानी धातु की बोतल निकाली और उसमें से शराब पी ली। फीके रंग ने इसे पुराना बना दिया, लेकिन इसके घुमावदार किनारों के चारों ओर नाचती रोशनी ने इसे नए जैसा चमका दिया। एलएसडी को याद करते हुए कहा गया कि वह कैंपिंग के अन्य उपकरणों के साथ उसे मानसरोवर में इधर-उधर ले जा रहा था ।

'मुझे पनडुब्बी में अपने कक्ष में वापस जाना है और मानसरोवर से अपना निष्कर्षण जमा करना है। मैं कुछ दिनों में वापस आऊंगा. इस बीच, तुम दोनों यहीं रहो और सतर्क रहो,' उसने अपनी बोतल वापस अपने बैग में भर ली और पनडुब्बी के लिए रवाना हो गया।

वृषभपि ने ओम पर वार करना जारी रखा, जबकि अश्वत्थामा ने खुद को बचाने के लिए दूर से कई निर्देश दिए, लेकिन ओम टिक नहीं सका और क्रूर वार झेलता रहा। निराश अश्वत्थामा ने वृषकपी को रोका और ओम की ओर बढ़ गया।

Machine Translated by Google

'आप मेरे निर्देशों का पालन क्यों नहीं कर रहे हैं? जहां आपकी है एकाग्रता? हमारे पास समय नहीं है, ओम।' 'और मैंने सोचा

कि हम ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिनके पास समय था,' ओम कराहते हुए, हवा के लिए हांफते हुए।

ओम की आत्मसंतुष्ट प्रतिक्रिया ने अश्वत्थामा को नाराज कर दिया। 'आपको समझ में नहीं आता है। मुझे करना

होगा-''आप सही कह रहे हैं! तो मुझे समझने में मदद करें. मुझे उत्तर दो. मुझे साफ़-साफ़ बताओ कि क्या हो रहा है. ऐसे सैकड़ों प्रश्न हैं जो मेरे ध्यान को बाधित कर रहे हैं, ये प्रश्न इस अतार्किक प्रशिक्षण से भी अधिक गंभीर हैं जो परशुराम ने आपसे मुझे समझाने के लिए कहा है।'

अश्वत्थामा ने वृषभपि को जाने का संकेत किया। वृषभपि ने अश्वत्थामा को सिर झुकाया, ओम को मित्रवत मुस्कान दी और चला गया।

ओम जिस स्थिति से गुजर रहा था, उस पर विचार करते हुए, अश्वत्थामा ने खुद को शांत किया नीचे और विनम्रता से बात की. 'ठीक है। आओ बैठो। मुझे बताओ, तुम्हें क्या परेशानी है?' ओम ने गहरी सांस

ली, अश्वत्थामा से अपने व्यवहार के लिए माफी मांगी उसके पास बैठ गया.

ओम ने शुरुआत करते हुए कहा, 'यहाँ क्या हो रहा है?' उत्तर देने से पहले अश्वत्थामा ने खुद को संभाला और कहा, 'मैं परशुराम जितना तो नहीं जानता, लेकिन इतना जानता हूं कि मृतसंजीवनी आपसे चुराई गई थी और यह अमरता की प्रक्रिया के लिए नहीं किया गया था।' 'आपका क्या मतलब है?' 'जिस आदमी के पास आपके सारे सवालों के नहीं तो बहुत

सारे सवालों के जवाब होंगे,

जरूर होंगे

तुम परशुराम के साथ यहीं आओगे। मैं वादा करता हूं कि मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आपको उसके सभी उत्तर मिलें, लेकिन तब तक, मेरे दोस्त, कृपया मेरे साथ सहयोग करें और कृपया अपने प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करें। हमारे पास पहले से ही समय की कमी है और बर्बाद किया गया हर मिनट अनगिनत जिंदगियों के नुकसान के साथ-साथ हमारी हार का कारण बन सकता है। क्या हम कृपया फिर से शुरू कर सकते हैं?' ओम ने चुपचाप सिर हिलाया।

'मेरे साथ आइए।' अश्वत्थामा खड़ा हो गया और चलने लगा।

जब एलएसडी और परिमल अपने छोटे से होटल में बंद होकर रुके तो समय बीतता गया मानसरोवर और रूपकुंड की दो झीलों के बीच में एक स्थान पर कमरा। एक सुबह, परिमल ने अपनी मुट्ठी भींच ली और उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ, इसलिए उसने अपनी हथेली पर बंधी पट्टी को खोलने का फैसला किया। एलएसडी करीब आया और ठीक हुए घाव के पीछे छोड़े गए निशान को देखा। यह निशान एक असामान्य परितारिका जैसा दिखता था जिसके अंदर एक लंबवत लम्बी पुतली थी।

Machine Translated by Google

उसने बेहतर ढंग से देखने के लिए उसका हाथ पकड़ लिया और विभिन्न कोणों से उसे देखते हुए टिप्पणी की, 'तुम्हें पता है, तुम्हारे हाथ पर यह निशान एक प्रकार की आंख की विकृति जैसा दिखता है जिसे कोलोबोमा कहा जाता है। यह एक ग्रीक शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है 'दोष'। चिकित्सा साहित्य आमतौर पर इसे कीहोल-आकार के दोष के रूप में वर्णित करता है।

यह दुर्लभ है और 10,000 जन्मों में से एक से भी कम में होता है। इंसानों के अलावा यह असामान्यता बिल्लियों में भी पाई जाती है लेकिन कुछ सांपों के लिए यह एक सामान्य घटना है। एक विशिष्ट नस्ल होती है जिसे वाइन स्नेक कहा जाता है। बेल वाले सांपों में कीहोल के आकार की पुतली होती है जो उन्हें ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है और अन्य सांप प्रजातियों की तुलना में बेहतर दूरबीन दृष्टि प्रदान करती है। उनके मुंह के पीछे बड़े, खांचेदार दांत होते हैं लेकिन वे कोबरा जितने जहरीले नहीं होते, फिर भी इतने जहरीले होते हैं कि अपने शिकार को वश में कर सकें।' 'तुम्हें यह सब कैसे पता?' परिमल उसकी बातें सुनकर आश्चर्यचकित रह गया

इसके बारे में इतना विस्तार से.

उनके सवाल से एलएसडी बौखला गया। उसने अपने हाथों को हिलाया और दूसरी ओर देखते हुए उत्तर दिया, 'उह। . . एक बार मुझे एक तैयारी करनी थी। . . मेरे बचपन में साँपों पर एक परियोजना रिपोर्ट, हालाँकि मुझे व्यक्तिगत रूप से साँप पसंद नहीं हैं। संयोगवश, यह निशान बेल वाले सांपों की आंखों जैसा दिखता है। . . तो मुझे याद आया.'

परिमल को आभास हो गया कि वह कुछ छुपा रही है। 'आप जानते हैं कि आप कर सकते हैं मुझे बताओ तुम यहाँ क्यों हो? आप नागेंद्र के लिए काम क्यों कर रहे हैं?'

'और मैं तुम्हें यह क्यों बताऊं ?' 'देखिए, हम सब

मिलकर नागेंद्र के लक्ष्य की दिशा में काम कर रहे हैं। हम एक दूसरे के साथ सोये हैं. . . चाहे शुरुआत में यह कितना भी अजीब क्यों न हो। इस बात की अच्छी संभावना है कि आपने मेरे बच्चे को जन्म दिया होगा, जो समान रूप से हमारा होगा। ऐसा लगता है कि यह साथ अब जीवन भर के रिश्ते में बदल चुका है। हमारे पास इसे मजबूत करने का समय है।' परिमल ने तर्क दिया, 'हमें एक-दूसरे पर भरोसा करना सीखना होगा और इसके लिए हमें एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानना होगा।'

एलएसडी चुप रहा। परिमल ने आह भरी. उसे समझाने का एकमात्र तरीका अपनी कहानी साझा करना होगा, परिमल ने सोचा और उसने जारी रखा। उन्होंने एलएसडी को देखा और स्वीकार किया, 'आप निशान के बारे में सही हैं, यह कोई संयोग नहीं है। भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले बेल साँपों की पुतलियाँ कीहोल के आकार की होती हैं। हालाँकि, इस निशान का एक कारण है। जब मैं पैदा हुआ था तो मेरी हथेली पर कीहोल के आकार की पुतली वाली एक आँख की पुतली थी।' 'वह है । . . अजीब। तुम बंद मुट्ठियों के साथ गर्भ से बाहर आये और कब

तुमने अपना हाथ खोल लिया, लोगों ने तुम्हें आँख की पुतली पकड़े हुए पाया?' एलएसडी आश्चर्य और भ्रम से मुँह सिकोड़ रहा था।

Machine Translated by Google

'सबसे पहले, मैं आपकी तरह डॉक्टरों और नर्सों से घिरा हुआ पैदा नहीं हुआ था मान रहा हूँ. मैं खुली मुट्ठियों के साथ पैदा हुआ था, केवल अपने पिता के सामने, जबकि नागेंद्र कमरे के बाहर यह पुष्टि करने के लिए इंतजार कर रहे थे कि वास्तव में मेरी हथेली पर भी वही नेत्रगोलक है। हमारे परिवार में पैदा होने वाला हर बच्चा खुली मुट्ठियों और हथेली के भीतर कीहोल के आकार की पुतली के साथ एक आईरिस के साथ पैदा होता है, ठीक उसी तरह जैसे आंखें आई सॉकेट के अंदर होती हैं। हालाँकि, ये नेत्रगोलक हमारी नसों से जुड़े होते हैं और हमारे रक्त को तेजी से बढ़ने के लिए खींचते हैं जब तक कि वे हमारे हाथ से बाहर नहीं निकल जाते। लेकिन ये ऊतकों और कोशिकाओं से नहीं बने होते हैं, इसलिए इनके हथेली के अंदर घूमने और आसपास की चीज़ों को देखने की कल्पना न करें। परिमल ने बताया, 'कुछ ही दिनों में नेत्रगोलक परिपक्व हो जाता है और गिर जाता है, जिससे एक निशान रह जाता है जो समय के साथ ठीक हो जाता है और अंततः मृत त्वचा के हटने के साथ गायब हो जाता है।'

'तो तुम भी चमड़ी उतारो! और उस नेत्रगोलक का क्या होता है?' एलएसडी ने संदेहपूर्वक पूछा।

परिमल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'हां, मैं भी खाल उतारता हूं, लेकिन सांपों की तरह नहीं, जैसा कि आप शायद कल्पना कर रहे हैं।' और साथ ही, हथेली से बाहर निकलने के ठीक नौ दिन बाद नेत्रगोलक स्वाभाविक रूप से रेत के कणों में विघटित हो जाता है।'

'तो फिर यह वहां क्यों है? इससे कौन सा उद्देश्य पूरा होगा?' एलएसडी से अगला प्रश्न था।

'मुझे नहीं पता,' परिमल ने उत्तर दिया, मानो विषय को बंद करने की कोशिश कर रहा हो।

'क्या? तो यह पीढ़ियों से होता आ रहा है और किसी को इसका पता नहीं चला?' एलएसडी निराशा से भौंहें सिकोड़ रहा था जबकि परिमल उसकी ओर देखकर मुस्कुरा रहा था। उसने परिमल के चेहरे के भाव देखे और सोचा कि वह धोखा दे रहा है।

'आप बस इसे बना रहे हैं, है ना? यह बस एक कहानी है जो आपने अभी गढ़ी है जब मैंने कहा था कि आपकी हथेली पर निशान एक आंख जैसा दिखता है,' उसने उसे घूरकर देखा।

'नहीं, मैं कुछ भी नहीं पका रहा हूं।' परिमल की बातें सच्ची थीं, लेकिन एलएसडी ने पहले ही यह तय कर लिया था कि परिमल झूठ बोल रहा है।

'यह बहुत अविश्वसनीय है; मुझे तुम पर विश्वास नहीं है।' परिमल वहीं खड़ा सोच रहा था कि कहाँ से शुरू करें, जबकि एलएसडी ने उसके चेहरे पर अपनी आँखें सिकोड़ लीं।

'शायद इससे मदद मिलेगी. आप देखिए, आपने अभी तक एक बात पर ध्यान नहीं दिया है, एलएसडी. . . मेरी कोई हस्तरेखा नहीं है।'

स्तब्ध, एलएसडी ने उसकी दोनों हथेलियों की जांच की और महसूस किया कि वास्तव में उसके पास कोई रेखा नहीं थी, यहां तक कि बिना निशान वाले हाथ पर भी नहीं।

Machine Translated by Google

'मेरे पास कोई हस्तरेखा नहीं है क्योंकि मेरी कोई किस्मत नहीं है। मैं इसे नहीं बना रहा था. मैं वास्तव में नहीं जानता कि नेत्रगोलक किस उद्देश्य को पूरा करता है और नौ दिनों के बाद यह स्वयं को क्यों नष्ट कर लेता है। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप जानें कि मैं सच कह रहा हूं और आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं।' एलएसडी अभी भी आश्वस्त नहीं दिख रहा था और उससे नज़रें

नहीं मिला पा रहा था। ... तुम यहां क्यों हो?' एलएसडी से पूछा.

'तो

'क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है,' परिमल ने अस्पष्ट समझ के साथ उत्तर दिया कि वह उसके बारे में क्या सीखना चाहती थी। उसने अपना प्रश्न दोबारा दोहराया। 'उसने इस सब के लिए आपसे क्या वादा किया है?' 'कुछ नहीं!' उसने अपनी नजरें फेर लीं.

एलएसडी ने उस पर विश्वास नहीं किया और नरम लहजे में गहराई से बात की। 'तो क्यों क्या तुम उसकी सेवा कर रहे हो, परिमल?'

'मैं वरदान और अभिशाप के मिश्रण का परिणाम हूं। मैं क्या माध्य के लिए कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता होगी। क्या तुमने कभी कद्रू के बारे में सुना है?' एलएसडी ने एक

खाली अभिव्यक्ति धारण की।

'द्रष्टा कश्यप? अघासुर? अष्टावक्र?' परिमल ने कुछ और नाम गिनाये कहानी से यह देखने के लिए कि क्या उनमें से किसी ने घंटी बजाई है। 'ठीक है, अगर मैं आपका चेहरा ठीक से पढ़ रहा हूं, तो यह निश्चित रूप से ' नहीं' है।' वह समझ गया कि नागेंद्र के साथ अपने संबंध को समझाने के लिए उसे शुरुआत में ही ले जाना होगा।

'मेरा पूरा नाम परिमल नायर है और मैं नागवंशी हूं। पसंद चंद्रवंशी* चंद्रमा के वंशज हैं, सूर्यवंशी* सूर्य के और अग्निवंशी अग्नि के , नागवंशी योद्धा-शासक वर्ग के कई प्रमुख घरों में से एक हैं जो सांपों के वंशज हैं। मुझे खेद है कि आपको सांप पसंद नहीं हैं, लेकिन मैं मूल रूप से इस मानव शरीर के अंदर एक सांप हूं, एलएसडी। नागवंशियों को प्राचीन भारत की साँप-पूजक जनजाति माना जाता है। नायरों की प्राथमिक देवता देवी भगवती हैं, जो युद्ध और प्रजनन क्षमता की संरक्षक देवी हैं। नायर परिवारों द्वारा नाग को कबीले के संरक्षक के रूप में पूजा जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि हम कद्रू के वंश वृक्ष का हिस्सा हैं और दुनिया के सभी साँपों को उसकी संतान माना जाता है।

'यह सब सत्य युग में शुरू हुआ, जब कश्यप नाम के एक ऋषि ने भगवान ब्रह्मा की कद्रू नाम की पोती से शादी की। वर्षों तक कद्रू ऋषि की पत्नी के रूप में रहीं और उनकी सभी सुख-सुविधाओं का ख्याल रखा। अपने कर्तव्यों के प्रति उसकी निष्ठा से प्रसन्न होकर, एक दिन, कश्यप ने उसे उसकी पसंद का वरदान दिया। कद्रू ने एक हजार नाग बच्चे मांगे जो ऐसा करेंगे

Machine Translated by Google

हिम्मत रखो। कश्यप ने इच्छा पूरी की और कद्रू गर्भवती हो गई।
काफी समय के बाद कद्रू ने एक हजार अंडों को जन्म दिया। अंडों को सावधानी से गर्म पानी के जार में रखा गया, जिससे वे गर्म रहे। पाँच सौ वर्षों के बाद कद्रू के अंडे फूटे और उसके पुत्र जीवित हो उठे। इन पुत्रों के वंशज नागवंशी कहलाये। अब आप सोच रहे होंगे कि नागेंद्र इस तस्वीर में कैसे फिट बैठते हैं।' परिमल ने एलएसडी की प्रतिक्रिया का इंतजार किया। उसने बस हल्का सा सिर हिलाया।

'नागेंद्र मेरे परिवार के वंश के मालिक हैं। मेरा पूरा वंश नागेंद्र के प्रति अपनी निष्ठा रखता है। उनके प्रति हमारी वफादारी वह कीमत है जो हम अपनी दृष्टि के लिए चुकाते हैं और उनके प्रति हमारी सेवा एक संपूर्ण मानव शरीर के बदले में है, ताकि हम इंसानों की तरह जमीन पर रह सकें।' परिमल ने एलएसडी की ओर देखा, जो अभी भी भ्रमित लग रहा था, इसलिए वह विवरण में चला गया।

'मैं भगवान कृष्ण के बचपन की द्वापर युग की एक पुरानी और प्रसिद्ध कहानी का प्रमाण हूं। मैं अघासुर के वंश से आता हूं। सत्य युग में, अघासुर नाम का राक्षस, अष्टावक्र नाम के एक ऋषि के पास आया, जिसका शरीर आठ स्थानों से विकृत था, जिसके कारण वह बेहद बदसूरत दिखता था और टेढ़े-मेढ़े पैटर्न में चलता था। अघासुर ने विकलांग द्रष्टा पर हंसने की गलती की और उसके रूप और चाल-ढाल का उपहास किया। अपमानित होकर, अष्टावक्र ने अघासुर को सबसे कुरूप नागों में से एक बनने का श्राप दिया, क्योंकि वे केवल टेढ़े-मेढ़े पैटर्न में ही रेंग सकते हैं। श्राप से भयभीत होकर अघासुर ऋषि के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा। अष्टावक्र का क्रोध तो शांत हो गया, लेकिन वह अपना श्राप वापस नहीं ले सकते थे, इसलिए उन्होंने अघासुर से कहा कि द्वापर युग के अंत में, भगवान विष्णु का अवतार उसके सर्प शरीर को मारकर और उसके सभी पापों से छुटकारा दिलाकर उसे इस अभिशाप से मुक्त कर देगा।

'अघासुर ने पुनर्जन्म के लिए सर्प के रूप में हजारों वर्षों तक प्रतीक्षा की
विष्णु के और इस बीच, राजा कंस के भरोसेमंद सेनापतियों में से एक बन गए। कंस, जो कृष्ण को मारना चाहता था, कृष्ण की माँ देवकी का भाई था। उन्होंने कृष्ण के जन्म से लेकर उनके जीवन पर कई प्रयास किए, लेकिन असफल रहे। उन प्रयासों में, अघासुर के दो भाई-बहनों, पूतना और बकासुर को बच्चे के हाथों अपनी जान गंवानी पड़ी। तब कंस ने अघासुर को अपने भतीजे को मारने का आदेश दिया, जो पूतना और बकासुर की मृत्यु का कारण भी था। इस तथ्य से अनभिज्ञ कि जिस लड़के को मारने के लिए उसे भेजा गया था वह विष्णु का अवतार था, उसने 8 मील लंबे सर्प का रूप धारण कर लिया, अपने खुले मुंह को एक पहाड़ के रूप में छिपा लिया ताकि जब वह कृष्ण के पास आए तो उसे निगल जाए। , उसके सभी चरवाहे मित्र अघासुर के मुँह में गुफा समझकर घुस गये। उन्हें बचाने के लिए कृष्ण अंदर चले गए

Machine Translated by Google

साँप का मुँह भी और फिर अपने शरीर का आकार भी बड़ा कर लिया। जवाबी हमले के रूप में, दानव ने भी अपना आकार तब तक बढ़ाया जब तक कि वह और सांस नहीं ले सका। कृष्ण की शक्ति से दबी हुई, राक्षस की जीवन शक्ति किसी भी आउटलेट से नहीं गुजर सकती थी, और इसलिए, वह अंततः अघासुर की आंखों के छेद से बाहर निकल गई। उसकी की-होल-आकार की आँखें पागलों की तरह घूमीं और फिर बाहर आ गईं। इस प्रकार, कृष्ण के माध्यम से राक्षस-सर्प का अंत हुआ और अष्टावक्र का श्राप हटा लिया गया।

'लेकिन जब वह कृष्ण को मारने निकला था, तो उसने अपनी गर्भवती नागिन पत्नी सरपुती को पाताल नगर में छोड़ दिया था। अघासुर की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी ने लोपाक्ष नामक पुत्र को जन्म दिया, जो आधा नाग और आधा मनुष्य था। क्योंकि अघासुर की आंखें उसके बेटे के जन्म से पहले ही बाहर आ गई थीं, लोपाक्ष अंधा पैदा हुआ था, उसकी आंख की जगह पर सादी त्वचा थी। लोपाक्ष नाम का वह बच्चा जो न तो साँप था और न ही मनुष्य, पाताल नगर द्वारा निष्कासित कर दिया गया था। सरपुती ने अपने शिशु के साथ पाताल को किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में छोड़ दिया जो उसके अंधे बच्चे को ठीक करने की क्षमता रखता हो। कई साल बीत गए जब लोपाक्ष बूढ़ा हो गया और सरपुती बड़ी हो गई, वह अपने दृष्टिहीन आधे आदमी-आधे सांप वाले बेटे के साथ जमीन पर छिपती और भटकती रही, एक उपाय की तलाश में, जब तक कि वह अत्यधिक अलौकिक शक्तियों वाले एक व्यक्ति से नहीं मिली, जो कोई भी वरदान दे सकता था और किसी भी बीमारी का इलाज कर सकता था। मात्र जप से.

वह आदमी एक झील के पास एक काले शेर के पास बैठा था और चमकदार और समृद्ध काली अयाल दिखा रहा था। शेर शान से उठ बैठा, जो अच्छे-अच्छे जानवरों को डराने के लिए पर्याप्त था। लेकिन जब उस आदमी ने शेर की पीठ को सहलाया, तो वह धीरे से गुर्राने लगा, जैसे कोई बिल्ली अपने मालिक द्वारा सहलाई जा रही हो। उस आदमी ने इसका नाम कालो बंथन रखा, क्योंकि यह वास्तव में उसका पालतू जानवर था!'
एलएसडी ने अहसास में

टोकते हुए कहा, 'आप लोपाक्ष के उत्तराधिकारी हैं। मैं उसके बारे में जानता हूं. जिस व्यक्ति से सरपुती की मुलाकात हुई, वह स्वयं नागेंद्र था, जो देवी-देवता धन्वंतरि द्वारा बनाई गई चोरी हुई मृत संजीवनी की तलाश कर रहा था।
जब सरपुती उससे मिली, तब तक उसकी हताशा इतनी तीव्र थी कि वह कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थी। नागेंद्र ने कहा कि वह लड़के को दृष्टि और मानव का पूरा शरीर दोनों दे सकते हैं, जिसके बाद उसे कभी भी अपने सर्प रूप में वापस नहीं लौटना पड़ेगा और वह जमीन पर रह सकता है, लेकिन बदले में, सरपुती उसे एक शपथ देगी जो उसके सभी उत्तराधिकारियों द्वारा उसका सम्मान किया जाना चाहिए। यदि कभी किसी ने इस शपथ को तोड़ने का प्रयास किया तो संपूर्ण वंश नष्ट हो जाएगा।

'अपने बेटे की भलाई के लिए, हताश नागिन माँ ने बिना यह पूछे कि शपथ क्या थी, सहमति दे दी। नागेंद्र ने अपनी शक्तियों का उपयोग किया और अंधे लोपाक्ष ने अपनी परिपक्व उम्र में पहली बार अपनी माँ को देखा

Machine Translated by Google

बत्तीस। नागेंद्र का आभारी होकर लोपाक्ष ने उनके पैर छुए और इस उपकार के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।' अचानक, एलएसडी को अपनी प्रलाप का एहसास हुआ और वह रुक गई।

'तुम्हें यह सब कैसे पता चला?' परिमल खुश था.

'वास्तव में, नागेंद्र मुझे यह सोते समय की कहानी के रूप में सुनाया करते थे,' एलएसडी उत्तर दिया और फिर चुप हो गया।

परिमल ने आगे कहा, 'यह कोई एहसान नहीं बल्कि विनिमय था।' 'नागेंद्र ने याद दिलाया सरपुती ने अपने वादे के बारे में बताया और लोपाक्ष से कहा कि अब, उसकी मां शपथ लेगी और उसके सहित उसके सभी उत्तराधिकारी इसे निभाएंगे।'

'क्या शपथ थी?' एलएसडी ने उत्सुकता से पूछा तो परिमल ने निराश होकर उत्तर दिया, 'शपथ ही मुझे आज तक नागेंद्र से जोड़ती है। सरपुती ने आगे आकर कहा, "हे द्रष्टा! मैं शपथ लेने और उसका पालन करने के लिए तैयार हूं, मेरा बेटा लोपाक्ष और उसके बाद उसके उत्तराधिकारी भी ऐसा ही करेंगे। मुझे बताओ कि एहसान का बदला चुकाने के लिए हमें क्या करना चाहिए।" लोपाक्ष अपनी माँ के पास खड़ा चुपचाप देखता रहा।

'नागेंद्र ने कहा, ''सबसे पहले, सरपुती, तुम इस उपकार का बदला कभी नहीं चुका पाओगे क्योंकि मैं तुम्हें कभी ऐसा नहीं करने दूंगा। आप युद्ध और उर्वरता की संरक्षक देवी, देवी भगवती की पूजा करते हैं। अब से, आप केवल युद्ध के लिए उसकी पूजा करेंगे, क्योंकि लोपाक्ष और उसके बाद के प्रत्येक वयस्क को केवल एक ही बच्चा होगा, जिसके बाद वे हमेशा के लिए अपनी प्रजनन क्षमता खो देंगे। प्रत्येक बच्चा मृत्युपर्यन्त, बिना किसी विकल्प के, निःस्वार्थ भाव से मेरी सेवा करेगा और केवल मैं ही उन्हें इस शपथ से मुक्त करने का अधिकार रखूँगा। यदि आपके उत्तराधिकारियों में से कोई भी इस प्रतिज्ञा को तोड़ने के बारे में सोचता है, तो वे अपने सपनों में देखेंगे कि उनके पूर्ववर्तियों को स्वर्ग से निकाल दिया गया है और जीवित लोग बिना दृष्टि के अपने मूल रूप आधे साँपों में लौट आए हैं। एक चेतावनी के रूप में, उनके सपनों में, उन्हें पृथ्वी के गड्ढों में वापस जाने या बिना किसी उत्तराधिकारी के मरने के लिए मजबूर किया जाएगा, इस प्रकार वंश को नष्ट कर दिया जाएगा और उनके सभी पिछले बलिदानों को व्यर्थ कर दिया जाएगा। यह सब उनकी वास्तविकता बन जाएगी यदि उनके सपनों द्वारा चेतावनी दिया गया व्यक्ति अभी भी मुझे धोखा देने का विकल्प चुनता है। आपकी दृष्टि और आपका मानव शरीर मेरी सेवा करने के लिए आपको मिलने वाला पुरस्कार है, जिसे जब भी आप सेवा करना बंद करेंगे तो वापस लिया जा सकता है। इस प्रकार, जब भी कोई उत्तराधिकारी शपथ लेता है, तो यह पूर्वजों को हमेशा के लिए राहत देता है, और उन्हें अपने शेष जीवन के लिए एक अंधे बूढ़े सांप में बदल देता है।'

'आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि शपथ बाध्यकारी है और यह सिर्फ एक बात नहीं है पीढ़ियों से चला आ रहा किस्सा?'

'क्योंकि मैंने एक आदमी को अपनी आँखों की रोशनी खोते हुए और साँप में तब्दील होते देखा है इससे पहले कि मैं उसका अंतिम संस्कार करूँ। यह मेरे पिता थे,' परिमल ने जवाब दिया। 'हम हैं

Machine Translated by Google

जब वह हमें राहत देता है तो साँप में बदल जाता है, वही शपथ हमारे कबीले के अगले लोगों को देता है। मैंने शपथ लेते समय अपने पिता को अंधे साँप में बदलते देखा है। मेरे सभी पूर्वजों का यही भाग्य था और यही मेरा और हमारे बच्चे का भी होगा। हम खुली मुट्ठी के साथ आते हैं, कोई हथेली की रेखा नहीं, कोई भाग्य नहीं, और बिना हाथों के दुनिया छोड़ देते हैं, उसी रूप में जैसे हम जीवन भर टालते रहते हैं। अब आप जानते हैं कि हमारी हथेलियों पर रेखाएँ क्यों नहीं होतीं - क्योंकि हमें देवताओं ने नहीं बनाया है और हम कभी हाथों के लायक नहीं थे।'

'और सपना? सपने के बारे में क्या? क्या तुमने भी देखा?' एलएसडी की जिज्ञासा बढ़ी।

'नहीं! मैंने इतना कुछ देख लिया है कि अपने स्वामी को धोखा देने के बारे में सपने में भी नहीं सोच सकता।' परिमल ने गुस्से से सिर हिलाया. 'अब, आपकी कहानी क्या है?' आख़िरकार उसने एलएसडी से पूछा।

इससे पहले कि वह उससे और सवाल कर पाता, एलएसडी ने उसे संकेत देते हुए उंगली उठाई जब उसने होटल के कमरे की ओर कदमों की आहट सुनी तो वह चुप हो गई।

वे घबराकर सीधे हो गए और अपनी 92 एफएस बेरेटा हैंडगन वापस ले आए। नागेन्द्र वापस आ गया था. वह अंदर गया और पाया कि वे सतर्क हैं और उन्हें आदेश दिया, 'अपने बैग पैक करो। अब हम जाते हैं।' वह उनके अनुमान से जल्दी

लौट आया था और परिमल का एलएसडी से पूछा गया प्रश्न अनुत्तरित रह गया था। उन्हें यह भी आश्चर्य हुआ कि वे इतनी जल्दी क्यों जा रहे थे, क्योंकि अगला अर्धचंद्र आने में अभी कुछ दिन बाकी थे, लेकिन उनमें से किसी में भी सवाल उठाने की हिम्मत नहीं थी। वे जानते थे कि सही समय आने पर उन्हें अपने उत्तर मिल जायेंगे। जल्द ही, उनके बैग पैक हो गए और एलएसडी उसकी पीठ पर झूलने ही वाली थी कि तभी नागेंद्र उसके पास आया और उसे परिमल के सामने एक गर्भावस्था परीक्षण किट सौंपी। यह स्पष्ट था कि नागेंद्र क्या जानना चाहता था, इसलिए वह इसे लेकर वॉशरूम चली गई। परिमल चुपचाप आदेशों का पालन होते देखता रहा. नागेंद्र ने परिमल को एलएसडी का बैग भी ले जाने और उसके साथ बाहर चलने का इशारा किया। कुछ ही मिनटों में, एलएसडी उनके साथ जुड़ गई और परिमल से अपना बैग वापस ले लिया, नागेंद्र की ओर देखा और लापरवाही से कहा, 'मैं गर्भवती हूं।'

कुछ ही देर में वे अपनी अगली मंजिल की तलाश में आगे बढ़ रहे थे दूसरा शब्द.

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 6

नौ

एक चट्टान पर विभिन्न सिरों वाले अनेक बाण रखे हुए थे। सबसे बायीं ओर का आकार टेढ़ा-मेढ़ा था, उसके बगल वाला पिघला हुआ धातु जैसा दिखता था, पंक्ति में तीसरे का सिर बूंद के आकार का पारदर्शी था जबकि चौथा सिर चोंच जैसा दिखता था। एक अन्य खूबसूरत धातु के तीर पर कई हथियार जटिल रूप से खुदे हुए थे।

जब अश्वत्थामा ने दिव्य बाणों की शक्तियों के बारे में बताया तो ओम समूह के सामने खड़ा था। पिघली हुई धातु के सिर वाला तीर उठाते हुए उन्होंने कहा, 'दूसरे दिन आपने वायुस्त्र के बारे में सीखा, जिसमें सेना को उड़ा देने के लिए काफी खतरनाक तूफान पैदा करने की क्षमता थी। अब, जो मैंने धारण किया है उसे अग्नियास्त्र कहा जाता है। जब लक्ष्य पर गोली चलाई जाती है, तो इससे आग की लपटें निकलती हैं जो सामान्य तरीकों से बुझने योग्य नहीं होती हैं। अग्नियास्त्र अग्नि का दिव्य हथियार है। यह किसी भी चीज़ को पिघला सकता है. यह इतना दुर्जेय है कि धरती से दुश्मन का नामोनिशान मिटा सकता है। यह न केवल पूरी सेना को जला सकता है, बल्कि बंदूकों, टैंकों, मिसाइलों और उड़ने वाले जेट विमानों को भी पिघला सकता है, अगर इसका सही ढंग से निशाना लगाया जाए और इसका जाप किया जाए। अग्नि की मात्रा, ताप की तीव्रता और लपटों की शक्ति व्यक्ति द्वारा अर्जित शक्तियों, उनकी एकाग्रता और जप कौशल पर निर्भर करती है।' फिर अश्वत्थामा ने एक और तीर उठाया जो टेढ़े-मेढ़े आकार का था

इसके सिरे पर एक साँप का सिर। 'यह नागपाशा है। जैसा कि इसके स्वरूप और नाम से पता चलता है, यह हथियार आपको अपने दुश्मनों पर हमला करने के लिए सांपों को बुलाने की शक्ति देता है। प्रहार करने पर, यह हथियार लक्ष्य को जहरीले सांपों की कुंडलियों में बांध देता है जो तब तक अपनी पकड़ मजबूत करते हैं जब तक कि दुश्मन की हड्डियां कुचल न जाएं और उनमें जीवन की कोई सांस न बचे। रामायण के युग में, राक्षस राजा रावण के पुत्र इंद्रजीत द्वारा राम और लक्ष्मण के खिलाफ इसका इस्तेमाल किया गया था।' अगला वह था जिसके शरीर पर कई अन्य हथियार खुदे हुए थे।

'यह नारायणास्त्र है। कुरूक्षेत्र के युद्ध के सोलहवें दिन, पांडवों को मारने के इरादे से युद्ध को आगे बढ़ाने वाला मैं ही था, लेकिन भगवान कृष्ण का

Machine Translated by Google

सलाह ने उन्हें निश्चित मृत्यु से बचा लिया। यह अस्त्र नारायण (विष्णु) का है। यह एक अद्वितीय दिव्य हथियार है क्योंकि जब इसे दागा जाता है, तो यह एक साथ चक्र, गदा और अति-तीक्ष्ण तीरों जैसे लाखों घातक हथियारों की गड़गड़ाहट शुरू करता है जो पूर्ण विनाश करते हैं और लक्ष्य पर हावी हो जाते हैं। जो कोई भी इसका विरोध करने की कोशिश करता है वह अनिवार्य रूप से नष्ट हो जाता है क्योंकि प्रतिरोध के साथ-साथ बरसते हथियारों की तीव्रता बढ़ती जाती है। यह किसी को भी या किसी भी चीज़ को मारने के लिए पर्याप्त विनाशकारी है। कोई भी बाधा इसके प्रहार को रोकने में सक्षम नहीं है और इसीलिए इसका मुकाबला किसी अन्य हथियार से नहीं किया जा सकता है। जब मैंने पांडवों पर यह तीर चलाया, तो वे नहीं जानते थे कि इसे रोकने का एकमात्र तरीका पूर्ण समर्पण है, लेकिन यह भगवान कृष्ण थे जिन्होंने उन्हें अपने हथियार छोड़ने और पूरी तरह से नारायणास्त्र के सामने समर्पित होने की सलाह दी।'

तब अश्वत्थामा ने पारदर्शी पानी की बूंद से तीर पकड़ लिया इसकी टिप. 'यह वरुणास्त्र है. इसका प्रयोग आमतौर पर अग्नियेस्त्र का मुकाबला करने के लिए किया जाता है। इस तीर को चलाने से भारी मात्रा में पानी निकलेगा।' चोंच के आकार वाले तीर की नोक पर आगे बढ़ते हुए अश्वत्थामा ने कहा, 'और यह गरुड़ास्त्र है, एक ऐसा हथियार जो नागपाश और नागास्त्र से बचाव कर सकता है। गरुड़ एक पक्षी जैसा प्राणी है जो सर्प का शिकारी है। सदैव सतर्क और फुर्तीला, गरुड़ भगवान विष्णु का घोड़ा है। जब गरुड़ास्त्र को धनुष से छोड़ा जाता है, तो यह नागपाश और नागास्त्र के विषैले सांपों पर हमला करने के लिए इन प्राणियों के एक विशाल झुंड को खोल देता है।' इससे पहले कि अश्वत्थामा कोई दूसरा हथियार उठा पाता, ओम ने परशुराम को अपनी ओर आते देखा। उसके बगल में वह साधु चल रहा था जिसके दर्शन के लिए वह अमरनाथ गया था। अश्वत्थामा यह देखने के लिए मुड़ा कि किस चीज़ ने ओम का ध्यान खींचा है। अश्वत्थामा ने परशुराम और ऋषि को देखकर प्रणाम किया।

'अश्वत्थामा, तुम्हें आयुष्मान भवः (लंबी आयु) का आशीर्वाद देता हूं सूर्य पर मशाल चमकाने से बेहतर कुछ नहीं हो सकता,' ऋषि ने कहा और इसके बजाय, उसे आशीर्वाद दिया, 'विजयी भवः (आप विजयी हों)!'

अश्वत्थामा का अनुसरण करते हुए ओम ने भी ऋषि को प्रणाम किया, जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी परिचय कराया जाए, क्योंकि दोनों के बीच युगों पहले से संबंध था। ओम के सामने खड़ा व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि वेद व्यास थे। महाभारत काल के दौरान, उनके अनुरोध पर, ओम ने उनके पुत्र विदुर के लिए सहायक के रूप में काम किया था। वेद व्यास अपने कम से कम एक पुत्र को सुरक्षित और युद्ध से दूर रखना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने उसकी जगह ओम को अग्रिम पंक्ति में तैनात किया था। कोई नहीं जानता था कि असली विदुर कैसा दिखता था क्योंकि उसका पालन-पोषण राज्य में नहीं हुआ था

Machine Translated by Google

अपने बाकी भाइयों के साथ और इसलिए, स्विच करना आसान था। जैसे ही ऋषि व्यास ने ओम के साथ आंखें बंद कीं, उनके बीच एक अनकही समझ आ गई। व्यास ने उन्हें हल्का सा सिर हिलाया, मानो अतीत में उनकी भूमिका के लिए उन्हें धन्यवाद दे रहे हों, क्योंकि युद्ध के बाद ओम गायब हो गया और वेद व्यास ने कभी भी विदुर का अंत नहीं लिखा जिससे उनका अंत संदिग्ध हो गया।

'तुम्हारा यहाँ होना बहुत अच्छा है, ओम।' ओम को पता नहीं था कि युगों के बाद सात अमरों में से तीसरे से मिलते समय कैसे प्रतिक्रिया देनी है या व्यवहार करना है। इससे पहले कि वह कुछ कहता, परशुराम बोल पड़े। 'मुनि व्यास! जैसा कि आप चाहते थे, यहाँ हम तीनों एक साथ खड़े हों। कृपया बताएं- मानसरोवर को क्यों नष्ट किया गया है?' ऋषि व्यास ने अपने सामने तीन व्यक्तियों के साथ एक उदास रूप साझा किया। 'द

मानसरोवर का विनाश कोई पूर्ण घटना नहीं है, प्रिय परशुराम। यह महज़ एक जटिल योजना की शुरुआत है जिसे पूरा करना लगभग असंभव है।' 'योजना! कौन सी योजना? किसकी योजना?' अश्वत्थामा उत्तेजित होकर बोला.

व्यास ने उत्तर दिया, 'मैं किसका उत्तर दे सकता हूं, लेकिन किसका, यह मैं नहीं जानता ।'

'हो सकता है कि क्या का उत्तर हमें कौन तक ले जाए,' ओम ने चिल्लाते हुए कहा, अनिश्चित था कि क्या वह अपने इनपुट भी साझा कर सकता है।

'हो सकता है,' व्यास ने प्रतिबिंबित किया।

'तो, असंभव योजना क्या है?' -परशुराम ने पूछा।

'सबसे पुरानी भविष्यवाणियों में से एक को एक श्लोक में घोषित किया गया था जो जानबूझकर छिपाया गया था और समय के साथ इतना पुराना हो गया कि हमें लगा कि यह पहले से ही सभी हिंदू धर्मग्रंथों से हमेशा के लिए गायब हो गया है, लेकिन धन्वंतरि ने इसे बचा लिया। एक श्लोक जिसमें कहा गया है, ''माघ महीने से शुरू होने वाले लगातार नौ पुराने चंद्रमाओं में, नौ रहस्यमय स्थानों से नौ छिपे हुए शब्दों को निकालने में सफलता मिलेगी, जो एक रहस्यमय दरवाजे की कुंजी के रूप में कार्य करेंगे।'' 'हे द्रष्टा! कृपया हमें इसकी पूरी जानकारी दें कि यह क्या है

मतलब,' अश्वत्थामा ने हाथ जोड़कर कहा।

'हम उनकी तुलना में कमजोर होंगे क्योंकि मिलकर हम नौ नहीं हैं संख्या में, लेकिन आठ. हमारी दुनिया में नौ अंक का बहुत महत्व है। जन्म से पहले माँ के गर्भ में भ्रूण के जीवन से शुरू होकर, मनुष्य की मृत्यु तक, जिसके बाद परिवार को नवग्रहों (नौ ग्रहों) को शांत करना पड़ता है, सब कुछ नौ की संख्या के आसपास घूमता है।

Machine Translated by Google

'किसी अज्ञात कारण से प्रत्येक युग के अंकों का योग नौ होता है। मानव वर्षों में गणना करने पर सत्य युग 14,40,000 वर्षों तक रहता है। त्रेता युग 10,80,000 वर्ष का, द्वापर युग 7,20,000 वर्ष का और कलियुग 3,60,000 मानव वर्ष का है। प्रत्येक वर्ष के सभी अंकों का व्यक्तिगत योग नौ होता है।

'हिंदुओं में अठारह पुराण, 108 महापुराण (उपनिषद), महाभारत में अठारह अध्याय, अठारह दिनों तक चला युद्ध, गीता में अठारह अध्याय और भागवत पुराण में 18,000 श्लोक हैं। इन सभी अंकों का योग पुनः नौ के बराबर होता है।

'हिन्दू दर्शन की वैशेषिक शाखा में नौ सार्वभौमिक हैं पदार्थ या तत्व: पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, समय, स्थान, आत्मा और मन।

'हम नवग्रह, नौ ग्रहों की पूजा करते हैं। हम नवरात्रि मनाते हैं, जो नौ दिनों का त्यौहार है जो दुर्गा के नौ रूपों - नवदुर्गा; को समर्पित है; प्रत्येक दिन इनमें से किसी एक अवतार के उत्सव से जुड़ा है।

'हिंदू ज्योतिष नौ रत्नों को मान्यता देता है, जिन्हें नवरत्न कहा जाता है, जिसका अर्थ है नौ रत्न, हर ग्रह को प्रभावित करने वाले: सूर्य के लिए माणिक, चंद्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए लाल मूंगा, बुध के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पीला नीलम, शुक्र के लिए हीरा, नीला शनि के लिए नीलम, आरोही चंद्र नोड के लिए हेसोनाइट और अवरोही चंद्र नोड के लिए बिल्ली की आंख।

'हिन्दू सौंदर्यशास्त्र में रस नौ प्रकार के होते हैं। रस, जिसका अर्थ है रस या सार, एक अवधारणा है जो भावनाओं की अमूर्तता का वर्णन करने में मदद करने के लिए नौ अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ प्रदान करती है जिन्हें किसी भी दृश्य, साहित्यिक या संगीत कार्य के माध्यम से पाठक या दर्शकों के भीतर पैदा किया जा सकता है।

'पृथ्वी के लिए देवताओं और राक्षसों के बीच लड़ाई उतनी ही पुरानी है जितनी कि पृथ्वी और राक्षसों को जीत से वंचित करने के लिए, भगवान विष्णु ने अब तक नौ अवतार लिए हैं।

'भागवत पुराण में सत्य युग से कलि युग तक चार महान युगों के एक अनंत चक्र का वर्णन किया गया है, जिसके दौरान धर्म, धर्म और सदाचार के सिद्धांत धीरे-धीरे बिगड़ते हैं।

'सत्ययुग में धर्म और सदाचार जन्मजात होते हैं। त्रेता में तो उनको खोजा जाता है और हासिल किया. द्वापर में वे अत्यधिक क्रोधित और उत्तेजित होते हैं और कलियुग में वे नष्ट हो जाते हैं। कलियुग के अंत में, धर्म के सिद्धांत, या मानवता के व्यावसायिक कर्तव्य, पूरी तरह से नष्ट हो जायेंगे। कलियुग 5121 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ, जिसका योग पुनः नौ आता है। इसका अंत होना ही है

Machine Translated by Google

वर्ष 4,28,899 ई. में अर्थात 2020 तक इसमें 4,26,879 वर्ष शेष हैं, जिसका योग भी नौ है। लेकिन जो बात चौथे युग में वर्ष 2020 को विशेष रूप से खतरनाक बनाती है, वह संख्या नौ नहीं बल्कि चार है, जो वर्ष 2020 के अंकों और वर्ष 4,28,899 ईस्वी के अंकों का योग है, जो कि अंतिम युग का कथित अंत है । कोई इस प्रत्याशित निष्कर्ष को 2020 तक आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है ताकि चौथे युग को 4,26,879 साल पहले समाप्त किया जा सके। इस वर्ष में सब कुछ समाप्त हो जाएगा यदि माघ (जनवरी-फरवरी) के महीने से शुरू होने वाले नौ पुराने चंद्रमाओं में, कोई नौ रहस्यमय स्थानों में छिपी हुई नौ आत्माओं को निकालने में सफल हो जाता है, जो एक बार मुक्त होने के बाद, शेष आठ के मुकाबले नौवें अमर का पालन करेंगे। हम में से। मेरा मानना है कि "खोया हुआ पाठ" मृत संजीवनी की छिपी हुई किताबें थीं और किसी ने यह पता लगाया है कि पुस्तक के हर नौवें पृष्ठ में शब्दों के रूप में छिपी हुई आत्माओं तक पहुंचने और निकालने का मार्ग और प्रक्रिया है। सभी शब्दों के संकलन से एक छंद बनेगा। मेरा मानना है कि कोई इस भविष्यवाणी को सच करने और पूरे भारत में रहस्यमय स्थानों पर बिखरे और संरक्षित शब्दों के एकीकरण के माध्यम से राक्षसों को मुक्त करने की कोशिश कर रहा है।'

'तो, वह दरवाज़ा वास्तव में कहाँ है?' परशुराम से पूछताछ की.

'यह कोई नहीं जानता. लेकिन परशुराम, मैं पूरे दावे के साथ कह सकता हूं कि आने वाले आठ महीने बेहद महत्वपूर्ण हैं।

'हिन्दू चंद्र कैलेंडर में बारह महीने होते हैं। नौ बूढ़े

चंद्रमा की अवधि नौ महीने होती है, हर महीने एक पुराना चंद्रमा होता है।

माघ से आगे की गणना करें, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार जनवरी के दूसरे भाग में शुरू होता है, हम पहले ही एक खो चुके हैं। मानसरोवर की पवित्र झील का नष्ट होना एक संकेत है। अब हमारे पास अगले महीने, फाल्गुन (फरवरी-मार्च) के अर्धचंद्र से पहले बमुश्किल बारह दिन बचे हैं, जो फरवरी के दूसरे भाग में शुरू होता है। इसके बाद 252 दिनों को आठ और महीनों में विभाजित किया जाएगा - चैत्रचै (मार्च-अप्रैल), वैशाख (अप्रैल-मई), ज्येष्ठ (मई-जून), आषाढ़ (जून-जुलाई), श्रावण (जुलाई-अगस्त), भाद्रपद (अगस्त-सितंबर), अश्विन (सितंबर-अक्टूबर) और कार्तिक (अक्टूबर-नवंबर)।'

वै

'अश्वत्थामा! वृषभपि और मिलारेपा को बुलाओ,'परशुराम ने आदेश दिया।

आज्ञा का पालन करते हुए अश्वत्थामा तुरंत ओम के साथ निकल गये।

जैसे ही वे चले गए, परशुराम व्यास की ओर मुड़े। 'ये रहस्यमय स्थान श्लोक के शब्दों की रक्षा कहाँ कर रहे हैं?' वेद व्यास ने उत्तर दिया, 'अभी, मैं आपको केवल तीन स्थानों के बारे में बता सकता हूं।' वह

यह भी पता चला कि जब धन्वंतरि मृत की पुस्तकें निर्देशित कर रहे थे

Machine Translated by Google

सुश्रुत को संजीवनी, वेदव्यास ने ही सुनी थी। 'बाकी को किताब से आगे डिकोड करना होगा। इसके अलावा, किताब में लिखा अनुक्रम मेरे लिए अज्ञात है,'ऋषि ने आगे कहा।

'हम इसके लिए भी कुछ काम करेंगे।' सबसे पहले, हमें यह जानना होगा स्थान,'परशुराम ने सोचा।

दूसरी ओर, अश्वत्थामा और ओम वापस निवास की ओर जा रहे थे वृषभपि का. प्रकाश की गुफा को पार करते समय अश्वत्थामा ने अपने विचार व्यक्त किये। 'नौ! नौ के बारे में कभी उस तरह नहीं सोचा जिस तरह वेद व्यास ने समझाया।' चूंकि ओम उसी जानकारी पर विचार कर रहे थे, उन्होंने कहा, 'हां!

शायद नौ अंक गणितज्ञों के लिए भी एक रहस्यमय अंक है। वे नौ के पेचीदा, लगभग जादुई गुणों के कारण इसके प्रति आसक्त हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह सब जुड़ा हुआ है।' 'गणितज्ञों! कैसे?'

अश्वत्थामा ने सोचा।

'कई कारण हैं। आरंभ करने के लिए, नौ पहली मिश्रित भाग्यशाली संख्या है, पहली मिश्रित विषम संख्या है और एकमात्र एकल-अंकीय मिश्रित विषम संख्या है। मिहिलेस्कु के प्रमेय के अनुसार, यह एकमात्र सकारात्मक पूर्ण शक्ति है जो एक अन्य सकारात्मक पूर्ण शक्ति से बढ़कर है।

'इसके अलावा, यदि आप शून्य को छोड़कर किसी भी पूर्ण संख्या से नौ को गुणा करते हैं, और उत्तर के अंकों को बार-बार जोड़ते हैं जब तक कि यह केवल एक अंक न रह जाए, तो अंत में आपका परिणाम नौ होगा। उदाहरण के लिए, 2 को 9 से गुणा करने पर 18 आता है। 8 में 1 जोड़ने पर 9 आता है। एक बड़ी संख्या लीजिए, मान लीजिए, 5,78,329। नौ से गुणा करने पर उत्तर 52,04,961 आता है। और 5 + 2 + 0 + 4 + 9 + 6 + 1 27 है, और 2 + 7 9 है।

इसके विपरीत, यदि किसी संख्या के अंकों का योग नौ या नौ का गुणज बनता है, तो वह संख्या स्वयं नौ का गुणज होनी चाहिए।

'यदि किसी संख्या को उसके अंकों की संख्या के अनुरूप नौ के योग से विभाजित किया जाता है, तो वह संख्या दोहराए जाने वाले दशमलव में बदल जाती है। उदाहरण के लिए, 274 को 999 से विभाजित करने पर 0.274274274274 आता है।

'इसके अलावा, आंतरिक कोणों का योग निर्धारित करने का सूत्र एक बहुभुज का मान n-2(180) है, जहाँ n भुजाओं की संख्या है। किसी भी बहुभुज के सभी कोणों का योग सदैव 9 के बराबर होगा। एक नौ भुजाओं वाला बहुभुज 9- 2(180) या 7(180) या 1260 होता है। 1+2+6+0 = 9. यह बहुभुज के लिए सत्य है। किसी भी संख्या में भुजाएँ।

'यही बात वृत्तों, त्रिभुजों, आयतों, पंचकोणों, षट्कोणों और सप्तकोणों पर भी लागू होती है।

'एक पूर्ण वृत्त 360 डिग्री का होता है—3+6+0 = 9।

'एक अर्धवृत्त 180 डिग्री का होता है—1+8+0 = 9.

Machine Translated by Google

'90-डिग्री वृत्त—9+0 = 9।

'45-डिग्री वृत्त—4+5 = 9.

'22.5-डिग्री वृत्त—2+2+5 = 9।

'किसी वृत्त में किसी भी कोण के लिए, परिणामी कोण हमेशा घटकर 9 हो जाता है।

'180-डिग्री त्रिभुज के लिए, 1+8+0 = 9।

'360-डिग्री आयत के लिए, 3+6+0 = 9।

'एक पंचभुज के लिए, 5+4+0 = 9.

'एक षट्भुज के लिए, 7+2+0 = 9.

'एक सप्तभुज के लिए, 9+0+0 = 9.

'इसी तरह, चंद्रमा का व्यास 2160 मील है, जो फिर से 9 तक जुड़ जाता है।

'पृथ्वी का व्यास 7920 मील है, जिसका योग 9: 7+9+2+0 = 18, 1+8 = 9 होता है।

'सूर्य का व्यास 8,64,000 मील है, 8+6+4 = 18, 1+8 = 9.

'इतना ही नहीं, प्रकाश की गति 1,86,282 mps यानी 1,86,282 mps है
1+8+6+2+8+2 = 27, 2+7 = 9.

'ऐसा माना जाता है कि नौ अंक स्थान और समय को भी नियंत्रित करता है। यह पृथ्वी की धुरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, यदि मिनटों की गणना विभिन्न स्तरों पर की जाती है, तो अंत हमेशा नौ होता है। 'एक साल में 5,25,600 मिनट: 5+2+5+6+0 = 18, 1+8 = 9. 'एक महीने में 4,32,000 मिनट:

4+3+2+0+0+0 = 9. 'एक सप्ताह में 1,00,800 मिनट: 1+0+0+8+0+0 = 9. 'एक दिन में 1440 मिनट: 1+4+4+0 = 9.

'नौ के गुणजों से जुड़े अन्य दिलचस्प पैटर्न भी हैं। उदाहरण के लिए,

12345679 × 9 = 111111111 12345679 × 18

= 22222222 12345679 × 81 = 999999999

'यह नौ के सभी गुणजों के लिए काम करता है। N = 3 एकमात्र अन्य n > 1 है जिससे कोई संख्या n से विभाज्य होती है यदि और केवल तभी जब उसका डिजिटल मूल (अंकों का योग) n से विभाज्य हो। आधार-N में, N - 1 के विभाजकों के पास यह गुण होता है। 9 के 10 - 1 होने का एक और परिणाम यह है कि यह एक कापरेकर संख्या भी है।'

जैसे ही ओम ने समझाना समाप्त किया, अश्वत्थामा ने हँसते हुए कहा, 'इसमें से कुछ उछल गया यह मेरे दिमाग से सीधे उतर गया, लेकिन यह जानना दिलचस्प है कि नंबर नौ कायम है

Machine Translated by Google

गणित में भी ऐसा महत्व.'

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 7

अभिशाप और इलाज

जैसे ही पृथ्वी ने ब्रेक लिया, श्रीमती बत्रा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'मैंने अपनी मृत्यु शय्या पर टेलीविजन पर समाचार सुना और यह वही महीना था, फरवरी का महीना। मुझे याद है जब, छह घंटे की गहरी नींद के बाद, तेज अचानक जाग गया, और पूरी तरह से चकित महसूस कर रहा था। थकावट के कारण वह मेरे बिस्तर के ठीक बगल में अपनी कुर्सी पर सो गया था। मॉनिटर के फ़्लैटलाइनिंग की आवाज़ ने उसे जगाया। वह मुझे देखने के लिए सीधा बैठ गया और एक झटके में सब कुछ एक अनवरत सुनामी की तरह उस पर गिर पड़ा। हम मर गए। प्रयोग विफल हो गया था. एक विशेषज्ञ होने के बावजूद, वह उस चीज़ को बचाने में असमर्थ था जो उसके जीवन में सबसे ज्यादा मायने रखती थी। जरा-सी हलचल से उसका सिर घूम गया। उसने सहारे के लिए अपनी कुर्सी पकड़ ली और घबराहट के साथ उठ खड़ा हुआ। उसने चादर खींच कर मेरा चेहरा ढक दिया, उसकी आँखें शोकपूर्ण आँसुओं से चमक रही थीं।

'वह खोल गया था; उसे नहीं पता था कि उस बिंदु से आगे कैसे जाना है। क्या उन्हें मेरे दाह संस्कार और अंतिम संस्कार की व्यवस्था शुरू कर देनी चाहिए? क्या उसे अपने परिवार के सदस्यों को बुलाना चाहिए? लेकिन सबसे पहले, उसे अपने तेज़ सिरदर्द के लिए इबुप्रोफेन की आवश्यकता थी। वह नीचे प्रयोगशाला में गया और उसे एक अलमारी में एक पट्टी रखी हुई मिली। जैसे ही वह ऊपर जाने के लिए मुड़ा, उसे कुछ खटपट और धमाके की आवाज़ सुनाई दी। तेज को इसकी उम्मीद नहीं थी और वह सदमे में लगभग उछल पड़ा।

'ध्वनि का स्रोत रेफ्रिजरेटर के पीछे लगता था। वह धीरे से उसकी ओर बढ़ा और जब वह नीचे झाँकने के लिए झुका, तो तेज की आँखें अविश्वास से फैल गईं। यह पूह था! वह कुछ कुतर रहा था। गिनी पिग ने उसे देखा और भागने की कोशिश की, लेकिन तेज ने उसे पकड़ लिया और बाहर खींच लिया। उसने मजे से उसकी ओर देखा और फिर ऊपर छत की ओर देखा, जहाँ मेरा शव पड़ा था। खोई हुई आशा फिर से जाग उठी। पूह को अपने हाथों में पकड़कर तेज मुझे देखने के लिए पीछे की ओर दौड़ा। सीढ़ियाँ चढ़ते समय उसे हार्ट मॉनिटर की दूर से बीप सुनाई देने लगी। उसके हर कदम के साथ उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा। वह कमरे में दाखिल हुआ. मॉनिटर मेरी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदर्शित कर रहे थे; रेखाएँ अब समतल नहीं थीं। मैं सांस ले रहा था.

उसका दिल उसकी छाती पर इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि उसकी आवाज़ आर-पार सुनी जा सकती थी

Machine Translated by Google

कमरा। यह हो रहा था! मैं ठीक हो रहा था! तेज मेरे करीब आया और मेरे पास बैठ गया. जैसे ही मैंने अपनी आँखें खोलीं, उसने मेरा हाथ अपने दोनों हाथों के बीच पकड़ लिया और अपने कांपते होंठ मेरे पोरों पर रख दिए। तब मुझे पता नहीं था कि मैं मृतकों में से वापस आ गया हूं। नींद की गोलियों के कारण नींद अभी भी इतनी तीव्र थी कि मैं पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है।'

'स्थान पूरे देश में फैले हुए हैं। मानसरोवर पर पहले ही समझौता हो चुका है, जिससे हमारे पास आठ रहस्यमय गंतव्य बचे हैं। वेद व्यास ने अश्वत्थामा और ओम से कहा, जो वृषभपि के साथ वापस आ गए थे, वेद व्यास ने अब तक जिन्हें समझा है वे अग्रवन के तेजो महालय, कंकाल झील और भीमकुंड में क्रेटर हैं।

'ये कौन सी जगहें हैं? वे कहाँ स्थित हैं?' वृषभपि की आंखें
उसका दायरा बढ़ गया क्योंकि उसने कभी कैलाश पर्वत से बाहर कदम नहीं रखा था।

इस सवाल का जवाब ओम ने वहां मौजूद सभी लोगों की तरफ से दिया.
'अग्रवन उत्तर प्रदेश में आगरा का पुराना नाम है, तेजो महालय जिसे हम आज ताज महल के नाम से जानते हैं। कंकाल झील उत्तराखंड के रूपकुंड में एक अनोखी झील है। भीमकुंड मध्य प्रदेश में स्थित एक रहस्यमयी जलाशय है। एक प्राकृतिक जल टैंक जो निश्चित रूप से उन लोगों को तृप्त करेगा जिनके पास रहस्यमय स्थानों के बारे में गहराई से जानने की गहरी रुचि है।' 'आप यह कैसे जानते हैं?' मिलारेपा ने अचानक वेद व्यास से पूछा।

'ध्वनि वह ऊर्जा है जो ब्रह्मांड में तैरती रहती है। मैं हर बात सुन सकता हूँ
ऋषि ने शांति से उत्तर दिया, 'अब तक बनी ध्वनि और अब तक बोले गए प्रत्येक शब्द और हम जो खोजने की कोशिश कर रहे हैं, उसके संबंध में मैं इन तीन स्थानों की पहचान करने में कामयाब रहा हूं।'

'एक अर्धचंद्र और दूसरे अर्धचंद्र के बीच की अवधि उन्हें पर्याप्त प्रदान करती है
इनमें से किसी भी गंतव्य तक पहुंचने का समय। हम कैसे जान सकते हैं कि उसका अगला छापा कहां पड़ने वाला है?' मिलारेपा ने जोर से सोचा।

वेद व्यास अपने सामने आने वाली चुनौती को लेकर समान रूप से चिंतित दिखे।
'मुझे यात्रा अनुक्रम के बारे में जानकारी नहीं है, फिर भी कोई हो सकता है।' 'यदि आप, बुद्धिमान ऋषि, किसी

यात्रा क्रम के बारे में नहीं जानते हैं, तो संभावना है
ऐसा होने की अत्यधिक संभावना नहीं है,'परशुराम ने टिप्पणी की।

'वृषकापि, मैं चाहता हूं कि तुम रूपकुंड पर नजर रखो। सभी संभावित स्थानों में से, यह मानव रहित एकमात्र स्थान है। हालाँकि, आपको पहचाने जाने से बेहद सावधान रहना चाहिए क्योंकि आपकी भारी काया को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है।
और हममें से बाकी लोगों को यथासंभव गुप्त रहना होगा।' वृषभपि को यह जिम्मेदारी लेने में खुशी हुई क्योंकि उसे इससे बाहर निकलने का मौका मिलेगा

Machine Translated by Google

ज्ञानगंज और नवीन परिदृश्य देखें। 'मिलारेपा, तुम ताज महल जाओ।
ऐसे कपड़े पहनना सुनिश्चित करें जो आपको ढकें और अपनी हरी त्वचा को अदृश्य बनाने के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करें। यह एक आबादी वाला क्षेत्र है. आपको भीड़ के साथ आसानी से घुलने-मिलने में सक्षम होना चाहिए। और मैं भीमकुंड जाऊंगा. यह मध्य भारत में है; वे वहां से उस सीमा को पार नहीं कर सकेंगे।'

बोलते हुए परशुराम की आवाज गहरी हो गई, 'अगला अर्धचंद्र तीन रात दूर है। हमें उस रात या उससे पहले अपने-अपने निर्धारित स्थानों पर रहना होगा। वृषभपि और मिलारेपा! याद रखें, एक बार जब हम मनुष्यों के बीच कैलाश से बाहर आ जाएंगे, तब तक हम किसी भी शक्ति का उपयोग करने से बचेंगे जब तक कि यह अंतिम उपाय न हो। इसका मतलब है, वृषभपि, उड़ो या दहाड़ो मत। मिलारेपा, किसी भी जादुई शक्ति का प्रयोग न करें और मैं किसी भी प्राचीन हथियार का उपयोग करने से बचूंगा। वेद व्यास, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपने ध्यान के माध्यम से नागेंद्र के मिशन के बारे में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करें।'

सभी को तत्परता से काम करना पड़ा। ओम ने परशुराम का अनुसरण किया और पूछा,
'मेरे लिए आपके क्या आदेश हैं?'
परशुराम की दृष्टि ॐ से हटकर अश्वत्थामा और पीछे की ओर चली गयी। 'क्यों करते हो
क्या आपको लगता है कि अश्वत्थामा को किसी स्थान की सुरक्षा का काम नहीं सौंपा गया है?
क्योंकि आपको भी सुरक्षित रहने की जरूरत है. नागेंद्र और उसकी अमरता के बीच एकमात्र दीवार आपका खून है और आप अभी इसे अपने लिए बचाने के लिए सक्षम नहीं हैं। अपना प्रशिक्षण शीघ्र पूरा करने का प्रयास करें।' जब परशुराम चले गए तो अश्वत्थामा और ओम ने एक नज़र साझा की।

इस बीच, नागेंद्र और उनकी टीम ने गहरे अछूते जंगलों, कलकल करते झरनों, इशारा करते घास के मैदानों को पार किया और अपने रास्ते में हिमालय पर्वतमाला की आश्चर्यजनक, शक्तिशाली सफेद चोटियों को फिर से देखा। उन्होंने राजसी रात के आकाश में बिखरे अरबों तारों के नीचे टेढ़े-मेढ़े रास्तों और कड़कड़ाती ठंडी हवाओं की चुनौतियों का सामना किया, और हिमालय के सबसे प्राचीन ओक और रोडोडेंड्रोन जंगलों की खोज की, जिनमें बाद में खिले हुए थे। वे 16,499 फीट की ऊंचाई पर स्थित बर्फ से ढके माउंट त्रिशूल की गोद में स्थित जल निकाय की ओर बढ़े। रूपकुंड हिमनद झील करीब थी - वह इसे अब दूर से देख सकता था। अर्धचंद्र से तीन दिन पहले, वे लगभग अपने गंतव्य पर थे।

नागेंद्र एलएसडी और परिमल की ओर मुड़े, जो उनके ठीक पीछे थे, और रूपकुंड की जमी हुई झील की ओर इशारा किया। 'आप जो देख रहे हैं उसे मिस्ट्री लेक कहा जाता है, जो झील के तल पर पड़े मानव कंकालों के लिए जानी जाती है, जो बर्फ पिघलने पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।'

Machine Translated by Google

नागेन्द्र ने अपने थैले से वही प्राचीन गोल धातु की बोतल निकाली।
रूपकुंड की रहस्यमय झील को घूरते हुए, उसने एक हाथ में बोतल पकड़ी और चेहरे पर चौड़ी मुस्कान के साथ एलएसडी के पेट को सहलाते हुए कहा, 'उसी जगह पर एक नए जीवन के बारे में सोचा जहां मैंने कुछ तथाकथित अच्छे लोगों को मार डाला था। 'पुरुष अजीब तरह से सुखद होते हैं।' एलएसडी बिखरी हुई हड्डियों को वहां से देख सकता था जहां वे खड़ी
थीं और नहीं देख सकता था
खुद को यह पूछने से रोकें, 'तो आप इस नरसंहार की असली कहानी जानते हैं!'
नागेंद्र ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपनी दुष्टता को याद करते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से मुस्कुराया। 'अब चूँकि आपके अंदर वह चीज़ है जिसकी मुझे ज़रूरत है, तो आप उत्तर देने के योग्य हैं। इन कंकालों के बारे में सभी सिद्धांतों के बीच, जो सच है वह यह है कि मैंने इन सभी लोगों का वध किया है। मेरे दिमाग में इस जगह की सबसे बेहतरीन याद उस आदमी की लाश को घसीटने की है, जिससे मैं सबसे ज्यादा नफरत करता था, उसे इस बोतल से मारने के बाद।' 'वह कौन था?' 'एलएसडी, मुझे पूरी तरह से जानने के लिए आपको कुछ और जन्मों की आवश्यकता होगी। उनके लिए प्रतीक्षा
करें,'नागेंद्र ने मुस्कुराते
हुए कहा।

'कुछ जन्म! मानो उसे अगले जन्म में यह सब याद रहेगा और
वह तब इसका उत्तर देगा,'परिमल ने सोचा, जो वहीं खड़ा रहा। परिमल चुपचाप उनकी ओर देखता रहा. आधी-अधूरी मुस्कान के नीचे अपनी नाराजगी छुपाने की असफल कोशिश के साथ, एलएसडी ने विषय बदलने के लिए एक और सवाल पूछा, 'हमारे आदेश क्या हैं?' परिमल के पास भी प्रश्न थे, लेकिन इस बार वे नागेंद्र के लिए नहीं थे और एलएसडी इसे समझ सकता था।

'ये कंकाल यूँ ही यहाँ नहीं पड़े हैं। ये लोग शपथ के अधीन थे कि जब मैंने उनकी हत्या की तो मुझे पता ही नहीं चला। यहां बिखरे हुए उनके अवशेष आज भी उस शपथ से बंधे हैं और इसलिए वे उसे पूरा करते रहते हैं।
उन्होंने उसी शब्द की रक्षा करने की कसम खाई, जिसे चुराने के लिए हम यहां आए हैं। आश्विन माह (सितंबर के अंत) से फाल्गुन (फरवरी के अंत) तक, झील जमी रहती है, जिससे इसमें गोता लगाना और शब्द की खोज करना असंभव हो जाता है। यह तब होता है जब कंकाल जमी हुई झील के नीचे सोते हैं क्योंकि शब्द बर्फ से सुरक्षित होते हैं। शेष महीनों में, जब यह पिघलता है, तो कंकाल शब्द की रक्षा के लिए जाग जाते हैं। हम फाल्गुन के महीने में हैं, इसलिए बर्फ की परतें भंगुर और पिघल रही हैं। इसलिए, कंकाल अर्धचेतन हैं और किसी भी छापे के लिए तैयार नहीं हैं। इससे हमें कुछ समय के लिए उन पर थोड़ा फायदा मिलता है।

'मुझे नहीं पता कि यह शब्द कहां है। मुझे नहीं पता कि शब्द की रक्षा के लिए वे हम पर कैसे हमला करेंगे, लेकिन किताब के पन्नों ने मुझे सिखाया है कि इसे कैसे खोजा जाए।

Machine Translated by Google

जब बर्फ पिघलती है, तो कंकाल जाग जाते हैं और शब्द की रक्षा करते हुए बाहर आ जाते हैं। यह शब्द किसी के माध्यम से धन्वंतरि तक यात्रा कर रहा था लेकिन मेरे लिए धन्यवाद, वह कभी अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाया। यह बात आज तक उनके दिमाग में बनी हुई है। हालाँकि मैं इस शब्द को जानता हूँ, प्रक्रिया के अनुसार इसे सक्रिय करने के लिए मुझे इसे पीना पड़ता है। झील के सबसे गहरे बिंदु पर उसकी खोपड़ी डूबी हुई है, जो छह महीने तक बर्फ से और शेष वर्ष के लिए शेष कंकालों से ढकी रहती है। हम उस संक्रमण काल में हैं जब बर्फ और कंकाल दोनों ही असुरक्षित हैं। एक पिघलकर अपनी ताकत खो रहा है और दूसरे ने लड़ने के लिए पूरी ताकत नहीं जुटाई है। हमारे पास उस खोपड़ी को ढूंढने और अगला शब्द निकालने के लिए बहत्तर घंटे हैं, इससे पहले कि जमी हुई बर्फ धीरे-धीरे पानी में पिघल जाए और कंकाल अपनी पूरी ताकत पर आ जाएं।'

एलएसडी और परिमल ने आवश्यक कार्रवाई करने के लिए सभी गैजेट्स को बाहर निकालना शुरू कर दिया, जिसमें एक जीपीआर (ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार), एक सीओ2 लेजर और उनके हथियार शामिल थे। एलएसडी ने एक ब्लूटूथ हेडसेट पहना और त्वरित संचार में सहायता के लिए दो अन्य को परिमल और नागेंद्र को सौंप दिया।

जब वे रूपकुंड में अपने संचार संपर्क स्थापित कर रहे थे, ओम, बाहरी दुनिया के साथ सभी संपर्क और संचार खोकर, कैलाश पर्वत के किनारे पर अकेले खड़े थे। नष्ट हुए मानसरोवर को एकटक देखते हुए, उन्होंने धन्वंतरि की भयानक मृत्यु पर शोक व्यक्त किया और नागेंद्र के हाथों मृत संजीवनी खोने के लिए खुद पर नाराजगी व्यक्त की। निकट आते क़दमों की आहट ने उसे उसकी कटु चिंता से बाहर निकाला। वह मुड़ा और देखा कि मिलारेपा उसकी ओर आ रहा है। धन्वंतरि के हत्यारे को देखकर ओम की उदास अभिव्यक्ति परेशानी में बदल गई।

'आप ताज महल के लिए नहीं निकले?' 'हाँ, मैं बस

करने ही वाला हूँ, और जाने से पहले तुमसे मिलना आखिरी काम है जो मुझे करना है।' ओम ने चुप रहना बेहतर समझा,

उसकी आँखें मिलारेपा से मिलने को तैयार नहीं थीं। वह था तबाह और क्रोधित, और वह चाहता था कि मिलारेपा को यह पता चले।

'ओम, मुझे पता है कि आपको धन्वंतरि की हानि के बारे में कैसा महसूस हो रहा है। मैं जानता हूं कि आप उनकी मृत्यु के लिए मुझे दोषी मानते हैं और मुझसे नफरत करते हैं और यह स्वाभाविक है, लेकिन आपको यह जानना होगा कि मैंने धन्वंतरि के साथ जो किया वह उनकी आज्ञा का निष्ठापूर्वक पालन था। वह कैद में कष्ट भोग रहा था। पिछली बार जब आपने उसे देखा था तब से वह बहुत अधिक उम्र का था, और उसे लगातार पीड़ा दी जा रही थी। मुझे यकीन है कि आप जानते होंगे कि सूरज की रोशनी से वंचित शरीर का क्या होता है। वह अँधेरे में कैद था, जहाँ वर्षों से सूरज की रोशनी की एक भी हल्की किरण प्रवेश नहीं कर पाई थी। उसे समय का ध्यान पूरी तरह से खो गया था। वह जीवित नहीं था; वह बमुश्किल जीवित रह रहा था।

Machine Translated by Google

मैंने उसे नहीं मारा, ओम। मैंने उसे उसकी परेशानियों से मुक्त कर दिया क्योंकि उसने मुझसे ऐसा करने का आग्रह किया था। उन्होंने मुझसे कहा कि पहले उसे रिहा करो और फिर कैलाश पहुंचो, परशुराम को ढूंढो और उन्हें अपने बारे में बताओ।'

ओम का चेहरा निष्क्रिय बना रहा, वह जो कुछ भी सुन रहा था उससे प्रभावित नहीं हुआ और मिलारेपा ने एक असहाय आह भरी। 'मुझे खेद है; यह सबसे अच्छा था जो मैं उसके लिए और आपके लिए कर सकता था।' इसके बाद मिलारेपा ने परशुराम और

वृषकापि से जुड़ने के लिए खड़ी ढलान की ओर कदम बढ़ाया, जो पहले से ही अपने-अपने गंतव्य की ओर जा रहे थे।

परशुराम के निर्णय से ओम निराश हो गये। उसे यहीं रहना था और कुछ नहीं करना था। हालाँकि, यह स्थिति लगभग सार्वभौमिक थी, क्योंकि उस समय कोविड-19 महामारी के कारण लगभग पूरी दुनिया बंद थी। यह मार्च 2020 था। उस समय दुनिया को बचाने के लिए सबसे अच्छी चीज़ जो की जा सकती थी वह थी घर के अंदर रहना। अश्वत्थामा ओम की हताशा को देख सकता था और उसने उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की। 'मुझे पता है कि आप इस समय कैसा महसूस कर रहे हैं। मैंने सदियों से असहायता की इस भावना को सहन किया है, मेरे माथे से मवाद बहते हुए जंगलों में निराशाजनक रूप से भटक रहा हूं और भगवान कृष्ण के श्राप के कारण कभी न ठीक होने वाला कोढ़ मेरे शरीर को निगल रहा है।' ओम भी अपना ध्यान उन विचारों से हटाना चाहता था जो उसे परेशान कर रहे थे और इसलिए उसने अश्वत्थामा से सवाल करते हुए भाग लिया।

'ऐसी खबरें आई हैं कि लोगों ने दावा किया है कि उन्होंने आपको पूरे शरीर पर घावों के साथ नर्मदा नदी के आसपास देखा है। ऐसा कहा जाता है कि आपको विष्णु के दसवें अवतार कल्कि के हाथों मोक्ष मिलेगा।
इसमें कितनी सच्चाई है? एक और सवाल जिस पर मैं अक्सर विचार करता था वह यह था कि आपने श्राप को कैसे तोड़ा।' 'मैंने नहीं किया.

परशुराम ने मुझे इससे बाहर निकाला। इसीलिए मेरा सुझाव है कि आप विश्वास रखें, आज्ञा मानें और परशुराम का अनुसरण करें और हां, यह सच है कि कल्कि ही मुझे मोक्ष प्रदान करेंगे,' अश्वत्थामा ने उत्तर दिया। उस उत्तर से ओम का एक और प्रश्न सामने आया।

'परशुराम ने तोड़ा भगवान कृष्ण का श्राप! उसके बाद क्या हुआ?' एक अन्य प्रश्न से एक और उत्तर मिला और इस प्रकार अश्वत्थामा ओम को उसके अतीत में ले गया।

'इतने वर्ष बीत गए। कृष्ण और उनके भाई बलराम ने नश्वर लोक छोड़ दिया।
महाभारत काल के सभी कौरवों और बचे हुए योद्धाओं का निधन हो गया। धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती जंगल में चले गए और जंगल की आग में जलकर नष्ट हो गए। विदुर के रूप में आप लुप्त हो गये। कृष्ण के जाने के बाद पांडवों को गहरे खालीपन का एहसास हुआ और वे चले गए

Machine Translated by Google

अर्जुन के पोते परीक्षित को राज्य सौंपा। द्रौपदी के साथ पांडव वन की ओर चले गए, फिर कभी वापस नहीं लौटे।

'इस पूरे समय, मैं तब तक भटकता रहा जब तक मुझे प्राग तीर्थ, जिसका नाम अब बदलकर प्रयागराज कर दिया गया है, में परशुराम के आश्रम के बारे में नहीं बताया गया। परशुराम महाभारत के तीन सबसे शक्तिशाली योद्धाओं - भीष्म पितामह, सूर्य पुत्र कर्ण और मेरे पिता, गुरु द्रोणाचार्य - के गुरु रहे हैं। मुझे यह सुझाव दिया गया कि गुरु परशुराम मेरे प्रति सहानुभूति रखें और मुझे मोक्ष के मार्ग पर मार्गदर्शन करें क्योंकि मैं उनकी सबसे प्रसिद्ध प्रतिभाओं में से एक का पुत्र था। अपने शापित शरीर से छुटकारा पाने की आशा से, मैं महीनों तक रेंगते हुए, परशुराम के आश्रम की खोज करता रहा।

'किसी तरह उनके आश्रम पहुंचने और कुछ और महीनों तक इंतजार करने के बाद, आखिरकार मेरी मुलाकात परशुराम से हुई। तब तक, उन्हें मेरे और मेरे कार्यों के बारे में पहले ही पता चल चुका था और उन्होंने मदद करने से साफ़ इनकार कर दिया और मुझे तुरंत चले जाने का आदेश दिया।
उन्होंने अपना फैसला सुना दिया था, लेकिन मैंने उनसे द्रोणाचार्य की खातिर मुझे बचाने की विनती की, जिन्होंने अपनी आखिरी सांस तक उनकी पूजा की थी। मैंने उनसे कहा कि जिस क्रोध ने मुझे बदला लेने के लिए अंधा कर दिया था, वह पांडवों द्वारा उनके शिष्य और मेरे पिता द्रोणाचार्य की अनैतिक हत्या का परिणाम था। मैंने उनसे यह विश्वास करने का आग्रह किया कि उनकी प्रतिभा के प्रति मेरा प्यार मेरे पिता के प्रति उनके प्यार के समान था; कि परशुराम उनके पिता समान थे। आख़िरकार, परशुराम को मेरे पिता के प्रति मेरे प्रेम और भक्ति का एहसास हुआ और वे मेरे प्रतिशोध का कारण समझ गये। उन्होंने मेरी मदद करने का वादा किया.' 'लेकिन तुम्हें तो स्वयं भगवान कृष्ण ने शाप दिया था। ऐसे श्राप को कोई कैसे उठा सकता है?'

अश्वत्थामा ने अपनी आँखें बंद कर लीं और बड़ी स्तुति और श्रद्धा के साथ पाठ किया।

जी
पन्नगर्वा पि सुरैर्वा कालमृत्युभ्युयाद्वापि रय शापितो यदि । 'मुनिभिः

गुरूरक्षति पार्वती अशक्ता हि सूर्याद्याश्चक्ता मनुष्यस्तथा।'

गुरुशापेन तेशीघ्रंक्षायं यं नति न संशयः'

संस्कृत श्लोक का अर्थ समझाते हुए अश्वत्थामा ने कहा, 'यह वेद व्यास द्वारा लिखित गुरु गीता का एक श्लोक है। गुरु गीता में भगवान शिव और देवी पार्वती के बीच एक वार्तालाप का वर्णन किया गया है, जब पार्वती शिव से गुरु और मुक्ति के बारे में ज्ञान देने के लिए कहती हैं। पार्वती के प्रश्न के उत्तर में शिव इस श्लोक का उच्चारण करते हैं, जिसका अर्थ है कि यदि शिष्य

Machine Translated by Google

देवताओं द्वारा शापित होने पर, गुरु शिष्य की रक्षा और मुक्ति कर सकता है। एक गुरु शिष्य को काल (मृत्यु) और मृत्यु के भय से भी बचा सकता है।
लेकिन यदि गुरु ही शिष्य को श्राप दे तो शिष्य धीरे-धीरे निर्बल हो जाता है, अंततः विनाश को प्राप्त होता है और देवता भी ऐसे शिष्य को श्राप से नहीं बचा सकते।

'द्रोणाचार्य न केवल मेरे पिता थे, बल्कि मेरे गुरु भी थे और परशुराम मेरे गुरु के गुरु हैं। मैंने अपने पिता से जो कुछ भी सीखा, वह सब मुझे परशुराम द्वारा प्रदान किया गया था, और अंततः मुझे दिया गया। इस प्रकार, परशुराम मेरे भी गुरु थे।

'परशुराम ने तब मुझसे कहा कि वह मुझे मोक्ष नहीं दे सकते और मुझे भगवान कृष्ण के श्राप से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सकते, लेकिन जब तक कल्कि मुझे मोक्ष देने के लिए नहीं आते तब तक वह मुझे मेरे घावों, दर्द और कुष्ठ रोग से छुटकारा दिला सकते हैं। अगले वर्षों में, परशुराम ने धीरे-धीरे मुझे कुष्ठ रोग और अन्य सभी बीमारियों से ठीक कर दिया। आख़िरकार वह दिन आ ही गया जब मुझे परशुराम की कुटिया से आधी मुक्ति मिल गई। यही वह दिन था जब मैंने कुछ इतना अविश्वसनीय देखा कि मैं कभी भी अपने जीवन में इसका सामना नहीं करना चाहूंगा।' जैसे ही अश्वत्थामा चुप हुआ, उसकी आँखों में एकदम भय की चमक आ गई और वह भय में इतना खो गया कि ओम को उससे यह पूछकर वापस लाना पड़ा कि उसने क्या देखा। अश्वत्थामा जैसा वीर अमर योद्धा मात्र स्मरण मात्र से भयभीत लग रहा था। ओम ने देखा कि अश्वत्थामा ने आगे बढ़ने से पहले उसके गले में मौजूद गांठ को निगल लिया, 'मैंने देखा कि अश्वत्थामा ठीक मेरे सामने खड़ा है।' 'आपका क्या मतलब है?' ओम ने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं।

'मैंने एक आदमी देखा जो बिल्कुल मेरे जैसा दिखता था, मवाद और कोढ़ से भरा हुआ, दर्द और नफरत, ताकत और उद्देश्य, ताकत और बदला। वह एक शैतान था जिसने मेरे शरीर, हृदय और आत्मा में व्याप्त सारी शत्रुता को दबा रखा था। वह ठीक मेरी आँखों के सामने खड़ा था, मेरे अंदर वापस आने की कोशिश कर रहा था। मैं असुरक्षित और भयभीत महसूस कर रहा था, मानो मैं एक भूखा मगरमच्छ के सामने फेंक दिया गया बच्चा हो। मैंने अपने जीवन में कभी भी इस तरह के आतंक का अनुभव नहीं किया था। वह अपने क्रोध और प्रभुत्व से मुझे पकड़ने और वश में करने का प्रयास कर रहा था, लेकिन परशुराम ने ऐसा नहीं होने दिया। उन्होंने मुझसे झोपड़ी छोड़ने को कहा।' 'वह कौन था?' ओम का मुँह एकदम असमंजस में खुला रह गया।

'परशुराम ने मुझे दो भागों में विभाजित कर दिया था, जिससे एक हमशक्ल उत्पन्न हो गया। जब तक मेरे पिता की मृत्यु नहीं हुई, तब तक मेरे अंदर की अच्छाई हावी थी और उनकी मृत्यु के बाद क्रोध और बदले की बुराई ने मुझ पर हावी हो गई। जब मैं था

Machine Translated by Google

अपने नकारात्मक अहंकार से अलग होकर, मैं कमज़ोर महसूस कर रहा था और जो हमशक्ल मेरे सामने खड़ा था वह दोगुना शक्तिशाली था। मैं बीमारी से उबरने वाला एक शरीर मात्र था और उसका उनसे कोई मुकाबला ही नहीं था। प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई और बुराई दोनों का वास होता है क्योंकि हम पहले युग के बीच में हैं, जो सत्य युग का सबसे पवित्र चरण था, और कलियुग के अंत का सबसे खराब चरण था जिसमें आशावाद का कोई निशान नहीं था। इसीलिए कुछ लोग अच्छाई से निर्देशित होते हैं और कुछ बुराई से। किसी व्यक्ति के भीतर का प्रमुख हिस्सा उसके चरित्र को निर्धारित करता है।

लेकिन अब सहस्राब्दियां हो गई हैं और इतने वर्षों में मैंने परशुराम के साथ उनके शिष्य के रूप में रहकर वह शक्ति पुनः प्राप्त कर ली है।' अश्वत्थामा मंद-मंद मुस्कुराया।

'और आपके नकारात्मक स्व का क्या हुआ? कहाँ है वह?' 'मुझें नहीं पता। मैंने कभी-

कभी परोक्ष रूप से उनके बारे में पूछने की कोशिश की लेकिन एक दिन, परशुराम ने मुझसे सख्ती से कहा कि मुझे उनके बारे में जानने की ज़रूरत नहीं है। मैंने फिर कभी उसके बारे में पूछने की कोशिश नहीं की,' अश्वत्थामा ने निष्कर्ष निकाला।

'आज पहली बार मैंने तुम्हारी आँखों में डर देखा है, अश्वत्थामा,' कबूल करते समय ओम ने दूसरी ओर देखा।

'हाँ! क्योंकि वह अब भी मुझे परेशान करता है. वह बिल्कुल मेरी तरह चलता था और बात करता था उसके पास वह सारा ज्ञान और शक्ति थी जो मेरे पास उस समय थी। हमारे बीच एकमात्र अंतर यह था कि उसकी रक्तरंजित आंखें द्वेष और प्रतिशोध से भरी थीं।' जब अश्वत्थामा और ओम आपस में एक बंधन बुन रहे थे, परिमल बर्फ को जितना

संभव हो उतना गहराई तक तोड़ने में व्यस्त था।

एलएसडी ने जीपीआर के माध्यम से पानी के नीचे हर चीज की जांच करना जारी रखा, जो रहस्यमय झील को इंच दर इंच स्कैन कर रहा था, इस बात से अनजान था कि वृषकापी हर कदम के साथ मौके पर ही बंद हो रहा था। वह मिलारेपा और परशुराम के साथ-साथ चले।

'क्या मैं आपसे एक मदद माँग सकता हूँ, मिलारेपा?' वृषभपि ने कहा.

'हाँ?' मिलारेपा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

'मैं यहां थोड़ा भ्रमित हूं। यदि मेरे पास है तो क्या आप कृपया मुझे सुधारेंगे कुछ भी गलत समझा?' वृषभपि ने कहा.

'के बारे में?' उलझे हुए मिलारेपा ने पूछा।

'धन्वंतरि ने मृतसंजीवनी नामक ग्रंथ लिखा, जो सुरक्षित रखा गया ओम के साथ, लेकिन अब नागेंद्र नाम के किसी बूढ़े व्यक्ति ने उससे चोरी कर ली है। नागेंद्र वही आदमी है जिसके लिए तुमने कभी काम किया था और फिर तुमने धोखे से धन्वंतरि की हत्या करके परशुराम तक पहुंच बनाई थी। और आपने ऐसा किया

Machine Translated by Google

धन्वंतरि की पुस्तक के रक्षक को उस व्यक्ति से बचाएं जिसने कभी सोचा था कि उसका रहस्य आपके पास सुरक्षित है। मुझे यकीन नहीं है कि मैंने क्या कहा, लेकिन क्या मैंने इसे सही कहा?'

'हाँ! आपने किया,' शर्मिंदा मिलारेपा ने उत्तर दिया।

'लेकिन आप किसकी तरफ हैं? मैं भ्रमित हूं,' भोले वृषभी ने फिर पूछा।

'मैं आपकी तरफ हूं,' मिलारेपा ने मित्रतापूर्ण हाथ रखते हुए उत्तर दिया वृषभपि का कंधा.

'आपने पुराने चोर के लिए काम किया। तो, वह कौन है? वृषभपि उत्सुक लग रहा था।

'मुझें नहीं पता।' अपने अतीत की विस्मृति में खोए हुए, मिलारेपा ने अपना अतीत वापस ले लिया हाथ, लेकिन सवालों का सिलसिला ख़त्म नहीं हुआ था.

'ठीक है! लेकिन आपने ओम के लिए, परशुराम तक पहुंचने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। ओम कौन है ?' वृषभपि कायम रहा.

'मुझे नहीं पता,' मिलारेपा ने कहा, जो अब भी विस्मृति की ओर देख रहा था, जिससे वृषकापि चिढ़ गया, जो केवल सीधे और सरल उत्तर चाहता था।

'आप उसके लिए नहीं जानते जिसके लिए आपने काम किया और जिसे आपने बचाया उसे भी नहीं जानते। फिर यह कौन जानता है?' 'जिसके लिए मैंने

काम किया और जिसे मैंने बचाया - नागेंद्र और ओम,' मिलारेपा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, वृश्चिकपि के बचकाने गुस्से को महसूस किया और शांत किया, इससे पहले कि उन दोनों को परशुराम ने बुलाया था।

'यहाँ, यह हर समय तुम्हारे ऊपर रहेगा,' परशुराम ने उनकी गर्दन के पीछे माइक्रोचिप चिपकाते हुए घोषणा की। 'यह एक ट्रैकर है. इससे मुझे अपने डिवाइस पर आपके दोनों स्थानों का पता लगाने में मदद मिलेगी।' फिर उसने उन्हें अपने-अपने नक्शे के साथ कपड़ों का एक सेट सौंपा और हाथ में कुछ पैसे लेकर मिलारेपा की ओर मुड़ा।

'यह अब भारत में स्वीकार्य मुद्रा है। इससे मदद मिलेगी। आपके पास एक लम्बा समय है आगे कई शहरों से होकर यात्रा करें,'परशुराम ने भारतीय मुद्रा का एक बंडल सौंपते हुए कहा।

मिलारेपा ने एक नज़र डाली और नम्रता से मुस्कुराया, 'धन्यवाद, सर, लेकिन मुझे किसी भी चीज़ के लिए इसकी आवश्यकता नहीं होगी।'

परशुराम ने उन्हें सूचित किया कि दुनिया, जैसा कि वह जानते थे, काफी हद तक बदल गई है, और इसलिए उन्हें इसकी आवश्यकता हो सकती है। इसे रखना और इसका उपयोग न करना, इसकी आवश्यकता होने और न होने से बेहतर था। मिलारेपा ने केवल अपने शब्दों का सम्मान करने के लिए परशुराम से धन लिया क्योंकि उन्हें अभी भी यकीन था कि यह कोई आवश्यकता नहीं थी।

वृषभपि ने पैसों को देखकर मासूमियत से पूछा, 'वह क्या है? क्या मैं कुछ है भी?'

Machine Translated by Google

'यह अच्छी बात नहीं है और तुम्हें इसकी जरूरत भी नहीं पड़ेगी क्योंकि तुम मिल नहीं रहे हो कोई भी पुरुष.' परशुराम ने धीरे से अपना सिर हिलाया मानो किसी बच्चे को मना रहे हों।

वृषभपि ने थोड़ी सी भौहें सिकोड़ीं, और इसलिए परशुराम हल्के से मुस्कुराए और उसे एक नोट सौंपा। 'यहाँ, आप इसे रख सकते हैं।' वृषभपि का चेहरा तुरंत खिल

उठा। 'धन्यवाद!' 'अब जो कपड़े मैंने तुम्हें दिए हैं उन्हें पहन लो,'

परशुराम ने कहा

वृषभपि की संक्रामक मुस्कान उस तक पहुंच गई।

वृषभपि ने आज्ञा का पालन किया और उन्हें पहनने की कोशिश करते हुए कपड़ों के साथ संघर्ष करना शुरू कर दिया।

'क्या वह पहली बार ज्ञानगंज से बाहर निकला है?' मिलारेपा ने पूछा।

'हां उसे है। उसे धन नहीं चाहिए; वह सिर्फ इसे पाना चाहता है क्योंकि यह आपके पास है और वह बस यह जानने के लिए उत्सुक है कि रंगीन कागज का टुकड़ा कैसे काम करता है।' 'लेकिन क्या उसे अकेले बाहर भेजना जोखिम भरा नहीं है?'

चिंतित मिलारेपा ने कहा। में

परशुराम की नजर में मिलारेपा सही थे इसलिए उन्होंने अपने फैसले को सही ठहराया.

'नागेंद्र का मुकाबला करने के लिए किसी को भेजना जोखिम भरा है। दरअसल, उसे ज्ञानगंज से कहीं दूर भेजना जोखिम भरा है, क्योंकि वह पहले कभी बाहर नहीं गया है।

इसीलिए मैं उसे रूपकुंड जैसे निर्जन क्षेत्र में भेज रहा हूं, जो कैलाश के अपेक्षाकृत करीब है और इस मौसम में मनुष्यों के लिए बंद है। वह आज्ञाकारी है. वह दुनिया का सामना करने के लिए बहुत मासूम हो सकता है लेकिन वह नागेंद्र से निपटने के लिए काफी शक्तिशाली है। अब इसे पहनो और आगे बढ़ो. भगवान आपके साथ रहें।' तब तक, वृषकापी शर्ट, पैंट और मंकी कैप पहनने में कामयाब हो गया था, लेकिन उसकी परेशानी स्पष्ट थी क्योंकि उसे अपनी पूंछ को

समायोजित करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था, जो पतलून के एक पैर के अंदर थी। परशुराम ने उसकी ओर देखा और गंभीरता से बोले, 'चाहे कुछ भी हो जाए, ये कपड़े मत उतारना वृषभपि।

'कैलाश से रूपकुंड तक का अपना रास्ता याद रखें और कैलाश लौटने के लिए उसी रास्ते का अनुसरण करें।' अपना सिर हिलाते हुए और अपनी पैंट ठीक करते हुए वृषभपि ने दोनों निर्देशों को स्वीकार किया।

जब वृषकापि रूपकुंड के लिए पूरी तरह से तैयार था, वहां की रहस्यमयी झील पर एलएसडी जो कुछ भी स्क्रीन पर देख सकता था वह पूरी तरह से ठंडा था, जिसमें जीवन का कोई संकेत नहीं था। पहला दिन बीत गया और झील के छठे हिस्से को स्कैन किया गया, लेकिन कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं निकला, इसलिए उन्होंने रात में जारी रखने का फैसला किया। साफ, तारों से भरा आसमान उनके ऊपर मंडरा रहा था और वे पहाड़ी घाटियों से गूंज रही प्रकृति की चीखों से अनभिज्ञ होकर आसपास की शांति को नष्ट करते जा रहे थे, जबकि वृषकपि इसे बचाने से अभी भी दो दिन दूर था।

Machine Translated by Google

उन्होंने पूरी रात काम किया, फिर भी मॉनिटर पर शवों के अलावा कुछ भी नहीं दिखा। वह गोधूलि का समय था जब परशुराम, मिलारेपा और वृषकापी उत्तराखंड-नेपाल सीमा से अपने अलग-अलग स्थानों के लिए प्रस्थान कर गए।

उस स्थान से सबसे नजदीक वृषभपि के लिए रूपकुंड था और सबसे दूर परशुराम के लिए भीमकुंड था। वृषभपि और परशुराम के गंतव्यों के बीच कहीं, अपनी पूरी महिमा में, उत्तर प्रदेश में आगरा का ताज महल, मिलारेपा का गंतव्य खड़ा था।

दिन बीत गया और सूरज पश्चिम में डूबने लगा, लेकिन दोनों तरफ कुछ भी नहीं बदला क्योंकि नागेंद्र और उनकी टीम ने अपनी खोज जारी रखी और परशुराम और उनकी टीम ने अपनी चढ़ाई जारी रखी।

दूसरी रात के अंत में, झील का बमुश्किल आधा हिस्सा ही स्कैन किया जा सका, जिससे तीनों निराश हो गए। नागेंद्र का धैर्य जवाब दे रहा था, इसलिए उन्होंने उन्हें खोज तेज करने का आदेश दिया; अर्धचंद्र बस एक रात दूर था। जंगलों में छिपते हुए और मानव बस्तियों को चकमा देते हुए, वृषभपि ने रूपकुंड की ओर अपनी यात्रा जारी रखी। शाम का समय था जब एलएसडी ने एक स्थान पर जमीन के नीचे कुछ ताप संकेतों का पता लगाया और परिमल यह देखने के लिए दौड़ा कि यह क्या था, जबकि नागेंद्र ने किसी न किसी रूप में खतरे की आशंका जताते हुए आसपास पर नजर रखी।

परिमल ने स्कैनर की रीडिंग का पालन किया और अपना हाथ पानी के अंदर डुबोया।
एलएसडी परिमल के हाथ की गर्मी को पिछले हीट ट्रेस को ओवरलैप करते हुए देख सकता था, लेकिन परिमल किसी भी ठोस चीज़ को छू नहीं सका या किसी भी जीवित चीज़ को महसूस नहीं कर सका।
एलएसडी ने उसे थोड़ा और गहराई तक खोदने के लिए कहा, यह संदेह करते हुए कि वह चीज़ के ठीक ऊपर की सतह पर टैप कर रहा होगा। जैसे ही उसने अपना हाथ गहराई में डाला, उसकी उंगलियाँ बर्फ की परत के नीचे किसी ठोस चीज़ से टकरा गईं। छूने पर सतह उखड़ी हुई महसूस हुई। उसके आकार का अनुमान लगाने की कोशिश करते हुए, उसने उसे निकालने के लिए उसे मजबूती से पकड़ लिया। उसने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। जैसे ही परिमल ने उसे पानी के भीतर सुरक्षित रूप से पकड़ लिया, एलएसडी ने स्कैनिंग मॉनिटर से अपनी आँखें हटा लीं जब उसे अपने दाहिनी ओर कुछ हलचल महसूस हुई। उसने देखा कि एक इंसान की हड्डी अपने आप हिल रही है। उसकी आँखें घूमीं और परिसर का निरीक्षण किया, तभी उसे एहसास हुआ कि लगभग सभी बिखरी हुई हड्डियाँ हिल रही थीं।

उसने परिमल की ओर देखा, जो अभी भी संघर्ष कर रहा था।
उसने नागेंद्र को चिल्लाकर उसका ध्यान उसकी ओर लाने के लिए कहा
गवाही देना 'हड्डियाँ हिल रही हैं। आपके क्या आदेश हैं?'
नागेंद्र, जो अभी भी संभावित खतरों के लिए दूर-दूर तक निगरानी करने में व्यस्त था, उसने यह देखने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया कि अर्धचंद्र सूरज की कम होती रोशनी से बाहर आ रहा था।

Machine Translated by Google

वह चिल्लाया, 'यह समय है! यह समय है! चाँद निकल आया है. अस्थि रक्षक जाग रहे हैं। इसे ढूंढने के लिए हमारे पास केवल कुछ ही घंटे बचे हैं। परिमल से पूछो-'नागेंद्र ने अपना शेष वाक्य तब निगल लिया जब उसने एक विशालकाय को झील की ओर आते देखा।

'श्श!' नागेन्द्र फुसफुसाए. 'कोई आ रहा है; परिमल को बचाओ और छिप जाओ।' आने वाले खतरे से निपटने की हिम्मत करने के बजाय, नागेंद्र खुद को छिपाते हुए चुपचाप जमीन पर सीधे लेट गए। झील के किनारे के पास, एलएसडी ने परिमल पर नज़र रखते हुए भी ऐसा ही किया, जो उसके पास मौजूद चीज़ों को उखाड़ने में अपनी पूरी ताकत लगाता रहा।

वृषभपि रूपकुंड के निकट एक पर्वत शिखर पर पहुँचे। से बेखबर
अपने पैरों के ठीक बगल में जमीन पर फैला हुआ नागेंद्र, उसने चारों ओर देखा, अपनी आँखों से परिधि को देखा। झील के चारों ओर बिखरे तंबू, टॉर्च, मॉनिटर, रस्सियाँ और अन्य संदिग्ध सामग्री ने उसके लिए मनुष्यों की उपस्थिति को स्पष्ट कर दिया। तभी उसने देखा कि एक आदमी ठंडे पानी के बीच में बैठा हुआ कुछ मछली निकालने की कोशिश कर रहा था। परिमल ने वृषभपि को भी देखा. वे दोनों जानते थे कि क्या करना है, और एलएसडी भी। अभी भी इस बात से अनभिज्ञ कि नागेंद्र उसके पैर के इतने करीब लेटा हुआ है, वह परिमल को पकड़ने के लिए ढलान से नीचे की ओर तेजी से दौड़ा। तब तक, परिमल उस वस्तु को थोड़ा सा बाहर निकालने में कामयाब हो गया था, जिसमें जो कुछ भी सीमेंट किया गया था, लेकिन वह जानता था कि अगर उसने इसे छोड़ दिया, तो वह इसे खो देगा। दूसरी ओर, वृषकापी की गति और आकार किसी की भी रीढ़ में सिहरन पैदा कर सकता था और परिमल उसे अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़ते हुए देख सकता था। परिमल की चौड़ी, भयभीत आंखें एलएसडी पर केंद्रित हो गईं, जो विशाल वृषकापि की दृष्टि से उबरने के बाद जल्दी से अपनी ओरिजिन -12 शॉटगन को लोड कर रही थी। इस समय अर्धचन्द्र पूर्णतः दिखाई दे रहा था।

वृषभपि के शक्तिशाली कदमों से धरती कांप उठी, जिससे कंकालों की सेना जागृत हो गई। वे उसे हर तरफ से घेरने लगे। सतर्क अस्थि रक्षकों को देखते हुए, परिमल ने अपनी सारी गतिविधि बंद कर दी ताकि कंकाल केवल वृषभपि पर हमला कर सकें। परिमल को पकड़ने से पहले सही ढंग से निशाना लगाना और विशाल वानर को रोकना एलएसडी पर निर्भर था। वृषभपि ने परिमल की ओर हमला किया क्योंकि अस्थि रक्षक उसकी ओर बढ़े। एलएसडी ने उसका शॉट ले लिया। उसने आठ सेकंड से भी कम समय में तीस राउंड फायर किए, जिससे वृषकापी के पूरे बाएं हिस्से पर हमला हो गया। लेकिन गोलियों से वह बमुश्किल घायल हुआ। हालाँकि, उसकी गति के कारण, उसका शरीर असंतुलित हो गया और जमीन से टकरा गया। गोलीबारी ने वृषकपी को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया था। हड्डी रक्षक तुरंत उस पर टूट पड़े और अपनी हड्डियों तथा अपने पास मौजूद चट्टानों से उस पर हमला कर दिया

Machine Translated by Google

हथियार, शस्त्र। अपने हाथ के तेज़ झटके से, उसने आसानी से शवों के ढेर को हटा दिया। एलएसडी को एहसास हुआ कि उसे बंदूकों से नहीं गिराया जा सकता, उसे पकड़ना ही होगा। उसने अपनी किट से एक जालीदार बंदूक निकाली और गोली चलाने से पहले निशाना साधा। जाल ने वृषभपि के शरीर को कसकर लपेटकर अपने लक्ष्य को उलझा लिया, जिससे उसे करंट लगा और वह स्थिर हो गया।

वृषभपि के संघर्ष ने परिमल को कुछ समय दे दिया था, लेकिन वह अभी भी खोपड़ी से जूझ रहा था क्योंकि वह झील में मजबूती से फंसी हुई थी। उसने अपनी उँगलियाँ खोपड़ी की खोखली आँख की सॉकेट में फँसा दीं और अपनी पूरी ताकत से उसे निकालने की कोशिश की, लेकिन वह फिर भी नहीं हिली। अपने भींचे हुए जबड़े और झुकी हुई आँखों से, परिमल ने महसूस किया कि वृषभापी खुद को जाल से मुक्त कर रहा है और फिर से उसकी ओर बढ़ रहा है। उसके पास ज्यादा समय नहीं था. एलएसडी ने अपनी बन्दूक से और अधिक गोलियाँ चलाईं, लेकिन वृषकापी के सरपट दौड़ते शरीर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

इससे पहले कि वे कुछ और कर पाते, वृषभपि ने उसे पकड़ लिया और अपने हाथ के एक झटके से परिमल को बड़ी ताकत से नीचे गिरा दिया। इस हमले ने परिमल के पक्ष में काम किया क्योंकि उसका हाथ, जो जमीन के नीचे फंसा हुआ था, रीढ़ की हड्डी लटकते हुए खोपड़ी से बाहर निकल गई। नागेन्द्र ने यह सब देखा और जान लिया कि यही है। जैसे ही परिमल बर्फ पर गिरा, वृषभपि ने तेजी से उस पर धावा बोल दिया। परिमल के हाथ की खोपड़ी ने भी हड्डी रक्षकों का ध्यान उसकी ओर खींचा था। देखते ही देखते रूपकुंड के चारों ओर हर चट्टान से अस्थि रक्षकों का समूह निकलने लगा। इससे पहले कि कुछ किया जा सके, वृषभपि ने परिमल के हाथ से खोपड़ी छीन ली। इस प्रक्रिया में, खोपड़ी खुल गई और चाँद की रोशनी ऊपरी खोपड़ी के अंदरूनी हिस्सों पर पड़ी; जैसे ही चांदनी ने इसे छुआ, यह चांदी की तरह चमकने लगा और इसमें खुदे हुए दो शब्द उभरे 'अनादि अनंता (अनादी अनंत)', जिसका अर्थ था 'शाश्वत'। एलएसडी ने बोन गार्ड और वृषकापी दोनों की शूटिंग जारी रखी। हड्डी के रक्षक ज़मीन पर बिखर जायेंगे, और फिर से एक पूरा कंकाल बनाने के लिए एकत्रित हो जायेंगे और हमला करना जारी रखेंगे। और जहाँ तक वृषकपि की बात है, एलएसडी की बंदूक की गोलियाँ उसे परेशान करने में विफल रहीं।

नागेंद्र वृषभपि से छिपने के लिए अब तक चुपचाप लेटा हुआ था, लेकिन अब अंततः हस्तक्षेप करने का समय आ गया था, क्योंकि जिस खोपड़ी की उसे आवश्यकता थी वह वृषभपि के कब्जे में थी। वृषभपि ने एक हाथ में खोपड़ी लेकर दूसरे हाथ से परिमल को उठाया और दूर फेंक दिया। अन्य संभावित हमलों से अनभिज्ञ, वृषभपि अपने आस-पास के सुरक्षा गार्डों को बचाता रहा। नागेंद्र ने इयरपीस के माध्यम से एलएसडी को वृषकापी पर गोलीबारी बंद करने का आदेश दिया क्योंकि उसके हाथ में खोपड़ी थी और वे इसके साथ कुछ भी होने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। एलएसडी पीछे हट गया और वृषभपि की आँखों की ओर देखने लगा, जो क्रोध से भरी हुई थीं

Machine Translated by Google

जानवर। तभी, नागेंद्र उसकी ओर लपका, उस पर उसी तरह झपटा जैसे कोई शिकारी अपने शिकार का शिकार करने के लिए करता है, और वृषभपि की पीठ पर जा गिरा।

नागेंद्र की गति और रणनीति ने एलएसडी और परिमल को आश्चर्यचकित कर दिया। इससे पहले कि वह प्रतिक्रिया दे पाता, नागेंद्र ने अपने दाँत वृषकापि की गर्दन में गहराई तक गड़ा दिए। रूपकुंड में वृषभपि पर हुए सभी हमलों में से यह सबसे घातक था। उसने वृषभपि के मांस का एक बड़ा टुकड़ा फाड़ डाला। हृदय से शरीर के बाकी हिस्सों को रक्त की आपूर्ति करने वाली एक प्रमुख धमनी के फट जाने से वृषकापी को भारी रक्तस्राव हुआ।

कुछ ही सेकंड में, नागेंद्र वृश्चिक की पीठ से उतर गया और फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। बिना समय बर्बाद किए, उसने उसके हाथ से खोपड़ी छीन ली, अपनी प्राचीन धातु की बोतल खोली और खोपड़ी में थोड़ा पानी डाला, ऊपरी खोपड़ी के टूटे हुए टुकड़े को प्याले की तरह इस्तेमाल किया। कुछ अस्थिरक्षकों ने मूर्छित वृषकपि पर हमला करना और बढ़ाना जारी रखा। परिमल और एलएसडी ने सभी सुरक्षाकर्मियों को दूर रखा ताकि वे नागेंद्र को बाधित न कर सकें। वे जागते हुए कंकालों की बढ़ती हुई भीड़ को महसूस कर सकते थे। वे जल्द ही प्रबल होने वाले थे। परिमल जानता था कि भागने के लिए उसे अपने हथगोले का उपयोग करना होगा क्योंकि कोई रास्ता नहीं था कि वे कंकालों की इतनी बड़ी भीड़ से लड़ सकें। उन्होंने नागेंद्र के प्रक्रिया पूरी करने का इंतजार किया क्योंकि यही उनके भागने का संकेत होगा।

जैसे ही पानी ने चांदी की चमकती खोपड़ी की भीतरी सतह को छुआ, शिलालेख पानी में घुल गया और उसे एक शानदार फ़िरोज़ा में बदल दिया।

वृषभपि, कंकालों के बेड़े से अभिभूत होकर, असहाय होकर अपने मिशन को अपने सामने विफल होते देखता रहा। नागेंद्र वृषभपि के ताजे मांस के टुकड़े को बेरहमी से चबा रहा था, और टुकड़े को धोने के लिए खोपड़ी से दिव्य जल पी रहा था। जब उसने अपना फ़िरोज़ा पेय गटक लिया, तो यह उसके गले से नीचे उतरते हुए एलएसडी और परिमल को दिखाई दे रहा था। वृषभपि जानता था कि उसे भागना होगा अन्यथा वह या तो बुद्धिहीन कंकालों द्वारा, या दुष्ट नागेंद्र और उसकी टीम द्वारा मार दिया जाएगा। इस सब से एक बार में बचने का एकमात्र तरीका अंतिम रणनीति का सहारा लेना था जिसे प्रदर्शित करने से परशुराम ने उसे मना किया था। वृषभपि ने अपनी आँखें बंद कर लीं और निर्णय लेने में एक क्षण लिया जबकि अस्थि रक्षक उस पर हमला करते रहे। तभी, परिमल को नागेंद्र से संकेत मिला: शब्द हासिल कर लिया गया था। उसने हथगोले की पिन खींची और उसे बर्फीली झील पर फेंक दिया।

वृषभपि ने आखिरी बार अपनी सारी ताकत इकट्ठी की और ग्रेनेड गिरने से कुछ सेकंड पहले, जमीन से दूर, ऊपर की ओर उड़ गया, कंकालों का एक समूह अभी भी उसे पकड़ रहा था। उसके ऊपर लटक रहे गार्ड एक-एक करके गिर गए, जिससे उसके शरीर पर कई खून बहने वाले घाव हो गए। नागेंद्र ने उसे भागते हुए देखा,

Machine Translated by Google

अभी भी उसके मांस के आखिरी टुकड़ों को चबा रहा है। विस्फोट पूरे सन्नाटे में हिंसक रूप से गूंज उठा और झील के आसपास के बर्फ से ढके पहाड़ों में हिमस्खलन पैदा हो गया, जिससे एलएसडी, परिमल और नागेंद्र के पास खुद को बचाने के लिए बहुत कम समय बचा। परिमल ने देखा कि कंकाल एलएसडी को अपने पैरों से एक चट्टानी समूह में खींच रहे हैं। कुछ ही सेकंड बाद, झील के चारों ओर से लुढ़कते विशाल पत्थरों और टनों बर्फ ने इस क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया। जब तक भूस्खलन रुका, तब तक सब कुछ बर्फ की मोटी परतों से ढक गया था। नागेंद्र और उनकी टीम का कोई निशान नहीं था और रहस्यमय झील अपने सभी कंकालों के साथ उस रात हमेशा के लिए अपना अस्तित्व खो बैठी।

वृषभपि ने आगे कहा, बेरहमी से घायल किया गया और उसकी गर्दन पर बर्बरतापूर्वक काटा गया यह जाने बिना कि वह कैलाश पर्वत की ओर लौटते समय कई सामान्य मानव आंखों का ध्यान आकर्षित कर रहा था, जिससे उन्हें उसे अपने मोबाइल फोन पर छवियों और वीडियो के रूप में कैद करने का अवसर मिल रहा था।

भारी खून बहने और थकावट के कारण वृषभपि की दृष्टि धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। बहुत आगे तक देखने में असमर्थ और इस बात से अनभिज्ञ कि मनुष्यों ने अब विमान पुराण का रहस्य जान लिया है और वे अब उड़ सकते हैं, वह हिमालय श्रृंखला के ऊपर एक छोटे, कम ऊंचाई वाले विमान से टकरा गया, जो पहाड़ों में से एक पर गिर गया और घने में गायब हो गया। उसके गिरने के प्रभाव और शरीर के वजन के कारण बर्फ की परतें जम गईं। अचेतन और असहाय वृषभपि को विशाल, भव्य हिमालय में देखना या पाना असंभव था।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 8

खोया और पाया

अर्धचंद्राकार रात को, मिलारेपा और परशुराम रूपकुंड के विनाश से अनजान, हमले के लिए तैयार होकर, आगरा और भीमकुंड के अपने-अपने गंतव्यों पर पहुँचे।

ताज महल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उसके चारों ओर पूरी रात सतर्क रहने और नागेंद्र का कोई संकेत नहीं मिलने के बाद, मिलारेपा ने वापस जाने का फैसला किया।
सड़क पर चलते समय, उसने किसी को पिछली रात आकाश में देखी गई किसी चीज़ का सजीव वर्णन करते हुए सुना। मिलारेपा आवाज़ के स्रोत का पता लगाने के लिए मुड़ा। यह टेलीविजन पर एक समाचार एंकर था, जिसने बताया कि नेपाल और उत्तराखंड की सीमा पर स्थानीय लोगों ने एक विशाल उड़ने वाले बंदर को देखा था, जिसे एक धुंधले फोन वीडियो द्वारा समर्थित किया गया था जिसमें उड़ते हुए वृषकपि का एक कटा हुआ फुटेज कैद हुआ था। कुछ लोगों ने दावा किया कि यह भगवान हनुमान थे; दूसरों ने कहा कि यह पतलून और शर्ट में एक आदमी था। कुछ अन्य लोगों की राय थी कि उड़ने वाला प्राणी एक एलियन था और कुछ ने इस आधार पर पूरी कहानी को खारिज कर दिया कि यह प्रचार के लिए एक मीडिया स्टंट था। 'आज मंगलवार है, हनुमान जी की पूजा का दिन। यह फर्जी खबर है, समाचार चैनल सिर्फ हनुमान भक्तों का पक्ष लेने के लिए ऐसा कर रहे हैं,' मिलारेपा ने अपने बगल वाले व्यक्ति को सिर हिलाते हुए बोलते हुए सुना। लेकिन मिलारेपा को सच्चाई का एहसास हुआ।

रूपकुंड में वृषकपी के उड़ने की क्षमता का उपयोग करने में कुछ बहुत ही गलत हो गया था। वह आश्वस्त थे कि आगरा अगले अर्धचंद्र तक सुरक्षित है, इसलिए उन्होंने तुरंत वापस जाकर वृषकापि की जांच करने का फैसला किया।

बाहरी दुनिया में होने वाली त्रासदियों से बेखबर, ओम एक खाली, फैला हुआ ध्यान केंद्रित करके बैठा था। कुछ मिनटों के शक्तिशाली मंत्रोच्चार के बाद, वह एक अस्त्र को बुलाने में सक्षम हो गया।

'बहुत अच्छा, ओम। यह बहुत जल्दी था,' अश्वत्थामा मुस्कुराया। उनके छात्र थे
रखने, आदेश देने और नियंत्रित करने में निरंतर प्रगति प्रदर्शित कर रहा है
अस्त्र

ओम ने आँखें खोलीं। 'अभी जो कुछ भी हो रहा है उसकी जड़ें मृत संजीवनी खोने में मेरी विफलता में हैं। विडम्बना यह है कि मैं अकेला हूं

Machine Translated by Google

मदद करने में असमर्थ. तुम्हें यहाँ मेरे साथ रोककर वास्तव में मिशन कमजोर कर दिया गया है। मुझे यथाशीघ्र तैयार रहना होगा,'ओम ने दृढ़ निश्चय से कहा।

'क्या आप अगला सीखने के लिए तैयार हैं?' अश्वत्थामा ने पूछा।

'हाँ। कृपया मुझे वह सब कुछ सिखाएं जो आप कर सकते हैं और मैं अपना सब कुछ करूंगा इस मिशन में योगदान करने की शक्ति।' अश्वत्थामा ने

अपनी आँखें बंद कर लीं और हथेलियाँ खोलकर मंत्रोच्चार किया, मानो हवा से कुछ बुलाने की प्रतीक्षा कर रहा हो। कुछ ही क्षणों में उसके हाथ में एक बाण प्रकट हुआ जिसकी नोक पर रुद्राक्ष था। उसने धीरे-धीरे जप करना बंद कर दिया और तीर को अपने माथे को छूने के लिए उठाया, जबकि ओम चुपचाप देखता रहा।

'मेरे हाथ में जो कुछ है उसमें रुद्र की शक्ति है। इसे रुद्रास्त्र कहा जाता है। जब इसका उपयोग किया जाता है, तो यह एकादश (ग्यारह) रुद्रों में से एक रुद्र की शक्ति का आह्वान करता है और हजारों शत्रुओं को नष्ट कर देता है। मैंने इसका प्रयोग कुरूक्षेत्र युद्ध के अंत में रात्रि वध के समय किया था।' घटना को याद करते हुए अश्वत्थामा ने अपना सिर नीचे कर लिया।

यह आश्वासन कि भीमकुंड सुरक्षित है, आराम से अधिक परेशान करने वाला था क्योंकि इसका मतलब यह था कि नागेंद्र की यहां अनुपस्थिति मिलारेपा या वृषभापि के साथ उनकी मुठभेड़ के कारण थी, और यदि ऐसा नहीं है, तो शेष आठ में से किसी अन्य स्थान का चेहरा मिट गया होगा। देवभूमि का. परशुराम ने अपना ट्रैकर पुनः प्राप्त किया और वृषकापी और मिलारेपा का पता लगाने के लिए इसे चालू किया। उसे आश्चर्य हुआ कि वह दोनों में से केवल एक को ही ट्रैक कर सका। उन्होंने आगरा में एक लाल बिंदु को ताज महल से दूर जाते हुए देखा, लेकिन वृषभपि का कोई निशान नहीं था और ट्रैकिंग इतिहास ने उन्हें केवल रूपकुंड तक पहुंचते हुए दिखाया, उसे छोड़ते हुए नहीं। उसने दूसरों की जाँच करने के लिए वापस कैलाश जाने का निर्णय लिया।

'जबकि परशुराम स्थूल जगत पर निगरानी रख रहे थे और निर्माण कर रहे थे इसके कल्याण के लिए निर्णय, देश के दूसरे हिस्से में किसी और का ध्यान पूरी तरह से एक सूक्ष्म दुनिया पर केंद्रित था जो केवल मेरे चारों ओर घूमती थी। 'तेज मुझसे बहुत प्यार करता था,' श्रीमती बत्रा ने आह भरी और उसकी आंखें नम हो गईं। 'मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा था, इसलिए मुझे काफी आराम करना पड़ा। उस पूरे दौर में तेज मेरी छाया थे। उन्होंने मेरी इस तरह देखभाल की जैसे मैं उनकी उपचार करने वाली पत्नी नहीं बल्कि उनका नवजात शिशु हूं। उसकी उदास आँखें अब खुशी से चमकने लगीं, मानो उसने भी मौत को चकमा दे दिया हो और फिर से जीवन में आ गया हो।' पृथ्वी ने समझ में सिर हिलाया और अपनी कहानी जारी रखी। 'जबकि तुम

उस कमरे में फिर से जीने की उम्मीद पा रहे थे, वृषभपि, नीचे दबे हुए

Machine Translated by Google

खुले आसमान के नीचे बर्फ की परतें, हर गुजरते घंटे के साथ खोती जा रही थीं। उस गगनभेदी सन्नाटे में उसके ताजा घावों के माध्यम से उसका खून उसके चारों ओर की बर्फ में बह रहा था।

इस बीच, नागेंद्र को यह एहसास हुआ कि परिमल और एल.एस.डी
बर्फ की मोटी सफ़ेद चादरों के नीचे दबे हुए थे जिसने रूपकुंड को हमेशा के लिए निगल लिया था।
नागेन्द्र को समय का ध्यान नहीं रहा; उसे पता ही नहीं चला कि वह कितनी देर तक बेहोश पड़ा रहा। वह अपने पैरों पर वापस खड़ा हो गया और तुरंत एलएसडी की खोज शुरू कर दी, एक मानसिक रूप से परेशान आदमी की तरह, कांप रहा था और चकित था, एक पिता की तरह जो अपने लापता बच्चे की तलाश में था। बिना किसी दिशा या विधि के कुछ घंटों तक इधर-उधर भटकने के बाद, आखिरकार उसे परिमल मिल गया।

उसने उसे बाहर खींच लिया, उसे अपने ठिकाने से जो कुछ भी मिला, उसमें लपेट दिया - स्लीपिंग बैग, तम्बू कैनवास, रस्सियाँ - उसे गर्म रखने के लिए जो कुछ भी उसके हाथ लग सकता था। परिमल कांप रहा था, उसकी सांसें जोर-जोर से उखड़ रही थीं और नागेंद्र द्वारा दिए गए इंसुलेशन का कोई असर नहीं हो रहा था। वह मुश्किल से अपनी आँखें खुली रख सका, लेकिन बेहोश होने से ठीक पहले, उसने दो विशाल काली चट्टानों की नोकों की ओर इशारा किया और अपने दाँतों से बुदबुदाया, 'हिमस्खलन से पहले, मैंने देखा कि एलएसडी ने उसके पैरों को पकड़ लिया था और कंकालों द्वारा उसे उनमें घसीटा गया था। चट्टानें।' नागेन्द्र का मन फिर से उचट गया। उसने चट्टानों की नोक को बर्फ से बाहर झाँकते देखा और उनकी ओर दौड़ पड़ा। दोनों चट्टानों के बीच की खाई को बर्फबारी से बनी बर्फ की दीवारों से सील कर दिया गया था। नागेंद्र ने उसे थोड़ा सा धक्का दिया और हाल ही में बनी दीवार तुरंत ढह गई।

उसने अंदर झाँककर एलएसडी देखा। वह सचेत थी लेकिन उसकी शारीरिक भाषा
बेतुका था. ऐसा लग रहा था मानों उस पर किसी अदृश्य शक्ति का वास हो गया हो; जब नागेंद्र ने उसे देखा तो वह अपने कपड़े उतार रही थी। इससे उसके शरीर में गर्मी पैदा होने की दर कम हो जाएगी। उसे रोकने के लिए, उसका ध्यान उसकी हरकतों से हटाना ज़रूरी था और इसलिए नागेंद्र ने उसका नाम चिल्लाकर कहा, 'लतिका!' एलएसडी आवाज की ओर मुड़ा और नागेंद्र की चिंतित निगाहों से मिला। उसकी आँखें अस्त-व्यस्त थीं और वह
संघर्षशील थी। उसने अपने हाथ हिलाए और एक ज़ोंबी की तरह गुर्राया, जैसे कि कोई खतरा न होने के बावजूद, किसी को धक्का देकर मारने की कोशिश कर रही हो। कुछ बार अपने चारों ओर हवा में मुक्का मारने के बाद, उसने गुर्राना बंद कर दिया और चट्टानों के दूसरी ओर मृत अंत की ओर मुड़ गई, और पूरी तरह से अपने कपड़े उतार दिए।

नागेंद्र ने अंदर जाने के लिए पर्याप्त जगह बनाने के लिए बर्फ तोड़ना शुरू कर दिया, जबकि अब नग्न एलएसडी शुरू होने से पहले चट्टान के आखिरी कोने तक पहुंच गया।

Machine Translated by Google

चट्टान में प्राकृतिक रूप से बनी एक जेब में कुंडलित करें जो उससे बहुत छोटी थी। उसके हाव-भाव इतने अजीब थे कि नागेंद्र के अलावा कोई भी भयभीत हो सकता था। वह जानता था कि एलएसडी हाइपोथर्मिया के अंतिम चरण में होने वाले लुका-छिपी सिंड्रोम का अनुभव कर रहा था। ऐसा अधिकतर उन मामलों में होता है जहां व्यक्ति का तापमान धीरे-धीरे गिरता है। नागेंद्र को यह पता था क्योंकि उसने अतीत में, उसी स्थान पर, वही व्यवहार देखा था।

एलएसडी को बचाने और उसे होश में वापस लाने के लिए नागेंद्र बर्फ की गुफा में घुस गए। वह जानता था कि यह प्रयास उन दोनों के लिए घातक हो सकता है, लेकिन उसे वह सब कुछ करना होगा जो वह कर सकता था। वह उस संकीर्ण अंत की ओर चल पड़ा जहां एलएसडी फिट होने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसने उसे बाहर खींचने के लिए उसका हाथ पकड़ लिया, लेकिन एलएसडी मतिभ्रम कर रहा था। उसने नागेंद्र की जगह एक कंकाल को अपनी कलाई खींचते देखा तो वह हमला करने और काटने लगी। नागेंद्र के पास उसे बेहोश करने के लिए उस पर जोरदार प्रहार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के ऐसा किया. उसके सिर के दाहिनी ओर एक छोटे से पत्थर से किया गया एक ही वार काफी था। एलएसडी की आंखें उसके सिर में घूम गईं और वह निढाल होकर जमीन पर गिर पड़ी।

नागेंद्र ने उसे दोनों के कपड़ों में बांधा और बाहर खींच लिया।

इसी बीच आगरा में मिलारेपा ताजगंज बसई पहुंचे, जहां एक प्राइवेट थी हेलिकॉप्टर यात्रा की सुविधा. एक घंटे के अंदर ही उन्होंने पायलट को पूरी तरह से सम्मोहित कर लिया. यह एक आपातकालीन स्थिति थी; उसके पास अपनी शक्तियों का उपयोग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। पायलट ने वृषभपि की खोज में चॉपर को हिमालय की ओर उड़ाना शुरू कर दिया।

कैलाश पर, ओम मौन बैठे थे, ध्यान कर रहे थे और उन मंत्रों का जाप कर रहे थे जो अश्वत्थामा ने उन्हें हथियारों को नियंत्रित करने और कमांड करने के लिए दिए थे, लेकिन कुछ ऐसा लग रहा था जो उनका ध्यान भटका रहा था। वह सिसकता रहा, अपना सिर हिलाता रहा और प्रक्रिया को फिर से शुरू करता रहा। अश्वत्थामा ने देखा कि ओम भीतर से शांत नहीं है, तो उसने उससे कारण पूछा। ओम ने पहले तो आनाकानी की लेकिन अश्वत्थामा ने जिद की। एक गहरी साँस के साथ, ओम ने बताया कि उसे क्या परेशानी हो रही थी।

'जब आपने मुझे रुद्रास्त्र के बारे में समझाया, तो आपको दोषी महसूस हुआ क्योंकि आपको याद आया कि आपने महाभारत के अंत के बाद रात को उन लोगों पर इसका इस्तेमाल करने की गलती की थी जो आपके दुश्मन नहीं थे। आप जानते हैं कि आप पहले कौन थे और अब कौन हैं। आप जानते हैं कि आपके पिता द्रोणाचार्य और माता कृपी थीं। आप जानते हैं कि उनके साथ क्या हुआ और उन्होंने अपना शरीर कैसे छोड़ा। आप अपनी जन्मभूमि, अपने अस्तित्व और अपने अंत को भी जानते हैं। आप खुद को जानते हैं। क्या आप अपने बारे में, अपने मूल के बारे में, अपने दोस्तों और दुश्मनों के बारे में, अपने अतीत और भविष्य के बारे में कुछ भी न जानने की कल्पना कर सकते हैं?

Machine Translated by Google

आपके जीवन का उद्देश्य? यह ऐसा ही है जैसे आँखें तो हैं लेकिन दृष्टि नहीं और मेरा विश्वास करो। . . किसी दिन कुछ प्रकाश देखने की कांपती आशा के साथ शाश्वत अंधकार में चलना भयानक है। मैं कौन हूँ? मेरा जन्म कहाँ हुआ था? मेरे माता पिता! वे कैसे दिखते थे? उन्हें क्या हुआ? क्या मेरे कभी भाई या बहन थे? आप यह नहीं समझ सकते कि जब ये प्रश्न मेरे मन में आते हैं तो मैं कैसा महसूस करता हूं और हर दिन क्या अनुभव करता हूं।' अश्वत्थामा वास्तव में ओम की पीड़ा के प्रति सहानुभूति रख सकता था लेकिन वह उसकी तरह ही शक्तिहीन था। 'आप ठीक कह रहे हैं! मैं इसे

समझ नहीं सकता, लेकिन मेरा मानना है कि जो उत्तर आप बाहरी दुनिया में खोज रहे हैं, वे शायद आपके भीतर ही हों, ओम।' अश्वत्थामा की सलाह को स्पष्ट रूप से खारिज करते हुए, ओम ने निराशा में कहा, 'मैं अभी आध्यात्मिकता वर्ग को सहन करने की स्थिति में नहीं हूं, अश्वत्थामा। आइए हम उस पर वापस आएं जो हम कर रहे थे।

'परशुराम किसी भी दिन वापस आएँगे और यदि मैं असफल हुआ तो आप उनके प्रति जवाबदेह होंगे।' 'आध्यात्मिकता! नहीं, ओम. मैं मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान के बारे में बात कर रहा हूं।

यादें आमतौर पर वितरित मस्तिष्क नेटवर्क में संग्रहीत होती हैं, जिसमें कॉर्टेक्स भी शामिल है, और इस प्रकार किसी घटना को सचेत रूप से याद करने के लिए आसानी से पहुंचा जा सकता है।
लेकिन मस्तिष्क की असामान्य स्थिति में, मस्तिष्क अपने उप-स्मृति क्षेत्रों को सक्रिय कर देता है। अवरुद्ध यादें मस्तिष्क सर्किट के भीतर यादों के प्रसंस्करण को फिर से व्यवस्थित करती हैं ताकि उन तक सचेत रूप से प्रवेश न किया जा सके।

'आप हजारों साल पुराने हो सकते हैं और आपके जन्म से जुड़ी हर चीज आपकी वर्तमान मानसिक स्थिति में अपना अस्तित्व खो चुकी होगी, लेकिन एक अंधेरी गुफा है जहां आपकी सारी यादें छिपी हुई हैं - आपका मस्तिष्क! सिर्फ इसलिए कि आपको याद नहीं है इसका मतलब यह नहीं है कि यह आपके मस्तिष्क में संरक्षित नहीं है। इसका मतलब सिर्फ इतना है कि आपको उन यादों को याद करने के लिए सही संकेत नहीं मिले हैं। आपके पास ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर आपके अलावा कोई नहीं दे सकता। और इसके लिए, आपको अपने मन और आत्मा को पूरी तरह से शांत होने देना होगा और उन हथियारों के प्रति समर्पण करना होगा जिन्हें आप हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। जो चीज़ आपके पास है ही नहीं, उसे आप कैसे दे सकते हैं? आपके पास स्वयं पूरी तरह से नहीं है।

इसे प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को स्वयं को अंदर से पूरी तरह जानने की आवश्यकता होती है।
आपको स्वयं को जानने की आवश्यकता है; तभी ये हथियार तुम्हें स्वीकार करेंगे.
हम यहां जो कुछ भी करने का प्रयास कर रहे हैं वह तब तक व्यर्थ होगा जब तक आप स्वयं को पूरी तरह से नहीं सीख लेते। पानी के एक बर्तन की कल्पना करें जिसमें दरार हो। यदि आपने इसे भरने का प्रयास किया तो क्या होगा? ज्ञान को अपने मस्तिष्क के घड़े में भरे पानी के समान समझें, जिसका रिसावरोधी होना आवश्यक है। इससे पहले कि हम अपने अगले हथियार पर जाएं, आइए चलें और अपने भीतर का पता लगाएं।'

Machine Translated by Google

आशाजनक प्रतीत होने वाले स्पष्टीकरण के बारे में ओम इतना आशावादी नहीं था।

'तुम्हें सच में लगता है कि मैंने पहले कभी ऐसा प्रयास नहीं किया है?'

'मुझे यकीन है कि आपके पास है, लेकिन मेरे साथ नहीं। मैं कोशिश किये बिना हार नहीं मान सकता. यदि हम केवल आपके मस्तिष्क की पहली बाधा को तोड़ सके, तो अन्य लोग शेष दीवारों को तोड़ने में सक्षम होंगे,' अश्वत्थामा ने कहा, 'अन्य?' ओम को यह समझ में नहीं आया कि अश्वत्थामा का

आशय क्या था।

अश्वत्थामा ने सिर हिलाया और उत्तर दिया, 'अब अपनी आंखें बंद करो और मुझे अंदर आने दो। अपने अंदर उच्चतम स्तर की शांति प्राप्त करें और मुझे अपनी पहली यादों में ले जाएं।' बहुत दूर, एक अज्ञात स्थान

पर, हिमालय की शृंखला के ऊपर कहीं उड़ते हुए, मिलारेपा वृषभपि पर पैनी नज़र रख रहा था।

लेकिन वह कवर करने के लिए एक बड़ा क्षेत्र था। यह कोयले के तहखाने में काली बिल्ली की तलाश करने जैसा था। जहाँ उसने उड़ान भरी वहाँ से बर्फ से ढके पहाड़ों का एक समूह दिखाई दे रहा था। कई घंटों तक चोटियों पर मंडराने के बाद भी, उन्हें वृषकापी की ओर जाने वाली एक भी तार नहीं मिली। सूरज डूबने वाला था और मिलारेपा को पता था कि या तो वृषभापी पहले ही मर चुका है या बर्फ के नीचे एक और रात जीवित नहीं रह पाएगा।

अनजान मिलारेपा की आशा सूर्यास्त के साथ-साथ क्षितिज से बाहर हो रही थी सूरज। उसे वृषभपि का वह चेहरा याद आ गया जब उसने उसे आखिरी बार देखा था। जब मिलारेपा को अपने-अपने गंतव्यों के लिए प्रस्थान करने से पहले परशुराम और वृषकापी के साथ अपने अंतिम कुछ मिनट याद आए, तो उन्हें कुछ सदमा लगा। मिलारेपा ने पायलट को उसे उस स्थान से ऊपर ले जाने का आदेश दिया जहां से उन तीनों ने अपना अलग-अलग मार्ग लिया था। कुछ ही मिनटों में, मिलारेपा के निर्देश पर, हेलिकॉप्टर उस स्थान के ठीक ऊपर मंडराने लगा।

मिलारेपा ने पायलट को कैलाश पर्वत की ओर धीमी और धीमी गति से उड़ान भरने का आदेश दिया और कुछ भी असामान्य देखने के लिए अपनी आँखें जमीन पर रखीं।

इस बीच, रूपकुंड में, शीतदंश में लिपटे नागेंद्र को अब ठंड का असर महसूस हो रहा था। उन्हें एहसास हुआ कि हाइपोथर्मिया ने भी उन्हें नहीं छोड़ा है। वह जानता था कि उन तीनों के मरने से पहले उसके पास ज्यादा समय नहीं था। जैसे कि चीज़ें इससे बदतर नहीं हो सकतीं, जब पूरा क्षेत्र एक क्रूर बर्फ़ीले तूफ़ान से सफ़ेद रंग में रंग गया तो सब कुछ अदृश्य हो गया। वह एलएसडी बाहर लाया जहां परिमल बेहोश पड़ा था। कड़ाके की ठंड में कांपते हुए, नागेंद्र ने दोनों को एक-दूसरे के सामने बांध दिया और उन्हें कंबल और स्लीपिंग बैग से कसकर लपेट दिया। फिर उसने रस्सी के एक छोर से उनके दोनों पैरों को एक साथ बांध दिया, दूसरे छोर को अपने कंधे पर रखा और उन्हें बर्फ के माध्यम से ऐसे खींचना शुरू कर दिया जैसे कि शवों को खींच रहा हो।

Machine Translated by Google

जैसे ही वह चला, उसने अपने समानांतर एक और युवक को असली खींचते हुए देखा शव जो आधे से ज्यादा सड़ चुका था। उस व्यक्ति ने अपने गले में नागेंद्र की प्राचीन धातु की बोतल लटका रखी थी। उस आदमी ने नागेंद्र की ओर देखा और उसके होठों पर एक कुटिल मुस्कान फैल गई। बहुत बड़े नागेंद्र ने भी उसी तरह की मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया। हाइपोथर्मिया अब उसे मतिभ्रम का कारण बन रहा था। विपरीत दिशा में कुछ दूर चलने के बाद, उत्तर की ओर कैलाश पर्वत की ओर चल रहा व्यक्ति तूफान में गायब हो गया, जबकि नागेंद्र ठंड से दूर दक्षिण की ओर चला गया।

मिलारेपा को पहले जो बात सूझी थी वह यह थी कि वृषभपि ने अवश्य ही परशुराम के आदेश के कारण कैलाश वापस जाने के लिए उसी मार्ग का अनुसरण किया होगा। इस प्रकार, उसी मार्ग का पता लगाते हुए, मिलारेपा ने एक लाल धब्बा देखा जो चमकदार सफेद रंग के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। यह सफेद भेड़ियों के एक झुंड से घिरा हुआ था जो इसके चारों ओर खुदाई करने की कोशिश कर रहे थे। जब तक वह यह दर्ज कर पाता कि यह क्या था, हेलिकॉप्टर पहले ही इसे पार कर चुका था। मिलारेपा ने पायलट को हेलिकॉप्टर को मोड़ने और वापस उसी स्थान पर ले जाने का आदेश दिया।

आकाश जल्द ही सांझ के गहरे रंग से भर जाएगा। मिलारेपा को पता था कि सूरज डूबने के बाद वह यह स्थान खो देगा। जैसे ही उसे दोबारा जगह मिली, अंधेरा तेजी से हावी हो रहा था। यह बड़ी-बड़ी चट्टानों से घिरा हुआ था जिससे हेलिकॉप्टर का उतरना असंभव हो गया था। उन्होंने पायलट को निकटतम संभावित स्थान पर उतरने का आदेश दिया। पायलट को लगभग आधा मील दूर एक समतल सतह मिली। मिलारेपा उतरे और चंद्रमा की ओर आकाश की ओर देखा, लेकिन बादलों ने भूमि से आने वाली सारी रोशनी को रोक दिया। उसे जल्दी से सोचना पड़ा. उसने हेलिकॉप्टर किट में रखी एक टॉर्च जेब में रख ली। वह जानता था कि उसे किस दिशा में जाना है लेकिन यह निश्चित नहीं था कि वह जगह ढूंढ पायेगा या नहीं। वह भागने लगा.

आधे मील के बाद, वह रुका और क्षेत्र का सर्वेक्षण किया, लेकिन वह स्थान वहीं था अँधेरे में कहीं नहीं मिलता. मिलारेपा ने घायल वृषकपी की तलाश जारी रखी, लेकिन उसे निराशा ही हाथ लगी। घंटों तक खोजने के बाद, मिलारेपा ने हेलिकॉप्टर पर लौटने का फैसला किया और अपने नक्शेकदम पर चलते हुए उसी रास्ते से वापस जाने के लिए मुड़ गया। जैसे ही उसने टॉर्च की रोशनी नीचे की ओर की, उसे बर्फ पर लाल पैरों के निशान दिखे। उसे एहसास हुआ कि वह इतनी देर तक वहीं खड़ा रहा, लेकिन टॉर्च आगे की ओर होने के कारण रोशनी उसे इसके बारे में कभी नहीं बता सकी। अब उसे बड़े लाल स्थान तक ले जाने के लिए अपने स्वयं के पदचिह्नों पर निर्भर रहना था। मिलारेपा अपने ही नक्शेकदम पर चलते हुए तेजी से वापस चला और जल्द ही उस तक पहुंच गया।

बर्फ कुछ हद तक पहले ही खोदी जा चुकी थी। यह आंशिक काम लग रहा था यह सब खोजी सफेद भेड़ियों के झुंड द्वारा किया गया था जिसे उसने देखा था

Machine Translated by Google

पहले हेलिकॉप्टर से. अगली चुनौती बची हुई बर्फ को खोदने की थी।
मिलारेपा सख्त तौर पर चाहता था कि दफनाया गया शरीर वृषकापि का हो क्योंकि यही आखिरी डोर थी जो उसे उस तक ले जा सकती थी। जैसे ही मिलारेपा ने बेहद ठंडे परिदृश्य में अपने नंगे हाथों से बर्फ पकड़ना शुरू किया, उसके चारों ओर से गहरी गर्जना की लहर निकल पड़ी।

मिलारेपा ने आसपास का निरीक्षण करने के लिए अपनी टॉर्च उठाई और अंधेरे में कुछ जोड़ी आँखें चमकती देखीं। टॉर्च की रोशनी भेड़ियों की आंखों से झलक रही थी, जिससे पता चल रहा था कि वे उसके बहुत करीब थे। इससे पहले कि वह कुछ और सोच पाता, भेड़ियों में से एक उस पर झपटा। तुरंत, मिलारेपा का शरीर अपने मूल हरे रंग में लौट आया और उसकी काली पुतलियाँ धूमिल सफेद रंग में बदल गईं। जब उसने उसी भेड़िये की आँखों में देखा जो उस पर झपटा था, तो वह पूरी तरह से टूटने से पहले हमले के बीच में एक भारी पत्थर की मूर्ति में बदल गया। गिरते ही टुकड़े ज़मीन से टकराये।

तुरंत, अन्य भेड़िये रुक गये और पीछे गिरने लगे। मिलारेपा ने हर उस भेड़िये की आँखों में देखने के लिए अपना समय लिया जो उसे शिकार के रूप में देखता था। जल्द ही, पूरा झुंड सम्मोहित हो गया और प्रशिक्षित कुत्तों की तरह पंक्तिबद्ध होकर उनके आदेशों की प्रतीक्षा करने लगा। मिलारेपा ने आधे खोदे हुए गड्ढे को और खोदना शुरू कर दिया और ऐसा तब तक करता रहा जब तक कि अंततः उसे वृषभपि का हाथ नहीं दिख गया। उसने अपनी नाड़ी जांचने के लिए तुरंत उसकी कलाई पकड़ ली। ठंड और अत्यधिक खून बह जाने के कारण उनकी नाड़ी की गति बहुत कम थी, लेकिन वे अभी भी जीवित थे।

मिलारेपा ने उसे बाहर खींचने की कोशिश की, लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह बहुत भारी था
उठाया और चॉपर तक ले जाया गया. वृश्चिक की हालत गंभीर थी और उसे तत्काल चिकित्सा
सहायता की आवश्यकता थी। मिलारेपा ने भेड़ियों की अपनी नई सेना को देखा और वे जानते थे कि क्या करना है। उसने एक भी शब्द बोले बिना उन्हें आदेश दिया और हेलिकॉप्टर की ओर चलना शुरू कर दिया, उसके पीछे भेड़िये भी थे, जिन्होंने वृषभापि को अपने मुंह से खींच लिया था।

उधर, बर्फ़ के बीच में नागेंद्र रुक गया
एलएसडी और परिमल को एक बड़े, मृत पेड़ पर लाने के बाद घसीटना।
नागेंद्र को किसी प्रकार की संरचना से एक धुंधली रोशनी आती हुई दिखाई दे रही थी, लेकिन वह निश्चित नहीं हो पा रहा था कि यह वास्तविक है या नहीं; वह हांफ रहा था और मतिभ्रम कर रहा था। वह जानता था कि एकमात्र चीज़ जो उन तीनों को बचा सकती थी वह गर्मी थी। उन्होंने एलएसडी और परिमल के बैगों की जाँच की ताकि उनमें कोई ज्वलनशील पदार्थ मिले।

एकमात्र सामग्री जिसे वह पकड़ सका वह बंदूकें और गोलियां थीं। उन्होंने इस तरह लिया
उसने जितनी संभव हो उतनी गोलियाँ चलाईं और बारूद निकालने के लिए उन्हें छीलना शुरू कर दिया, एक भूखे जानवर की तरह अपने शिकार को चीरता हुआ व्यवहार करने लगा; उसके होठों और ठुड्डी पर बारूद लगा हुआ था। एलएसडी और परिमल, अभी भी

Machine Translated by Google

बेहोश, बांधे गए और ढंके हुए थे जैसे युद्ध में शव के थैले मृतकों को ढक देते हैं। नागेन्द्र की सुन्न उंगलियों ने बारूद को पेड़ की छाल पर रगड़ा और खोखली दरारों में भी भर दिया। फिर उसने पेड़ को जलाने से पहले परिमल और एलएसडी को थोड़ी दूर खींच लिया। छाल ने आसानी से आग पकड़ ली और जल्द ही, पूरा पेड़ आग की लपटों में घिर गया। परिमल और एलएसडी के साथ जलते पेड़ से सुरक्षित दूरी पर खुद को स्थापित करते हुए, नागेंद्र बेहोश हो गए। वे चिता के पास तीन लाशों की तरह लग रहे थे, जो अंतिम संस्कार के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे।

कैलाश में ओम अपनी पहली यादें सुना रहे थे। 'मैंने अपनी आँखें खोलीं। मेरी दृष्टि धुंधली थी लेकिन मैं अभी भी कुछ दूरी पर खड़ी तीन आकृतियाँ देख सकता था। उनमें से एक ने दूसरे को इशारा किया कि धन्वंतरि को बुलाओ क्योंकि मैं हरकत के लक्षण दिखा रहा था। धन्वंतरि अंदर आए और मुझे अपना प्रतिबिंब दिखाया। जब मैंने पहली बार उस पर नज़र डाली तो मैं तबाह हो गया था। 'एक खोखली आँख, एक खोया हुआ कान और मेरे चेहरे की क्षत-विक्षत त्वचा मुझे आज तक परेशान करती है,' ओम ने अपनी आँखें बंद करके बुदबुदाया। 'वह मेरी पहली स्मृति है।' ओम ने अपनी आँखें खोलीं और अश्वत्थामा को अपनी ओर देखते हुए पाया।

'अब, यही वह धागा है जो आपको अपनी याददाश्त के बंद दरवाजों के पीछे ले जाएगा, जिसमें आपकी छिपी हुई कहानी है। जब धन्वंतरि ने आपको पुनर्जीवित किया और दूसरा जन्म दिया तब आप चालीस वर्ष की थीं। उन चालीस वर्षों की यादें अभी भी आपकी चेतना में बंद हैं। एक व्यक्ति अपने जीवन में जो कुछ भी देखता है वह मस्तिष्क में पंजीकृत होता है। वह सारी जानकारी महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है और व्यक्ति समय के साथ इसे भूल सकता है लेकिन फिर भी, कुछ भी पूरी तरह से नष्ट नहीं होता है। और पीछे जाओ, ओम। उन तीन अस्पष्ट आकृतियों को देखने से पहले आपने आखिरी बार क्या देखा? उस धागे को पकड़ें और अपने अतीत के अंधकार से बाहर निकलते रहें। मुझे दिखाओ कि यह धागा तुम्हें कहाँ ले जाता है।' जब तक पहली रोशनी कैलाश पर्वत को नहीं छू गई, तब तक ओम घंटों तक अपने भीतर के अज्ञात अंधेरे में उत्तर खोजने के लिए अपने मन को केंद्रित करता रहा।

चारों ओर बहते पानी और चहचहाते पक्षियों की आवाज के साथ, परिमल अपनी आँखें खोलीं और खुद को लाल त्वचा और शीतदंश के साथ बेहोश एलएसडी के साथ फंसा हुआ पाया। एलएसडी उसके इतना करीब था कि वह उसकी सांसों की गर्माहट को अपने चेहरे पर महसूस कर सकता था। परिमल ने ज़िप के अंदरूनी हिस्से को पकड़ा और खुद को छुड़ाने के लिए उसे नीचे खींच लिया। जब उसने सिर उठाया तो देखा कि एक पूरा विकसित पेड़ अपनी चरम सीमा तक जल रहा है। उसने इधर-उधर देखा तो नागेंद्र का नग्न शरीर जलते हुए पेड़ के पास पड़ा हुआ था।

परिमल ने देखा कि नागेंद्र के गर्म कपड़ों में एलएसडी लगा हुआ था। उसने याद किया

Machine Translated by Google

एलएसडी को बचाने के लिए नागेंद्र के चट्टानों में घुसने की उनकी आखिरी याद। परिमल ने उठने की कोशिश की लेकिन उसे एहसास हुआ कि उसका पैर एलएसडी से बंधा हुआ था और उसके पीछे रस्सी की एक पूंछ थी। परिमल को तुरंत बाकी बातें समझ आ गईं. उसने अपने पैर खोल दिए और नागेंद्र को देखने के लिए दौड़ पड़ा।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 9

चौथा अमर

पृथ्वी श्रीमती बत्रा की ओर मुड़ा और उसे अपने ही विचारों में खोया हुआ पाया। श्रीमती बत्रा को एहसास हुआ कि पृथ्वी रुक गया है और उसकी ओर देख रहा है। श्रीमती बत्रा ने उस विचार को साझा करते हुए जवाब दिया जिसमें वह खोई हुई थीं।

'उन दिनों, तेज ने ओम के रक्त के साथ अपने प्रयोगों की वैधता को सत्यापित करने के लिए कई परीक्षण किए। एक बार जब उन्होंने अपने दावे का समर्थन करने के लिए पर्याप्त डेटा और सबूत एकत्र कर लिया, तो उन्होंने भारत के कुछ सबसे प्रसिद्ध संस्थानों के चिकित्सा विभागों के प्रमुखों को फोन करना शुरू कर दिया कि वे हमारे घर आएं और मेरी पिछली रिपोर्टों और वर्तमान स्थिति की जांच करें। उन्हें उम्मीद थी कि वे घोषणा करेंगे कि उन्होंने मुझे मौत के मुंह से वापस लाकर चिकित्सा की दुनिया में एक बड़ी सफलता हासिल की है,' श्रीमती बत्रा ने बताया।

'मैं अपने चेहरे पर आग की गर्मी महसूस कर सकता हूं,' ओम ने आंखें बंद करके बुदबुदाया। अपने ठीक सामने बैठे अश्वत्थामा ने कैलाश पर शून्य से नीचे तापमान के बावजूद ओम को पसीना बहाते हुए स्पष्ट रूप से देखा। 'मैं सैकड़ों लोगों को एक साथ गाते हुए सुनता हूं, मुझे एक हाथी के पैर और एक बैल का कूबड़ दिखाई देता है। . . और—'ओम की आँखें डर के मारे खुल गईं और वह झटके से पीछे हट गया मानो खुद को किसी चीज़ से दूर करने की कोशिश कर रहा हो।

'तुम ठीक हो?' अश्वत्थामा ने उसे पोंछने के लिए कपड़े का एक टुकड़ा दिया
चेहरा। जोर से हांफते हुए, ओम को संभलने में एक पल लगा।

'क्षमा मांगना! मैं आगे ध्यान केंद्रित नहीं कर सका. मैंने सोचा । . .' बाकी को ओम ने निगल लिया
उन्होंने अपने बयान में कहा, 'हमें दोबारा कोशिश करनी चाहिए।' क्या हम?'

अश्वत्थामा ने ओम के कंधे पर हाथ रखा। 'ओम, आपकी मदद करने के लिए मुझे यह जानना होगा कि आपने क्या देखा। मुझे बताओ, किस बात ने तुम्हें अचेतन अवस्था से बाहर निकाल दिया?' 'मुझे ऐसा लगा जैसे मैं

किसी चीज़ पर बैठा हूँ - उस पर सवारी कर रहा हूँ - जो कि एक से अधिक चौड़ी है
वह घोड़ा जिसकी पीठ पर कूबड़ था, और फिर। . . फिर मैं पीछे मुड़ा और मेरे चेहरे के ठीक सामने एक साँप था, जो मुझ पर फुफकार रहा था। मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक सपना रहा होगा,' ओम ने फिर से समाधि में जाने की तैयारी करते हुए कहा।

Machine Translated by Google

'यह कोई सपना नहीं था, ओम। आपको ऐसा जरूर लगा होगा लेकिन ये कोई सपना नहीं था. यह एक स्मृति है; एक अस्पष्ट, अधूरी स्मृति. हमें इसे समझने की जरूरत है। हाँ! हम वापस जायेंगे. हम पुनः आरंभ करेंगे,' अश्वत्थामा ने आश्वासन दिया।

'अगर यह एक स्मृति है, तो मैंने इसे पहले कभी क्यों नहीं देखा? मैंने दोबारा देखने की कोशिश की है 'मेरे पिछले कई बार,' ओम ने आश्चर्य करते हुए पूछा।

अश्वत्थामा के पास उस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर था। 'अगर हमारे हाथ धक्का देकर दरवाजा खोलने के लिए पर्याप्त नहीं हैं तो हम क्या करें? हम इसे धकेलने के लिए अधिक हाथों का उपयोग करते हैं। आपके पुनर्जन्म से पहले की यादें आपके मस्तिष्क के अंदर एक ऐसे दरवाजे के पीछे फंसी हुई हैं जिसे आप अकेले धक्का नहीं दे सकते। और यहीं मैं अंदर आता हूं। जब आप ध्यान करते हैं, और अंधेरे में अपनी स्मृति के धागे का अनुसरण करते हैं, तो मैं दरवाजे को जोर से धक्का देकर बाहरी रूप से आपका समर्थन करता हूं।' 'एक अग्नि कुंड, एक हाथी का पैर, एक असामान्य मंत्रोच्चार, एक साँप - क्या ये सब कुछ दर्शाते हैं?' ओम को आश्चर्य हुआ।

अश्वत्थामा ने अपने विचार साझा किये। 'मुझे लगता है कि ये आपके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं की झलकियाँ हो सकती हैं, या किसी प्रमुख घटना से जुड़े रूपक हो सकते हैं। हमें जल्द ही यह जानने में सक्षम होना चाहिए कि ये दर्शन आपके लिए कैसे प्रासंगिक हैं। तो, क्या आप वहां वापस जाने के लिए तैयार हैं?' 'हाँ!' ओम ने कहा, स्मृतियों को फिर से

देखने के लिए मानसिक रूप से तैयार।

उन्होंने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं। जैसे ही उन्होंने अपने सूक्ष्म में जाने के लिए ध्यान किया रूप, उनके शरीर निर्जीव हो गए और जमीन पर गिर पड़े।

रूपकुंड में, कोई और व्यक्ति जले हुए पेड़ के खोल के नीचे चेतना में लौट रहा था जो अभी भी कुछ गर्मी प्रदान कर रहा था। जागते ही नागेंद्र ने बेहोश होकर अपने सामने परिमल की आकृति खड़ी देखी। पिछली रात जो कुछ हुआ था वह सब उसके दिमाग में घूम गया और उसकी झुकी हुई आँखें एलएसडी की तलाश में तुरंत चौड़ी हो गईं।

'वह जिंदा है; कमज़ोर और बेहोश, लेकिन जीवित। मैंने उसकी जाँच की। वह होगी ठीक हो जाओ,'' परिमल ने नागेंद्र को सांत्वना देते हुए कहा।

नागेंद्र ने स्वयं एलएसडी की जांच करने के लिए खड़े होने की कोशिश की लेकिन परिमल ने उसे पकड़ लिया उसके कंधे को पकड़कर, धीरे से उसे नीचे धकेलते हुए बैठा दिया, क्योंकि उसे भी ठीक होने की जरूरत थी।

'हम कहाँ हे?' पिछली रात बर्फबारी के बाद, नागेंद्र बस उन्हें कुछ गर्मी देना चाहता था। उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि उसने परिमल और एलएसडी को कहाँ खींच लिया था।

'हम वान गांव में वन विश्राम गृह के पास हैं,' परिमल ने उनका स्थान बताया।

'क्या जलते हुए पेड़ ने किसी का ध्यान आकर्षित किया?' नागेन्द्र ने पूछा.

Machine Translated by Google

परिमल ने दूर-दूर पड़े तीन शवों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'रेस्ट हाउस के शेफ और दो पुराने सुरक्षा गार्ड।' 'क्या शव अभी भी ताज़ा हैं?' नागेन्द्र ने पूछा।

परिमल ने सिर हिलाया.

'हमारे लिए यह जगह छोड़ने की व्यवस्था करें,' नागेंद्र ने आदेश दिया, उसकी निगाहें अभी भी स्थिर थीं अचेतन एलएसडी पर.

परिमल ने उनकी आज्ञा को स्वीकार किया और नागेंद्र को कुछ गर्म पानी और उसके साथ एक बंदूक की पेशकश की। नागेंद्र उन दोनों को ले गया और परिमल सवारी की व्यवस्था करने के लिए मुड़ गया।

नागेंद्र ने कहा, 'मुझे अपना चाकू दो।'

परिमल ने फिर लाशों की ओर देखा. वह नागेंद्र के पास वापस चला गया, उसे चाकू थमाया और वान गांव के लिए निकल गया।

कैलाश वापस जाते समय, परशुराम का ट्रैकिंग उपकरण अचानक बीप करने लगा। उसने उसे बाहर निकाला और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वृषभपि और मिलारेपा को दर्शाने वाले दोनों बिंदु अब एक साथ थे। परशुराम ने उनका पता लगाने के लिए ज़ूम इन किया और चिह्नित स्थान पर पहुंचे, जो पहाड़ों के ऊपर कहीं था और तेजी से कैलाश की ओर बढ़ रहा था।

मिलारेपा की गोद में जिंदगी और मौत की जंग लड़ रहा वृषभापि ज्ञानगंज की ओर उड़ रहे हेलिकॉप्टर में अभी भी अपने होश से बाहर था। जैसे ही हेलिकॉप्टर कैलाश पर्वत के ऊपर मंडराया, उसके सिस्टम में एक-एक कर खराबी आने लगी। मिलारेपा को पता था कि छिपे हुए शहर में प्रवेश करने के लिए, उसे कैलाश पर उतरना होगा और शेष रास्ता वृषभपि को ढोते हुए चलना होगा, क्योंकि ऐसा कोई रास्ता नहीं था कि कोई हेलिकॉप्टर ज्ञानगंज का पता लगा सके या उसमें प्रवेश कर सके। उन्होंने पायलट को उतरने का आदेश दिया. हेलिकॉप्टर सुरक्षित स्थान पर उतर गया. मिलारेपा ने बड़ी मुश्किल से लंगड़े और भारी भरकम वृषभापी को हेलिकॉप्टर से बाहर निकाला।

फिर वह पायलट के पास गया और कहा, 'धन्यवाद, मेरे दोस्त! वापस उड़ो तुम कहाँ से आये हो. जिस क्षण तुम अपने अड्डे पर वापस आओगे, जादू टूट जाएगा।' अभिभूत पायलट ने शून्य चेहरे के साथ सिर हिलाया और वापस उड़ गया। अगली चुनौती वृषभपि को उसकी आत्मा के इस क्षेत्र से बाहर निकलने से पहले ज्ञानगंज ले जाने की थी। इससे पहले मिलारेपा को वृषभपि के शरीर के साथ मीलों की दूरी तय करनी थी और उसे पता नहीं था कि कैसे।

अचानक, मिलारेपा को भारी कदमों की आवाज़ के साथ-साथ पास से सरसराहट सुनाई दी। यह उसके पीछे से आ रहा था, लेकिन जैसे ही वह मुड़ा, उसकी आवाज़ दाईं ओर, फिर बाईं ओर स्थानांतरित हो गई। जितना अधिक मिलारेपा ने उसका अनुसरण करने की कोशिश की, वह उतनी ही तेजी से आगे बढ़ता गया। मिलारेपा ने अपनी आँखें बंद कर लीं और ध्वनि के स्रोत का पता लगाने के लिए पूरा ध्यान केंद्रित किया। कुछ मिनटों के बाद, उसने सुना

Machine Translated by Google

आख़िरकार सरसराहट बंद हो गई। उसने अपनी आँखें खोलीं और पाया कि एक बड़ा वानर जैसा प्राणी उससे कुछ फीट की दूरी पर खड़ा है। वह भूरे भालू से भी लंबा था और उसका फर गंदा सफेद रंग का था। मिलारेपा को एहसास हुआ कि यह वास्तव में येति था, जिसे बिगफुट के नाम से भी जाना जाता है। इसे कभी-कभार ही देखा जाता है, लेकिन हिमालय में विभिन्न स्थानों पर पाए गए इसके पैरों के निशान ने कई अफवाहों को जन्म दिया है। हालाँकि, यति अकेला नहीं था। एक आकर्षक बूढ़ा व्यक्ति उनकी ओर आया और यति झुक गया।

कैलाश पर कहीं और, गहरे ध्यान में, ओम और अश्वत्थामा खड़े थे
द्वार पर उनके सूक्ष्म रूप अवरुद्ध स्मृतियों को धारण किये हुए थे। उन्होंने बड़े प्रयास से भारी दरवाजे को धक्का देकर खोला और विचित्र दृश्यों को फिर से अपने सामने प्रकट होते देखा, केवल इस बार, ओम को हाथी के पैरों के बजाय घोड़े के खुर और सांप के बजाय मोर की गर्दन दिखाई दे रही थी। हर गुजरते सेकंड के साथ, उनके लिए परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करना कठिन होता जा रहा था। दरवाज़ा इतना भारी था कि उन दोनों को एक साथ भी खुला रखना संभव नहीं था। उनका संघर्ष उनके सभी भावों पर चित्रित था क्योंकि उन्हें भय और हवन कुंड में आग की गर्मी महसूस हो रही थी। * वे तब तक दृढ़ रहने और देखने में कामयाब रहे जब तक कि एक युवक राक्षस में परिवर्तित नहीं हो गया और उन पर हमला करने के लिए नहीं आया। अश्वत्थामा ने अपने शरीर में लौटने के लिए अपनी आँखें खोलीं, और ओम को छोड़ दिया, जो इतना कमजोर हो गया था कि द्वार खुला नहीं रख सका। इससे पहले कि राक्षस ओम तक पहुंच पाता, उसे दरवाजे की चौखट से बाहर उड़ा दिया गया और उसके चेहरे पर दरवाजा बंद कर दिया गया। ओम ने आँखें खोलीं और उठ बैठा। उन्होंने अश्वत्थामा की ओर देखा और वे दोनों जानते थे कि उन्होंने जो देखा है उसके लिए उनके पास कोई स्पष्टीकरण नहीं है।

हमले से स्तब्ध ओम ने स्वीकार किया, 'मैं नहीं जानता कि वह कौन था।'

'हम ढूंढ लेंगे। महत्वपूर्ण यह है कि हम इसे खोल सकें। अब, हमें इसे लंबे समय तक खुला रखना होगा और इसके लिए, हमें अधिक बिजली की आवश्यकता है,' अश्वत्थामा ने आश्चर्य जताते हुए कहा कि कौन अधिक बिजली प्रदान कर सकता है।

'आपका क्या मतलब है?' ओम से पूछताछ की.

'हमें जाने के लिए मेरी तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली ध्यान शक्ति वाले योगी की आवश्यकता है
अंदर तुम्हारे साथ,' अश्वत्थामा ने कहा और उसके दिमाग में एक योजना आकार लेने लगी।

'और वह कौन होगा?' ओम जानने को उत्सुक था.

'ऐसे हथियार हैं जिन्हें मैं भी अपने पास नहीं रख सकता। वे मेरे नियंत्रण और आदेश के लिए बहुत शक्तिशाली हैं। उसी तरह, मैं इस दरवाज़े को खुला नहीं रख सकता,

Machine Translated by Google

लेकिन कुछ योद्धा मुझसे भी अधिक शक्तिशाली हैं। वे हथियार बुला सकते हैं जो मैं नहीं बुला सकता, और उन्हें दरवाज़ा खुला रखने में भी सक्षम होना चाहिए।'

'आपका मतलब परशुराम है,' ओम ने निष्कर्ष निकाला।

'हां, वह भी मजबूत है, लेकिन आपके पिछले जीवन को उजागर करने के लिए आपके साथ ध्यान करने की तुलना में उसके पास अभी देखभाल करने के लिए बड़ी चीजें हैं।'

पृथ्वी ने श्रीमती बत्रा से कहा, 'योद्धा अश्वत्थामा कृपाचार्य की ओर इशारा कर रहा था।'

'कृपाचार्य?' श्रीमती बत्रा को कुछ भी पता नहीं था।

'हनुमान, अश्वत्थामा और परशुराम सातों में से अधिक प्रमुख अमर हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शेष चार किसी भी तरह से कमजोर या कम शक्तिशाली हैं। वेद व्यास, राजा बलि, विभीषण और कृपाचार्य की अपनी-अपनी यात्राएँ, शक्तियाँ और कहानियाँ भी हैं।

'अश्वत्थामा की माता कृपी का एक भाई था जिसका नाम कृप था। कृपी और कृपा का जन्म सामान्य तरीके से मानव गर्भ से नहीं हुआ था, बल्कि वे सीधे उनके पिता शरद्वान के वीर्य से उत्पन्न हुए थे, जो जमीन पर गिरा था। कृपा को बाद में शाही बच्चों के आचार्य (शिक्षक) के रूप में चुना गया, और इससे उन्हें कृपाचार्य की उपाधि मिली। वह युवावस्था के दौरान कौरवों और पांडवों के आचार्य थे और बाद में कौरवों की ओर से महाभारत के युद्ध में भी भागीदार थे।

कृपाचार्य नैतिकता, कानून और सच्चाई के प्रतीक थे। विपरीत परिस्थितियों में भी वह हमेशा अपने सिद्धांतों पर कायम रहे। वह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर था जिसे दुनिया ने अर्जुन से पहले कभी देखा था। मूल्यों के प्रति अपने कठोर पालन से अंततः उन्होंने महाभारत के महाकाव्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित कर लिया। इसी बात ने अश्वत्थामा के चाचा कृपाचार्य को अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य से श्रेष्ठ बना दिया और उन्हें अमरता प्रदान की।

युद्ध में द्रोणाचार्य तो नष्ट हो गये लेकिन कृपाचार्य उन अठारह महान योद्धाओं में से एक थे जो बाद में जीवित बचे रहे। कृपाचार्य को कलियुग के सभी ऋषियों में सबसे अग्रणी माना जाता है।

'महाभारत में कृपाचार्य की शक्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "कृपाचार्य युद्ध के मैदान में अकेले 60,000 योद्धाओं का प्रबंधन करने में सक्षम थे। उसने धधकती आग की तरह शत्रु की पूरी सेना को तबाह कर दिया। बहादुरी से युद्ध लड़ने में उनकी तुलना केवल भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय से की जा सकती है, जिन्होंने राक्षसों को हराया था।''

'जब युद्ध समाप्त हो गया, और शोक के दिन बीत गए, पांडवों में सबसे बड़े और हस्तिनापुर के नए राजा युधिष्ठिर ने उनके कष्टों को माफ कर दिया और कृपाचार्य के साथ अपनी सारी शत्रुता समाप्त कर दी, क्योंकि

Machine Translated by Google

वह जानता था कि ब्राह्मण बुद्धिमान था और केवल सिंहासन के प्रति अपनी निष्ठा के कारण दुर्योधन की ओर से लड़ा था।' ओम चौथे अमर से मिलने की उम्मीद कर रहा था

और जानने को उत्सुक था कि वह कहाँ है। उन्होंने अश्वत्थामा से पूछा, 'मैंने सुना है कि युद्ध के बाद उन्हें अर्जुन के पुत्र राजा परीक्षित को शिक्षा देने के लिए शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था। फिर, कुरु वंश के पतन के बाद और कलियुग की शुरुआत में, वह इतिहास में गायब हो गए। ओम ने कहा, ''बाद की किसी भी कहानी में उसका कोई जिक्र नहीं है, न ही उसे किसी ने देखा था।''

'हाँ यह सही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने गायब होने का विकल्प चुना। मान लीजिए कि यह उसका गुण है; वह सदैव ऐसा ही रहा है। लेकिन कलियुग की शुरुआत से ही वह मेरे साथ हैं,' अश्वत्थामा ने गर्व के साथ उत्तर दिया।

'अरे हां। आपने पहले ही कहा था कि वह जरूरत पड़ने पर ही आते हैं और केवल आप ही उसे बुला सकते हैं। इसका क्या मतलब है?' ओम ने पूछा.

इसके जवाब में अश्वत्थामा ने अपने हाथ जोड़ लिए और आंखें बंद कर लीं। अश्वत्थामा का सूक्ष्म रूप बारहमासी नदियों और गहरी गुफाओं के पास कृपाचार्य को खोजने लगा। उनकी तलाश ज्यादा दिनों तक नहीं चली. यह कैलाश में ही समाप्त हो गया जब उन्होंने कृपाचार्य को मिलारेपा के साथ देखा, जिसके बाद एक यति था जो घायल वृषकपि को ज्ञानगंज में ला रहा था। अश्वत्थामा ने जो देखा उसके बारे में चिंतित होकर अपनी आँखें खोलीं।

'क्या हुआ?' ओम ने पूछा.

'वृषकापि को मदद की ज़रूरत है!' अश्वत्थामा उठ खड़ा हुआ और चलने लगा जल्दी में; ओम ने पीछा किया.

जब तक परिमल दवाइयां और वाहन लेकर लौटा, तब तक नागेंद्र तीन मृतकों में से एक का आधा हिस्सा खा चुका था। परिमल एलएसडी की ओर बढ़ गया जबकि नागेंद्र ताजा मांस खाता रहा। परिमल ने पहले गर्म अंतःशिरा खारा समाधान के साथ एलएसडी इंजेक्ट किया, जिसके बाद उसने उसके वायुमार्ग को गर्म करने और उसके शरीर के तापमान को बढ़ाने में मदद करने के लिए नाक की नली के माध्यम से आर्द्र ऑक्सीजन का उपयोग किया। फिर उसने कार में एलएसडी डाला, हीटर को यथासंभव उच्चतम स्तर पर चालू किया और नागेंद्र के पास वापस चला गया।

'आगे क्या?' उसने पूछा।

नागेंद्र ने अपने मुंह और हाथों पर खून लगा हुआ और अपनी कोहनी से लाल रंग टपकते हुए कहा, 'आगामी छापे तक अगला एक और ऑफ-द-रडार ठिकाना है।' नागेन्द्र की बोलती बंद हो जाने के बाद भी परिमल अपनी नजरें उस पर से नहीं हटा पा रहा था। उसकी घूरती निगाहों को देखते हुए, नागेंद्र ने उसे उस मांस का एक टुकड़ा दिया जो उसने अभी-अभी उसके सामने काटा था। परिमल ने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया.

'कार में मेरा इंतज़ार करो,' उसने कहा।

Machine Translated by Google

परिमल मुड़ा और वापस एलएसडी की ओर चला गया।

उस ट्रैकिंग डिवाइस का अनुसरण किया गया जिसमें मिलारेपा और वृषभापी दोनों दिखाई दिए एक साथ परशुराम ज्ञानगंज पहुँचे। मिलारेपा और वृषकापि को महान कृपाचार्य और यति द्वारा सहायता प्रदान की जा रही थी। दूसरी ओर से ओम और अश्वत्थामा भी समर्थन के लिए आ रहे थे.

'क्या हुआ?' -परशुराम ने पूछा।

मिलारेपा ने यह दिखाने के लिए अपना सिर हिलाया कि वह नहीं जानता कि वृषभपि कैसा है स्थिति उत्पन्न हो गई.

'क्या वह जीवित है?' उन्होंने इस बार कृपाचार्य से पूछा।

'हाँ! लेकिन अगर तुरंत इलाज नहीं किया गया तो वह लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाएंगे।' कृपाचार्य ने चिंतित होकर उत्तर दिया।

अश्वत्थामा और ओम ने वृषकपी को यति से लेते समय संघर्ष किया। कृपाचार्य ने सभी को यति से परिचित कराया, 'बल्हार से मिलो।' यति ने सिर झुका लिया. कृपाचार्य ने उन्हें धन्यवाद दिया और फिर वे हिम में अन्तर्धान हो गये। वे सभी ज्ञानगंज की ओर दौड़ पड़े।

जैसे ही वे वृषभपि के साथ कुटिया में पहुंचे, ऋषियों ने उनका उपचार शुरू कर दिया। एक बार जब वृषकापि का सारा सूखा हुआ खून साफ हो गया तो परशुराम और अन्य सभी ने उसके घावों की जांच की। परशुराम ने अपनी गर्दन पर सबसे घातक घाव देखा।

'उन पर पीछे से हमला किया गया,' परशुराम ने पुष्टि की।

'वह बहुत शक्तिशाली है. कोई उसकी गर्दन तक कैसे पहुंच गया?' मिलारेपा ने पूछा।

'क्योंकि उसे धोखा देना या झांसा देना कभी नहीं सिखाया गया! एक योद्धा का कोड सम्मान का आदेश है कि दुश्मन पर हमेशा सामने से हमला किया जाना चाहिए। वृषभपि मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली हो सकता है, लेकिन वह चालाक नहीं है और निश्चित रूप से कायर भी नहीं है जो पीछे से किसी पर हमला करेगा या उम्मीद करेगा। वह पराजित नहीं हुआ है; उसे धोखा दिया गया है,'परशुराम ने कहा।

'हे ऋषियों, क्या वह जीवित रहेगा?' अश्वत्थामा ने पूछा.

'हमें इस पर संदेह है। घाव घातक और जहर हैं. . . यह तेजी से फैल गया है, जिससे उसके ऊतकों का क्षरण हो रहा है। ऋषियों में से एक ने उत्तर दिया, 'उन्होंने बहुत सारा खून और समय बर्बाद किया है।'

'हम्म । . . कृपया जो कुछ भी आप कर सकते हैं वह करें।' कुटिया छोड़ने से पहले परशुराम ने अपने हाथ जोड़े और ऋषियों ने उनके अभिवादन का उत्तर दिया। बाकी योद्धाओं ने भी परशुराम का पीछा किया।

'तुम्हें यहाँ क्या लाया है, कृपाचार्य?' -परशुराम ने पूछा।

'मुझे अभी तक नहीं पता. अश्वत्थामा ने मुझे बुलाया,' कृपाचार्य ने अश्वत्थामा की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

Machine Translated by Google

परशुराम ने अश्वत्थामा की ओर देखा, जिन्होंने उन्हें आश्वासन दिया, 'सब कुछ है मेरे मोर्चे पर ठीक है. हमें बस थोड़े से सूक्ष्म मार्गदर्शन की आवश्यकता थी; सब कुछ नियंत्रण में है।'

'हाँ! अभी के लिए, यह है. कृपया कृपाचार्य उनका मार्गदर्शन करें। मिलारेपा, कृपया मेरे साथ चलो,'परशुराम ने कहा।

'ट्रैकिंग डिवाइस ने केवल आपका स्थान बताया था, मिलारेपा। मैंने वृषभपि को दोबारा देखने की सारी आशा खो दी थी। आपने उसे विशाल हिमालय श्रृंखला में कैसे पाया?' 'तुम्हारे कारण, प्रिय परशुराम! हमारे संबंधित स्थानों के लिए प्रस्थान करते

समय, आपने मेरे साथ एक जानकारी साझा की: वृषभपि आज्ञाकारी थे। और आपने उसे रूपकुंड से ज्ञानगंज वापस जाने के लिए उसी मार्ग का अनुसरण करने का आदेश दिया। मैंने बस उसे ढूंढने के लिए कैलाश की ओर जाने वाले उसी रास्ते का पता लगाया।' 'तुमने बहुत अच्छा काम किया, मिलारेपा। लेकिन अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।' मिलारेपा जानता था कि उसका क्या मतलब है। समय तेजी से फिसल रहा था। उन्हें अपने अगले कदम के

लिए रणनीति बनाने की जरूरत थी। 'हमने एक योद्धा और नौ में से दूसरा स्थान खो दिया है। वह अपने लक्ष्य की ओर एक कदम और आगे बढ़ गया है,' मिलारेपा ने अपनी चिंता व्यक्त की।

'हां, इससे अब हमारा उससे सामना होने की संभावना भी कम हो गई है।' हमें यह अनुमान लगाना होगा कि शेष सात स्थानों में से वह आगे किसे अपवित्र करने के लिए चुनेगा।' परशुराम की दृष्टि दूर हो गई।

'तो अब क्या करे?' मिलारेपा ने पूछा।

'हमें अश्वत्थामा की जरूरत है। आइए मैं उनसे ओम के साथ उनकी प्रगति के बारे में बात करूं।' -परशुराम ने कहा।

इसी बीच अश्वत्थामा ने ओम और कृपाचार्य का परिचय कराया। ओम ने हाथ जोड़कर कृपाचार्य को नमस्कार किया। कृपाचार्य ने इस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया कि ॐ कौन है; वह ज्ञानगंज आये थे क्योंकि उनके भतीजे ने उनका आह्वान किया था।

'अश्वत्थामा! आप मुझे क्यों बुलाते हैं?' अश्वत्थामा ने रॉस द्वीप से

ॐ के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया ज्ञानगंज और धन्वंतरि से परशुराम तक, और फिर कृपाचार्य से उनकी मदद के लिए अनुरोध किया। उन्होंने उल्लेख किया कि कैसे ओम के मस्तिष्क के अंदर का दरवाज़ा इतना मजबूत था कि वह अकेले लंबे समय तक खुला नहीं रह सकता था और यहीं उसे मदद की ज़रूरत थी। उनकी रणनीति में अश्वत्थामा को अपनी स्मृति के अंदर ओम की रक्षा करना और कृपाचार्य द्वारा उन दोनों को अंदर फंसने से बचाने के लिए दरवाजा खुला रखना शामिल था। कृपाचार्य सहायता के लिए तैयार हो गये। अब सबका समय आ गया था

Machine Translated by Google

ओम के साथ जुड़ने के लिए उनमें से तीन को एक साथ ध्यान करना होगा। लेकिन उनके बैठने से ठीक पहले, परशुराम ने सभी को योजना साझा करने के लिए बुलाया।

परिमल कार की ड्राइवर सीट पर बैठ गया और दरवाज़ा बंद कर दिया, जिसकी आवाज़ से एलएसडी जाग गई। परिमल उसे सांत्वना देने के लिए मुड़ा। 'और सब ठीक है न।' 'नागेंद्र कहां है?' उसने पूछा।

'वह बाहर खाना खा रहा है। उन्होंने मुझसे तुम्हारे साथ रहने को कहा. परिमल ने उत्तर दिया, 'वह कुछ समय में हमारे साथ जुड़ेंगे।'

'वहां क्या हुआ था?' वह जानना चाहती थी.

'आपको हाइपोथर्मिया हुआ और मैं भी बेहोश हो गया। नागेंद्र ने हमें खींच लिया यहाँ। ऐसा ही हुआ,'' उन्होंने सीमित शब्दों में उत्तर दिया।

'मुझे कुछ भी ठीक से याद नहीं है,' उसने याद करने की कोशिश करते हुए कहा।

'मैं भी नहीं, लेकिन जो कुछ भी मुझे याद है उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा,' परिमल कुछ सोचते हुए शरारत के भाव से मुस्कुराया।

'तुम्हें क्या याद है और तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो?' उसने सवाल किया.

'कल रात, मैंने एक नए नागेंद्र को तूफ़ान में तुम्हें इस तरह खोजते हुए देखा, जैसे उसने अपनी बेटी को खो दिया हो। वह तुम्हें हमेशा के लिए खोने के विचार से भयभीत हो गया था। मैं उसके बारे में गलत था. वो तुमसे प्यार करता है!' परिमल उसे बताते हुए मुस्कुराता रहा.

तभी, नागेंद्र आए और पीछे की सीट पर एलएसडी के पास बैठ गए, जो वहां था अभी भी कमजोर लेकिन सुरक्षित. नागेन्द्र ने एलएसडी को उसी कठोर दृष्टि से देखा और परिमल को आदेश दिया, 'चलो चलें!'

'कहाँ जाना है?' चोरी हुई कार का इंजन चालू करते हुए परिमल ने पूछा।

नागेंद्र ने उसे एक कागज का टुकड़ा दिया, जिस पर एक पता लिखा था। परिमल ने उसे पढ़ने में थोड़ा समय लगाया और गाड़ी चलाने लगा।

रूपकुंड से लगभग 40 किमी की दूरी तय करने के बाद, कागज के टुकड़े पर लिखे गंतव्य की ओर जाने के लिए एक बाईपास सड़क को पार करते समय, नागेंद्र ने परिमल को कार रोकने का आदेश दिया और यह कहते हुए बाहर निकल गए, 'बीस के बाद भरतपुर नेशनल पार्क में मिलते हैं। -पांच दिन। सुरक्षित हों।' 'मैं आपके साथ आना चाहता हूं,' एलएसडी ने कहा।

'मादा पेंगुइन कभी भी अपने बच्चों को अकेले नहीं पाल सकती। पुरुष है अंडे के नाजुक खोल की रक्षा के लिए आवश्यक है। और वे जीवन भर के लिए संभोग करते हैं, क्योंकि कोई अन्य विकल्प नहीं है,' नागेंद्र ने कहा और वह मुड़कर चलने लगा।

वे नागेंद्र को सड़क पर छोड़कर चले गए। योजना से अनजान एलएसडी ने परिमल से पूछा, 'वह कहां जा रहा है?'

'मुझें नहीं पता। उसने मुझे नहीं बताया,' परिमल ने आश्चर्य करते हुए उत्तर दिया।

Machine Translated by Google

'और हम कहां जा रहे हैं?' एलएसडी के पास उसका अगला प्रश्न तैयार था।

'महाराष्ट्र राज्य में शेटपाल नामक एक गाँव में,' उसने गाड़ी चलाते हुए और बाहर सड़क की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

'क्यों?' एलएसडी के प्रश्न स्वाभाविक थे इसलिए परिमल ने उत्तर देना जारी रखा।

'क्योंकि वहां मेरी पुश्तैनी जायदाद है।' एलएसडी को नहीं

पता था कि और क्या पूछा जाए। उसने पीछे मुड़कर नागेन्द्र की ओर देखा, जो विपरीत दिशा में चलना जारी रखा।

'एलेक्सा, हमें काठगोदाम में पंतनगर हवाई अड्डे तक ले चलो।' 'पंतनगर हवाई

अड्डा यहां से 243 किमी दूर है। अगले 600 मीटर तक सीधे ड्राइव करें और दाएं मुड़ें,' कार के स्पीकर से एलेक्सा की रोबोटिक आवाज सुनाई दी।

'हमें हवाई अड्डे तक पहुंचने में कुछ घंटे लगेंगे। आप कमज़ोर हैं। आप की जरूरत है आराम करने के लिए। जब हम वहां होंगे तो मैं तुम्हें जगा दूंगा।' परिमल ने सड़क से नज़रें हटाए बिना अपना दाहिना हाथ उसके पीछे बढ़ाया और उसे चिप्स का एक पैकेट और मिनरल वाटर की एक बोतल दी।

कैलाश पर, परशुराम ने कृपाचार्य को स्थिति के बारे में जानकारी दी। 'मैं हूँ ख़ुशी है कि आप यहाँ हैं, कृपाचार्य। दुर्भाग्य से, मानसरोवर और रूपकुंड पूरी तरह से बर्बाद हो गए हैं। हमने दो शब्द खो दिए हैं, जिससे अब हमारे पास सुरक्षित करने के लिए सात स्थान बचे हैं लेकिन उनकी सुरक्षा के लिए केवल चार आदमी हैं।
अश्वत्थामा, अब हमें ज़मीन पर तुम्हारी ज़रूरत है। अगर ओम अभी तैयार नहीं है तो उसे यहीं रुकना होगा. जब तक वह तैयार नहीं हो जाता, हम उसे जोखिम में नहीं डाल सकते।'

अश्वत्थामा ने अनुरोध किया, 'हमें उसके साथ और अधिक समय चाहिए।'

'तुम्हारे जाने से पहले तुम्हारे पास बीस दिन हैं। देखें कि उस अवधि में क्या हासिल किया जा सकता है। मुझे जाकर वेद व्यास से परामर्श लेना होगा,'परशुराम ने चलने से पहले कहा।

अश्वत्थामा की नजरें कृपाचार्य की ओर घूम गईं, 'हमें अभी शुरुआत करनी होगी।' तीनों योद्धाओं को वहीं छोड़कर, मिलारेपा वृषकापि पर जाँच करने गया, जो अभी भी एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहा था।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 10

छाया चित्र

'जागो!' परिमल ने एलएसडी को चिल्लाया, जो पिछली सीट पर गहरी नींद में सो रहा था।
एलएसडी ने अपनी आँखें मलीं और उठकर बैठ गईं और देखा कि कार एक अस्पताल के बाहर खड़ी थी।

'हम अस्पताल के बाहर क्या कर रहे हैं?' उसने पूछा।

परिमल ने उत्तर दिया, 'हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चा ठीक है।'

एलएसडी ऐसे भावनात्मक प्रदर्शनों का आदी नहीं था। 'तो अब क्या आप एक आम पति की तरह मेरी ओर से फैसले लेंगे?' उसने आँखें घुमाकर जवाब दिया, लेकिन निश्चित रूप से परिमल की प्रतिक्रिया इतनी कठोर होने की उम्मीद नहीं थी।

'मैं तुम्हारे या इस बच्चे के बारे में परवाह नहीं करता। क्या यह आपके लिए इतना स्पष्ट है कि आप इसे हमेशा के लिए स्पष्ट कर सकें? मैं सिर्फ अपने आदेश का पालन कर रहा हूं.' अब या तो आप बाहर निकलें या मैं कार में वापस बैठूं, हवाईअड्डे तक जाऊं और उसे बताऊं कि आपने मना कर दिया है।' एलएसडी उसके स्वर से हैरान और आहत हुआ। वह कार से बाहर निकली और परिमल के आगे बढ़ने का

इंतजार करने लगी। परिमल केवल वही कर रहा था जो उससे कहा गया था। उन्होंने यथाशीघ्र जांच पूरी करने के लिए जान-बूझकर ऐसा अस्पताल चुना था जहां भीड़ न हो। वे अस्पताल में दाखिल हुए, अपना टोकन लिया और सीधे प्रसूति वार्ड की ओर चल दिए क्योंकि वे उस अनुभाग में एकमात्र मरीज थे।

एक मिलनसार महिला डॉक्टर ने उनका स्वागत किया, जिन्होंने उन्हें लेने के लिए कहा
सीट।

परिमल सीधे मुद्दे पर आए, 'हमें यह जानना होगा कि भ्रूण ठीक है या नहीं।'

'भ्रूण? यह आश्चर्यजनक है! आमतौर पर लोग इसे बच्चा कहते हैं,' डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा, 'क्या आप पति हैं?' 'इससे क्या फर्क पड़ता है? क्या इससे यह तय होगा कि बच्चा ठीक है या नहीं

या नहीं?' इस बार एलएसडी बंद हो गया।

परिमल उसकी बेचैनी को समझ गया था, इसलिए उसने यह कहकर उसे आश्वस्त करने की कोशिश की, 'हां, मैं पिता हूं।'

Machine Translated by Google

इससे एलएसडी थोड़ा शांत हुआ। वे चुपचाप सोनोग्राम देखते रहे सब कुछ सामान्य निकला. वहां से वे एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गये.

लगभग उसी समय नागेन्द्र पनडुब्बी के पास पहुँचे। जैसे ही वह अपने प्रतिबंधित कक्ष में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़ा, चालक दल के सदस्यों में से एक ने यह पूछने के लिए उसका पीछा किया कि क्या उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है, बिना यह अनुमान लगाए कि उस पर क्या अत्याचार होने वाला है; कुछ ऐसा जिसे वह समाहित नहीं कर पाएगा। जब तक नागेंद्र ने अपने कक्ष का दरवाजा बंद करने की कोशिश की, तब तक उस व्यक्ति के अवशेष खून से लथपथ जमीन पर बिखर गए थे। नागेंद्र ने गंदगी देखी तो शव की आंतें, जो अभी भी सुरक्षित थीं, एकत्र कर अंदर ले गए और दरवाजा बंद कर लिया। जैसे ही वह अंदर गया, एक विशाल छाया उसके शरीर पर छा गई, जिससे लगभग आधा कमरा अंधेरे में डूब गया।

नागेंद्र ने अपने सामने विशाल छाया डालती हुई आकृति पर आंतों का कुंडल चढ़ाया।

नागेंद्र ने कहा, 'हमारे पास दूसरा शब्द है।'

छाया बड़ी हो गई, नागेंद्र से शब्द प्रस्तुत करने के लिए कहा। नागेन्द्र ने अपनी दोनों हथेलियाँ खोलीं और छाया ने उसे सोख लिया।

'अगले शब्द ढूंढ़ना कठिन होगा। वे तुम्हारे विरुद्ध और अधिक योद्धा खड़े करेंगे। स्थानों की सुरक्षा की जायेगी. तुम्हारी संख्या कम हो जाएगी,'' नागेंद्र को चेतावनी देते हुए छाया की तेज आवाज पूरे कमरे में गूंज गई।

कैलाश पर, अश्वत्थामा और कृपाचार्य अपने पिछले रहस्यों और जीवन को जानने के लिए ओम के साथ बैठे। वे ध्यान करने लगे; जैसे ही वे अपने सूक्ष्म रूपों से जुड़े, उनके बेजान शरीर जमीन पर गिर पड़े। वे जल्द ही ओम की यादों के बंद दरवाजे के सामने खड़े थे।

'इसे खोलना कोई चुनौती नहीं है, इसे खुला रखना चुनौती है। अश्वत्थामा ने कहा, ''पिछली बार मेरी शक्तियाँ पर्याप्त नहीं थीं।''

कृपाचार्य ने सिर हिलाया। 'खोलो इसे!' ओम

और अश्वत्थामा ने धक्का देकर दरवाजा खोल दिया। वे अंदर चले गये.

जैसे ही कृपाचार्य ने प्रार्थना की और कुछ शब्दों का उच्चारण किया, अश्वत्थामा ने उसे थोड़ी देर के लिए खुला रखने की ताकत जुटाई। उसके हाथ में एक बड़ा सा सफेद गोला उभर आया। उसने प्रवेश द्वार पर गोला चिपका दिया; जो दरवाज़ा बंद होने से रोकेगा।

वे पूरी तरह से काले शून्य में चले गए। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, आगे का रास्ता और उनका परिवेश दिखाई देने लगा। उन्होंने जो कुछ भी पारित किया वह इतना अस्पष्ट था कि कोई ठोस अर्थ निकालने में मदद नहीं मिल सकती थी।

Machine Translated by Google

कृपाचार्य ने देखा कि एक शिशु भूमि पर अकेला पड़ा हुआ है। बच्चे के बाएं पैर के तलवे पर एक काला जन्म चिन्ह था। उसने बच्चे को अपनी बाहों में भर लिया और उसे देखकर मुस्कुराया। फिर उसने बच्चे को ओम को पकड़ने के लिए दिया और उससे पूछा कि क्या वह इसे पहचानता है।

'नहीं, मैं नहीं। क्या वह मेरा बचपन है?' ओम ने जोर से आश्चर्य किया।

कृपाचार्य ने बच्चे को अपनी गोद से वापस लेते हुए ओम से कहा, 'अपना बायां पैर उठाओ।'

'क्यों?' ओम ने अपना पैर उठाकर कृपाचार्य को वैसे भी दिखाते हुए पूछा।

'क्योंकि इस बच्चे की बायीं एड़ी पर एक काला जन्मचिह्न है। लेकिन आप ऐसा नहीं करते, तो इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि यह आप नहीं हैं,' कृपाचार्य ने समझाया।

'अगर यह ओम नहीं है, तो हम उसे उसके अतीत में क्यों देख रहे हैं?' अश्वत्थामा ने ओम के विचारों को उससे पहले ही बता दिया।

कृपाचार्य ने निष्कर्ष निकाला, 'शायद इसलिए कि इस लड़के का उसके अतीत में कुछ महत्व था।'

'कैसे?' ओम ने बच्चे की ओर देखा जैसे उसकी आँखों को पढ़ने की कोशिश कर रहा हो।

'पता लगाने का केवल एक ही तरीका है। हम आगे बढ़ते हैं.' कृपाचार्य बच्चे को

नीचे रखकर चलने के लिए मुड़े तभी सादे सफेद धोती पहने एक ग्रामीण उनके पास आया। उस व्यक्ति ने अपना परिचय विष्णुयशा के रूप में दिया और कृपाचार्य की ओर देखकर मुस्कुराया, और शिशु को उसके हाथों से लेने के लिए धीरे से अपनी बाहें फैला दीं। कृपाचार्य ने प्रसन्नतापूर्वक बालक को सौंप दिया।

इस बीच, पोर्टल को बंद होने से रोकने वाला गोला टूटता रहा दबाव में। उनके पास ज्यादा समय नहीं था. 'हमें आगे बढ़ना चाहिए,' कृपाचार्य ने आगे बढ़ते हुए कहा, और दोनों उनके पीछे-पीछे चले।

तीनों आगे बढ़े और देखा कि एक बच्चा जमीन पर अकेला खेल रहा है। पास ही एक महिला अपने पास जो कुछ भी उपलब्ध था उससे भोजन तैयार करने में व्यस्त थी। जब वह रेंग रहा था तो उन्होंने उसके बाएं पैर पर वही जन्मचिह्न देखा।

'ऐसा लगता है जैसे हम आपकी याद में लगभग दो साल तक चले हैं,' अश्वत्थामा ने विचार किया।

अश्वत्थामा ने एक गौरैया को बच्चे की ओर आते देखा, जो यह देखने के लिए उत्सुक थी कि हिलता हुआ खिलौना क्या है। गौरैया फुदक कर करीब आ गई और महिला अभी भी खाना बनाने में व्यस्त थी। बच्चे ने खेलने के लिए उसे प्रसन्नतापूर्वक उठा लिया। जब गौरैया उसकी बांहों और गर्दन के चारों ओर फड़फड़ा रही थी तो वह खिलखिला रहा था। कुछ क्षण खेलने के बाद, बच्चा अचानक कठोर हो गया क्योंकि शुद्ध क्रोध का एक अप्रत्याशित दौरा उसके हर्षित कर्कश स्वर पर हावी हो गया। उसने पक्षी को उसके दोनों पंखों से कसकर पकड़ लिया और उन्हें तुरंत फाड़ दिया। पक्षी दर्द से चिल्लाने लगा और बच्चे ने उसकी चीख को चुप कराने के लिए उसकी गर्दन भींच ली और उसे घुमा दिया। यहां तक की

Machine Translated by Google

कृपाचार्य और अश्वत्थामा, अमर जो वर्षों से बड़ी क्रूरता के गवाह रहे थे, बच्चे के नृशंस कार्यों से स्तब्ध थे।

अश्वत्थामा ने आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन कृपाचार्य ने उसे रोक दिया। 'ये हैं पिछली घटनाएँ और यादें, अश्वत्थामा। अब इस बच्चे के साथ जो कुछ भी होगा वह पहले ही हो चुका है। यहां कुछ भी बदलने की कोशिश उसके भविष्य की हर चीज़ को प्रभावित कर सकती है। कृपाचार्य ने तर्क दिया, 'हम यहां केवल सीखने के लिए हैं, बदलने के लिए नहीं।'

कृपाचार्य की आज्ञा पाकर अश्वत्थामा रुक तो गया, परंतु बालक से अपनी दृष्टि नहीं हटा सका। पक्षी वहीं मर गया। फिर बच्चे ने सीधे अश्वत्थामा की आंखों में देखा और ओम ने कहा, 'उसे इस तरह देखना बंद करो। यह मुझे असहज कर रहा है।'

कृपाचार्य जानते थे कि उन्हें अब जल्दी करनी होगी। गोला नहीं कर पाएगा लंबे समय तक दरवाजे के दबाव को बनाए रखें और टूटने के कगार पर हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में उनके पास बाहर निकलने के लिए ज्यादा समय नहीं होगा।

जब वे वापस जाने वाले थे, तो उन्होंने रेत पर एक हाथी के बच्चे के पैरों के निशान देखे। पटरियों पर वही लड़का, जो अब चार साल का है, एक हाथी के बच्चे के साथ खेलता हुआ दिखाई दिया।

लेकिन इससे पहले कि वे दृश्य को और अधिक समझ पाते, गोला जवाब दे चुका था दबाव में आकर गिरने लगा। दरवाजा बंद होने लगा और कृपाचार्य ने उन सभी को तुरंत वापस जाने का आदेश दिया।

वे तीनों दरवाजे की ओर तेजी से भागने लगे। वे समय पर पहुंचने के बारे में आश्वस्त थे, जब तक उन्हें एहसास नहीं हुआ कि रास्ते में वे जिस किसी को भी पार कर चुके थे, वे उन्हें रोकने के लिए तैयार सेना की तरह उनकी ओर बढ़ रहे थे।

बाघ, घोड़ा, साँप, हाथी, मोर, बैल - जानवरों का पूरा झुंड दहाड़ने लगा और उन पर टूट पड़ा। विष्णुयशा सहित सभी ग्रामीण हिंसक हो गए और उन पर चारों तरफ से हमला कर दिया।

कुछ कदमों की छोटी सी दूरी अचानक असंभव सी लगने लगी कृपाचार्य, ओम और अश्वत्थामा के लिए छलांग लगाओ क्योंकि उनके और दरवाजे के बीच एक सेना खड़ी थी। चुनौती यह थी कि उनमें से किसी को भी नुकसान पहुँचाए बिना ओम और खुद को बचाया जाए और इससे पहले कि वे पूरी तरह से फंस जाएँ, बंद हो रहे दरवाज़े तक पहुँच जाएँ। कृपाचार्य ने हाथी, बाघ, बैल और साँप पर हमला किया जबकि अश्वत्थामा ने उन पर हमला करने वाले बच्चों, महिलाओं और अन्य पुरुषों से ओम और खुद की रक्षा की। ओम ने देखा कि चमकती आँखों वाला एक बूढ़ा आदमी ऊपर मंडरा रहा है और उन सभी को देख रहा है, खासकर ओम को। ओम ने दूसरों को चेतावनी देने की कोशिश की लेकिन वे बाहर निकलने की कोशिश करते समय उसकी रक्षा करने और खुद का बचाव करने में बहुत व्यस्त थे। बूढ़े और ओम की मुलाकात हुई

Machine Translated by Google

कृपाचार्य के सामने एक-दूसरे की आँखों में रोशनी का ऐसा विस्फोट हुआ कि उन पर हमला करने वाले सभी लोग अंधे हो गए। अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने ओम को खींच लिया और गोला गिरने से पहले दरवाजे की ओर भागे। बाहर निकलने से ठीक पहले, ओम एक बार फिर बूढ़े व्यक्ति की ओर देखने के लिए पीछे मुड़ा। बूढ़ा आदमी अजीब तरह से चमक से अप्रभावित था और दरवाजा बंद होने से पहले अंतिम क्षण तक बिना पलक झपकाए अपनी ओर देखता रहा।

अंततः सूक्ष्म जगत से बाहर निकलने और अपने भौतिक स्वरूप में लौटने के बाद, उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। कृपाचार्य अपने द्वारा देखी गई घटनाओं से क्रोधित और परेशान थे। उसने ओम की ओर कड़ी उंगली घुमाई और कहा, 'मैं उसके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं। धन्वंतरि से पहले की उनकी स्मृति जानबूझकर बंद कर दी गई है। मुझे इसके पीछे की मंशा जानने की जरूरत है, यह पहचानने की कि हम यहां किसके खिलाफ लड़ रहे हैं। वह धन्वंतरि के परीक्षण का एक यादृच्छिक विषय मात्र नहीं है जो अमरता का एक सफल प्रयोग बन गया।

एक कारण है कि धन्वंतरि ने मिलारेपा को आपके और परशुराम के पास भेजा; यही कारण अब हम नहीं जानते लेकिन मिलारेपा शायद जानते होंगे। उसे भी बुलाओ.' अश्वत्थामा उठ खड़ा हुआ और बाहर चला गया। कृपाचार्य ने ओम को बैठे रहने का इशारा करते हुए उनका पीछा किया। ओम वहीं बैठ गया और उस बूढ़े आदमी के बारे में सोचने लगा जिसे उसने पोर्टल बंद होने से पहले देखा था। कुटिया के बाहर कृपाचार्य ने अश्वत्थामा को रोक लिया। 'अश्वत्थामा, यह हम सभी ने जो कल्पना की थी उससे कहीं अधिक जटिल है। तुम मेरे बिना वहां वापस जाने की कोशिश कभी नहीं करोगे.

यह एक आदेश है।' कृपाचार्य उस कमरे में वापस चले गए जहाँ उन्होंने ओम को छोड़ा था।

दो घंटे तक उड़ान में एक-दूसरे के बगल में चुपचाप बैठने के बाद, परिमल और एलएसडी पुणे हवाई अड्डे पर उतरे, जहां विंटेज कार वाला एक बूढ़ा ड्राइवर पुणे से 200 किमी दूर शेतपाल की यात्रा के लिए उनका स्वागत करने के लिए इंतजार कर रहा था। जैसे ही वे अपने गंतव्य की ओर बढ़ने लगे, एलएसडी ने तुरंत अपना लैपटॉप खोला और उस गांव के बारे में पढ़ना शुरू कर दिया, जहां वे जा रहे थे। अस्पताल के बाहर एलएसडी के साथ परिमल के व्यवहार के परिणामस्वरूप दोनों के बीच एक असहज चुप्पी अभी भी बनी हुई है। परिमल ने एलएसडी के लैपटॉप स्क्रीन पर झाँका और अपना गला साफ करके बर्फ तोड़ने की कोशिश की।

'एक बात पुछु तुमसे?' उसने काफ़ी डरपोक ढंग से शुरुआत की।

'क्या?' एलएसडी की निगाहें लैपटॉप पर टिकी रहीं.

'जब मैंने आपको अपने पूर्वजों, सरपुती और लोपाक्ष के बारे में और नागेंद्र के साथ उनके कार्मिक संबंध के बारे में बताया, तो आपने कहा कि आप वह कहानी जानते हैं। लेकिन यह एक ऐसी कहानी है जिसे हमारे परिवार के बाहर कभी भी प्रलेखित या वर्णित नहीं किया गया है। यह

Machine Translated by Google

सदैव एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा है; तो फिर आपको इसके बारे में कैसे पता चला ?' परिमल ने पूछा. वह एलएसडी की आंखों के इधर-उधर देखने से समझ सकता था कि वह थोड़ा तनाव में थी, जवाब देने से पहले सोचने की कोशिश कर रही थी।

'मैंने इसे नागेंद्र से सुना था लेकिन मैंने हमेशा सोचा कि यह मेरे लिए सिर्फ सोने के समय की कहानी थी।' 'नागेंद्र द्वारा सोने

के समय की कहानी! आप उसके साथ कितने समय से हैं?' एलएसडी

वह अपनी सीट पर थोड़ा सा हिली, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि यह एक और परेशान करने वाला प्रश्न था।

'चूंकि मुझे याद है। उन्होंने मुझे अपने जैसा पाला है. . .' 'बेटी?' अपने रिश्ते के बारे

में आगे किसी भी

चर्चा से बचने की कोशिश कर रही हैं

नागेंद्र, उसने इंटरनेट पर शेतपाल के बारे में पढ़ने का नाटक किया।

'क्या यह सच है?' इससे पहले कि वह आगे कुछ सोच पाता, उसने विषय बदल दिया।

'क्या?' परिमल ने पूछा.

'इसमें कहा गया है कि शेतपाल में सांपों को घूमने पर कोई प्रतिबंध नहीं है और 2600 से अधिक ग्रामीणों की आबादी में से कोई भी उन्हें किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाता है। दरअसल, हर घर में कोबरा का परिवार के सदस्य के रूप में स्वागत किया जाता है। न तो कोबरा और न ही निवासियों को एक-दूसरे की उपस्थिति में डर लगता है।

'शेतपाल के लोग अपने घरों में देवस्थानम (देवता का निवास) बनाकर अपने विषैले सह-निवासियों के आतिथ्य में एक कदम आगे बढ़ गए हैं। घर में एक विशेष कोना विशेष रूप से कोबरा के लिए अलग रखा गया है ताकि वे जब चाहें तब आ सकें और ठंडा हो सकें। यदि गांव में कोई भी नया घर बनाता है, तो वे घर का एक खोखला हिस्सा सांपों के लिए देवस्थानम के रूप में समर्पित करना सुनिश्चित करते हैं। इस गाँव में इस संस्कृति की उत्पत्ति कैसे हुई, यह कोई नहीं जानता।' परिमल ने उसके घटिया प्रयास पर अपनी आँखें घुमाईं, 'मेरे सवाल को अपने सवाल से टालने के बजाय आप बस यह कह सकते हैं कि आप इसके बारे में बात नहीं करना चाहते हैं।'

एलएसडी थोड़ा शर्मिंदा था, और इसलिए परिमल ने आह भरी और खेलने का फैसला किया साथ में। 'हां, आपने अभी जो कुछ पढ़ा वह सही है। इस गांव की स्थापना मेरे पूर्वजों ने की थी. पूरा क्षेत्र, जिसमें लगभग 250 परिवार रहते हैं, हमारा है, पुराने दिनों की तरह, जब जमींदारों के पास गाँव होते थे।'

जब वे शेटपाल पहुंचे, तो विंटेज कार एक भव्य पुराने स्थान के बाहर रुकी हवेली और वहां के प्रबंधक, एक मिलनसार बूढ़े व्यक्ति, ने विनम्रतापूर्वक एलएसडी के लिए दरवाजा खोला। शाही वर्दी में हाउसकीपिंग स्टाफ का एक समूह

Machine Translated by Google

उन दोनों का स्वागत करने के लिए सौम्य मुस्कान के साथ दरवाजे पर खड़ा था। परिमल ने पुराने मैनेजर को एलएसडी का परिचय दिया और कहा, 'शुबेंद्र से मिलो! वह इस हवेली के सबसे पुराने शाही रक्षक और देखभालकर्ता हैं। वह पिछली तीन पीढ़ियों से इस परिवार की सेवा कर रहे हैं।'

एलएसडी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'यह मुझे किसी रिसॉर्ट में छुट्टियों की शुरुआत जैसा लगता है।'
एक उत्तेजित चीख़ को दबाना।

परिमल ने गर्व से उत्तर दिया, 'हां, यह कोई रिसॉर्ट नहीं बल्कि मेरा घर है।'

सेवक के रूप में नागेन्द्र से आदेश लेने वाला वास्तव में स्वयं किसी राजा से कम नहीं था। परिमल ने देखा कि उसे यह एहसास हुआ और वह जानबूझकर मुस्कुराया। प्रवेश द्वार पर स्वागत के लिए खड़े स्टाफ सदस्यों की ओर बढ़ते हुए उन्होंने फुसफुसाया, 'मुझे पता है कि आप इस समय क्या महसूस कर रहे हैं; फिर भी मैं एक नौकर से अधिक कुछ नहीं हूं क्योंकि आप यहां जो कुछ भी देख रहे हैं वह सब उसी के कारण है।

मैं वह हूं जो वरदान से बोझिल हूं और साथ ही शाप से भी मुक्त हूं।' सभी लोग दोनों का शाही अंदाज में अभिनंदन और

स्वागत करने लगे. भव्य, अलंकृत इमारत का बाहरी भाग किसी महल जैसा दिखता था। हरे-भरे लॉन के केंद्र में एक भव्य फव्वारा था जिसमें क्रिस्टल-साफ़ पानी पर रंग-बिरंगे फूल तैर रहे थे। जैसे ही वह मुख्य दरवाजे से अंदर आई, हवेली की ऊंची छत, उत्तम शाही टेपेस्ट्री, भारी लकड़ी के फर्नीचर पर नक्काशी और विदेशी चांदी के बर्तनों के नीचे चलते हुए, एलएसडी को एक राजकुमारी की तरह महसूस हुआ। बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तेज़ धूप आ रही थी, जिससे सब कुछ सुनहरे रंग में डूबा हुआ था। ऊपरी मंजिलों तक जाने के लिए एक शानदार सीढ़ियाँ थीं। भूतल पर कई लंबे, चौड़े और हवादार हॉलवे थे। भोजन क्षेत्र की ओर जाते समय, वे एक गलियारे से गुजरे जहाँ एलएसडी ने कई बड़े, पुराने हस्तनिर्मित चित्रों को संरक्षित किया और जटिल नक्काशीदार, चौड़े, चांदी के फ्रेम में लटकाए हुए देखा। वह एक मिनट के लिए रुकी, उसने देखा कि गलियारा ऐसे समान फ़्रेमों से भरा हुआ था, जो समान दूरी पर लटक रहे थे, सभी चित्रों के बीच एक असामान्य समानता थी।

दोनों अगल-बगल फ्रेमों की तुलना करते हुए वह देखती रही
वे लगातार तब तक चलते रहे जब तक कि स्टाफ सदस्यों में से एक ने उनकी विशिष्टता को समझाने के लिए बोलना शुरू नहीं कर दिया। यह वही पुराना मैनेजर था. 'एक राजा, एक पालतू जानवर और आंशिक रूप से ढके चेहरे वाला पालतू जानवर की देखभाल करने वाला; यह इस घर का प्रतीक बन गया है, महोदया। इस घर में कई अलग-अलग पालतू जानवर हैं, लगभग सभी प्रकार के जानवर। इस तरह,' उसने अपनी पूरी हथेली से शाही कुर्सी पर बैठे एक राजा की पेंटिंग की ओर इशारा करते हुए कहा,

Machine Translated by Google

उसके बगल में एक आदमी जंजीर से बंधे मगरमच्छ को पकड़कर खड़ा है। 'जिसे आप कुर्सी पर देख रहे हैं, वह 1687 में हमारे राजा कृतवीर्य थे। जब उन्होंने हवेली में एक मगरमच्छ रखने का फैसला किया, तो उन्होंने इसके लिए एक पूर्ण तालाब बनवाया जो आज भी हवेली के पीछे मौजूद है। और यह यहाँ!' उसने खुली हथेली से अपना हाथ बढ़ाया और उसकी निगाहें दूसरे फ्रेम की ओर निर्देशित कीं, जिसमें एक और राजा और आधे ढके चेहरे वाला एक देखभालकर्ता था, जो एक पालतू जानवर के रूप में पैंगोलिन, जिसे स्केली एंटीटर भी कहा जाता है, को पकड़े हुए था। 'राजा विश्वजीत से मिलें।' एलएसडी की उंगलियों ने धीरे से उस पेंटिंग का पता लगाया जहां पैंगोलिन को रखा गया था,

जब तक कि परिमल ने यह कहकर उसकी दिवास्वप्न को तोड़ नहीं दिया, 'खाना तैयार है। कृपया आओ।'

उसने मैनेजर की ओर एक विनम्र मुस्कान दी और परिमल के पीछे चली गई। वे भोजन कक्ष में पहुँचे जहाँ दीवारों पर उसी पैटर्न में और भी फ्रेम प्रदर्शित थे; एक आदमी अपने एक पालतू जानवर के साथ बैठा है और एक देखभाल करने वाला उनके पीछे अपना चेहरा आधा ढंके हुए खड़ा है। अंतर केवल इतना था कि इन्हें चित्रित नहीं किया गया था बल्कि तस्वीरें खींची गई थीं और ये फ्रेम उन फ्रेमों से काफी बड़े थे जो उसने गलियारे में देखे थे। उनमें से कुछ रंगीन तस्वीरों के आविष्कार से पहले के समय के थे। प्रवेश करते ही एलएसडी एक कुर्सी पर बैठी थी जिसे एक नौकरानी ने बाहर खींच लिया था। उसकी नजरें अब भी तस्वीरों पर थीं.

परिमल ने उसकी जिज्ञासा का समाधान किया, 'जैसा कि आप पहले ही समझ चुके हैं, ये मेरे पूर्ववर्ती हैं। आपने गलियारे में जो तख्ते देखे वे सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के थे। यहाँ अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के मध्य हैं। और जिसे तुम अपने पीछे देख रहे हो वह मेरे पिता थे।'

एलएसडी को एहसास हुआ कि प्रवेश करने के बाद से वह अपने पीछे की दीवार से चूक गई थी। वह मुड़ी और देखा कि दीवार का अधिकांश भाग एक विशाल फ्रेम से ढका हुआ है। फ्रेम में एक चालीस वर्षीय व्यक्ति दिखाई दे रहा था, जो एक कुर्सी पर बैठा था और एक छोटा और भव्य सेनेका सफेद हिरण सीट के पायदान पर झुका हुआ था और केयरटेकर आंशिक रूप से ढके हुए चेहरे के साथ उनके ठीक पीछे खड़ा था।

परिमल ने एलएसडी को रहस्यमय अभिव्यक्ति के साथ फ्रेम को घूरते हुए देखा।

'आप मेरे पिता के साथ जिस पालतू जानवर, हिरण को देखते हैं, वह अल्बिनो नहीं है; इसमें अप्रभावी जीनों का एक समूह होता है जो पूर्णतः सफेद कोट उत्पन्न करता है। मुझे इसके बारे में बहुत बाद में पता चला. बचपन में मैं इसके चमकीले सफेद रंग से मंत्रमुग्ध हो गया था और इसलिए इसका नाम बादल रख दिया। वह बचपन में मेरा एकमात्र दोस्त था। जब मैं छह साल का था तब उनकी मृत्यु होने तक हम पूरे दिन एक साथ खेलते थे। मेरे पिता उसके बाद कभी दूसरा पालतू जानवर घर नहीं लाए और पालतू जानवर रखने की परंपरा ऐसे ही खत्म हो गई।'

Machine Translated by Google

एलएसडी अभी भी तस्वीर से मंत्रमुग्ध थी जब एक नौकरानी ने उससे खाना परोसने की अनुमति मांगी थी। उसने मुस्कुराती हुई लड़की की ओर देखा और सिर हिलाया।

'हम यहां क्यों हैं?' एलएसडी ने गंभीरता से पूछा।

परिमल ने उसका प्रश्न सुना और मैनेजर की ओर देखा। वह जानता था कि क्या करना है. उन्होंने चुपचाप अन्य सभी स्टाफ सदस्यों को भोजन कक्ष से बाहर निकाल दिया।
सभी लोग मुड़े और कतार में दरवाजे से बाहर चले गए।

'क्या आपको सर्पुति और लोपाक्ष की कहानी याद है, जो इसके पहले वाहक थे
नागेंद्र का बोझ?' परिमल ने उसे अपने कुल की याद दिलाते हुए पूछा।

'हाँ!' एलएसडी ने उत्तर दिया.

'यह सब यहीं, इस गांव में शुरू हुआ। सरपुती एक नागिन थी जबकि उसका पुत्र लोपाक्ष मानव शरीर वाला था और वे एक साथ रहते थे। इस तरह से इस स्थान को अपनी अनूठी प्रतिष्ठा मिली - लोग सांपों के साथ रहते हैं और उनके लिए समर्पित एक देवस्थानम है। यहां सह-अस्तित्व में रहने वाले सांप और इंसान दोनों जानते हैं कि वे एक साथ हैं। हमारी पैतृक, संरक्षक देवी देवी भगवती हैं, जो युद्ध और उर्वरता की संरक्षक देवी हैं। मेरे परिवार द्वारा नाग को कुल के संरक्षक के रूप में पूजा जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि हम कद्रू की संतान हैं। अब से तीन दिन बाद देवी भगवती के लिए सबसे बड़ी वार्षिक प्रार्थना सभा है। हमारा
मानना है कि यह दिन शादी और बच्चे के जन्म के लिए सबसे शुभ दिन है, इस दौरान देवी स्वयं शादी को मंजूरी देती हैं और मां और उसके गर्भ को आशीर्वाद देती हैं। इसीलिए नागेंद्र ने हमें यहां भेजा है।'

'क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि हम तीन दिन में शादी कर रहे हैं?' एलएसडी उत्तेजित लग रहा था.

'नहीं! मैं कह रहा हूं कि हमारी शादी कल है. ऐसा तभी होता है जब लड़की होती है
इस परिवार के वंश को आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति से विवाह करने पर देवी भगवती उसके गर्भ में एक ऐसे बच्चे का आशीर्वाद देंगी जो उसकी हथेली में कीहोल के आकार का नेत्रगोलक रखेगा। प्रार्थना के इस शुभ दिन पर लड़की को या तो उसकी शादी के लिए या उसके बच्चे के लिए आशीर्वाद दिया जा सकता है, जो साल में केवल एक बार आता है। मुझे नहीं पता कि इसे कैसे समझाऊं. यह विवाह परिवार का हिस्सा बनने की अनुमति प्राप्त करने जैसा है, जहां आपको उन सभी रहस्यों को जानने का अधिकार है जो परिवार के बाहर कोई भी नहीं जान सकता है, और देवी द्वारा आपको अधिकार और शक्ति देने से पहले स्वीकार किया जाता है। बच्चे की हथेली में कीहोल के आकार की आंख रखें। कोई भी सामान्य महिला इसे सहन नहीं कर सकती. बरगद का पेड़ कभी भी गमले में नहीं लगाया जा सकता। इसे ज़मीन की ताकत की ज़रूरत है क्योंकि एक घड़ा कभी भी अपनी जड़ों और विकास को सहन नहीं कर सकता।'

Machine Translated by Google

'तुमने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?' एलएसडी ने गुस्से से पूछा।

'क्योंकि मुझे इसकी अनुमति नहीं थी!' परिमल ने एलएसडी के आरोपों के खिलाफ अपने कार्यों का बचाव किया।

'मुझे अभी तक और क्या नहीं बताया गया है?' वह उससे अब तक छुपी हर बात जानना चाहती थी।

परिमल ने रहस्यमय ढंग से उत्तर दिया, 'अब मैंने आपको वह सब कुछ बता दिया है जिसकी मुझे अनुमति थी।'

'इसका मतलब है कि और भी कुछ हो सकता है।'

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 11

ब्लैक बर्थमार्क वाला लड़का

पनडुब्बी के निषिद्ध कक्ष में एक भयावह छाया मंडरा रही थी और उसके अंधेरे कोनों से एक गंभीर आवाज गूंज रही थी।

'तो, आपने क्या निर्णय लिया है?' जैसे ही वह नागेंद्र के पास पहुंचा, उस आदमी की डरावने आकृति ने बात की।

'मैंने पहले भी उन्हें पकड़ने की कोशिश की है लेकिन मैं हमेशा असफल रहा हूं। नागेंद्र ने जवाब दिया, ''वे एक साथ और भी मजबूत हो गए हैं और हर गुजरते दिन के साथ, वे हमें अपने लक्ष्य हासिल करने से रोकने की साजिश रच रहे हैं।''

'हां, आप सही हैं, लेकिन केवल शारीरिक के अलावा अन्य रूप भी हैं जिनमें उन्हें कमजोर किया जा सकता है। यदि आप उन सभी को एक साथ नहीं हरा सकते, तो आपको उन्हें विभाजित करना होगा!' आवाज तेज़ हो गई, जिससे नागेंद्र की व्याकुलता दूर हो गई
रुख.

'क्या हम वह कर सकते हैं?' नागेन्द्र ने पूछा.

'हाँ। अग्रवन पर छापा मारने से पहले आपके पास अभी भी कुछ दिन हैं। इस समय का सदुपयोग करें सर्वोत्तम रूप से,' आवाज ने आदेश दिया।

'कैसे?' मार्गदर्शन मांगते हुए नागेंद्र से पूछा।

'अपनी आँखें बंद करें। अपने आप को पूर्णतः मुझे समर्पित कर दो। मिलने का समय आ गया है देवध्वजा.' जैसे ही आवाज आई 'देवध्वजा', नाम सुनकर नागेंद्र की भौंहें सिकुड़ गईं।

'केवल वही आपकी मदद कर सकता है।' छाया फैलती गई और अब पूरे कमरे को अपने अँधेरे में डुबा रही थी। नागेंद्र को एहसास हुआ कि शंभाला गांव जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

नागेंद्र रहस्यमय केबिन के बाहर गए और अपने चालक दल के सदस्यों को पनडुब्बी की सतह पर आने का आदेश दिया। उन्होंने वैसा ही किया जैसा आदेश दिया गया था। नागेंद्र डेक पर अकेले गए और चेहरे पर मुस्कान के साथ जोर से चिल्लाए, 'कुलधरा में एक और शब्द छिपा है।' अगले दिन, परिमल के पैतृक घर पर, न केवल हवेली बल्कि पूरे शेतपाल गांव को उनकी सदियों

पुरानी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए, फूलों और लैंपों से शानदार ढंग से सजाया गया था। इकलौते शाही वारिस की शादी थी

Machine Translated by Google

ग्रामीणों के लिए भव्य उत्सव का आयोजन। एलएसडी ने अपनी पूरी महिमा के साथ एक राजसी हिंदू राजकुमारी की तरह कपड़े पहने थे और यह उत्कृष्ट सुंदरता का दर्शन करा रही थी।
उसने बेहतरीन रेशम से बुनी हुई पारंपरिक लाल दुल्हन की पोशाक पहनी थी, जिस पर सुनहरे धागों से बारीक कढ़ाई की गई थी। वह सिर से पाँव तक सबसे असाधारण सोने के आभूषणों, हीरों और विभिन्न प्रकार के दुर्लभ रत्नों से जड़े हुए आभूषणों से ढकी हुई थी।

अपने जीवन में पहली बार, एलएसडी को महसूस हुआ कि उसके कर्तव्यों का बोझ उस पर भारी पड़ रहा है। दूसरी ओर, परिमल, स्वयं राजाओं के वंश से आते हुए, निश्चित रूप से इस भूमिका में दिखे। वह पुराने चित्रों में अपने पूर्वजों से काफी मिलता-जुलता दिखता था, वह लाल और सुनहरे रंग की रेशम से बनी पतलून के ऊपर पारंपरिक लंबे वस्त्र पहने हुए था, उसका सिर साफा में लिपटा हुआ था और उसकी कमर पर एक औपचारिक तलवार सजी हुई थी। एलएसडी गलियारों में घूमती हुई, उसके द्वारा गुजरने वाले प्रत्येक फ्रेम को देखती रही। वह उनमें से एक के सामने रुक गई, उसकी आँखें कुछ देर तक उस पर टिकी रहीं, मानो उससे बातचीत कर रही हों। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी, उसकी चमकती आँखों को उन सभी का पता लगाने में समय लगा।

वह इतनी गहराई से भ्रमित थी कि उसे यह एहसास ही नहीं हुआ कि परिमल केवल एक कदम की दूरी पर है और वह खुद को चकित होकर देख रही थी।

'यह क्या है?' उसने पूछा।

'कुछ नहीं!' वह पकड़े गए चोर की तरह पीछे कूद पड़ी।

'क्या आप शादी में उनकी उपस्थिति को मिस कर रहे हैं?' परिमल ने नागेंद्र का जिक्र करते हुए आत्मविश्वास से अनुमान लगाया।

'बिल्कुल नहीं!' एलएसडी ने ऊंची आवाज में उत्तर दिया और उस स्थान की ओर चलना शुरू कर दिया जहां समारोह शुरू होना था। हॉल में प्रवेश करने से ठीक पहले, वह परिमल को देखने के लिए पीछे मुड़ी, जो अभी भी गलियारे में खड़ा था, सोच रहा था कि एलएसडी ने फ्रेम को किस चीज का लालच दिया था।

परिमल की सोच को तोड़ते हुए, एलएसडी ने लापरवाही से कहा, 'लिज़ा सैमुअल डी'कोस्टा वह लड़की थी जिसे मैंने रॉस द्वीप पर आने से पहले उसकी पहचान बताने के लिए मार डाला था। मेरा नाम लतिका है. मैंने सोचा कि तुम्हें हमारी शादी से पहले यह पता होना चाहिए, अगर यह मायने रखता है।' फिर वह परिमल को उस नई जानकारी को आत्मसात करने के लिए छोड़कर चली गई।

विवाह समारोह का स्थान विशाल हॉलों में से एक था
हवेली, जहां एक सौंदर्यपूर्ण गुंबद के नीचे एक छोटा मंच बनाया गया था। यह व्यवस्था हिंदू पुजारियों और मुट्ठी भर स्थानीय लोगों से घिरी हुई थी; यह स्पष्ट था कि ये लोग ही विवाह के एकमात्र अतिथि और गवाह होंगे। बाकी लोग बाहर लॉन में दावत कर रहे थे, शादी के बाद दूल्हा और दुल्हन के उनके पास आने का इंतज़ार कर रहे थे।

Machine Translated by Google

'आपमें से कौन मेरे पक्ष का अनुष्ठान करने जा रहा है?' एलएसडी ने पूछताछ की.

'यह तुम्हें तय करना है,' परिमल उसके पीछे से अंदर आया।
उसने वहां मौजूद सभी चेहरों को स्कैन किया, लेकिन उसकी नज़र उनमें से किसी पर भी नहीं रुकी, क्योंकि वह समूह के बीच एक विशिष्ट व्यक्ति की तलाश कर रही थी। परिमल ने सोचा कि वह अभी भी भीड़ में नागेंद्र की उम्मीद कर रही थी, लेकिन उसने आगे जो कहा उसने उसे गलत साबित कर दिया।

'शुबेंद्र को बुलाओ!' उसने तुरंत कहा.
शुभेंद्र अभी भी यह सुनिश्चित करने में लगे हुए थे कि सभी व्यवस्थाएँ संतोषजनक थीं जब कोई उसे पुकारता हुआ दौड़ता हुआ आया। यह बताए जाने पर कि समारोह के लिए उनकी आवश्यकता है, वह जोड़े के पास पहुंचे। एलएसडी उनकी ओर देखकर मुस्कुराया और बोला, 'शुभेंद्र! मैं समारोह के दौरान आपको अपने साथ चाहता हूं, लेकिन केवल तभी जब आप मुझे आशीर्वाद देने के इच्छुक हों।' उसने चुपचाप परिमल की ओर देखा, उससे अनुमति मांगी, जो दे दी गई

सिर हिलाकर और मुस्कुराहट के साथ.

'यह सम्मान की बात होगी मैडम,' शुभेंद्र ने सम्मान में सिर झुकाया।
पूरे समारोह में वह एकमात्र वास्तविक भावना से भरा क्षण था क्योंकि वहां से, सभी अनुष्ठान दूल्हा और दुल्हन द्वारा बेहद उदासीनता के साथ किए गए थे। शुभेंद्र ने एलएसडी के लिए कन्यादान की रस्म निभाई , जिसमें दुल्हन के पिता या अभिभावक प्रतीकात्मक रूप से उससे शादी करने वाले को अपनी बेटी दे देते हैं। पंडित के निर्देशानुसार,* उसने एलएसडी का दाहिना हाथ लिया और उसे परिमल के दाहिने हाथ में रख दिया, यह मिलन के प्रति उसकी स्वीकृति का प्रतीक था और उससे उसे हमेशा के लिए अपने समान साथी के रूप में स्वीकार करने का अनुरोध किया।

अगला सप्तपदी था , जो हिंदू विवाह समारोह का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार था। पंडित ने सात वचन सुनाए और जोड़े ने सहमति के संकेत के रूप में प्रत्येक वचन के लिए पवित्र अग्नि की परिक्रमा की। अग्नि साक्षी थी कि वे एक-दूसरे को प्रेम, कर्तव्य, सम्मान, निष्ठा और फलदायी सहयोग का वादा कर रहे थे। इसके बाद पंडित ने पवित्र मिलन को आशीर्वाद दिया। जोड़े ने अपनी प्रार्थनाएं पूरी कीं और हमेशा साथ रहने की कसम खाई। सब कुछ बिना किसी भावना के प्रदर्शन के हुआ। उनके लिए, उत्सव मृत्यु के समान अंधकारमय था और उनकी भावनाएँ एक शव के समान ठंडी थीं।

अगले दिन देवी भगवती की मंगल प्रार्थना थी।
कैलाश पर वापस, मिलारेपा से ओम के इतिहास के बारे में सब कुछ जानने के बाद, कृपाचार्य ने स्थिति पर चर्चा करने के लिए सभी को एक साथ इकट्ठा किया

Machine Translated by Google

और कहा, 'पिछली बार जब हमने ओम की स्मृति में प्रवेश किया था, तो हम उनके जीवन में मुश्किल से चार साल चल सके थे। एक बात जो हमने सीखी है वह यह है कि यह आसान नहीं होने वाला है। उसके जागते हुए सभी वर्षों को कवर करने में हमें उसके अचेतन मन का पता लगाने में कई दिन लग जाएंगे और कोई भी चीज़ इतने लंबे समय तक दरवाजा खुला नहीं रख सकती।' 'हाँ! लेकिन हमें यह जानने के लिए एक योजना बनानी होगी कि वह वास्तव

में कौन था, उसकी मृत्यु कैसे हुई और उसे वापस जीवित क्यों किया गया। अश्वत्थामा ने कहा, ''उत्तर उसके पिछले जीवन के अंत में बंद दरवाजे के पीछे छिपे हैं।''

उसी विचार धारा का पालन करते हुए, कृपाचार्य ने आगे कहा, 'इसलिए मैं सुझाव देता हूं कि प्रवेश करने के बाद हमें दरवाजा बंद होने की चिंता नहीं करनी चाहिए। यदि एक दरवाजे को एक तरफ से धकेला जा सकता है, तो उसे दूसरी तरफ से भी खींचा जा सकता है।
हम अभी भी इसे दोबारा अंदर से खोलकर वापस आ सकते हैं।'

अश्वत्थामा इस बारे में इतना निश्चित नहीं था। 'दरवाजा खींचने की जरूरत होगी
दोगुनी ताकत, द्रष्टा. आप अच्छी तरह से जानते हैं कि अपनी शक्तियों के बावजूद, इसे बाहर से खोलने में हमें कितनी मेहनत करनी पड़ी। यह मानते हुए कि जब हम दरवाजे पर लौटेंगे तब तक हम अंदर से शक्तिहीन और थके हुए होंगे, हम इसे कैसे खोलेंगे? उन्होंने चेताया, 'इस बात की पूरी संभावना है कि हम हमेशा के लिए इसके अंदर फंसे रहेंगे।'

कृपाचार्य ने पहले से ही अपने दिमाग में एक योजना बना ली थी। 'हम अंदर से शक्तिहीन और थके हुए हो सकते हैं, लेकिन परशुराम और मिलारेपा नहीं। हम दरवाजे पर लौटने का दिन और समय तय करेंगे और प्रवेश करने से पहले परशुराम को सूचित करेंगे, ताकि समय आने पर वह और
मिलारेपा इसे हमारे लिए खोल सकें। यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी समय सीमा का पालन करें अन्यथा बंद दरवाजे के पीछे रहने के बाद उनसे संवाद करने में हमारी असमर्थता के कारण वापस लौटना असंभव हो सकता है।' मिलारेपा ने सभी को गंभीरता से देखा। 'अगर हम समय पर नहीं लौटे तो क्या होगा?' 'तुम हमेशा के लिए अतीत में कैद हो जाओगे। आपकी पहचान

और अस्तित्व लुप्त हो जाएगा, आपके शरीर मृत समान हो जाएंगे, लेकिन फिर भी सांस लेंगे,'परशुराम ने समझाया।

'और कोई रास्ता नहीं। यह एक जोखिम है जो हमें उठाना होगा। ' हम कल भोर होते ही प्रवेश करेंगे,' अश्वत्थामा और ओम पर अपना आदेश देते हुए कृपाचार्य की दृढ़ दृष्टि दृढ़ थी।

सुबह के बारे में सोचते हुए श्रीमती बत्रा ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, 'मुझे भी कुछ हद तक ठीक होने के बाद तेज के साथ एक सुबह याद है। वह

Machine Translated by Google

सुबह जब मैं उठी तो देखा कि तेज ने नाश्ता बना दिया है और टेबल लगा दी है. मैंने सोचा , यह नाश्ते की तारीख है , और उत्साहित हो गया क्योंकि यह एक नई सुबह की तरह महसूस हुआ, जिसे मेरे नए जीवन के पहले दिन के रूप में भी चिह्नित किया जा सकता है। तेज मेज पर पहले से ही सही ढंग से रखे गए चांदी के बर्तन और कोस्टर को फिर से व्यवस्थित करने में व्यस्त था। उसने मुझे आते हुए देखा और मेरी ओर घबराहट भरी मुस्कान बिखेरी; वह चिंतित लग रहा था. जैसे ही मैं सीट पर बैठा, दरवाजे की घंटी बजी। तेज का सिर तुरंत दरवाज़े की ओर घूम गया और वह दरवाज़े को खोलने चला गया जैसे कि वह हमेशा किसी के साथ की उम्मीद कर रहा हो। तभी मैंने देखा कि टेबल चार लोगों के लिए लगी थी।

'इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, दो अजनबी मेरे सामने मुस्कुराते हुए खड़े थे। तेज ने हम सबका परिचय कराया. वे सीडीसी (रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र) के अधिकारी थे जो विशेष रूप से हमसे मिलने के लिए आए थे। तेज ने उन्हें व्यक्तिगत स्तर पर प्रभावित करने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन वास्तव में, उनका मुख्य उद्देश्य मेरी जांच करना और यह सत्यापित करना था कि लाइलाज बीमारी को ठीक करने के तेज के दावों में दम है या नहीं। उस पल में, तेज मेरे पति से ज्यादा एक डॉक्टर जैसा लग रहा था और मुझे उसकी पत्नी से ज्यादा एक विषय जैसा लग रहा था, लेकिन विशेषज्ञों से भरे उस कमरे में ये शिकायतें नगण्य थीं।

इन सभी भावनाओं से अलग, एकमात्र महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि मैं जीवित और स्वस्थ था और यह सब तेज के कारण था।

'डॉक्टरों ने मानक प्रक्रिया का पालन किया और मेरे मेडिकल इतिहास, निदान, गिरावट के चरणों और स्वास्थ्य लाभ की अवधि की जांच करना शुरू कर दिया, जबकि मैं वहां बैठा था, उनके सामयिक प्रश्नों का उत्तर दे रहा था और घबराए हुए तेज को देख रहा था, जिसका घुटना लगातार उछल रहा था। उस दिन, मैंने पहली बार जीवन के इस चमत्कार पर सवाल उठाया-क्या मेरा पुनरुद्धार वास्तव में जश्न मनाने लायक घटना थी। यह अप्रत्याशित वैज्ञानिक विकास संभवतः आने वाले समय में क्या परिणाम दे सकता है?' 'वे दिन न केवल आपके लिए अमिट समय थे, बल्कि महान भी हैं

इस गाथा में कई अन्य जिंदगियों के लिए महत्व है,' पृथ्वी ने फिर से कार्यभार संभालते हुए कहा।

भोर होते ही, कृपाचार्य अश्वत्थामा और ओम के साथ उनके सूक्ष्म रूपों में जाने और स्मृति द्वार को एक बार फिर से खोलने के लिए बैठ गए।

मिलारेपा और परशुराम वहां खड़े होकर उन्हें अलविदा कह रहे थे और उन्हें मिशन के लिए शक्ति और जीत की शुभकामनाएं दे रहे थे।

कृपाचार्य ने उन दोनों की ओर देखते हुए कहा, 'हम केवल सात दिन ही अंदर रह सकते हैं क्योंकि हमें अगले अर्धचंद्र पर, जो कि आज से नौवें दिन है, वास्तविक युद्ध की तैयारी के लिए समय चाहिए। दरवाज़ों को धक्का देकर खोलें

Machine Translated by Google

सातवें दिन संध्या के समय और उससे एक मिनट भी पहले नहीं। यदि आप हमें नहीं देखते हैं, तो हमें खोजने के लिए प्रवेश न करें। बस इसे बंद कर दो और एक दिन बाद उसी समय दोबारा खोल दो।' तभी कृपाचार्य की दृष्टि ओम और अश्वत्थामा पर

टिकी। 'ये हैं
हमारे पास भागने के केवल दो विकल्प होंगे। हमारे पहले और एकमात्र अनुभव के आधार पर, मेरा मानना है कि जब हम वापसी शुरू करेंगे, तो दरवाजे के आसपास हमला सबसे भारी होगा, इसलिए हम जानते हैं कि हमारे लिए इसके पास बहुत लंबे समय तक रहना असंभव होगा। यदि हम इन दो प्रयासों को समाप्त कर लेते हैं, तो हमारे दरवाजे तक पहुंचने और उनके द्वारा इसे दूसरी तरफ से खोलने की संभावना, एक साथ, बहुत कम है। हम हमेशा के लिए अंदर खोये रह सकते हैं। इसलिए, हमारे लिए इसे समय पर पूरा करना महत्वपूर्ण है।' कृपाचार्य ने अपनी आँखें बंद कर लीं। ओम और अश्वत्थामा ने वैसा ही किया.

जल्द ही, वे सूक्ष्म क्षेत्र से गुज़रे, दरवाज़ा खोला और ओम के अतीत में प्रवेश किया। मिलारेपा और परशुराम ने देखा कि तीनों अमरों के शरीर उनके ठीक सामने गिरे हुए थे।

लगभग उसी समय, गाँव में, परिमल और एलएसडी शेटपाल की अपनी यात्रा के वास्तविक उद्देश्य - देवी भगवती की भव्य पूजा - को प्राप्त करने के लिए तैयार थे। एलएसडी को परिमल के साथ हवेली के ईशान कोन* में टैग किया गया। वे एक सुंदर नक्काशीदार चांदी के दरवाजे तक पहुंचे जिसकी ऊंचाई इतनी विशाल दीवार के मुकाबले काफी कम थी। इसे एक प्राचीन ताले से सुरक्षित किया गया था।

परिमल ने दरवाज़ा खोलकर उसकी चाबी निकाल ली। फिर वह अंदर कदम रखने से पहले नीचे की ओर झुका, उसके बाद एल.एस.डी. बाहरी हिस्से और छोटे दरवाजे ने उसे एक कॉम्पैक्ट पूजा कक्ष के रूप में कल्पना करने पर मजबूर कर दिया था, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ, यह वास्तव में उसके द्वारा चित्रित आकार से कई गुना बड़ा था। कमरा ईंट की दीवारों से घिरा हुआ एक विशाल लॉन जैसा दिखता था और फर्श पर हरी घास थी। कोई छत नहीं थी; इससे गर्म सूर्य की रोशनी सीधे उन पर पड़ने लगी। एलएसडी को ऐसा लगा मानो उसने किसी पवित्र बगीचे में कदम रख दिया हो।

परिमल एक कोने में चला गया और एलएसडी उसके पीछे-पीछे चला गया, बहुत विस्मय के साथ उस जगह पर भीगता रहा जब तक कि उसे परिमल की फैली हुई बांह ने रोक नहीं दिया, जिससे वह घास पर अंकित रेखा को पार करने से रोक रही थी जिस पर उसने ध्यान नहीं दिया था।

'बाकी लोग कब आएंगे?' एलएसडी ने पूछा.

'और कौन?' परिमल ने कहा.

'पंडित! और प्रार्थना की तैयारियों के लिए कुछ अन्य!' एलएसडी बोला
मानो स्पष्ट बता रहा हो।

Machine Translated by Google

'यह सिर्फ हम होंगे। वह किसी की उपस्थिति में आपसे मिलने नहीं आएगी कमरे में चौथी आत्मा,' परिमल ने स्पष्ट किया।

'चौथी आत्मा?' एलएसडी ने चारों ओर देखा, किसी अन्य जीवित प्राणी की तलाश की उन दोनों को छोड़कर.

'आपके बच्चे!' परिमल ने उसे याद दिलाया.

वह कमरे के एक कोने में गया और फर्श पर लगा ढक्कन उठा लिया। यह शेतपाल के हर दूसरे घर में साँपों के गड्ढे की तरह एक छोटा सा साँप का गड्ढा था। फिर वह वापस एलएसडी की ओर चला गया और प्रार्थना में घुटनों के बल बैठ गया।

उनकी अगुवाई में एलएसडी भी घुटने टेकने लगी लेकिन परिमल ने उसे रोक दिया। 'नहीं! आप नहीं। खड़े रहो. अब आप सृजन की शक्ति , सृजन की शक्ति से संपन्न एक माँ हैं। अब तुम्हारा स्थान मुझसे बहुत ऊँचा है। आपको किसी के आगे झुकना नहीं है.'

'ठीक है! लेकिन आप किसके सामने घुटने टेक रहे हैं?' हैरान एलएसडी ने पूछा।

परिमल ने उस छेद को देखा जिसे उसने खोला था और धीमी, शांत आवाज़ में बोला, 'जब वह निकलेगी तो डरना मत।' सिंकहोल के आकार के गड्ढे से पन्ना-हरा रंग निकलने लगा, हर गुजरते सेकंड के साथ

इसकी चौड़ाई बढ़ती गई। एक मिनट से भी कम समय में, घास पर चिह्नित रेखा तक सब कुछ नीयन-हरे तरल पदार्थ में डूब गया। एलएसडी स्थिर खड़ी रही, उसकी आँखें परिमल पर टिकी रहीं, जब तक कि पानी उसके पैरों को नहीं छू गया।

अचानक उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गई और उसे खुले गड्ढे की ओर जमीन के नीचे से कुछ गुज़रता हुआ महसूस हुआ। पलक झपकते ही, जिस स्थान पर वह खड़ी थी, उसी स्थान पर ढही हुई ज़मीन को एक विशाल साँप ने फाड़ डाला। वह बस इतना कर सकती थी कि सांप को घूर रही थी और महसूस कर रही थी कि उसका बाकी शरीर जमीन के नीचे रेंग रहा है, जिससे गड़गड़ाहट हो रही है जो उसी समय उसके पैरों तक पहुंच रही है।

सांप का पूरा शरीर सामने आने से पहले ही उसका आकार एलएसडी से लगभग तीन गुना बड़ा था। जब साँप ने अपनी विशाल भुजाएँ, जो चमगादड़ के पंखों की तरह दिख रही थीं, घुमाईं तो एलएसडी की निगाहें यह सब देखने के लिए ऊपर उठीं। उसके आस-पास सब कुछ ठंडा लग रहा था और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा जब विशाल साँप उसकी आत्मा को छेदते हुए उसकी आँखों के स्तर तक नीचे झुक गया। एलएसडी डर गया था लेकिन उसने इसे बड़े करीने से छुपाया। उसने परिमल की ओर देखा जबकि प्राणी की आँखें उसके चेहरे पर टिकी रहीं। उसके माथे से पसीने की बूंदें टपक रही थीं क्योंकि वह एक साहसी मुद्रा बनाए रखने के लिए दृढ़ थी, उसके पैर पवित्र भूमि पर टिके हुए थे। सर्प फिर परिमल की ओर मुड़ा और उसकी हथेलियों की ओर देखा, जिन पर कोई रेखा नहीं थी, मानो उसकी पहचान की पुष्टि कर रहा हो। एलएसडी ने अब तक देखे गए सबसे बड़े सांप के किनारों पर गलफड़े देखे, जो प्राणी के शरीर का एक और असामान्य हिस्सा था। इससे उसे आश्चर्य हुआ कि यह वास्तव में क्या था,

Machine Translated by Google

सबसे अपरंपरागत विशेषताओं के मिश्रण के साथ - रेंगने के लिए सरीसृप का शरीर, उड़ने के लिए चमगादड़ के पंख और पानी के अंदर सांस लेने के लिए गलफड़े भी। तभी, नागिन एलएसडी की ओर मुड़ी और सेराफिक महिला स्वर में बोली।

'क्या तुमने उसे स्वेच्छा से चुना?' एलएसडी को पूरे
दृश्य को आत्मसात करने में कुछ क्षण लगे। अविश्वसनीय प्राणी
फिर सवाल किया, 'क्या उसने आप पर किसी तरह से दबाव डाला है?'

एलएसडी ने परिमल को देखा, जो अभी भी घुटनों पर सिर झुकाए बैठा था।

'नहीं!' एलएसडी ने उत्तर दिया.

'क्या आप अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को इस दुनिया में आने देना चाहती हैं?' 'हाँ! मैं करता हूँ,' एलएसडी ने पुष्टि की।

'तथास्तु!'* नागिन ने अपने विशाल शरीर को एलएसडी से पूरी तरह लपेट लिया।

एलएसडी को साँप की कड़ी पकड़ के नीचे साँस लेने के लिए संघर्ष करना पड़ा। साँप की गर्दन पर मौजूद गलफड़े उसी हरे तरल पदार्थ से भरे हुए थे और जैसे ही एलएसडी हवा के लिए हांफने लगा, तरल पदार्थ उसके मुंह और नाक के माध्यम से अंदर चला गया। खाली गलफड़ों के साथ, प्राणी को अब सांस लेने में कठिनाई हो रही थी और उसने तुरंत एलएसडी छोड़ दिया।

एलएसडी को पता था कि उसकी एक इच्छा पूरी हो गई है जिसे उसे सहना होगा और उसकी राख का सम्मान करना होगा। जब उसे रिहा किया गया, तब तक एलएसडी ऑक्सीजन की कमी के कारण बेहोश हो गई थी और परिमल तुरंत उसे जगाने के लिए मुंह से मुंह देकर पुनर्जीवन देने के लिए झुक गया। जैसे ही वह हांफने लगी और वापस जीवित हो गई और अर्ध-चेतन अवस्था में अपने चारों ओर सब कुछ उलटते हुए देखा, जीव पानी में वापस चला गया और लॉन सूख गया। धीरे-धीरे, खाई सिकुड़कर एक छोटा सिंकहोल बन गई, जिससे रहस्यमय घटनाओं की श्रृंखला का कोई निशान नहीं रह गया। ऐसा लग रहा था मानो वहां कुछ हुआ ही न हो. परिमल ने ढक्कन बंद किया और एलएसडी कमरे से बाहर निकाला. वह कमज़ोर महसूस कर रही थी और उसे आराम की ज़रूरत थी, इसलिए उसे बिस्तर पर ले जाया गया, जहाँ वह तुरंत सो गई। परिमल ने साइड टेबल पर कैलेंडर देखा. उनके भरतपुर नेशनल पार्क जाने में सात दिन बचे थे, जहां नागेंद्र उनका इंतजार कर रहे होंगे.

अंदर अश्वत्थामा और कृपाचार्य के लिए भी सीमित समय था
ओम की स्मृति, यह पता लगाने के लिए कि ओम कौन था। जैसे ही वे दरवाजे में दाखिल हुए, घुप्प काले शून्य की पिन-ड्रॉप चुप्पी ने उनका स्वागत किया। अपनी पिछली यात्रा में उन्होंने जो कुछ भी अनुभव किया था और सोचा था कि वे जानते थे, वह सब गायब हो गया था। वहां इतना अंधेरा था कि अश्वत्थामा अपने ठीक बगल में खड़े कृपाचार्य को मुश्किल से ही देख सका।

'चिंता मत करो! कृपाचार्य ने आश्वासन दिया, 'यह अमावस्या की रात प्रतीत होती है।'

Machine Translated by Google

'तो फिर हम क्या करें?' अश्वत्थामा ने पूछा.

कृपाचार्य ने उत्तर दिया, 'हम आगे चलते हैं।'

उन्होंने एक घर से दूर से आती रोशनी देखी और उसकी ओर चलने का फैसला किया। जैसे ही वे करीब आये, उन्हें अंदर किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी।
अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसी को भी चिंतित होने से बचाने के लिए, उन्होंने अंदर झाँककर देखा कि एक गर्भवती महिला दर्द से चिल्ला रही थी क्योंकि उसका पानी टूट गया था।

'यह कैसे संभव है कि ऐसी आपात स्थिति में उसके आसपास कोई नहीं है?
यह एक जाल हो सकता है. हमें उसकी मदद के लिए आगे नहीं बढ़ना चाहिए,' अश्वत्थामा ने दृढ़ता से कहा।

'यह सब पहले से ही अतीत में है। कृपाचार्य ने कहा, 'जो हम देखते हैं वह हजारों साल पहले हो चुका है और हम हस्तक्षेप नहीं करेंगे।'

'मैं जाऊंगा और हमारी सुरक्षा का आश्वासन देने के लिए आगे का रास्ता देखूंगा। कृपया मेरे वापस आने तक यहीं रुकें,' अश्वत्थामा आगे बढ़ गया।

'उसे मदद की ज़रूरत है। कोई तो कारण होगा कि हम अभी यह क्यों देख रहे हैं। मैं उसकी मदद कर सकता हूं,'' ओम कष्टदायी प्रसव पीड़ा से जूझ रही अकेली महिला को देखकर बेचैन हो रहा था।

कृपाचार्य को अपने खड़े रहने के आदेश के विरुद्ध ओम के स्वर में तनाव महसूस हुआ। 'शायद आप जानते हों कि हम ऐसा क्यों देख रहे हैं। आख़िरकार, यह आपका अतीत है जिसमें हम हैं,' कृपाचार्य ने ताना मारा।

'हमारी शक्तियाँ सीमित हैं। अंदर आने पर हमारी ताकत आधी से भी कम रह जाती है
सूक्ष्म रूप और हम यहां उन हथियारों को नहीं बुला सकते जो हम चाहते हैं। कृपाचार्य ने दोहराया, और सबसे बढ़कर, हम यहां घटनाओं में शामिल होने और परेशान करने के लिए नहीं हैं, बल्कि चुपचाप निरीक्षण करने और जानने के लिए हैं कि आप कौन हैं।

जब वे बात कर रहे थे, महिला के संकुचन लगातार बदतर होते जा रहे थे। उसे रक्तस्राव भी शुरू हो गया और ओम देख सकता था कि उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी और वह बेहोश होने की कगार पर थी। उसकी हालत देखकर, ओम को अपने विवेक और तर्क के बीच फंसा हुआ महसूस हुआ। क्या उसे बिलखती मां की मदद करनी चाहिए या उसके भयानक दुख से पूरी तरह अनभिज्ञ रहकर केवल एक आदेश का पालन करना चाहिए? ओम ने अपने पैर ज़मीन पर टिकाए रखने और उलझने से बचने की कोशिश की, लेकिन जब उसने हार मान ली, जिसका मतलब था कि माँ और बच्चे दोनों की मृत्यु, ओम ने कृपाचार्य की अनुमति के बिना धावा बोल दिया। वह बेहोश हो रही थी और ओम अब केवल दर्शक बने रहना सहन नहीं कर सका।

महिला अपने सामने एक अजनबी को खड़ा देखकर घबरा गई। वह था
यह जानना असंभव है कि वह अब प्रसव पीड़ा के कारण चिल्ला रही थी या डर के कारण। ओम ने उसे शांत किया और समझाया कि वह मदद करने के लिए आया है, नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं। महिला को जल्द ही उसकी उपस्थिति से सांत्वना मिली लेकिन वह अभी भी मर रही थी

Machine Translated by Google

दर्द। ओम ने तुरंत सुरक्षित प्रसव की तैयारी शुरू कर दी, जबकि क्रोधित कृपाचार्य ने झोपड़ी के बाहर से नजर रखकर ओम की सुरक्षा सुनिश्चित करना जारी रखा। जैसे ही बच्चे को महिला द्वारा बाहर धकेला जा रहा था, शेष अमावस्या की रात के सबसे अंधेरे घंटे के आखिरी मिनट में उसके शरीर का आधा हिस्सा, पैर और टांगें बाहर आ गईं। यह एक ब्रीच जन्म था; बच्चा सिर के बजाय पहले अपने पैर बाहर आ रहा था।

ओम ने शिशु के पैरों पर एक नज़र डाली, जिसकी बायीं एड़ी पर वही काला जन्म चिन्ह था। ओम को यह समझने में ज्यादा समय नहीं लगा कि वह उसी बच्चे का जन्म देख रहा है जिससे वे अपनी पिछली यात्रा में मिले थे। बच्चे का शेष आधा भाग, छाती और सिर, भोर की पहली किरण से कुछ मिनट पहले बाहर आ गए। जब तक बच्चा बाहर आकर रो रहा था, तब तक मां प्रसव के कारण थक चुकी थी और इसलिए गिर गई।

कृपाचार्य ने दूर से हाथों में आग की मशालें लिए हुए कुछ आकृतियों को अपनी ओर आते हुए देखा, इसलिए उन्होंने ओम को तुरंत झोपड़ी से बाहर निकलने का संकेत दिया। तब तक अश्वत्थामा भी उन्हें आगे ले जाने के लिए वापस आ गये थे। ओम के पास मां और बच्चे को अकेले छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। ओम बाहर भागा और अन्य दो के साथ शामिल हो गया। जो लोग आ रहे थे वे इतने करीब थे कि वे तुरंत निकल सकते थे। वे अश्वत्थामा के पीछे भागे और एक परित्यक्त झोपड़ी में घुस गये।

कृपाचार्य ने कहा, 'हम सूर्योदय तक यहीं प्रतीक्षा करेंगे।'

बाद में उस सुबह, उन्होंने झोपड़ी छोड़ दी और रास्ते पर चलते रहे। लगभग आधे मील के बाद, उन्हें एक झोपड़ी के बाहर दो आदमी बैठे मिले, जिनमें से एक वैद्य लग रहा था, जो एक लड़के की जांच कर रहा था जो लगभग चार साल का लग-रहा था। वैद्य ने एक जड़ी-बूटी का मिश्रण तैयार किया और लड़के को पिलाना शुरू कर दिया। बालक ने घृणा से मुँह बना लिया और पीछे की ओर झुक गया, जिसे देखकर दूसरे व्यक्ति ने कहा, 'देवध्वज! वैद्य जी का अपमान मत करो. यहीं बैठो और यह लो।'

'यह ठीक है, विष्णुयशा, यह लड़का इतना मासूम है कि किसी भी तरह का अनादर नहीं किया जा सकता। वह दुनिया के तौर-तरीके जानने के लिए बहुत छोटा है,' वैद्य मुस्कुराए।

देवध्वज इस आदेश से खुश नहीं थे लेकिन उन्होंने बिना हिचकिचाहट के इसका पालन किया फिर भी। एक चम्मच निगलने के बाद, लड़के का ध्यान अपने पालतू खरगोश से भटक गया और वह उसका पीछा करने लगा और उसके साथ खेलने लगा। इससे पहले कि वैद्य कुछ कह पाते, विष्णुयशा ने उनसे कहा कि रुकें और लड़के को रहने दें। ओम, अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने छोटे लड़के की जहाँ भी निगरानी की

Machine Translated by Google

तेजी से दौड़ा। वह अपने खरगोश के साथ खेतों में घूमता रहा और वहां से गुजरने वाले सभी लोगों का एक चंचल मुस्कान के साथ अभिवादन करता रहा।

गाँव वाले उस मासूम छोटे लड़के को देखकर मुस्कुराये। काफी देर तक इधर-उधर टहलने के बाद, वह अपनी सांस लेने के लिए एक पेड़ के नीचे कूद गया। खरगोश उसकी गोद में बैठने के लिए उसके पास आया और देवध्वज ने बड़े प्यार से उसे थपथपाया। अचानक, उसने खरगोश का सिर पकड़ लिया और उसकी गर्दन के दो टुकड़े कर दिये। लड़के को एक चट्टान मिली और उसने मरे हुए खरगोश के शरीर को उससे कुचल दिया। हवा हड्डियों के कुचलने की भयानक आवाज और बच्चे के चेहरे पर खून के छींटे गिरने से क्रोधित गुर्राहट से भर गई। जब उसकी जीभ ने गलती से उसके मुँह के कोने से उसके खून का स्वाद पकड़ लिया तो उसकी आँखें उन्मादी हो गईं और उसकी मासूम अभिव्यक्ति पर एक पागलपन हावी हो गया। वे तीनों देखते रहे, उस दृश्य को देखकर जो उन्होंने अभी देखा था। कुछ क्षणों के बाद, ऐसा व्यवहार करते हुए मानो किसी और ने उसके पालतू जानवर की हत्या कर दी हो और उसने इसे देख लिया हो, लड़का फूट-फूट कर रोने लगा। वह इसकी क्रूर स्थिति को देखकर नदियाँ पर नदियाँ चिल्लाने लगा। सादी साड़ी में चेहरा ढके एक महिला आई और रोते हुए बच्चे को उठाकर चली गई। पहले से ही अंधेरा था इसलिए अश्वत्थामा ने उनके लिए रात बिताने के लिए एक और ठिकाना ढूंढ लिया।

जब वे अगली बार जागे, तो उन्हें पता नहीं चल सका कि दिन था या रात; उनके चारों ओर सब कुछ फिर से घुप्प काला था। लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहने के बारे में असुरक्षित महसूस करते हुए, तीनों ने आगे बढ़ने का फैसला किया।

लगभग चार मील चलने के बाद, उन्हें एक खेत मिला। जैसे-जैसे वे करीब आये, उन्हें एहसास हुआ कि यह खेतों के एक लंबे हिस्से का हिस्सा था जिसमें हर एक अलग फसल उगा रहा था। वे ग्रामीणों को कड़ी मेहनत करते हुए देख सकते थे। यह फसल का मौसम था और उन्हें अपने धैर्यपूर्ण परिश्रम का फल मिलना शुरू ही हुआ था।

एक झोपड़ी से एक किशोर लड़का कुछ औजार लेकर खेत की ओर दौड़ता हुआ आया।

'सावधान रहें, देवध्वज!' उसके पीछे एक आवाज आई। उस पर ध्यान न देते हुए और क्षेत्र में काम करने के लिए उत्साहित होकर, युवा लड़का काम पर लग गया। ओम, अश्वत्थामा और कृपाचार्य एक पेड़ के पीछे से उसकी हरकतें देखते रहे। करीब एक घंटे तक काम करने के बाद लड़के ने छुट्टी ली. वह झोपड़ी के अंदर गया और एक जलती हुई लकड़ी लेकर बाहर आया। ओम हैरान था; उसे सूरज की गर्मी में आग की आवश्यकता क्यों होगी? जैसे कि ओम के सवाल का जवाब देने के लिए, लड़के ने जलती हुई छड़ी उठाई और उसे फसलों में घुमाया। देखते ही देखते खेत में आग लग गई और आग की लपटें आसपास के खेतों तक फैलने लगीं। जब ग्रामीण बचाने के लिए दौड़ रहे थे तो ओम भयभीत होकर देख रहा था

Machine Translated by Google

उनकी फसलें और उनका अपना जीवन, लेकिन आग, लड़के की आँखों की तरह, उग्र और लालची थी, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को भस्म कर रही थी। आग ने गाँव की लगभग आधी फसल को अपनी चपेट में लेने में ज्यादा समय नहीं लगाया। यह अब उनके घरों और झोपड़ियों की ओर फैल रहा था। एक महिला खड़ी होकर देवध्वज को भागने के लिए चिल्ला रही थी। जैसे कि एक सपने से वापस आकर, लड़का सदमे में जलते हुए गांव को देख रहा था, जैसे कि आपदा अभी-अभी उसके सामने आई हो। वह एकदम डर के मारे कांपते हुए भाग गया। ओम, अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने भी आग बुझने तक आश्रय मांगा।

जब वे निकले तो सब कुछ राख हो चुका था। वे कुछ देर तक इधर-उधर घूमते रहे, लेकिन वहाँ कोई नज़र नहीं आया, बस सन्नाटा छा गया।

कृपाचार्य ने मन ही मन हिसाब लगाते हुए कहा, 'हमें यहां से वापस लौटना होगा।'

'लेकिन हमने अभी तक काम पूरा नहीं किया है,' अश्वत्थामा ने आपत्ति जताई।

'मुझे पता है। यह एक पहेली की तरह है. हम घटनाओं को यादृच्छिक टुकड़ों और टुकड़ों में ढूंढ रहे हैं जिन्हें पूरी तस्वीर समझने के लिए उन्हें रखने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है और अभी, हमारे पास यह नहीं है। हम तीन दिनों से अंदर चल रहे हैं। मेरा मानना है कि यहां तक पहुंचने में जितना समय लगा, उससे ज्यादा समय दरवाजे तक लौटने में लगेगा। हमें बिना समय बर्बाद किए वापस चलना होगा।'

शेटपाल में, एलएसडी कई दिनों की गहरी नींद से जाग गई थी, देवी भगवती के आशीर्वाद के नाम पर जो कुछ भी उसने झेला था, उससे पूरी तरह से उबर गई थी। जब उसने आँखें खोलीं तो उसने परिमल को आश्वस्त मुस्कान के साथ बिस्तर के पास खड़ा पाया। जैसे ही वह बिस्तर पर बैठी, परिमल ने कमरे के कोने में लटकी एक पोशाक की ओर इशारा किया। यह उनके सामान्य कपड़ों में से एक का सेट था न कि इस बार कोई पारंपरिक पोशाक।

एलएसडी की नजर फिर ड्रेस से हटकर परिमल पर गई।

'इसे पहनो और अपना बैग पैक करो।' इतना कहकर परिमल कमरे से बाहर चला गया. एलएसडी उठी और अपना सामान इकट्ठा करने लगी।

जब वह लगभग पूरी हो चुकी थी, किसी ने दरवाजा खटखटाया। वह बदल गयी और प्रवेश द्वार पर पुराने मैनेजर शुभेन्द्र को खड़ा पाया। एलएसडी ने उसे अंदर जाने दिया। वह चुपचाप उसके पास आकर खड़ा हो गया।

'हाँ!' एलएसडी ने उन्हें बोलने के लिए प्रेरित किया।

'अनुष्ठानों के लिए मुझे चुनने के लिए मैं आपका आभारी और आभारी हूं यह एक पिता की जिम्मेदारी है,' शुभेंद्र ने विनम्रतापूर्वक कहा और उसका दिल भर आया और गला रुंध गया।

एलएसडी मुस्कुराया और उसे गले लगा लिया। 'ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुम्हें मुझ पर बकाया हो।'

Machine Translated by Google

'आपने अपनी शादी में ऐसे पवित्र कार्य के लिए मुझे ही क्यों चुना?' शुभेन्द्र ने उत्सुक होकर पूछा।

'जाने का समय!' इससे पहले कि एलएसडी सवाल का जवाब दे पाता, परिमल ने दरवाजे से आवाज लगाई।

हालाँकि, जब एलएसडी वहाँ खड़ी थी, कार के अंदर कदम रखने के लिए तैयार थी, न जाने कब वह हवेली में दोबारा आएगी, वह शुभेंद्र की ओर मुड़ी और धीरे से कहा, 'क्योंकि तुमने निस्वार्थ भाव से बादल की देखभाल की; क्योंकि जब उनका निधन हुआ तो तुम रोये थे। उन्हें उचित अंतिम संस्कार देने के लिए मैं आपका आभारी और ऋणी हूं।' सामान डिक्की में रखते समय एक अन्य स्टाफ सदस्य ने बातचीत सुन ली। एलएसडी चला गया

जबकि शुभेंद्र वहीं खड़ा हैरान और सोच में डूबा हुआ था। सामान रखने वाला शुभेंद्र के पास आया और पूछा, 'बादल कौन था?' 'सफेद हिरण और इस हवेली का आखिरी पालतू जानवर,' शुभेंद्र ने गायब हो रही कार को देखते हुए बुदबुदाया, वह अभी भी इस रहस्य से आश्चर्यचकित था कि कैसे एलएसडी, जो हवेली में पहली

बार आया था, को बादल की मौत और दाह संस्कार के बारे में पता था, जबकि परिमल को भी वह नहीं पता था।

जब वे शांत प्रतीत होने वाली शाम में कीचड़ भरे रास्ते पर चल रहे थे, अश्वत्थामा को झाड़ियों में हल्की सी हलचल सुनाई दी। हालाँकि वे तीनों हमेशा सतर्क रहते थे, ऐसे घात की उम्मीद कम ही थी। इससे पहले कि वे कुछ भी अनुमान लगा सकें, एक युवा, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति हवा से अश्वत्थामा पर झपटा। जैसे ही वे इस अंधाधुंध हमले से निपटे, एक और हट्टा-कट्टा आदमी एक ऊंचे पेड़ की शाखाओं से बाहर कूद गया और ओम की ओर आक्रामक रूप से हमला किया।

जैसे ही दोनों में से छोटा उन पर झपटा, अश्वत्थामा ने उसकी एड़ी पर वही काला जन्मचिह्न देखा। यह देवध्वज था - वही बच्चा जिससे वे अभी मिले थे, बड़ा हो गया था। इससे विचलित होकर, वह खुद को बूढ़े आदमी के पहले झटके से नहीं बचा सका, जिससे वह बेहोश हो गया। दूसरी ओर, कृपाचार्य देवध्वज के पहले हमले से बच गए, और फिर वृद्ध व्यक्ति के दूसरे घातक हमले से बेहोश अश्वत्थामा की रक्षा की, जिसके बाद उन्होंने अश्वत्थामा और ओम को बचाने के अपने प्रयासों में दोनों हमलावरों के साथ बहादुरी से लड़ाई की। कृपाचार्य जानते थे कि यदि वे अश्वत्थामा को ओम के अतीत के गर्भगृह में वापस खींच लेंगे, तो वे अश्वत्थामा को हमेशा के लिए खो देंगे।

'ओम! उसे दरवाजे से बाहर खींचो. उसे बाहर निकालो। जल्दी से!' कृपाचार्य अकेले ही उन दोनों व्यक्तियों का मुकाबला करते हुए चिल्लाये। ओम ने जैसा आदेश दिया वैसा ही किया

Machine Translated by Google

और अश्वत्थामा को साथ लेकर दरवाजे की ओर दौड़े। उसने अश्वत्थामा को जमीन पर लिटा दिया और दरवाजा खोलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, लेकिन ऐसा करने में असफल रहा क्योंकि वह अकेला था और थका हुआ था। उन्होंने देखा कि दोनों हमलावर अश्वत्थामा और उन तक पहुंचने के लिए कृपाचार्य से आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कृपाचार्य उन दोनों को रोकने में सक्षम थे; हालाँकि, ओम को पता था कि वह लंबे समय तक उनके साथ नहीं रह पाएगा। उन्हें ओम की स्मृति में आए हुए पूरे सात दिन बीत चुके थे और प्रकाश की आखिरी किरणें अंधकार में विलीन होती दिख रही थीं।

तभी दरवाज़ा खुला और मिलारेपा वहीं दूसरी तरफ खड़ा था, बिल्कुल कृपाचार्य के निर्देशों के अनुसार। जब देवध्वज ने मिलारेपा और खुले दरवाजे की ओर देखा, तो उसकी आँखें शुद्ध क्रोध से जल उठीं। वह एक अत्यंत उन्मादी व्यक्ति की तरह कृपाचार्य से लगातार और उससे भी अधिक हिंसक तरीके से लड़ने लगा। उन्मत्त जोड़ी कृपाचार्य पर हावी हो रही थी, जिससे उनके झूलों से बचना मुश्किल हो रहा था। जब तक ओम ने अश्वत्थामा को बाहर खींचा, तब तक ऐसे ही एक प्रहार से कृपाचार्य गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। ओम ने यह देखा और उसकी मदद करने के लिए तेजी से वापस आया। मिलारेपा ने ओम को रोकने की कोशिश की लेकिन उसे भगा दिया गया। जैसे ही ओम दोबारा दरवाजे में प्रवेश करने के लिए बढ़ा, दूसरी तरफ से देवध्वज भी ओम को अंदर खींचने के लिए दौड़े। इस समय, मिलारेपा के पास दरवाज़ा बंद करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था और इससे पहले कि दोनों युद्ध में टकरा पाते, दरवाज़ा उनके बीच कसकर बंद हो गया।

अश्वत्थामा और ओम जाग गए जहां वे एक सप्ताह तक ध्यान के लिए बैठे थे पहले, जबकि कृपाचार्य का शरीर शिथिल रह गया था। ओम ने दरवाज़ा बंद करने के लिए मिलारेपा की आलोचना की और उसके चेहरे पर चिल्लाकर कहा, 'क्या लोगों को छोड़ना और उन्हें धोखा देना ही सब कुछ है जो आप कर सकते हैं?' 'हम तुम्हें खो नहीं सकते।

उन्होंने जो किया वह मेरे आदेश पर किया,'परशुराम ने शांति से हस्तक्षेप किया।

'कृपाचार्य वहाँ हैं! हमें फिर से दरवाज़ा खोलना होगा और उसे बचाना होगा। उसने हममें से एक के लिए दरवाज़ा बंद कर दिया!' ओम की निराशा गमगीन थी।

'दरवाजा खोलें? और क्या होगा अगर कृपाचार्य और अश्वत्थामा पर हमला करने वाले लोग पार कर इस तरफ, ज्ञानगंज के निषिद्ध शहर में आ गए? मिलारेपा ने जो किया उसके लिए उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने केवल वही किया जो बाकी सबके हित में था। कृपाचार्य आपके मस्तिष्क पर पूर्ण नियंत्रण रखने में असमर्थता के कारण वहां हैं। यदि आप किसी को जिम्मेदार ठहराना चाहते हैं, तो खुद को पकड़ें,'परशुराम ने ओम पर चिल्लाया।

Machine Translated by Google

ओम चुप हो गया. परशुराम को एहसास हुआ कि उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था। वह आह भरी और ओम के पास जाकर उसे सांत्वना दी। 'उसे बंदी बनाया जा सकता है या भूख, प्यास और घावों से प्रताड़ित किया जा सकता है, लेकिन अंततः वह अमर है। उसे मारा नहीं जा सकता. हम उसे वापस लाएंगे, लेकिन अभी, हमें इस क्षेत्र में एक और लड़ाई के लिए तैयार रहने की जरूरत है। महत्वपूर्ण समय समाप्त हो रहा है और अर्धचंद्र केवल दो दिन दूर है। चल दर।' अश्वत्थामा, मिलारेपा और ओम के बाद परशुराम पहुंचे

एक और झोपड़ी जो सभी प्रकार के कपड़ों से भरी एक विशाल अलमारी की तरह दिखती थी। ओम खड़ा रहा और उन तीनों को अपने अगले मिशन के लिए पैकिंग करते हुए देखा। जब वे तैयारी कर रहे थे, वेद व्यास ने कुटिया में प्रवेश किया।

'मुझे एक और जगह के बारे में पता चला है। यह कुलधरा है।' नये स्थान से परशुराम की भौंहें संकट में पड़ गईं।

'मेरी योजना कृपाचार्य को मिलारेपा के साथ तेजोमहालय भेजने की थी और अश्वत्थामा मेरे साथ भीमकुंड तक जाता ताकि हम उन आकस्मिकताओं से बच सकें जैसी वृषकापी को सहनी पड़ी थीं; लेकिन अब हमारे पास तीन स्थानों की सुरक्षा के लिए तीन आदमी हैं। काश कृपाचार्य मेरे यहाँ होते,'परशुराम ने दुःखी होकर कहा।

'मैं साथ आ सकता हूं,' ओम ने पेशकश की।

परशुराम ने बस आधी मुस्कान के साथ ओम की ओर देखा। 'मैं समझता हूं और सराहना करता हूं कि आप मदद करना चाहते हैं, लेकिन नहीं, आप नहीं कर सकते। यहीं रहो और वृषभपि को जीवित रखने का प्रयास करो। मिलारेपा! तेजो महालय पर वापस जाएँ। अश्वत्थामा! मैं चाहता हूं कि आप वेद व्यास से इस नई जगह के बारे में सब कुछ सीखें और तुरंत वहां जाएं। मैं भीमकुंड वापस जाऊंगा क्योंकि हमें और अधिक जनशक्ति की आवश्यकता है। आइए आशा करें कि नागेंद्र उन स्थानों में से किसी एक तक नहीं पहुंच पाएंगे जिनके बारे में वेद व्यास को अभी तक पता नहीं चला है।'

पनडुब्बी के निषिद्ध कक्ष के अंदर, नागेंद्र एक सनकी उत्सव में अपने हाथों को ताली बजाते हुए उठा। सूक्ष्म जगत में उनकी यात्रा और देवध्वज से उनकी मुलाकात सफल रही। वे कृपाचार्य को ओम की यादों में फंसाने में कामयाब हो गए थे, जो निश्चित रूप से सबसे शक्तिशाली और उनकी योजनाओं के लिए सबसे बड़ा खतरा था। नागेंद्र ने जाने से पहले अपने हाथ जोड़े और छाया के सम्मान में झुक गए। वह तट पर वापस आया और भरतपुर राष्ट्रीय उद्यान में एलएसडी और परिमल से मिलने के लिए अपनी यात्रा शुरू की।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 12

एक अनौपचारिक दाह संस्कार

एलएसडी और परिमल को शेटपाल को छोड़े हुए कई घंटे हो चुके थे। एलएसडी के बोलने से पहले दंपति काफी देर तक पूरी तरह से मौन बैठे रहे, 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे इतनी खतरनाक चीज में ले जाने की? उस कमरे में वह कौन सा प्राणी था?'

'यह देवी भगवती का प्रतिनिधि था। मेरी माँ जा चुकी थी उसी प्रक्रिया से जब उसने मुझे अपने गर्भ में रखा था और उससे पहले मेरी दादी ने। यह सुनिश्चित करना था कि आप जिस बच्चे को जन्म दे रही हैं वह अंधा पैदा न हो। यह अपरिहार्य था. यह जीव एक सरीसृप था जो जमीन पर रेंग सकता है, पेड़ों पर चढ़ सकता है और पृथ्वी के सबसे गहरे छिद्रों में घुस सकता है, पंखों से आकाश को ढक सकता है और अपने गलफड़ों से पानी में जीवित रह सकता है। यह देवी भगवती का प्रतीक है, जो हर जगह हमारे साथ हैं, क्योंकि जीव जमीन पर, आकाश में और पानी में मौजूद हो सकता है,' परिमल ने समझाते हुए जवाब दिया।

'उस घटना के बाद से मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरे अंदर कुछ बदल गया है।' एलएसडी ने कार की खिड़की से बाहर देखते हुए बुदबुदाया।

'हाँ मुझे पता है। आपको बच्चे के स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर चिंतित होने की जरूरत नहीं है अब और। वह अब एक धन्य बच्चा है और देवी भगवती उसकी रक्षक हैं,' परिमल ने मुस्कुराते हुए समझाया।

'तो क्या अब मैं बस एक वाहक हूं?' एलएसडी ने गुस्से में जवाब दिया, जिससे परिमल को शर्मिंदा होना पड़ा। एलएसडी का बयान भले ही कठोर हो लेकिन सच था, इसलिए परिमल ने इसे स्पष्ट करने की कोशिश की.

'मैंने ऐसा नहीं कहा. मैं हां!

लेकिन आपका मतलब तो यही था।' एलएसडी गुस्से में था.

'मेरा मतलब सिर्फ इतना था कि आपके बच्चे का गर्भाधान बाकियों से अलग होगा। हमने अब तक क्या किया है और नागेंद्र की सेवा करते समय हमें क्या करना होगा, इस पर विचार करते हुए, आपको अन्य गर्भवती महिलाओं की तरह सतर्क और देखभाल करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अब बच्चे की सुरक्षा की जा रही है। बच्चा तुम्हारा है और तुम उसकी माँ हो. इसे कोई नहीं बदल सकता और कोई इसकी कोशिश भी नहीं कर रहा, इसलिए शांत रहें। परिमल ने चर्चा समाप्त करते हुए कहा, ''हम लगभग वहां पहुंच चुके हैं।''

Machine Translated by Google

कार रुक गयी. वे नीचे उतरे और भरतपुर नेशनल पार्क में चले गए, जहां नागेंद्र उनका इंतजार कर रहे थे।

इस तथ्य से अनभिज्ञ कि नागेंद्र उससे केवल डेढ़ घंटे की दूरी पर था, मिलारेपा आगरा के ताज महल के आसपास आगामी अर्धचंद्राकार रात में उसके अनिश्चित आगमन का इंतजार कर रहा था। भरतपुर नेशनल पार्क से चौदह घंटे की दूरी पर, कुलधरा पर अश्वत्थामा था, जबकि परशुराम भीमकुंड झील पर पहुँच चुके थे।

परिमल और एलएसडी राष्ट्रीय उद्यान के अंदर चले गए और नागेंद्र को वहां खड़े देखा। वे आगे बढ़े और उसके पास खड़े हो गये।

'कभी-कभी, कोई बीमारी आपको खास बना सकती है।' नागेन्द्र की निगाहें झाँकने लगीं दूर घने जंगल में. फिर वह उन दोनों की ओर मुड़ा।

'हालांकि मोर अपने आकर्षक रंगों के लिए जाने जाते हैं, क्या आप जानते हैं कि सफेद मोर जैसी भी एक प्रजाति होती है? नहीं, ये पक्षी अल्बिनो नहीं हैं; उनकी सफेदी ल्यूसिज्म का परिणाम है, जो एक उत्परिवर्तन है जो रंजकता के आंशिक नुकसान का कारण बनता है। यह एक ऐसी घटना है जो मोर को किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाती है।

फिर मनुष्य उस घटना को एक बीमारी के रूप में वर्गीकृत क्यों करते हैं? बेवकूफो!

वैसे भी, परिमल, तुम्हारा घर आना कैसा रहा?' इंसानों पर टिप्पणी करने के बाद नागेंद्र ने पूछा।

परिमल ने उत्तर दिया, 'काम पूरा हो गया है, सर।'

'अच्छा! परिमल के घर आपका आना कैसा रहा, एलएसडी?' एलएसडी ने भौहें

खींचते हुए चिढ़कर नागेंद्र की ओर देखा

और पहले तो उसने उत्तर नहीं दिया, लेकिन वह जानती थी कि उसे उत्तर देना होगा क्योंकि उससे एक प्रश्न पूछा गया था। 'काम हो गया सर,' कहने से पहले उसने परिमल की ओर देखा। परिमल को एहसास हुआ कि उसका बयान नागेंद्र के लिए एक प्रतिक्रिया थी, लेकिन उसके लिए एक ताना भी था।

नागेंद्र उम्मीदों और निराशाओं की केमिस्ट्री को समझ सकते थे,

और दोनों के बीच आक्रामकता और समर्पण। वह एलएसडी के पास पहुंचा और उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया। उसने उसकी कमीज़ उठाई और गौर से उसके पेट को देखा, जो बीच में चमकदार हरा लग रहा था।

नागेंद्र ने दोनों को पास बुलाया और फुसफुसाकर कहा, 'अच्छा है। तो अब हम हमारे अगले शब्द की खोज के लिए आगे बढ़ें। हम 19.19°N, 73.03°E पर जाते हैं।'

एलएसडी ने तुरंत उसके टैबलेट पर खोज की। 'तुम्हारा मतलब ताज महल से है! लेकिन आगरा क्यों?' उनके सवाल का

जवाब देते हुए परिमल ने कहा, 'कई लोगों का मानना है कि ताज महल को मूल रूप से तेजो महालय कहा जाता था। ग्यारहवीं शताब्दी में आगरा क्षेत्र पर प्रभुत्व रखने वाले लोग जाट थे। उन्होंने शिव को इस प्रकार संबोधित किया

Machine Translated by Google

तेजाजी. जाटों ने अनेक तेजा मन्दिर अर्थात् तेजा मन्दिर बनवाये थे, क्योंकि तेजा लिंग हिन्दू स्थापत्य ग्रन्थों में वर्णित शिव लिंगों के अनेक नामों में से एक है। और इसलिए, तेजो महालय का शाब्दिक अर्थ है तेजाजी का महान निवास।' एलएसडी ने उसके टैबलेट पर फिर से कुछ टाइप किया। 'इस साइट पर लिखा है कि तेजो

'महालया आधुनिक समय के ताज महल का पुराना नाम था।'

'दुनिया के निर्माण के बाद से, जो भूमि पर शासन करता है वह अपने धर्मों पर शासन करता है, कल को फिर से लिखता है, आज को निर्देशित करता है और कल को प्रभावित करता है।
लोगों ने विश्वास किया और दावा किया कि उनके पास उन युगों के कई लोगों द्वारा लिखित लिखित ग्रंथों के रूप में साक्ष्य हैं, कि कैसे 1155 ईस्वी में हिंदू राजाओं द्वारा शासित अग्रवन शहर में तेजो महालय नामक एक महल था। जिस तरह मकबरे में काम करने वालों के हाथ काट दिए गए थे, उसी तरह शहर का नाम भी अग्रवन से घटाकर आगरा कर दिया गया और स्मारक का नाम बदलकर ताज महल कर दिया गया, जो संयोग से महल के ठीक स्थान पर खड़ा था,' परिमल ने समझाया।

'इन दोनों में से कौन सा पूरी तरह से विरोधाभासी इतिहास है, जो उचित साक्ष्य द्वारा समर्थित है, वास्तव में सच है?' एलएसडी ने पूछा.

'जितने इतिहास हैं उतने ही चारण! इन सिद्धांतों पर कई वर्षों से इंटरनेट मंचों पर व्यापक रूप से चर्चा की गई है और उनमें से कई तर्क ओक के सिद्धांत के इर्द-गिर्द घूमते हैं, जो दावा करता है कि ताज महल एक हिंदू शासक, जय सिंह द्वारा बनाया गया था, और यह वास्तव में एक शिव मंदिर भी था। राजपूत शाही महल का नाम तेजोमहालय है। ऐसा माना जाता है कि बाद में इस पर शाहजहाँ ने कब्ज़ा कर लिया, जिसने इसे अपनी पत्नी के लिए एक कब्र में बदल दिया और फिर इसका नाम बदलकर ताज महल रख दिया,' परिमल ने निष्कर्ष निकाला।

'मुझे दावों और राजाओं की लाशें खोदने की जरूरत नहीं है। मुझे इसकी परवाह नहीं है इसे किसी हिंदू राजा या मुस्लिम आक्रमणकारी ने बनवाया था। हमें शब्द की खोज करने की जरूरत है, सत्य की नहीं।' नागेंद्र ने फुसफुसाते हुए उनकी बकबक को खारिज कर दिया और चले गए।

'तुम फुसफुसा क्यों रहे हो?' एलएसडी से पूछा.

'क्योंकि वह मुझे खोज रहा है, मेरी योजनाओं को सुनने की कोशिश कर रहा है,' जवाब दिया नागेन्द्र, फिर फुसफुसाते हुए।

उसे ऐसा लग रहा था कि एलएसडी और परिमल पूरी तरह से पागल हो गए हैं। हालाँकि नागेंद्र ने ताज महल और तेजो महालय पर पूरी बहस को खारिज कर दिया था, लेकिन हमेशा जिज्ञासु रहने वाले एलएसडी ताज महल विवाद के बारे में और अधिक जानना चाहते थे। वह चुपचाप हर प्रासंगिक चीज़ को गूगल पर खोजती रही

Machine Translated by Google

तेजो महालय परिमल के बगल में चलते हुए, जो राष्ट्रीय उद्यान से बाहर का रास्ता दिखाता है।

परिमल फुसफुसाए, 'यदि आप अभी भी उत्सुक हैं तो और भी जानकारी है।'
'तेजो महालय का दावा एक संस्कृत शिलालेख द्वारा समर्थित है जिसे बटेश्वर शिलालेख के नाम से जाना जाता है, जो वर्तमान में लखनऊ संग्रहालय में संरक्षित है। यह एक "क्रिस्टल सफेद शिव मंदिर की स्थापना को संदर्भित करता है जो इतना आकर्षक था कि भगवान शिव ने, एक बार इसमें स्थापित होने के बाद, अपने सामान्य निवास - कैलाश पर्वत पर कभी नहीं लौटने का फैसला किया"। यह शिलालेख ताज महल से लगभग 36 मील के दायरे में पाया गया था और 1155 ईस्वी का है।

इस साक्ष्य के कारण, यह संभावना उत्पन्न हुई कि शाहजहाँ द्वारा इसका श्रेय लेने से कम से कम 500 वर्ष पहले ताजमहल का निर्माण किया गया होगा। इसके अलावा, शाहजहाँ के स्वयं के दरबारी इतिहास, बादशाहनामा ने स्वीकार किया कि मुमताज को दफ़नाने के लिए जयपुर महाराजा जय सिंह से गुंबद से ढकी अद्वितीय भव्यता वाली एक भव्य हवेली ली गई थी।' हालाँकि, एलएसडी परिमल से एक कदम आगे था और इंटरनेट पर एक हालिया लेख से पढ़ा गया। 'अगस्त 2017 में सिविल जज की

अदालत में दायर एक लिखित बयान में , एएसआई' ने इस तर्क को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था कि विश्व धरोहर स्थल हिंदू भगवान शिव को समर्पित एक मंदिर पर बनाया गया था। एलएसडी ने बहुत दृढ़ विश्वास के साथ जोर से पढ़ा, उन्होंने आगरा की एक अदालत को बताया कि ताज महल वास्तव में एक मकबरा है, न कि मंदिर, जैसा कि याचिकाकर्ताओं के एक समूह ने दावा किया है। आगरा के रास्ते में, उन्होंने अपना समय ओक के सिद्धांत के बारे में जो कुछ भी मिला उसे पढ़ने में बिताया और जब उनका काम पूरा हुआ, तब तक वे अर्धचंद्राकार रात की शाम को ताज महल के करीब थे।

दूसरी ओर, मिलारेपा अब नागेंद्र का मुकाबला करने के लिए पूरी तरह से तैयार था। जिस क्षण से वह आगरा पहुंचे थे, उन्होंने बेघरों को खाना खिलाते हुए शहर का भ्रमण किया था। जब उसने भोजन दिया, तो उसने उनकी आँखों में गहराई से देखा और अपना असली रूप उनके सामने प्रकट किया। एक-एक करके, मानो दिव्य समाधि की स्थिति में, प्रत्येक व्यक्ति मिलारेपा द्वारा मंत्रमुग्ध हो गया था, जिसे उन्हें ताज महल में प्रत्येक आगंतुक पर नज़र रखने के लिए निगरानी के रूप में कार्य करने की आवश्यकता थी। शहर में घूमते हुए, वह विभिन्न जानवरों और पक्षियों पर भी जादू करने में कामयाब रहा। सम्मोहन के प्रभाव में, मिलारेपा की लगभग 100 जोड़ी सतर्क आँखों वाली सेना में अब आवारा कुत्ते, जंगली बिल्लियाँ, गाय, चूहे, गौरैया, चील, गिद्ध और मोर, अन्य जीव-जंतु और कुछ पुरुष और महिलाएँ शामिल थे, जो किसी भी असामान्य चीज़ की तलाश में थे। और ताज महल के आसपास.

Machine Translated by Google

एलएसडी अंदर जाने और विवाद के संबंध में जो कुछ भी पढ़ा था उसे देखने के लिए उत्सुक थी, लेकिन उसे निराशा हुई, नागेंद्र ने उन्हें खड़ी कार से बाहर नहीं जाने दिया क्योंकि योजना में मकबरे में प्रवेश करना शामिल नहीं था। तभी, उसने देखा कि आवारा कुत्तों का एक झुंड उनके पास से गुजरने वाले हर आदमी और औरत को ऊपर से नीचे तक घूर रहा था। नागेंद्र ने परिमल को आदेश दिया कि जितना संभव हो सके ताज महल के करीब किसी ऊंचे होटल की ऊपरी मंजिल बुक करें।

अंततः सूर्य दिन के लिए विदा हो गया, और चंद्रमा के लिए आकाश खाली हो गया, जो पिछले दो महीनों से तबाही और हार का प्रतीक था। जबकि मिलारेपा ने चंद्रमा को देखा और उनके निगरानी कर्मियों ने ताज महल के आसपास हर इंसान पर नजर रखी, नागेंद्र ने जमीन पर किसी भी असामान्य गतिविधि पर नजर रखी। जब उसकी झुकी हुई आँखों ने चारों ओर देखा, तो उसने देखा कि कुत्तों में से एक अभी भी उसी स्थान पर बैठा है, जबकि नागेंद्र ने पहली बार झुंड को देखा था। सड़कों पर घूमने वाले कई आवारा जानवरों की तरह, यह भी कुपोषित और कमज़ोर लग रहा था। उसके कोट पर कई जगहों से बालों के टुकड़े गायब थे, जिससे उसकी त्वचा पर चिपके हुए पिस्सू उजागर हो रहे थे। इसकी रीढ़ और पसलियाँ पतली त्वचा से स्पष्ट थीं, जिन पर पुराने और ताज़ा निशान भी थे, संभवतः अन्य कुत्तों के साथ लड़ाई के। जब कुत्ता चुपचाप वहीं बैठा रहा, नागेंद्र ने देखा कि एक बूढ़ा आदमी उसकी ओर चल रहा है और उसके सामने मुट्ठी भर रोटियाँ रख रहा है। बूढ़े आदमी और नागेंद्र को आश्चर्य हुआ, कुत्ता एक इंच भी नहीं हिला। उसकी नज़र उस बूढ़े आदमी का पीछा करती रही, जो सड़क के दूसरी ओर चला गया और रास्ते में अन्य आवारा जानवरों को खिलाने की कोशिश की, लेकिन वे सभी वहीं रुके रहे।

तुरंत, नागेंद्र को पता चल गया कि उसे क्या खोजना है। उन्होंने ताज महल के आसपास अन्य लोगों में भी वही गुण खोजना शुरू कर दिया। क्षेत्र के अन्य जानवरों और पक्षियों की अजीब गतिहीनता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी क्योंकि ऐसा व्यवहार उनकी प्रजातियों के लिए असामान्य था।

'वे क्नोव्स!' उन्होंने एलएसडी और परिमल का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा।

'इन जानवरों को देखो, और यहां तक कि सड़क के किनारे भिखारियों को भी देखो नहीं चलती है। वे सूर्यास्त से पहले अपने स्थान से एक इंच भी हिले बिना वस्तुओं की तरह एक ही स्थान पर बैठे रहे हैं।' 'वे मुझे सामान्य लगते हैं। उनके साथ गलत क्या है?'

एलएसडी ने मानसिक रूप से गतिहीन लोगों और जानवरों की गिनती करते हुए पूछा।

'औसत व्यक्ति के लिए वे बस बैठे हैं और अपने व्यवसाय पर ध्यान दे रहे हैं यदि आप बारीकी से देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि उन्हें सम्मोहित किया गया है और किसी भी असामान्य गतिविधि की रिपोर्ट करने के लिए हर नुक्कड़ और कोने को कवर करने वाले स्थानों पर रखा गया है,' परिमल ने स्थिति का अपना विश्लेषण बताया।

Machine Translated by Google

एलएसडी ने निष्कर्ष निकाला, 'तो, वे लाइव कैमरों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तरह काम कर रहे हैं।'

'हम नहीं जानते कि कितने हैं। हमें नहीं पता कि कौन नियंत्रित कर रहा है उन्हें या यह व्यक्ति कहां स्थित है,' नागेंद्र ने अपनी चिंता व्यक्त की।

'परशुराम और अश्वत्थामा! और कौन? हम दोनों से मुकाबला करने के लिए तैयार हैं।' उनमें से, श्रीमान. हमारे आदेश क्या हैं?' परिमल ने आत्मविश्वास से कहा.

होटल के कमरे की खिड़की से बाहर देखते हुए नागेंद्र ने आदेश दिया, 'सो जाओ!' आदेश सुनकर एलएसडी और परिमल आश्चर्य से

एक दूसरे की ओर देखने लगे।

परिमल ने कहा, 'लेकिन यह अर्धचंद्राकार रात है।'

'हां यह है। लेकिन इस बार, हमें चंद्रमा के माध्यम से सूर्य की अप्रत्यक्ष रोशनी की आवश्यकता नहीं है। हमें जिस स्थान की आवश्यकता है वह कल सुबह सूरज अपनी पहली किरण के साथ दे देगा,' नागेंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा।

जबकि नागेंद्र अगले दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे, मिलारेपा, अश्वत्थामा और परशुराम अपने-अपने स्थानों पर उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन रात बहते पानी की तरह आसानी से बीत गई।

ओम ने वृषभपि को बचाने की कोशिश में अन्य ऋषियों की सहायता की। जब उन्होंने वृषकपी के घायल शरीर का निरीक्षण किया, तो उन्हें उसकी गर्दन पर काटने का भयानक निशान दिखा, जिसके ठीक होने का कोई संकेत नहीं था और जो तेजी से सड़ रहा था।

द्रष्टाओं में से एक ने वृषकपि की गर्दन के किनारे ओम की गहरी नजर को देखते हुए देखा और कहा, 'यह काटने का निशान है! 'ऐसा लगता है कि यह किसी मांसाहारी जानवर का कृत्य है।' ओम ने द्रष्टा की ओर देखा और उससे पूछा, 'क्या वृषभपि जीवित रहेगा?' लेकिन द्रष्टा की प्रतिक्रिया की कमी ओम की चिंताओं को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त थी। रात अनिश्चितता में बीती.

अगले दिन, सुबह होते ही, मिलारेपा और दो अमर लोगों को कृपाचार्य को बचाने और यह जानने के लिए कि ओम कौन था, कैलाश पर्वत पर लौटना पड़ा।
अश्वत्थामा और परशुराम ने तुरंत अपनी यात्रा शुरू कर दी लेकिन मिलारेपा को एक-एक करके उन सभी लोगों और जानवरों को अपने जादू से मुक्त करने के लिए कुछ समय चाहिए था। उन्होंने अलग-अलग कोनों में अपने स्थानों पर खड़े लोगों को रिहा करना शुरू कर दिया। जैसे ही उसने उस आवारा कुत्ते को छोड़ा जिस पर नागेंद्र की नज़र थी, नागेंद्र ने कहा, 'जाने का समय हो गया है।'

नागेंद्र ने उसे तलाशती निगाहों की संख्या कम आंकी थी.
वे होटल से बाहर निकलकर ताज महल की ओर गए और एक भिखारी के पास पहुंचे जिसे अभी तक मिलारेपा ने रिहा नहीं किया था। जैसे ही भिखारी ने नागेंद्र को हाथ में एक बड़ा थैला लेकर गुजरते देखा, मिलारेपा ने भी उसे देखा, लेकिन इससे पहले कि भिखारी की नजर नागेंद्र पर पड़ती, वह पानी में गायब हो गया।

Machine Translated by Google

भीड़। नागेंद्र को देखा जाना और फिर उसका गायब हो जाना दोनों ही मिलारेपा के लिए बड़ी चिंताएं थीं, फिर भी आगरा में उसे देखने मात्र से उसने दो चीजें सीख ली थीं: एक तो उसकी ताज महल के आसपास मौजूदगी और दूसरी वह दिशा जहां से वह अंदर गया था। मिलारेपा ने कहा शेष सभी आँखें उसके आदेश के अधीन काम करने के लिए। वे सभी अलग-अलग दिशाओं से उस स्थान तक चले जहां नागेंद्र को आखिरी बार देखा गया था और ताज महल के स्थायी रूप से बंद पूर्वी द्वार तक चलते रहे।

नागेंद्र एक बिंदु पर रुके और सूर्य की ओर देखा।

'एलएसडी! गणना करें और चिह्नित करें कि सुबह के समय इस संरचना के सिरे की छाया कहाँ होगी। परिमल! परिधि को सुरक्षित करें. पूर्वी क्षेत्र में मोर्चाबंदी करें।'

एलएसडी और परिमल ने बिना किसी सवाल के तुरंत आदेशों को निष्पादित करना शुरू कर दिया, जबकि सभी की आंखें नागेंद्र को खोज रही थीं। मिलारेपा भी ताज महल के पूर्वी कोने की ओर बढ़े।

एक सम्मोहित बिल्ली बस पूर्वी हिस्से के अंतिम छोर तक चली गई जब तक कि उसे बैरिकेड के दूसरी तरफ खड़े परिमल का सामना नहीं करना पड़ा। उसने बिल्ली को भगाने की कोशिश की, इससे पहले कि उसने देखा कि जानवरों की एक छोटी सी सेना धीरे-धीरे उसी तरह आ रही है। इससे घबराकर परिमल अब घबरा रहा था, लेकिन आवारा लोगों का झुंड शांत दिखाई दे रहा था। उन्होंने अपने वायरलेस का उपयोग करके नागेंद्र को अजीब स्थिति के बारे में सूचित किया और उन्हें स्वयं आकर जांच करने के लिए कहा। जब वह नागेंद्र से बात कर रहे थे, तो मिलारेपा ने जानवरों के माध्यम से यह दृश्य देखा और महसूस किया कि नागेंद्र अकेले नहीं थे। वह क्षेत्र में एलएसडी और परिमल को नोटिस करने में कामयाब रहा लेकिन फिर भी नागेंद्र को नहीं देख सका और जानता था कि उसे करीब जाने की जरूरत है। नागेंद्र ने वायरलेस पर जवाब दिया और आदेश दिया, 'जब तक हो सके उन्हें वहीं रोककर रखो। गोली मत चलाओ; इससे हंगामा मच जाएगा और हम नहीं चाहते कि हमारे खिलाफ कोई जमावड़ा हो।'

'सर, और भी बहुत लोग आ रहे हैं! यह मेरे लिए अच्छी खबर नहीं लगती।' परिमल ने गुर्राने वाले जंगली कुत्तों और गुर्राने वाली बिल्लियों की बढ़ती संख्या से चिंतित होकर कहा, जिनके साथ अब चूहे और सांप भी धीरे-धीरे उसे घेर रहे हैं।

'यह वह बिंदु है जहां छाया 6 बजे होगी, सर,' एलएसडी ने नागेंद्र को सूचित किया।

'परिमल, वे कोई ख़तरा नहीं हैं, और उन्हें मारना कोई समाधान नहीं है। पीछे गिरें और पेड़ के ऊपर अपना स्थान ग्रहण करें। वे सभी आविष्ट हैं। उसके मालिक की तलाश करें और जब वह मिल जाए तो मुझे सूचित करें,' नागेंद्र ने आदेश दिया।

Machine Translated by Google

नागेन्द्र ने अपने साथ लाये बड़े बैग की ओर इशारा किया। 'उस बैग को खोलो और अल्ट्रासोनिक बंदूक निकालो,' उसने एलएसडी को बताया।

उसने बैग खोला और बंदूक निकाल ली। इसके ऊपर दो ट्रिगर और एक स्कैनर लगा हुआ था। एलएसडी अभी यह पता लगा ही रहा था कि उसके पास क्या है, तभी नागेंद्र ने कहा, 'अब इसे पहले ट्रिगर से जमीन पर मारो। यह अल्ट्रासोनिक किरणें छोड़ेगा। स्कैनर पर नजर रखें. वह क्षेत्र जहाँ से किरणें वापस परावर्तित नहीं होती, वह स्थान है जहाँ भूमिगत छिपा हुआ मार्ग है। यही वह जगह है जहां आपको दूसरे ट्रिगर से दोबारा गोली चलानी होती है।'

मिलारेपा ने परिमल को पेड़ पर चढ़ते देखा और सभी जानवर एक दूसरे से लिपट गए चारों ओर से। उनके आदेश पर, कौवे, चील और मोर के झुंड ने बेहतर दृश्य के लिए पेड़ को घेर लिया। अब उसके पास पूरे क्षेत्र का विहंगम दृश्य था और उसने अपनी प्रजा को यथासंभव उन्हें रोकने के लिए परिमल और एलएसडी दोनों पर हमला करने का आदेश दिया।

'सर, परिधि का उल्लंघन हुआ है! वह हर जगह हैं। मेरे आदेश क्या हैं?' परिमल ने वायरलेस से पूछा.

'गोली न चलाना। नागेंद्र ने उत्तर दिया, ''मैं उन्हें नियंत्रित करने वाले व्यक्ति तक पहुंचना चाहता हूं।''

हमलों से बुरी तरह आहत एलएसडी खतरे के बावजूद अपने काम पर डटी रही। अब उनके पास उस संरचना की गहराई और चौड़ाई थी जिसके लिए उन्हें खुदाई करनी थी। उसने एक और ट्रिगर दबाया, जिससे जमीन में इतना चौड़ा मैनहोल बन गया कि एक बार में एक आदमी अंदर जा सके। ठीक उसी समय, मंत्रमुग्ध समूह ने उसे पकड़ लिया। परिमल पेड़ से गिर गया. यह जोड़ी वापस लड़ना चाहती थी, लेकिन उन्हें अपने अगले आदेश तक खड़े रहना था और इसलिए वे खुद को बचाने के लिए संघर्ष करते रहे।

नागेंद्र, जो कुछ ही दूरी पर छिपा हुआ था, ने लोगों के एक समूह को अपनी दिशा में बढ़ते देखा। उसे एहसास हुआ कि वे वही कल वाले भिखारी थे और एक महिला के सामने कूदने से पहले समूह की ओर तेजी से दौड़ना शुरू कर दिया, जो काफी पतली थी। उसने उसका चेहरा मजबूती से पकड़ लिया और सीधे उसकी आँखों में देखने लगा। मिलारेपा, जो लगभग उसके पास पहुंच चुका था, अचानक रुक गया जब उसने नागेंद्र को देखा, जो उसके चेहरे के बिल्कुल करीब महसूस कर रहा था क्योंकि वे महिला के दृष्टिकोण को साझा कर रहे थे। मिलारेपा ने तुरंत महिला को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन नागेंद्र ने जल्दी से उसकी आंखों को मिलारेपा तक पहुंचने और उसे सम्मोहित करने के लिए एक पुल के रूप में इस्तेमाल किया। कुछ ही समय में, मालिक भूतिया बन गया। मिलारेपा अब पूरी तरह से नागेंद्र के नियंत्रण में था।

परिमल और एलएसडी पर हमला करने वाले सभी लोगों ने अचानक अपनी गतिविधियां बंद कर दीं। नागेंद्र जानता था कि उसके पास एक ऐसा व्यक्ति है जो उसके अलावा सभी को नियंत्रित करता है

Machine Translated by Google

वह अभी भी इस बात से अनभिज्ञ था कि यह वास्तव में कौन था। 'मेरे पास आओ!' नागेन्द्र ने महिला की आँखों में देखते हुए आदेश दिया।

एलएसडी और परिमल अपने पैरों पर वापस खड़े हो गए, दोनों की बांहों पर खरोंचें थीं और गर्दन. वे नागेंद्र के पास पहुंचे, जो अभी भी महिला के सामने खड़ा था। नागेंद्र ने परिमल को फोल्डेबल सीढ़ी को एलएसडी द्वारा खोदे गए छेद में गिराने का आदेश दिया। परिमल ने सीढ़ी लटका दी और नागेंद्र छेद से नीचे चला गया जबकि एलएसडी सम्मोहित महिला के पास अपनी बंदूक के साथ पहरा दे रही थी और बाकी लोग नागेंद्र के जादू के तहत मूर्तियों की तरह स्थिर खड़े थे।

नागेन्द्र नीचे उतरे तो सामने एक बड़ा दरवाजा मिला। उसने दो शब्द बोले शब्द, 'अविनासी अनादि', जिसका शिकार उसने मानसरोवर और रूपकुंड से किया था। दरवाज़ा गायब हो गया और उसकी जगह किनारों पर आग की लपटें आ गईं। नागेंद्र को अगला शब्द आग की लपटों के दूसरी ओर दिखाई दे रहा था। यह 'अनंता' था.

तब तक मिलारेपा वहां पहुंच चुका था और बगल में एलएसडी की बंदूक की नोक पर खड़ा था सम्मोहित स्त्री.

नागेंद्र को शब्द हासिल करने के लिए आग की लपटों से आगे निकलना पड़ा। उसने आग की लपटों के बीच से निकलने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही वह अंदर बंद हुआ, आग भड़क गई, जिसका स्पष्ट इरादा उसे जलाना था। नागेंद्र को लगा कि आग की लपटें शब्द को सुरक्षित कर रही हैं और जो कोई भी इसे प्राप्त करने की कोशिश करेगा वह इसकी तीव्रता से झुलस जाएगा। शब्द को अपने समर्पण से पहले जीवन के बलिदान की आवश्यकता थी और नागेन्द्र को बलिदान के समक्ष समर्पित एक जीवित प्राणी की आवश्यकता थी।

'महोदय! एलएसडी ने नागेंद्र को वायरलेस पर सूचित किया, 'एक आदमी अभी अंदर आया और उस महिला के पीछे खड़ा हो गया जो आपके पास थी।'

एक पल के लिए रुकने के बाद नागेंद्र ने आदेश दिया, 'यहाँ आओ!' मिलारेपा उस गड्ढे की ओर चलने लगा

जिसमें नागेंद्र था और लटकती सीढ़ी को नजरअंदाज करते हुए सीधे उसमें गिर गया। गिरने से उसका दाहिना पैर टूट गया, लेकिन सम्मोहन ने उसे दर्द से इतना बेखबर कर दिया कि चोट लगने के बावजूद वह एक पैर पर खड़ा हो गया और नागेंद्र की ओर लंगड़ाकर चलने लगा।

नागेंद्र ने निःस्पृहतापूर्वक निकट आती आकृति के छायाचित्र को देखा। लेकिन जैसे ही धधकती आग की बैंगनी छाया ने उसके चेहरे पर छाया को बदल दिया, नागेंद्र हरी चमड़ी वाले मिलारेपा को अपने सामने खड़ा देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वह लगभग एक सहस्राब्दी के बाद अपने पूर्व सहयोगी को देख रहे थे।

लेकिन जैसे ही मिलारेपा लंगड़ाते हुए आगे बढ़ा और आग की रोशनी में उसका चेहरा और भी चमक उठा, नागेंद्र की आश्चर्यचकित अभिव्यक्ति नफरत और बदले की भावना में बदल गई। मिलारेपा अब नागेंद्र के ठीक सामने खड़ा था और उसकी बेजान आँखें नागेंद्र की उग्र आँखों से मिलीं। नागेंद्र ने मिलारेपा को कसकर गले लगा लिया

Machine Translated by Google

उसके कान में फुसफुसाया, 'तुम्हें पता नहीं है कि मैं तुम्हें देखकर कितना खुश हूं, मिलारेपा। क्या आप जानते हैं कि आप अभी भी जीवित क्यों हैं? क्योंकि तुम्हें मार न पाने का अफसोस मैंने कभी नहीं छोड़ा,'नागेंद्र दांत भींचते हुए बोला। नागेंद्र और मिलारेपा की आंखों में आंसू थे. एक की आँखें शक्तिहीनता और हार से चमक रही थीं और दूसरे की आँखें प्रतिशोध और जीत के लंबे समय से प्रतीक्षित गुस्से से चमक रही थीं। नागेंद्र ने आगे कहा.

'आप जवाब देना चाहते हैं, लेकिन नहीं दे सकते। आप सहयोग नहीं करना चाहते, लेकिन आप सहयोग करेंगे। आप लड़ना चाहते हैं, लेकिन लड़ नहीं सकते। आप मेरे लिए वह शब्द नहीं निकालना चाहते, लेकिन आप ऐसा करेंगे। आप इसे सहेजना चाहते हैं, लेकिन नहीं बचा सकते. आप नर्क की आग जैसी क्रूर इस आग में जलना नहीं चाहते, लेकिन आप जलेंगे। इसे अपनी बेवफाई का इनाम समझो. अब अपना हाथ उठाओ और मेरे लिए वह शब्द निकालो,' मिलारेपा को आदेश देते हुए नागेंद्र की आंखें चमक उठीं।

मिलारेपा आग की ओर मुड़ा। उसके गाल पर एक आंसू बह निकला लेकिन बढ़ते तापमान में तुरंत सूख गया। वह खुद को असहनीय गर्मी में उजागर करने के अलावा कुछ नहीं कर सका। वह खुली आँखों से आग के करीब बढ़ता रहा।

'तुम्हें मोक्ष चाहिए था न? आज तुम्हारा दिन है।' उसने ऐसे देखा
मिलारेपा की पलकें जल गईं, उसके बाद उसकी आंखों के आसपास की त्वचा भी जल गई।
मिलारेपा ने अपने हाथ अंदर डाले और शब्द पकड़ लिया। उसके हाथ का मांस मिश्र धातु की तरह धीरे-धीरे पिघल गया। चाट की लपटों ने मिलारेपा के कपड़ों को अपनी चपेट में ले लिया और अब उसका पूरा शरीर जल रहा था।

जब तक मिलारेपा ने शब्द निकाला और नागेंद्र को दिया, तब तक उसका अधिकांश शरीर जल चुका था, लेकिन वह अभी भी खड़ा था। नागेंद्र ने शब्द को अपनी हथेली पर लिया, उम्मीद थी कि यह गर्म होगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही नागेंद्र ने शब्द को पकड़ा, वह धूल के कणों में बदल गया और उनकी त्वचा के छिद्रों के माध्यम से अवशोषित हो गया।

जैसे ही नागेंद्र ने शब्द को आत्मसात किया, एक लंबी और फैली हुई छाया ने ताज महल को घेर लिया और चमत्कारिक रूप से, इमारत का प्राचीन सफेद संगमरमर काले ग्रेनाइट में बदल गया। जो बात की रक्षा करने आया था वही बात पहुंचाने का माध्यम बन गया।

'सुरंग बहुत अंधेरी है. मुझे इस गड्ढे से बाहर निकालो,'नागेंद्र ने आदेश दिया
मिलारेपा को जलाना.
मिलारेपा, जो अब मांस और हड्डियों का एक जलता हुआ ठूंठ बन गया था, चल पड़ा
नागेंद्र के सामने एक जीवित मशाल के रूप में, जबकि उसकी जलती हुई त्वचा घुल गई और रास्ते में गिर गई।

Machine Translated by Google

'राम नाम सत्य है!' सत्य बोलो मुक्ति है! राम नाम सत्य है! टक्कर मारना नाम सत्य है!' नागेंद्र ने हिंदू अंतिम संस्कार जुलूसों में बोले जाने वाले वाक्यांश का जाप करना शुरू कर दिया। जैसे ही वे गड्ढे के मुहाने पर पहुंचे, नागेंद्र ने मोर्चा संभाला और बाहर आ गये। इसके बाद उन्होंने परिमल और एलएसडी को बुलाया।

'आप जानना चाहते थे कि मिलारेपा कौन थे, है ना?' नागेंद्र ने गड्ढे में उस

आकृति की ओर इशारा किया जिससे जलती हुई आग की रोशनी निकल रही थी। एलएसडी और परिमल ने अंदर झाँककर देखा तो जलता हुआ आदमी उनकी ओर देख रहा था।

'यह है—सुधार—वह मिलारेपा था!' मिलारेपा इस हद तक झुलस

गया था कि किसी के लिए भी झुलसना नामुमकिन था अंदाजा लगाइए कि वह पहले कैसा दिखता होगा। उसकी नजर नागेंद्र पर पड़ी क्योंकि उसका जो कुछ भी बचा था वह जमीन पर गिर गया, अभी भी जल रहा था, क्योंकि उसकी आत्मा उसके शरीर से बाहर निकल गई थी।

'वेदव्यास! मिलारेपा को जिंदा जला दिया गया है! मिलारेपा मर गया, मैंने दाह संस्कार किया उसे बिना अंतिम संस्कार के, उसकी कड़ी मेहनत से अर्जित मुक्ति के लिए नरक का उपहार देते हुए,' नागेंद्र ने आकाश की ओर देखते हुए जश्न मनाया।

वहां खड़े अन्य सभी पुरुष और महिलाएं नागेंद्र के आदेश का पालन करते हुए गड्ढे की ओर चलने लगे।

'हम यहां काम कर चुके हैं। चल दर!' नागेंद्र एलएसडी के साथ आगे बढ़ने लगे और परिमल निम्नलिखित सूट। जैसे ही तीनों विपरीत दिशा में चले गए, सभी सम्मोहित लोग, जानवर और पक्षी उनके पास से गुजर गए। क्षेत्र छोड़ने से पहले, एलएसडी मंत्रमुग्ध स्थान पर नज़र डालने के लिए मुड़ा। उन सभी को एक-एक करके मैनहोल में गिरते और जलते हुए शरीर पर गिरते देख वह बहुत दुखी हुई। सभी शव एक साथ जलने से आग और ऊंची हो गई। न केवल इस सम्मोहित समूह को बल्कि दुनिया के शानदार अजूबों में से एक ताज महल के चारों ओर हवा में गंदा धुआं और जलते हुए शवों की असहनीय दुर्गंध के कारण अंधेरा छा गया था।

'क्या यह दुनिया के अंत की शुरुआत है?' दुनिया भर में प्राइम-टाइम समाचारों में अब काले पड़ चुके ताज महल को प्रदर्शित करने वाली छवियों के कैप्शन लिखे। यह परशुराम और अश्वत्थामा के लिए यह एहसास करने के लिए पर्याप्त था कि उन्होंने एक और शब्द खो दिया है। अपनी आंखों से इसकी पुष्टि करने और मिलारेपा को जांचने के लिए वे दोनों अपने-अपने स्थान से चले गए।

इस बीच, कैलाश पर, वेद व्यास अपनी आँखें बंद करके चुपचाप बैठे रहे, अन्य गंतव्यों की खोज करने की कोशिश कर रहे थे। तभी उसने वह आवाज़ सुनी जिसने उसे अंदर तक झकझोर दिया। 'वेदव्यास! मिलारेपा को जिंदा जला दिया गया है!

Machine Translated by Google

मिलारेपा मर गया है, मैंने बिना अंतिम संस्कार के उसका अंतिम संस्कार कर दिया, उसकी कड़ी मेहनत से अर्जित मुक्ति के लिए उसे नरक का उपहार दिया।'

वेद व्यास की आँखें खुलीं और उन्हें पता चला कि उन्होंने एक और शब्द खो दिया है। ब्रह्मांड में कही गई हर बात को सुनने की उनकी शक्ति का उपयोग नागेंद्र ने उनका मज़ाक उड़ाने और अपने ही एक व्यक्ति की क्रूर हत्या की खबर देने के लिए किया था।

श्रीमती बत्रा ने याद करते हुए कहा, 'मुझे दुनिया भर में प्रसारित की जा रही ताज महल के काले होने की खबर याद है।' 'डॉक्टरों की टीम ने यह तय करने के लिए हर तरह से मेरी जांच की कि क्या तेज का नाम नोबेल पुरस्कार के लिए कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट, स्टॉकहोम, स्वीडन में नोबेल असेंबली को सुझाया जा सकता है।

'तेज ने मुझे एक इंजेक्शन दिया और मेरा तापमान, रक्तचाप, रक्त का नमूना और न जाने क्या-क्या नोट करना शुरू कर दिया, इससे पहले कि वह दोबारा बैठकर हिंदू वेद पढ़ता। ऐसा लग रहा था जैसे वह उत्तर खोज रहा हो। "मैं वह हूं जो मृतकों में से लौट आया हूं लेकिन यह तुम हो जो पूरी तरह से बदल गए हो, तेज,"

मैं उसे से कहा।

''हो सकता है कि तुम मौत से बच गई हो क्योंकि मैं पूरी तरह से बदल गया हूं, अमृता,'' तेज ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

'"क्या बदल गया? रॉस द्वीप पर क्या हुआ? आपके लौटने के बाद से आपको क्या परेशानी हो रही है? आप मुझसे इस बारे में बात क्यों नहीं करते?" मैंने उससे एक बार नहीं कई बार पूछा, लेकिन जवाब हमेशा एक ही रहा।

"अपने कमरे में वापस जाओ। कृपया। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा. . . सही समय कब होगा।"

'उसके वापस प्राचीन पुस्तकों के पन्नों में डूबने के बाद भी मैं कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा। मैंने बेचारे पूह की ओर देखा, जिसने कभी कुछ नहीं मांगा। मुझे कभी समझ नहीं आया कि चिकित्सा विज्ञान की एक प्रतिभा हिंदू वेदों और पुराणों में क्या खोज रही थी।

'तेज उम्मीद से जगमगा रहा था, जबकि मैं जिंदा होते हुए भी बेजान महसूस कर रहा था।' मुझे एक जीवनसाथी की तरह कम और एक ऐसे विषय की तरह अधिक महसूस हुआ जो तेज की सफलता का आश्वासन देता है। उन्होंने हर संभव तरीके से मुझे सांत्वना दी लेकिन मेरे जीवित रहने और उनके साथ रहने की उनकी खुशी नोबेल पुरस्कार जीतने की आकांक्षा के नीचे दब गई। मुझे नहीं लगता कि उसे पता भी था कि मुझे कैसा महसूस हुआ। वह एक अच्छा इंसान था लेकिन वह अपने अंदर का अंधेरा नहीं देख सका। वह जीवन की उस रोशनी से अंधा हो गया था जो उसने मुझमें देखी थी।

'एक बार जब उनके विषय को हर कसौटी पर परखा गया, तो वे अपनी रिपोर्ट लेकर चले गए। रॉस द्वीप पर जो कुछ हुआ था, उसके बाद तेज को इसका उचित अंदाज़ा था

Machine Translated by Google

इस सफलता से तरंग प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। लेकिन उस वक्त तेज और मैं इस बात से अंजान थे कि रिपोर्ट के साथ इस चमत्कार की खबर भी बाहर जा रही है. 'तेज का ध्यान केवल अपने प्रयोग की सफलता पर था।'

दीघा समुद्र तट पर पनडुब्बी से वापस जाते समय, परिमल नागेंद्र से सवाल करना बंद नहीं कर सके। 'आप किस का इंतजार कर रहे हैं?'

'क्या?' नागेन्द्र ने पूछा.

'तुम्हारे पास मृतसंजीवनी की पुस्तकें हैं। आप अमर हो सकते हैं. क्या हैं
आप इंतज़ार कर रहे हैं?' परिमल ने पूछा.

'ओम शास्त्री,' नागेंद्र मुस्कुराए।

'ओम शास्त्री! लेकिन हमने पहले ही उनसे मृत संजीवनी हासिल कर ली है।'
परिमल ने भौंहें सिकोड़ लीं.

नागेंद्र ने परिमल की ओर देखा, लेकिन इसके बजाय, उसकी नज़र एलएसडी पर चली गई, जो उसके बगल में चल रहा था। उसने नीचे उस छोटे से उभार को देखा जो उसके पेट के निचले हिस्से पर दिखाई दे रहा था। नागेंद्र ने एक प्रसन्न बच्चे की तरह ताली बजाई और उसके पास आया, अभी भी उसके बेबी बंप को देख रहा था। वह उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया, उसके उभरे हुए पेट के बराबर। एलएसडी ने समान रूप से चिंतित परिमल के साथ एक हतप्रभ दृष्टि साझा की।

नागेंद्र ने सावधानी से अपने दोनों हाथ उसके उभारों पर रखे और उसकी आँखों में एक चमक सी आ गई। 'क्या आप जानते हैं कि मेंढक की एक अनोखी प्रजाति होती है जिसे रेड-आइड ट्री फ्रॉग कहा जाता है? वे मांसाहारी होते हैं और उनका औसत जीवन लगभग पाँच वर्ष होता है। वे केवल लगभग 2-2.5 इंच बड़े होते हैं—सिर्फ एक चाय के कप जितने छोटे! क्या आप जानते हैं कि उनकी फैली हुई लाल आंखें, जालदार नारंगी पैर, चमकीले नीले और पीले किनारे और उनके नीयन-हरे शरीर के अलावा उनके बारे में क्या अनोखा है?' परिमल और एलएसडी अवाक और हैरान खड़े थे। नागेंद्र खड़े होकर एलएसडी के पेट की ओर देख रहे थे मानो भ्रूण को कोई

कहानी सुना रहे हों और उन्होंने अपने प्रश्न का उत्तर दिया, 'ये लाल आंखों वाले पेड़ मेंढक के अंडे खतरे को महसूस करने पर जल्दी फूट सकते हैं। लेकिन आपको कोई ख़तरा महसूस नहीं होना है. अगर मम्मा और पापा असफल हुए तो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा! ठीक है, मम्मा पापा?' नागेन्द्र ने उन दोनों की ओर देखा।

कुलधरा से लगभग 830 किमी की दूरी पन्द्रह घंटे में तय की
अमरकंटक, अश्वत्थामा और परशुराम आगरा शहर पहुंचे, जो दुनिया भर में ब्रेकिंग न्यूज थी। उन्हें पता चला कि अधिकारियों को पूर्वी गेट पर एक गड्ढे के अंदर जले हुए शवों का ढेर मिला था और एक को छोड़कर सभी शवों पर दावा किया गया था। उन्हें शक तो था, लेकिन वे विश्वास नहीं करना चाहते थे कि लावारिस लाश कोई और नहीं, बल्कि कोई और है

Machine Translated by Google

मिलारेपा का. जली हुई लाश पर दावा करने के लिए उनके पास जली हुई लाश से कोई संबंध साबित करने के लिए कोई कागज नहीं था. उन्होंने कोने में रखी लावारिस लाश देखी और काली इमारत से बाहर निकल गए, जो न तो तेजोमहालय था और न ही ताज महल।
अधिक।

कैलाश पर्वत पर वापस, वेद व्यास उस कुटिया में दाखिल हुए जहाँ ओम और अन्य ऋषि वृषभपि को जीवित रखने की कोशिश कर रहे थे। जैसे ही ओम ने वेद व्यास को अंदर आते देखा, वह उठ खड़े हुए। वेदव्यास उनके पास आये और पूछा, 'वृषकापि कैसा है?' 'वह संघर्ष कर रहा है लेकिन हमें सकारात्मक रहना चाहिए।

हमने उसे अभी तक नहीं खोया है।'
ओम ने उसे आश्वस्त किया.

इस समय, वेद व्यास को बुरी खबर का वाहक बनना पड़ा। 'हाँ! लेकिन हमने एक और शब्द खो दिया है, ओम। और इसके साथ ही हमने इस शीत युद्ध में मिलारेपा को भी खो दिया है।' ओम की अभिव्यक्ति आशा से असहाय में बदल

गयी। 'आगरा!' साथ
उसका सिर निराशा और दुःख से झुक गया, उसने कहा, 'अब क्या?'

वेद व्यास ने एक भारी आह भरी और मरते हुए वृषभपि पर एक आखिरी नज़र डालने के बाद झोपड़ी से बाहर चले गए, 'मुझे शेष स्थानों का शीघ्र पता लगाना होगा।'
ओम उसके पीछे चला गया और उसे सम्मानपूर्वक बुलाया।

'ये सब मेरी वजह से हो रहा है. जिसकी वजह से मैंने किताब खो दी
उसे स्थान मिल गए। मिलारेपा की मृत्यु हो गई. वृषभपि मर रहा है! कृपाचार्य फँस गये। मैं मदद करना चाहता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?' 'अपने आप को जानो,'

वेद व्यास ने शांति से उत्तर दिया और चले गए।

पनडुब्बी फिर से रवाना होने के लिए पूरी तरह तैयार थी। 'कहाँ जाना है?' परिमल ने पूछा.

नागेंद्र ने उन्हें एक पर्ची दी जिस पर लिखा था 'मांडवी बीच।' गुजरात का

मांडवी समुद्र तट देश के विपरीत कोने में था। पनडुब्बी को पहले पश्चिम बंगाल के दीघा समुद्र तट से भारत के दक्षिणी तट पर जाना था, और मांडवी समुद्र तट तक पहुंचने के लिए गुजरात में कच्छ की खाड़ी तक जाने के लिए रॉस द्वीप के पास एक मोड़ लेना था। इस दूरी को तय करने में पनडुब्बी को कई दिन लगने वाले थे। यात्रा शुरू हुई. नागेंद्र ने मृत संजीवनी को दोबारा खोला और अगला शब्द प्राप्त करने की प्रक्रिया जानने के लिए आगे पढ़ा।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 13

देवध्वजा

जब ओम वृषकापी के कपड़े बदल रहा था, तो उसने झोपड़ी की ओर कदमों की आहट सुनी। परशुराम ने प्रवेश किया और उनकी अभिव्यक्ति से देखते हुए, ओम को एहसास हुआ कि महान अमर वृषभपि की जांच करने के लिए नहीं बल्कि उसे आदेश देने के लिए अंदर आए थे।

'मेरे साथ आइए!' -परशुराम ने कहा.

ओम ने धुंध के टुकड़े एक बूढ़े ऋषि को सौंप दिए और परशुराम के पीछे चल दिए। वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ कृपाचार्य का शरीर शिथिल पड़ा हुआ था।
ओम जानता था कि वे वहां क्यों थे, लेकिन फिर भी वह धैर्यपूर्वक परशुराम से यह सुनने का इंतजार कर रहा था।

उन्होंने कहा, 'हम कृपाचार्य को बचाने जा रहे हैं।' अश्वत्थामा भी उनमें शामिल हो गए और परशुराम ने आगे कहा, 'हमने कभी नहीं सोचा था कि कृपाचार्य फंस सकते हैं, लेकिन किसी तरह ऐसा हुआ है। वह आपके अतीत में फंसा हुआ है। यह आप ही हैं जिसने अतीत में उसे हिरासत में रखा है। कृपाचार्य से लड़ने और उन्हें बंदी बनाने की शक्ति वाला व्यक्ति साधारण नहीं हो सकता।' 'वह व्यक्ति भी साधारण नहीं हो सकता जिसने वृषभपि को हराया और मिलारेपा को मार डाला। कृपया मुझे वहां जाने और आपकी सहायता करने की अनुमति दें,'ओम ने जोर देकर कहा।

'जब भी अश्वत्थामा मुझे आश्वासन देगा कि तुम तैयार हो, मैं तैयार हो जाऊँगा,' परशुराम ने वादा किया।

ओम और अश्वत्थामा ने एक-दूसरे की ओर देखा लेकिन परशुराम के पास कुछ और था कहना। 'तुम दोनों, मेरी बात सुनो!'

परशुराम के आदेशात्मक स्वर ने उन्हें तुरंत अपना सिर घुमाने पर मजबूर कर दिया।

'मैं यहां जो कहने जा रहा हूं उस पर कोई चर्चा या बहस नहीं चाहता।
इसे मेरा आदेश समझो—तुम दोनों इसे एक मानकर पालन करोगे। इस बार मैं कृपाचार्य की तलाश में अकेले ही अन्दर जाऊँगा। ओम, कृपाचार्य सत्य युग में आपके अतीत में फंस गए हैं। कृपाचार्य के इस कारावास ने हमें सिखाया कि आप उस समय असाधारण थे। इस बार अगर हम सभी अंदर जाते हैं तो दरवाज़ा धक्का देकर खोलने वाला कोई नहीं है, इसलिए केवल एक ही जोखिम उठाएगा,'परशुराम ने समझाया।

Machine Translated by Google

'अगर जोखिम केवल एक ही उठाएगा, तो मैं क्यों नहीं, सर?' अश्वत्थामा ने प्रत्याशित खतरे का खामियाजा भुगतने के लिए पूरी तरह तैयार होकर पूछा।

'क्योंकि हम अब दो मोर्चों पर लड़ाई लड़ रहे हैं! कृपाचार्य को चाहिए तुमसे ज़्यादा मुझे और ओम को मुझसे ज़्यादा तुम्हारी ज़रूरत है, इसलिए इस बारे में कोई और सवाल नहीं,'' आगे की चर्चा को दृढ़तापूर्वक ख़त्म करते हुए, परशुराम ने कहा।

'यह उनकी स्मृति और कृपाचार्य के भीतर उनके जीवन के चालीस वर्षों का कालखंड है इसमें कहीं भी हो सकता है. इसका मतलब है कि उसे ढूंढने और बचाने में मुझे काफी समय लग सकता है। यदि मैं सफल हो गया, तो हम मिलकर उस दरवाजे को हमेशा के लिए नष्ट कर सकेंगे जो ओम की स्मृति को बंद कर देता है।

'इस क्षेत्र में युद्ध का यह मोर्चा मेरे लौटने तक पूरी तरह आपके हाथ में है, अश्वत्थामा. मैं जीतने के लिए अंदर सब कुछ करूंगा और तुम हार न पाने के लिए बाहर सब कुछ करोगे। अब, इसे धक्का देकर खोलो और मुझे अंदर आने दो।' परशुराम की आँखें बंद होने से पहले वे उनके अंतिम शब्द थे। अश्वत्थामा और ओम ने भी ऐसा ही किया। कुछ ही क्षणों में, वे तीनों अपने सूक्ष्म रूप को पार करके ओम के अवचेतन में प्रवेश कर गए और परशुराम के प्रवेश के लिए दरवाजा खोल दिया।

परशुराम ने दरवाजे में प्रवेश किया और एक पल के लिए वहीं खड़े रहे, उनकी नजर दूसरी तरफ ओम और अश्वत्थामा पर टिकी रही क्योंकि उनके बीच का दरवाजा धीरे-धीरे बंद हो गया।

परशुराम पीछे मुड़े और खोजते हुए अँधेरे में चले गये कृपाचार्य, जबकि अश्वत्थामा और ओम ने परशुराम के शरीर के बगल में, वास्तविक दुनिया में अपनी आँखें खोलीं। उन्होंने अत्यंत सावधानी से उनके शरीर को उठाया और कृपाचार्य के शरीर के पास रख दिया।

'आगे क्या?' ओम ने पूछा.

'तैयारी!' अश्वत्थामा ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

पनडुब्बी के अंदर, परिमल अपने कक्ष से बाहर निकला और एलएसडी का दरवाजा खटखटाया। अप्रत्याशित दस्तकों ने एलएसडी को उसकी सीट पर चौंका दिया। वह रॉस द्वीप के फुटेज में डूबी हुई थी जब ओम को बचाने के लिए परशुराम ने पूछताछ कक्ष के अंदर उन पर हमला किया था। उसने तुरंत लैपटॉप बंद किया और दरवाज़ा खोलने के लिए खड़ी हुई, तो देखा कि परिमल वहाँ खड़ा था।

'क्या मैं आ सकता हूँ?' परिमल ने पूछा.

अपने अस्त-व्यस्त कमरे की ओर देखते हुए, एलएसडी ने झिझकते हुए उत्तर दिया, 'अंदर बहुत गंदगी है।'
'तो क्या ये है. . .

हमारे बीच और आपके अंदर. आइए आज रात इसे थोड़ा व्यवस्थित करने का प्रयास करें। क्या मुझे अनुमति है?'

Machine Translated by Google

एलएसडी ने कंधे उचकाए और परिमल को छोटे कक्ष में जाने दिया। कुछ नहीं कमरे में अपनी जगह पर था. बैठने के लिए कुछ जगह बनाने की कोशिश करते हुए, परिमल ने बिस्तर से नक्शों का गुच्छा और एक लैपटॉप उठाया और उन्हें छोटी मेज पर रख दिया, जो पहले से ही कपड़े, चार्जर और अन्य केबलों से भरा हुआ था।

परिमल बैठ गया जबकि एलएसडी दरवाजे के पास खड़ा रहा। दोनों के बीच एक अजीब सी खामोशी थी. परिमल ने हल्की-फुल्की बातचीत शुरू करके उसे दूर करने की कोशिश की.

'इसलिए! तुम कैसा महसूस कर रहे हो?'

'तुम यहां क्यों हो?' एलएसडी सीधे पीछा करने के लिए कट गया।

'सुनो, हमारे बीच जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है। मैं बस था आदेशों का पालन करते हुए,' परिमल ने झिझकते हुए खुद को उचित ठहराया।

'ठीक है! लेकिन तुम यहाँ क्यों हो?' एलएसडी को उसी स्पष्ट स्वर में दोहराया गया।

'तुम्हारे अंदर एक बच्चा है। यह मेरा भी है. . . मेरा मतलब है, यह हमारा बच्चा है, आपका और मेरा दोनों का।' परिमल ने एलएसडी की

ओर देखा, जो समझने के लिए पहले से ही उसके चेहरे पर नजर गड़ाए हुए था वह क्या कहना चाह रहा था. वह अपना वक्तव्य पूरा होने का इंतजार करने लगी।

परिमल को भी इस बात का एहसास हुआ, इसलिए उसने आगे कहा, 'मैं केवल यह कहने की कोशिश कर रहा हूं कि आप अकेले नहीं हैं और अगर आपको किसी की जरूरत है तो मैं यहां हूं।' 'इसलिए । . .

आप क्या बनने की कोशिश कर रहे हैं, पति या पिता?' एलएसडी उत्तेजित लग रहा था.

'दोनों! परिमल ने दृढ़ता से उत्तर दिया, ''मैं तुम्हारा और बच्चे का ख्याल रखूंगा।''

'क्यों?' एलएसडी ने फिर से पूछा, इस बार और अधिक कड़वाहट से, लेकिन परिमल ने अपना सौम्य और देखभाल करने वाला लहजा बरकरार रखा। 'क्योंकि एक आदमी अपनी पत्नी और बच्चे के लिए यही करता है।' 'मुझे आपकी देखभाल की ज़रूरत नहीं है, मैं

खुद को संभाल सकता हूं।' एलएसडी ने दरवाज़ा खोला.

परिमल आह भर कर उठ खड़ा हुआ और बाहर निकलने के लिए चल पड़ा. दरवाज़ा बंद करने से ठीक पहले, एलएसडी ने कहा, 'और मैं समझता हूँ।' 'क्या?' परिमल ने उम्मीद से

पलटते हुए पूछा।

एलएसडी ने कहा, 'हमारे बीच जो कुछ हुआ उसके लिए आपको खेद है और आप केवल आदेशों का पालन कर रहे थे।' यह परिमल के लिए फिर एक ताना था।

फिर उसने अपना हाथ अपने बेबी बंप पर रखा 'यह बच्चा और मैं आपके नहीं हैं संकट। मानसरोवर में हमारे बीच जो कुछ हुआ, उसके लिए मुझे भी खेद है. मैं भी बस आदेशों का पालन कर रहा था।'

इससे पहले कि परिमल कुछ कह पाता, एलएसडी ने उसके चैंबर का दरवाजा बंद कर दिया. परिमल अपने कक्ष में वापस चला गया लेकिन जैसे ही वह अपने दरवाजे पर पहुंचा, उसने पाया कि एक युवा चालक दल का सदस्य उसका इंतजार कर रहा था।

Machine Translated by Google

'हाँ?' परिमल ने पूछा.

चालक दल के सदस्य ने उत्तर दिया, 'वह आपसे मिलना चाहता है।'

परिमल को पता था कि क्रू मेंबर नागेंद्र का जिक्र कर रहा है. परिमल नागेंद्र के चैंबर की ओर जाने लगे लेकिन क्रू मेंबर ने उन्हें रोका और कहा, 'नहीं! उस तरफ नहीं. कृपया मेरे साथ आइए।'

परिमल ने पनडुब्बी के संकीर्ण गलियारों से होते हुए एक बंद दरवाजे की ओर उसका पीछा किया। वह महसूस कर सकता था कि उसकी नसें रेंगने लगी हैं। युवक उसे दरवाजे तक ले गया और चला गया। यह नागेंद्र का चैंबर नहीं था, परिमल को पता था। उसने दरवाज़ा खटखटाने के लिए अपना हाथ उठाया लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, अंदर से नागेंद्र की दबी हुई आवाज़ निकली, 'अंदर आओ, परिमल।' परिमल ने कुंडी खोली और अन्दर आ गया. उन्होंने देखा कि चैंबर में कई छोटी-छोटी स्क्रीनें लगी थीं, जो पनडुब्बी की हर गतिविधि पर नजर रखती थीं। नागेन्द्र बोले,

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि
विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देहि।'

नागेंद्र ने स्पष्ट किया, 'जैसे एक आदमी अपने पुराने वस्त्र त्याग देता है और नए वस्त्र धारण कर लेता है, वैसे ही आत्मा अपने जीर्ण-शीर्ण शरीर को त्याग देती है और नए वस्त्र धारण कर लेती है।'

नागेंद्र ने रिमोट पर एक बटन दबाया और स्क्रीन पर फुटेज चला दिया जिसमें परिमल को एलएसडी के दरवाजे में प्रवेश करते हुए दिखाया गया। जैसे ही वीडियो बंद हुआ, नागेंद्र ने कहा, 'एकमात्र भावना जो तुम्हें मेरी अनुमति के बिना उस दरवाजे तक खींच ले गई होगी वह प्यार होगा। मैं बूढ़ा हूँ। शायद मैं भूल गया हूं लेकिन मुझे यकीन है कि आपको याद होगा. बताओ, क्या मैंने तुम्हें प्रेम करने का आदेश दिया है?' नागेंद्र ने उसकी ओर कठोरता से देखा और एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'वह एक दिन मर जाएगी और तुम भी एक दिन मर जाओगे। आपका जन्म एक-दूसरे से प्यार करने के लिए नहीं हुआ है। वह यह स्पष्ट रूप से जानती है और तुम्हें भी यह पता होना चाहिए।'

परिमल चैंबर से बाहर जाने लगा तो नागेंद्र ने उसे फिर रोक दिया।
'परिमल! अगली बार तुम उसे तभी देखोगे जब मैं तुम्हें आदेश दूँगा।' परिमल ने एक पल रुककर आखिरी बात सुनी और चुपचाप चला गया।

कैलाश पर्वत पर वेदव्यास भी मौन थे। वह अब गुजर रहा था
इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, ब्रह्माण्ड में बोले गए प्रत्येक शब्द को जितनी जल्दी हो सके अगली जगह सुन सके। उन्हें आशा थी कि किसी ने, कहीं न कहीं, किसी युग में, उन अन्य स्थानों के बारे में कुछ कहा होगा जहां शब्द छिपे हुए थे।

Machine Translated by Google

वेद व्यास के मस्तिष्क ने पिछले युगों के असंख्य शब्दों की गूँज का अध्ययन करना जारी रखा, पहचान की और परशुराम और अन्य लोगों की मदद करने का रास्ता खोजने की कोशिश की। कई दिनों के बाद, वेद व्यास ने अपनी आँखें खोलीं क्योंकि उन्हें वह शब्द मिला जिसे वे खोज रहे थे। 'सकल जगत!' वह चिल्लाया। सुनकर एक ऋषि दौड़े हुए वेद व्यास के पास आये

उसका आवाज़। वेद व्यास ने द्रष्टा को देखा और उनसे तुरंत अश्वत्थामा को बुलाने के लिए कहा।

अश्वत्थामा को तुरंत बुलाया गया और ओम ने भी उसका अनुसरण किया। वेदव्यास हाथ में एक मरी हुई टहनी लेकर बैठे थे। कीचड़ भरी ज़मीन पर एक-दूसरे के नीचे तीन शब्द लिखे थे लेकिन वे संरेखित नहीं थे। अश्वत्थामा और ओम ने उन्हें देखा और स्पष्टीकरण के लिए वेद व्यास की ओर देखा। से

'उन्होंने अब तक तीन शब्द सीखे हैं: क्रमशः अविनाशी अनादि अनंता मानसरोवर, रूपकुंड और अग्रवन। ये शब्द देश की हर प्रमुख नदी की तरह उत्तर से दक्षिण की ओर बह रहे हैं,' वेद व्यास ने मानसरोवर से रूपकुंड से आगरा तक एक रेखा खींचते हुए कहा। 'अगर मैं सही हूं, तो मुझे यकीन है कि उसका अगला स्थान रेगिस्तान की भूमि में शापित भूत गांव होगा।' वेद व्यास ने रेखा को आगरा के बाईं ओर खींच लिया।

'शापित भूतिया गांव?' श्रीमती बत्रा ने भौंहें सिकोड़ लीं।

'हाँ! शापित भूत गांव!' पृथ्वी ने पुष्टि की.

'तेरहवीं शताब्दी के आसपास स्थापित कुलधरा एक समय एक समृद्ध गांव था। कई शिलालेखों में निवासियों की जाति का उल्लेख "कुलधर" या "कलधर" के रूप में किया गया है, जिससे कुलधरा नाम प्राप्त हुआ प्रतीत होता है। ऐतिहासिक अभिलेखों से पता चलता है कि सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान इस गाँव की जनसंख्या 1588 के आसपास थी। किंवदंती के पुनर्कथन में दावा किया गया है कि उन्नीसवीं शताब्दी में, अज्ञात कारणों से गांव को रातोंरात छोड़ दिया गया था। स्थानीय किंवदंती का दावा है कि गाँव छोड़ते समय, ग्रामीणों ने एक श्राप दिया था कि कोई भी गाँव पर दोबारा कब्ज़ा नहीं कर पाएगा। पृथ्वी ने बताया, ''जिन लोगों ने गांव को फिर से आबाद करने की कोशिश की, उन्होंने असाधारण गतिविधियों का अनुभव किया, और इसलिए, गांव निर्जन बना हुआ है।''

'वास्तव में यह जगह कहां है?' श्रीमती बत्रा आगे झुकीं। 'जैसलमेर शहर से 18

किमी दक्षिण-पश्चिम में, कुलधरा राजस्थान में है। बस्ती एक मंदिर पर केन्द्रित थी। गाँव के खंडहरों में 410 इमारतें और तीन श्मशान घाट, कई स्मारक पत्थर शामिल हैं। इसे राजस्थान पर्यटन द्वारा पर्यटन स्थल घोषित किया गया था और आज तक कोई नहीं है

Machine Translated by Google

सूर्यास्त के बाद गाँव में रहने की अनुमति दी गई। पृथ्वी ने निष्कर्ष निकाला कि जिन लोगों ने रात में वहां रुकने की कोशिश की है, उन्हें अजीब असाधारण घटनाओं ने भगा दिया है।

अश्वत्थामा को अब पता था कि किस रास्ते पर जाना है और नागेंद्र को भी, लेकिन ओम के अतीत में कृपाचार्य की खोज करते समय परशुराम खो गए थे। वह उसी रास्ते पर था और उसे वही घटनाएँ देखने को मिलीं जो कृपाचार्य ने अश्वत्थामा और ओम के साथ देखी थीं, फिर भी उसका कोई निशान नहीं था।

परशुराम परिश्रमपूर्वक आगे बढ़ते रहे।

परशुराम जानते थे कि वह समय बर्बाद कर रहे हैं, लेकिन इस प्रक्रिया को तेज करने के लिए वह कुछ नहीं कर सकते थे। उसने कृपाचार्य को पुकारते हुए, अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए, अंधेरे में भागने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। दिन भर भटकने के बाद भारी बारिश होने लगी। सभी ग्रामीण आश्रय की ओर भागे और बारिश ख़त्म होने का इंतज़ार करने लगे। सभी स्थानीय तालाबों के साथ-साथ भूमिगत भंडारण टैंक और कुएं ताजे पानी से लबालब थे, लेकिन निर्मम बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। पानी की मात्रा हर गुजरते पल के साथ बढ़ती गई, जिससे ग्रामीण बिल्कुल असहाय हो गए।

गांव के प्रवेश द्वार पर एक बांध था जो गांव के निवासियों की सहायता करता था सिंचाई में. कुछ घंटों की लगातार बारिश के बाद बांध दरकने लगा। जब कुछ ग्रामीण डर के मारे सिसक रहे थे, जबकि कुछ प्रार्थना कर रहे थे, तब परशुराम यह देखने के अलावा कुछ नहीं कर सके। गाँव में पहले से ही बाढ़ आ रही थी, और यदि बाँध टूट जाता, तो उनका पूरा समुदाय नष्ट हो सकता था।

अचानक, दूसरी ओर से, परशुराम ने लगभग बीस साल के एक युवक को बांध की ओर भागते हुए देखा। जैसे ही बालक नंगे पैर दौड़ा, परशुराम ने उसकी बायीं एड़ी पर एक काला जन्मचिह्न देखा।

'देवध्वज! वहाँ मत जाओ, यह खतरनाक है! तुम डूब सकते हो!' ए महिला की आवाज ने युवक को पीछे मुड़ने के लिए चिल्लाया।

देवध्वज तब तक पानी में बहता रहा जब तक वह अंततः पहुँच नहीं गया बांध। दबाव के कारण दीवार दरकती रही। उसने उसे पकड़कर धारा रोकने की कोशिश की, लेकिन उसे एहसास हुआ कि यह रणनीति काम नहीं करेगी। उसकी नज़र पास की एक पहाड़ी पर पड़ी और उसे एक विशाल शिला दिखाई दी। वह तुरंत उसकी ओर लपका और जोर से घुरघुराहट के साथ उसे नीचे धकेल दिया ताकि वह बांध की ओर लुढ़क जाए। ग्रामीण युवक के हाथों एक और अनर्थ की आशंका जताने लगे।

जैसे ही बांध टूटा, बोल्डर लुढ़ककर उसके केंद्र में समा गया। पानी पूरे वेग से बह रहा था लेकिन चट्टान के कारण वह दो धाराओं में बंट गया

Machine Translated by Google

जो खेतों से होते हुए गांव परिसर के चारों ओर फैल गया। ग्रामीण आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे कि युवक ने अपनी जान जोखिम में डालकर अकेले ही उन सभी को बचा लिया। जल्द ही, बारिश भी बंद हो गई और अतिरिक्त पानी बह गया। रात में, सभी ने अपने घरों की मरम्मत की और उत्सव मनाने के लिए बाहर आये, जहाँ उन्होंने देवध्वज की वीरता की प्रशंसा की और उसकी समृद्धि के लिए प्रार्थना की। परशुराम ने दूर से देखा, उनकी आँखें अभी भी कृपाचार्य को खोज रही थीं, जो कहीं नहीं मिले।

अगली सुबह, परशुराम एक बार फिर निकल पड़े। वह गाँव के किनारे नवनिर्मित नदियों में से एक पर रौंदा। कुछ समय बाद, वह एक ऋषि के सामने सम्मान में झुके हुए ग्रामीणों के एक समूह में आया।

क्षेत्र से गुजरने वाले स्थानीय लोगों की दबी हुई बातचीत से, परशुराम यह निष्कर्ष निकालने में कामयाब रहे कि यात्रा करने वाले ऋषि ने शम्भाला गाँव के बाहरी इलाके में रुकने और आराम करने का फैसला किया है। जैसे ही यह खबर बस्तियों में फैली, लोग पूज्य संत के दर्शन करने और उनकी बातें सुनने के लिए आने लगे।

एक-एक करके, प्रत्येक ग्रामीण उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ऋषि के पास गया। परशुराम ने देवध्वज को पहचान लिया, जो लगभग 20 वर्ष का एक अधिक शक्तिशाली और तेज़ व्यक्ति था, जो अपनी बारी आने पर ऋषि के पास गया और उनके पैर छूने के लिए झुका। ऋषि ने तुरंत अपना दाहिना हाथ उस व्यक्ति के सिर पर रखा और आशीर्वाद दिया। देवध्वज सीधा हुआ और एक ही झटके में अपनी तलवार खोल दी। इससे पहले कि परशुराम और करीब जाकर देवध्वज ने ऋषि से जो कहा था, उसे समझ पाते, पूरा वातावरण अंधकारमय हो गया, जिससे दूर से कुछ भी समझना मुश्किल हो गया।

देवध्वज ने ऋषि का सिर काट दिया। भीड़ से एक सामूहिक आह और डरावनी चीख निकली। ऋषि का सिर विहीन शव जमीन पर गिरते ही खून उगलने लगा।

तलवार वाला आदमी अचानक पीछे हट गया। उसके जंगल में गायब हो जाने पर ग्रामीण डर के मारे चिल्लाने लगे। परशुराम ने उनका पीछा करने की कोशिश की लेकिन जल्द ही, सब कुछ फिर से काला हो गया।

श्रीमती बत्रा ने आगे कहा, 'मेरे भविष्य का रास्ता भी अंधकारमय दिख रहा था। मेडिकल टीमें समय-समय पर हमारे दरवाजे पर आती रहती हैं। घर एक संग्रहालय, कभी-कभी प्रयोगशाला जैसा महसूस होता था, और मुझे एक अवशेष, कभी-कभी एक विषय जैसा महसूस होता था। हम दोनों उस घर में थे लेकिन कभी एक दूसरे की मौजूदगी महसूस नहीं हुई. हम अब समान नहीं रहे। मैं एक मात्र प्रजा की तरह महसूस करती थी, जिसे अपने नए जीवन के लिए अपने पति का सदैव ऋणी रहना चाहिए।

Machine Translated by Google

'यह महीनों तक चलता रहा। तेज अब डॉक्टर नहीं बल्कि बिजनेसमैन थे जिसने अपनी खोज के माध्यम से पैसा कमाने की विस्तृत योजना बनाई थी, जैसा कि उसने मेरे जीवन के डेमो के लिए आए सभी लोगों के सामने कहा था। वह केवल स्वीकृतियों और आईपी अधिकारों के पंजीकृत होने का इंतजार कर रहा था। जो चीज़ मुझे बचाने के एजेंडे के रूप में शुरू हुई थी वह प्रसिद्धि और धन का साधन बन गई थी। उनकी आकांक्षाओं को साकार करने के लिए मार्च 2020 में भारत में कोविड-19 महामारी आई। यह वही अवधि थी जब ताज महल काला पड़ गया था,'' श्रीमती बत्रा ने याद किया।

'हाँ! चैत्रचै का महीना,' पृथ्वी ने आगे कहा।

'दुनिया नए वायरस के लिए वैक्सीन और इलाज तैयार करने के लिए मेहनत कर रही थी और तेज इस दौड़ में सबसे आगे थे क्योंकि उन्होंने फार्मास्युटिकल उद्योग के कुछ दिग्गजों के साथ हाथ मिलाया था। यह उनका एक और बुरा निर्णय था,' श्रीमती बत्रा निराश लग रही थीं।

'ख़राब निर्णय? कैसे?' पृथ्वी ने पूछताछ की.

'ये लोग अक्सर मेरी जांच करने के लिए हमारे घर आते थे, लेकिन उस दिन उन्होंने ऐसा किया अलग-अलग योजनाओं के साथ पहुंचे. मैं दूसरे कमरे में था जब मैंने तेज की असहमति भरी आवाज सुनी। मैं उसके पास जाकर खड़ा हो गया. वे लोग आगे की जांच के लिए मेरा या कम से कम मेरे रक्त का नमूना लेना चाहते थे, जो उनके अनुसार, हमारे घर में संभव नहीं था। तेज मेरे खून का नमूना साझा करने के लिए तैयार नहीं था। उन्होंने मुझे अपने साथ ले जाने के बदले में उसे एक बड़ी रकम की पेशकश की। तेज ने अपना आपा खो दिया. उसी क्षण, मुझे पता चला कि हमने दुश्मन पैदा कर लिए हैं, दुश्मन हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, जो हमें धमकाने के अलावा और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। वे उस दिन खाली हाथ चले गये, लेकिन हम जानते थे कि वे खाली हाथ जायेंगे

जल्द ही वापसी।

'तेज ने अपनी खोज में मदद के लिए सरकार से संपर्क करने का फैसला किया, जिसे उन्होंने एक नए रक्त प्रकार का आविष्कार कहा, उन्हें बताया कि उनका जीवन खतरे में है, और जेड-प्लस सुरक्षा मांगी। मैंने उनसे इस जुनून को जाने देने का अनुरोध किया। मैं बस राडार से दूर जाना चाहता था और जीवन के उस चमत्कार को तेज और मेरे साथ दफन कर देना चाहता था। मैंने विनती की और जोर दिया, लेकिन तेज ने मना कर दिया।

दोनों पक्षों की कड़ी बातचीत के बाद आखिरकार हम एक निर्णय पर पहुंचे।

'उसने मुझे कुछ नकदी और अपनी सभी चेकबुक और क्रेडिट कार्ड के साथ एक पता दिया और कहा, “यह लो! अपना बैग पैक करो और निकल जाओ. मैं दो महीने में आपसे जुड़ जाऊंगा. मैंने जो खोजा है वह मानव जाति के लिए एक वरदान है और मैं अपनी ही जाति के साथ विश्वासघात नहीं कर सकता। अपने आसपास देखो। पूरी दुनिया में कोविड-19 की वजह से लोगों की मौत हो रही है. यह रक्त लाखों लोगों की जान बचा सकता है।”

Machine Translated by Google

''यह खून लाखों लोगों की जान भी ले सकता है, तेज,'' मैंने तर्क दिया, उस समय नागेंद्र या ओम के अस्तित्व से अनजान था।

'तेज ने मेरी बांहों को प्यार से पकड़ लिया और कहा, ''यह फैसला मानव जाति को करना है, हमें नहीं - चाहे वे इसका इस्तेमाल लाखों लोगों की जान बचाने के लिए करें या लाखों लोगों की जान लेने के लिए। मुझे इसे सही प्राधिकारी के पास ले जाना होगा। इससे पहले कि मैं आपके साथ गायब हो जाऊं, मैं अपने राष्ट्र का ऋणी हूं। कृपया, मुझ पर भरोसा करें और चले जाएं,'' उसने विनती की।

''लेकिन अगर मैं चला गया तो आप इसे मेरे बिना कैसे साबित करेंगे? उन्हें एक की आवश्यकता होगी
यह प्रयोग करने और आपके दावों को प्रमाणित करने के अधीन है,'' मैंने तर्क दिया।

'तेज अपनी बेसमेंट लैब में गया और बंद पूह को बाहर लाया, जो उसके प्रयोग का पहला विषय था। उन्होंने मुझे गिनी पिग दिखाया, प्यार से मुस्कुराते हुए कहा, "तुम कोई विषय नहीं हो, अमृता। तुम मेरी पत्नी हो। ये एक सब्जेक्ट है और इसका नाम है पूह. मैं तुमसे प्यार करता हूं और इसने मुझे वह सब कुछ करने के लिए प्रेरित किया है जो मैंने अब तक किया है। मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि मैंने इसे पा लिया है और यह कोई आविष्कार नहीं बल्कि एक खोज है, और यह भी कि यह मेरी सर्वश्रेष्ठ खोज नहीं है। मेरी सबसे अच्छी खोज आप हैं और मैं आपको बचाने के लिए सब कुछ करूंगा। अब जाओ। मुझे इसे सही जगह पर पहुंचाने दीजिए और मैं हमेशा के लिए आपके पास वापस आऊंगा।

'तेज और मेरी शादी को सत्ताईस साल हो गए और उसने इस अवधि में किया हुआ एक भी वादा नहीं तोड़ा। उसने कहा कि वह हमेशा के लिए मेरे पास वापस आएगा। वह पहली बार था जब उसने कोई वादा तोड़ा। और इसके साथ ही उसने सब कुछ हमेशा के लिए तोड़ दिया। वह कभी वापस नहीं लौटा. उसने मुझे धोखा दिया,'' श्रीमती बत्रा फूट-फूट कर रोने लगीं।

'नहीं! उसने तुम्हें धोखा नहीं दिया. हां, उसने वादा तोड़ा और वापस नहीं लौटा, लेकिन उसने तुम्हें धोखा नहीं दिया,' पृथ्वी ने उसे आश्वासन दिया।

श्रीमती बत्रा ने चौड़ी, पनीली आँखों और कांपती ठुड्डी से पृथ्वी की ओर देखा
जैसे ही उसे एहसास हुआ कि वह उसके पति के बारे में कुछ जानता है।

'कहाँ है वह?' उसने डॉ. बत्रा से दोबारा मिलने की आशा करते हुए पूछा।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

अध्याय 14

बूढ़े आदमी का पालतू

ओम ने अश्वत्थामा को जल्दी-जल्दी अपना सामान पैक करते देखा। उसे पता था कि वह कुलधरा की ओर जा रहा है।

'मुझे अपने साथ ले लो। उत्तर जानने के बावजूद ओम ने कहा, ''मैं मदद कर सकता हूं।''

'आप जानते हैं कि आपके लिए परशुराम का आदेश है, मैं उसे अस्वीकार नहीं कर सकता।' 'परशुराम

ने कहा कि मैं तभी मदद कर सकता हूं जब आप पुष्टि करें कि मैं तैयार हूं,' ओम ने विवाद किया।

'आप तैयार नहीं हैं, ओम। और जब तक आप अपने मन को नियंत्रित करना नहीं सीख लेते तब तक आप ऐसा नहीं कर पाएंगे। तुम्हें यहीं रहना चाहिए और मेरे द्वारा सिखाए गए अस्त्रों का अभ्यास करना चाहिए। जब तक परशुराम और कृपाचार्य वापस नहीं आ जाते या मैं वापस नहीं आ जाता तब तक तुम्हें ज्ञानगंज नहीं छोड़ना है,' अश्वत्थामा ने कठोरता से कहा।

ओम ने आदेश स्वीकार कर लिया और तब तक चुपचाप खड़ा रहा जब तक अश्वत्थामा ने अपना सामान पैक नहीं कर लिया बैग और कैलाश पर्वत छोड़ दिया। ओम किनारे पर खड़ा अश्वत्थामा को क्षितिज में गायब होते देख रहा था। बर्फीले रास्तों पर अकेले चलते हुए अश्वत्थामा जल्द ही गायब हो गए। भारी मन से ओम वापस चला गया।

कुटिया के रास्ते में, एक द्रष्टा ओम की ओर दौड़ता हुआ आया और उसे बताया कि वृश्चिक ने अपनी आँखें खोली हैं और अश्वत्थामा का नाम बुदबुदा रहा है, इसलिए वह वृश्चिक को देखने के लिए दौड़ा। वह उस झोपड़ी में पहुंचा जहां वृषकपि की देखभाल की जा रही थी और उसने उसे हाथ हिलाते और सिर उठाते देखा। वह उसके करीब गया और वृषभपि के कंधों पर धीरे से अपना हाथ रख दिया। 'आप सुरक्षित हैं और घर पर हैं। आराम करें और अपने आप पर बहुत अधिक दबाव न डालें। तुम्हारा शरीर किसी भी गतिविधि के लिए बहुत कमज़ोर है, वृषभपि।' वृषभपि ने प्रत्युत्तर में कुछ बुदबुदाया। ओम नीचे झुका और लाया

वह क्या कह रहा है यह समझने के लिए उसका कान वृषकपि के होठों के करीब आ गया।

'तीन!' वृश्चिकपि फुसफुसाहट के ठीक ऊपर कराह उठा।

'तीन? कौन से तीन, वृषभपि?' वृषभपि ने कुछ

कहने की कोशिश की लेकिन फिर बेहोश हो गया। ओम को पता था कि वह इतना कमजोर है कि उसे तुरंत नहीं उठाया जा सकता, इसलिए उसने तब तक इंतजार करने का फैसला किया जब तक वृश्चिक को होश नहीं आ गया।

Machine Translated by Google

जबकि ओम बंद दरवाजे के पीछे वृषकपि के जागने का इंतजार कर रहा था उनकी स्मृति में, परशुराम कृपाचार्य को खोजने के लिए हर जगह भटकते रहे। कभी चूँकि उसने ऋषि का सिर काटे जाने का भयानक दृश्य देखा था, सब कुछ बेहद शांत हो गया था। भले ही उसका सामना किसी ग्रामीण से हो जाए। वे बस या तो गुस्से में या दुःख में उसे देखते और बस उसके पास से निकल जाते द्वारा।

परशुराम ने देखा कि एक पुरानी मिट्टी की झोपड़ी के चारों ओर भीड़ जमा थी और वह झाँक रहा था जिज्ञासा के साथ अंदर. जैसे ही वह थोड़ा करीब आया, उसे इसका कारण समझ में आया क्योंकि उनकी जिज्ञासा के कारण कृपाचार्य दुर्बल और थके हुए थे अंदर बंधक बनाकर रखा जा रहा है. उसे बंधक बनाने वाले कहीं नज़र नहीं आए। वह उसे जानता था कृपाचार्य को बचाने के लिए उसे इस अवसर का लाभ उठाना पड़ा। जैसे ही वह अंदर घुसा हट, उसने खुद को हमले के लिए तैयार किया लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि किसी ने हमला नहीं किया। उन्होंने कृपाचार्य को बंधन से मुक्त कर दिया और उन्हें छुपकर बाहर निकलने में मदद की भीड़ ने उनका पीछा किया और अंततः सभी लोग घटनास्थल से चले गए।

कैलाश पर वापस, वृश्चिकपि के एक इंच भी हिले बिना दिन बीत गए थे। ओम ने हर समय उसके पास रहने का फैसला किया। एक सुबह, ध्यान करते समय, ओम ने वृश्चिकपि को फिर से बड़बड़ाते हुए सुना। वह दौड़कर उसके पास बैठ गया।

'तीन!' वृषभपि अभी भी आँखें बंद करके कर्कश स्वर में कराह उठा।

ओम ने वृषकापी का हाथ पकड़ लिया. वृषभपि ने अपनी आँखें खोलीं और ओम को देखा उसकी ओर नीचे झाँककर देखना।

'अश्वत्थ...?' वृषभपि बड़बड़ाया.

'वह अभी आसपास नहीं है। मुझे बताओ तुम्हें क्या कहना है,'ओम ने जोर देकर कहा।

'वह ... फाई नहीं है ... बिल्कुल सही बताओ वह है ... अकेले नहीं। वे तीन हैं ... अश्वत्थामा... वे तीन हैं...' वृषभपि ने पीड़ा से कहा।

ऋषियों की व्यथित आवाजों ने पुष्टि की कि वृषभपि ऐसा नहीं करेगा इसे बनाएं। उन्होंने कहा, 'उनका अंत बहुत करीब है।'

ओम ने वृषभपि को उसके पूरे शरीर पर आँखें घुमाते हुए देखा और सोचा, 'वह जाने के लिए बहुत छोटा है। यह उनके लिए उचित नहीं है.' वृषकपि अभी तक बेहोश नहीं हुआ दोबारा। ओम को एहसास हुआ कि जानकारी महत्वपूर्ण थी और इसकी आवश्यकता भी थी कुलधरा में नागेंद्र का सामना करने से पहले अश्वत्थामा को सौंप दिया गया अकेला चारों ओर से घात लगा बैठा। ज्ञानगंज में कोई रोकने वाला नहीं था ओम, और इसलिए उन्होंने खुद कुलधरा जाने का फैसला किया।

जैसे ही ओम कुलधरा जाने के लिए तैयार हुआ, वेद व्यास ने उसे एक तलवार सौंपी और उसे आशीर्वाद दिया. इसी बीच नागेंद्र की पनडुब्बी खाड़ी की खाड़ी को छू गई कच्छ और अश्वत्थामा भी लगभग वहीं थे। अश्वत्थामा ने पार किया कुछ किलोमीटर पहले अंतहीन रेगिस्तान से होकर सीधा रास्ता

Machine Translated by Google

एकाकी खंडहर दिखाई दिए। जब वह परित्यक्त गाँव में पहुँचा तो सूरज आसमान में चढ़ चुका था।

यह स्थान एक संरक्षित स्थल था और इसका रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता था। जब गार्ड गांव में प्रवेश टिकट के बदले पैसे इकट्ठा करने में व्यस्त थे, अश्वत्थामा उन्हें चकमा देकर अंदर घुस गया। वह तब तक घूमता रहा जब तक उसे दिन भर छिपने की जगह नहीं मिल गई।

सूर्यास्त के समय, अधिकारियों ने प्रत्येक पर्यटक को गाँव खाली करने का आदेश देना शुरू कर दिया। अश्वत्थामा, एक घर के खोल के अंदर एक बंद जगह में छिपा हुआ, घोषणा सुन सकता था। जल्द ही, सभी पर्यटक दिन के लिए चले गए; गार्ड भी अपनी पोस्ट पर वापस चले गए, और अश्वत्थामा भूतों के गांव में सांस लेने वाली अकेली आत्मा थी।

एक बार जब उसने यह सुनिश्चित कर लिया कि आसपास कोई उसे देख न सके, तो वह इधर-उधर भागने लगा पंक्ति-दर-पंक्ति परित्यक्त मिट्टी के घरों की छतें गायब हो चुकी हैं और खंडहर दीवारें अभी भी खड़ी हैं, कंकाल हर किसी को एक बर्बाद अतीत की याद दिला रहे हैं।
प्राचीन दीवारों की दरारों से गुज़रते हुए, बहती हवाओं ने अपनी भयानक सीटी की आवाज़ के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कुछ दूरी पर, खलिहान उल्लू समय-समय पर हुंकार भरते रहे। गार्ड पोस्ट से केवल हल्की रोशनी निकल रही थी। अँधेरा पहले से ही था.

अश्वत्थामा एक ऐसे स्थान पर रुका जो गाँव का केंद्र प्रतीत होता था। उसके दाहिनी ओर तुलनात्मक रूप से अच्छी हालत में एक घर था। वह उसके अंदर गया, कमरों को छान मारा और सीढ़ियों से छत पर चला गया, जहाँ से पूरा गाँव देखा जा सकता था। अश्वत्थामा को हर तरफ नजर रखने के लिए एक उपयुक्त स्थान मिल गया क्योंकि उसे नहीं पता था कि बात कहाँ छिपी है। अब उसे बस बैठकर नागेंद्र के आने का इंतजार करना था। उसने चंद्रमा को देखा और अगली रात के लिए उसके आगमन की भविष्यवाणी की।

रात के आकाश के अंधेरे को जल्द ही चमकते सूरज ने अपने कब्जे में ले लिया
अगले दिन। इस समय, नागेंद्र, परिमल और एलएसडी के साथ, जैसलमेर में प्रवेश कर चुके थे। कुलधरा में छिपाया गया शब्द नागेंद्र की पहुंच से महज 20 किमी दूर था.

जब सूरज फिर से डूब गया और गार्ड यह सुनिश्चित करने के बाद अपना काम खत्म करने वाले थे कि वह स्थान किसी भी पर्यटक से रहित नहीं है, तो गार्डों में से एक ने देखा कि कोई अंधेरे से उनकी ओर आ रहा है।
'कल आना सर. यह दिन के लिए बंद है,' गार्ड ने चेहरे की ओर देखे बिना कहा, लेकिन देखा कि वह आदमी बिना परवाह किए करीब आता रहा।
उन्होंने नागेंद्र का चेहरा देखा, मुस्कुराये और उसकी उम्र देखकर बोले

Machine Translated by Google

व्यंग्यात्मक रूप से, 'सभी ग्रामीण 200 साल पहले गायब हो गए। आप अभी तक यहां क्या कर रहे है?' 'स्कूल खत्म हो गया है।

घर वापस जाओ,' दूसरे गार्ड ने ताना मारा। वे हँसे जोर से, बूढ़े आदमी के गले में लटकी धातु की बोतल को देखकर। उनके साथ नागेंद्र भी हंस पड़े.

नागेंद्र ने जवाब दिया, 'अभी आप जिस पर हंसते हैं वह आपका भविष्य हो सकता है।'

'हमारे भविष्य! यह कम से कम पचास साल दूर है, बूढ़े आदमी। अब बाहर निकलो,' दूसरे गार्ड ने व्यंग्य किया।

नागेन्द्र की आँखें फैल गईं। 'ओह यह है? देखने के लिए पचास साल बहुत लंबा समय है। मैं मैं आपका कल भी नहीं देख सकता, क्योंकि आपके लिए कोई नहीं है।'

'क्या?' गार्ड ने भ्रमित होकर कहा।

'हाँ! मैंने इसे अभी मिटा दिया है. नागेंद्र ने गुस्से में जवाब दिया, ''मुझे पसंद नहीं है कि लोग मुझ पर हंसें।''

ठीक उसी समय, एलएसडी और परिमल ने उन्हें एक तेज स्लैश के साथ समाप्त कर दिया उनके चाकू. फिर वे तीनों सामने के प्रवेश द्वार से अंदर चले गये।
परिमल और एलएसडी ने रात्रि दृष्टि चश्मा पहना और नागेंद्र के लिए परिधि को सुरक्षित करने के लिए अलग-अलग दिशाओं में चले, अपने मिशन के निर्बाध कार्यान्वयन के लिए गांव की रखवाली की।

'सतर्क रहें और दुश्मन से सावधान रहें। मुझे यकीन है कि कोई यहाँ इंतज़ार कर रहा है हमें,' नागेंद्र ने आदेश दिया और फ्लैशलाइट का उपयोग करने का फैसला किया, इस बात से अनजान कि अश्वत्थामा पहले से ही छत से उस पर नजरें गड़ाए हुए था।

तेज़ हवा सता रही थी. सूखी, धूल भरी और सुनसान गलियाँ एलएसडी को भयावह लगीं।

गली के दूसरी ओर, परिमल को किसी आध्यात्मिक चीज़ की उपस्थिति का एहसास हुआ। हर कदम पर उसे ऐसा महसूस होता था मानो कई आँखें उसकी हर हरकत पर नज़र रख रही हों, लेकिन उसे निराशा हुई कि वह किसी आत्मा को नहीं देख सका।

नागेंद्र की नजर एक परित्यक्त मंदिर पर पड़ी। जिस क्षण वह पहुंचा उसे अपनी गर्दन के पिछले हिस्से पर एक अजीब, कांटेदार अनुभूति महसूस हुई। उसकी नज़र मंदिर के पार जाने वाली ढहती दीवारों के साथ-साथ हर सड़क पर पड़ी, लेकिन उसे विश्वास नहीं हुआ, आसपास कोई नहीं था। अश्वत्थामा उस पर चुपचाप नजर रखता था, उस पर हमला करने से पहले उसकी अगली चाल को समझने की कोशिश करता था। जब उन्होंने नागेंद्र पर कड़ी नजर रखी, तो एलएसडी को अश्वत्थामा मिल गया।

'अश्वत्थामा यहाँ है,' एलएसडी ने वायरलेस के माध्यम से नागेंद्र और परिमल को धीमी आवाज़ में सूचित किया।

'अपने शत्रु को जानना आधी जीती हुई लड़ाई है। जैसे उसे आश्चर्य से नीचे ले जाओ वह मुझे ले जाने की योजना बना रहा है। उसे पहला कदम उठाने दो,' नागेंद्र ने आदेश दिया।

Machine Translated by Google

'उसे कोई भी मौका देना एक घातक गलती होगी। आप उसकी सीमा में हैं. वह तुम्हें सीधे गोली मार सकता है,' एलएसडी ने चिंता के साथ कहा।

'नहीं, वह नहीं करेगा! वह किताबें वापस चाहता है। वह मुझे जिंदा पकड़ने की कोशिश करेगा. नागेंद्र ने वायरलेस पर फुसफुसाते हुए कहा, 'अपना स्थान ले लो।'

नागेंद्र बिल्कुल सही थे. अश्वत्थामा अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और छत से सीधे रेतीली गली में कूद गया। उसने अपने हथियार निकाले और नागेंद्र की ओर चल दिया।

'वह आपके दाहिनी ओर है,' एलएसडी ने सूचित किया।

परिमल नागेंद्र के बायीं ओर झुक गया और एलएसडी पहले से ही अश्वत्थामा के पीछे रेंगते हुए उसके दाहिनी ओर स्थित था। इस बात से अनजान कि वह तीन तरफ से घिरा हुआ है, अश्वत्थामा जाल में चला गया। वह उस मंदिर के पास गया जहां नागेंद्र खड़ा था और बोला, 'बस, नागेंद्र!' अश्वत्थामा को अपनी ओर आते देख नागेंद्र अपनी दाहिनी ओर मुड़े।

'पर्याप्त? नहीं! पर्याप्त नहीं। अभी भी छह शब्द बचे हैं. आज मेरे पास एक और होगा. इससे मेरे पास खरीदने के लिए पांच और चीजें बच जाएंगी। एक बार मुझे वे सभी मिल जाएं तो बहुत हो जाएगा।'

'आपने काफी विनाश किया है और काफी अराजकता पैदा की है, लेकिन यह अश्वत्थामा ने चेतावनी दी, 'यह तुम्हारी भ्रष्ट यात्रा का अंत है।'

'तो मुझे मार डालो! आइए इसे ख़त्म करें,'नागेंद्र ने उन्हें चुनौती दी।

अश्वत्थामा नागेंद्र के करीब एक कदम और बढ़ गया। नागेन्द्र चले गये एक तरफ और कहा, 'यही वह निकटतम स्थान था जहाँ आप आ सकते थे। पर्याप्त।'

स्टील के तार से बंधी एक लंबी, चमकदार धातु की छड़ अश्वत्थामा की पीठ को छेदती हुई उसके पेट से बाहर निकल गई। अश्वत्थामा तुरंत अपने घुटनों पर गिर गया और उसे एहसास हुआ कि उसने गलती की है। 'तुम एक मूर्ख हो! मुझे मारा नहीं जा सकता,' अश्वत्थामा ने गर्व से कहा।

'और इसीलिए मैं तुम्हें मारने की कोशिश नहीं कर रहा हूं, मूर्ख,' नागेंद्र ने अपना सिर हिलाया।

तभी, धातु की छड़ कुल आठ धातु की कीलों के साथ एक बड़े ग्रैपलिंग हुक के रूप में खुल गई। परिमल, एक दीवार के पीछे एक झाँकदार छेद के साथ खड़ा था, उसने बंदूक पकड़ रखी थी जिससे धातु की छड़ से गोली चली थी और वह अभी भी स्टील के तार से बंधी हुई थी। उसने एक और ट्रिगर दबाया जिससे तार तेज़ गति से बंदूक पर वापस चला गया। कुछ ही क्षणों में, अश्वत्थामा शूल से फंस गया, जिससे वह गतिहीन हो गया और उस दीवार से चिपक गया जिसके पीछे परिमल काम कर रहा था। उसे ज़मीन से दस फीट ऊपर, उसके शरीर के सामने धातु के कांटों और उसके पीछे की दीवार के बीच पकड़ा गया था। अश्वत्थामा

Machine Translated by Google

नागेंद्र की ओर देखा, जो अपने तेजी से ठीक हो रहे घाव पर मुस्कुरा रहा था, जिसने उसके धड़ को चीरते हुए धातु की छड़ की पकड़ को मजबूत कर दिया था।

अश्वत्थामा ने धातु की कीलों से कुश्ती लड़ी लेकिन उसके तेजी से ठीक होने वाले ऊतकों ने उसके पेट के घाव को ढक दिया, उसकी भुजाएं उसके चारों ओर लगे कांटों की मजबूत पकड़ के कारण प्रतिबंधित थीं और वह अपने हथियारों तक पहुंचने में असमर्थ था।

इस अप्रत्याशित जाल ने उसे असहाय बना दिया था। इस बार उनकी अमरता वास्तव में एक अभिशाप की तरह लग रही थी क्योंकि इससे बाहर निकलना असहनीय रूप से दर्दनाक और कठिन होता जा रहा था। धातु की छड़ और स्टील के तार का जो हिस्सा उसके शरीर के भीतर रह गया था, वह अब उसके अंदर मांस से ढकी हड्डियों की तरह बरकरार था। अश्वत्थामा जानता था कि वह इससे बाहर नहीं निकल पाएगा, कम से कम अकेले तो नहीं। तभी नागेन्द्र ने चमक से प्रकाशित आकाश की ओर देखा

वर्धमान चाँद।

'यह समय है!' उसने विजयी भाव से कहा।

अश्वत्थामा पर नजर रखने के लिए परिमल को बाहर छोड़कर नागेंद्र चला गया
खाली मंदिर के अंदर. थोड़ा आगे चलने पर उसे भवन के मध्य में एक पुराना हवन कुंड मिला। उन्होंने एलएसडी को आंतरिक गर्भगृह के बाहर पहरा देने का आदेश दिया।

हवन कुंड पर गिरती अर्धचंद्र की रोशनी से पता चलता है कि सदियों के अनुपयोग के कारण यह कितना बदरंग और फीका पड़ गया था। शब्द निकालने के लिए नागेंद्र को मंदिर के हृदय को पुनर्जीवित करना होगा। उसने अपने गले से पुरानी धातु की बोतल को हटाया और उसे खोला, और अपने साथ ले जा रहे रक्त को कुंड में डाल दिया और प्रसाद चढ़ाया। कुंड ने तुरंत रक्त को अवशोषित कर लिया और यह दृश्य शिराओं के माध्यम से गर्भगृह के अंदरूनी और बाहरी हिस्से में हर जगह फैलने लगा, हर खंभे का चक्कर लगाने लगा और हर दीवार पर रेंगने लगा। नागेंद्र की भूखी आँखें रक्त पंप करने वाली नसों का पीछा कर रही थीं, जो उसके चारों ओर एक जाल की तरह बढ़ती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि यह स्थान फिर से जीवंत हो उठा है।

ठीक उसी वक्त ओम मुख्य द्वार पर चढ़कर गांव में दाखिल हुआ. उसे जमीन में कंपन महसूस हुआ। चूंकि रेतीले तूफ़ान ने परिसर को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया था, इसलिए वह ज़्यादा कुछ नहीं देख सका, वह झटकों का पीछा करते हुए केंद्र की ओर भागा।

नागेन्द्र ने रगों में बहते खून का पीछा किया, जिससे वह आगे बढ़ा
फिर से मंदिर के बाहर. एलएसडी ने भी पहरा देते हुए नागेंद्र का पीछा किया।
अश्वत्थामा ने देखा कि जर्जर इमारतें गड़गड़ा रही थीं मानो उनके नीचे से भूकंप आ रहा हो। नसें नागेंद्र को एक खुले मैदान में ले गईं जहां खून जमा था और जमीन से बह रहा था

Machine Translated by Google

एक छोटे फव्वारे की तरह. नागेन्द्र जानता था कि यही है; रक्त ने यात्रा की थी और इस शब्द को यहां तक लाया था।

जैसे ही नागेंद्र शब्द हासिल करने के लिए तैयार हो रहे थे, ओम ने उन्हें ढूंढ लिया।
उन्होंने अश्वत्थामा को दीवार पर लगे बड़े हुक से फंसा हुआ देखा और तभी उनकी नजर खून के फव्वारे के पास नागेंद्र पर पड़ी। ओम ने नागेंद्र को शब्द को आत्मसात करने से रोकने के लिए तेजी से दौड़ लगाई। वह नागेंद्र का सिर काटने के लिए मंदिर की छत से कूद गया, लेकिन उसकी तलवार उसकी गर्दन तक पहुंचने से ठीक पहले, एलएसडी की गोली ओम की हथेली में लगी। गोली केवल ओम की उंगली में लगी क्योंकि ओम गति में था। यह दूसरी बार था जब एलएसडी ने ओम को गोली मारी थी। पहला रॉस द्वीप पर था। एलएसडी का निशाना चूक गया, लेकिन ओम भी चूक गया, क्योंकि घर्षण के कारण उसकी तलवार पर पकड़ ढीली हो गई, जिससे वह जमीन पर गिर गया और उसकी हथेली पर खून की एक पतली रेखा दिखाई दे रही थी। ओम ने अपने पैरों पर वापस आने में कोई समय बर्बाद नहीं किया, लेकिन तब तक, नागेंद्र पहले ही अपना हाथ खून में डुबो चुका था, जो उसकी त्वचा में समा गया था, जिससे एक और शब्द प्रकट हुआ: सकल जगत।

वेद व्यास इस बार स्थान और शब्द दोनों के बारे में सही थे।

वास्तुकला की अब खाली नसें चटकने लगीं। पुरानी इमारतें एक-एक करके रेत में गिरने लगीं।

नागेंद्र ने ओम और उसकी लहूलुहान हथेली को देखा और उसकी ओर लपका
उन्मत्त, भूखा जानवर, जबकि ओम ने फिर से अपनी तलवार उठाई और अश्वत्थामा को मुक्त करने के लिए उसकी ओर दौड़ पड़ा। ओम देख सकता था कि नागेंद्र उसकी ओर आ रहा है और इसलिए उसने अपने घाव को ढक दिया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि नागेंद्र को उसके खून की एक भी बूंद न मिले। परिमल अपने बंदूक बैग की ओर भागा और एलएसडी से गांव के मुख्य प्रवेश द्वार के पास गार्ड के वाहनों में से एक को खड़ा करने के लिए कहा।
एलएसडी ने अनुपालन किया और गेट के लिए चला गया। परिमल की प्राथमिकता ओम पर हमला करना नहीं बल्कि नागेंद्र का बचाव करना था, इसलिए वह भी उसके पीछे भागा.

ओम के पास नेतृत्व था और वह उस दीवार तक पहुंच गया जिस पर अश्वत्थामा को सूली पर लटकाया गया था। वह असमान ईंटों पर चढ़ गया और उसे छुड़ाने के लिए अपनी तलवार के एक ही झटके से स्टील के तार को काट दिया। नागेंद्र ने जबरदस्त ताकत से ओम को पकड़ लिया, जिससे वह जमीन पर गिर गया और उसकी तलवार उसकी बांह की पहुंच से दूर जा गिरी। ओम नागेंद्र से खुद को बचाने के लिए संघर्ष कर रहा था, जो एक वहशी से बेहतर व्यवहार नहीं कर रहा था, लेकिन इस नंगे युद्ध में ओम का दबदबा दिख रहा था। जब तक परिमल आया, उसने देखा कि अश्वत्थामा अपने घुटनों पर है, स्टील की छड़ को अपने अंदर पकड़ रखा है और उसे बाहर निकालने की कोशिश कर रहा है। परिमल को पता था कि अश्वत्थामा के वापस अपने पैरों पर खड़े होने के बाद उनके पास उन्हें हराने का कोई मौका नहीं होगा। वह अश्वत्थामा के पास गया और उसके चेहरे और सिर पर अपनी बंदूक की मैगजीन तक कई गोलियां मारीं

Machine Translated by Google

कारतूस ख़त्म हो गए, उन्हें खरीदने के लिए कुछ और समय चाहिए। अश्वत्थामा एक लाश की तरह जमीन पर गिर गया और परिमल नागेंद्र को बचाने के लिए मुड़ा, जो अब पूरी तरह से ओम पर हावी हो गया था और उसके पास खुद को बचाने के लिए कोई ताकत नहीं बची थी। ओम ने नागेंद्र को पीटना जारी रखा, जिसका चेहरा अब उसके ही खून से लथपथ था। जब तक परिमल ने ओम को अपने से दूर खींचा, तब तक नागेंद्र मृत शरीर की तरह निढाल होकर पड़ा रहा.

एलएसडी मृत गार्डों के पास पहुंचा और चाबी के लिए उनकी लाशों को थपथपाना शुरू कर दिया। उसे रिमोट लॉक वाली एक चाबी मिली और उसने कार की पहचान करने के लिए अनलॉक बटन दबाया। जैसे ही कार की लाइटें बीप के साथ चमकीं, उसने बटन दबाया, अंदर गई और नागेंद्र और परिमल को बचाने के लिए गांव की धूल भरी सड़क पर लापरवाही से गाड़ी चलाने लगी। वह यह संकेत देने के लिए हॉर्न बजाती रही कि मदद आने वाली है।

ओम अब परिमल से लड़ रहा था, जिसके पास बेहतर युद्ध रणनीति थी, लेकिन परिमल भी जानता था कि उसके पास केवल अश्वत्थामा के ठीक होने और फिर से खड़े होने तक का समय था। उसने ओम को नीचे गिराने के लिए अपनी पूरी ताकत से उसे पीटना शुरू कर दिया। चेहरे पर कुछ घातक वार करने के बाद ओम जमीन पर गिर पड़ा। दूसरी ओर, नागेंद्र कुछ ताकत हासिल करने में कामयाब रहे। वह उठा और जहां ओम गिरा था, उससे कुछ फीट दूर बैठ गया।

परिमल ने ओम की तलवार उठाई और अश्वत्थामा को देखने के लिए पीछे मुड़ा, जो लगभग पुनः ठीक हो गया था। उसके पास अश्वत्थामा को फिर से गिराने के लिए बहुत कम समय था और वह खुद को त्यागने की कगार पर था क्योंकि उसके विरोधियों की अमरता ने धीरे-धीरे उसकी इच्छा को ग्रहण कर लिया था। उसके कंधे थकावट से झुक गए और वह तेजी से हांफने लगा। वह नहीं जानता था कि वह इस अमानवीय संघर्ष को कब तक झेल पाएगा। तभी, परिमल की ताकत बढ़ गई जब उसने एक कार के तेज़ हॉर्न को सुना। वह जानता था कि यह कोई और नहीं बल्कि एलएसडी था जो उनके बचाव में आ रहा था। इसका मतलब यह था कि परिमल को तब तक नागेंद्र की रक्षा करनी होगी जब तक कि एलएसडी उन तक न पहुंच जाए। हार्न की आवाज से उसने अनुमान लगाया कि दूरी ज्यादा नहीं है। काफी घायल परिमल ने ओम को लहूलुहान हालत में जमीन पर गिरा दिया और लड़खड़ाते हुए अश्वत्थामा की ओर बढ़ा।

कमजोर और थके हुए नागेंद्र ने ओम को असहाय देखा और फिर से उसकी ओर बढ़े। उसके चेहरे पर हर चोट से खून बह रहा था, जबकि धूल के गुच्छों ने उसके चेहरे को ढँक दिया था, खून को भिगोते हुए वह तेजी से चारों तरफ ओम की ओर रेंग रहा था, जैसे कोई गिरगिट अपने शिकार पर घात लगा रहा हो। जब ओम अपने पैरों पर खड़ा हुआ तो वह अपने पीछे नागेंद्र को नहीं देख सका, लेकिन अश्वत्थामा दोनों को देखने में सक्षम था, नागेंद्र ओम और परिमल के करीब आ रहा था

Machine Translated by Google

उसकी ओर दौड़ रहा हूँ. जैसे ही नागेंद्र ने पिशाच की तरह ओम के खून के लिए उसकी गर्दन पर हमला किया, अश्वत्थामा ने अपनी बंदूक निकाल ली और परिमल ने अश्वत्थामा पर तलवार से उसका गला काटने के लिए हमला कर दिया। उसके पास केवल दो विकल्प थे; या तो नागेंद्र को गोली मारो और ओम की मदद करो या खुद का बचाव करो और नागेंद्र को ओम का खून लेने दो। वह जानता था कि उसके पास दो लक्ष्य हैं लेकिन दोनों को मार गिराने के लिए पर्याप्त समय नहीं है, इसलिए परिमल की तलवार उसके गले से टकराने से पहले वह केवल एक ही गोली मार सका। नागेंद्र ने ओम पर और परिमल ने अश्वत्थामा पर एक साथ हमला किया। नागेंद्र ओम की पीठ पर चढ़ गया और फिर अपनी बांहों से उसकी गर्दन एक तरफ कर दी। नागेंद्र ने अपने दांत ओम की खुली गर्दन में गड़ा दिए और ओम दर्द से कराह उठा, लेकिन इससे पहले कि उसका खून नागेंद्र की जीभ को छू पाता और वह ओम के खून का स्वाद ले पाता, एक गोली नागेंद्र के चेहरे पर लगी, जिससे उसका दिमाग सभी दिशाओं में फैल गया। अश्वत्थामा कुछ क्षण पहले ही निशाना लगाने और ट्रिगर खींचने में कामयाब हो गया था, लेकिन एक बार फिर वह बेजान हो गया और परिमल ने उसका गला काट दिया। जब नागेंद्र का चेहरा फट गया, तो उसके खून की एक बूंद ओम के होंठों के पार चली गई और उसने उसके सिर के अंदर चमकती लाखों छवियों के साथ उसे घायल कर दिया। कुछ ही सेकंड में, ओम अपने सिर के अंदर फूट रहे दृश्यों के ज्वालामुखी से स्तब्ध रह गया।

ॐ की स्मृति के द्वार के पीछे कृपाचार्य और परशुराम थे
एक बड़े भूकंप के कारण नष्ट हो गया। विभिन्न परिदृश्य, लोग और जानवर अपने चारों ओर उभरने लगे और कुछ ही सेकंड में गायब हो गए।
यह समझने में असमर्थ कि वे क्या देख रहे थे या क्या हो रहा था, वे निष्क्रिय पर्यवेक्षक बने रहे जैसा कि उन्हें होना चाहिए था।

अचानक, उनकी बाईं ओर, उन्हें एक चट्टान दिखाई दी, जिस पर एक मजबूत कद-काठी वाला एक आदमी खड़ा था, जो किसी को झुका रहा था। परशुराम और कृपाचार्य भ्रमित थे क्योंकि उन्हें अपने आसपास कोई नहीं दिख रहा था। वे दबे पाँव करीब आये जब तक उन्हें अच्छा दृश्य नहीं मिल गया। नीचे घाटी में एक विशाल जानवर खड़ा था, जो उस आदमी के सम्मान में झुक गया। इसमें एक मादा कुत्ते का सिर था, जिसके जबड़े तेज़ थे और चेहरे पर आकर्षक विशेषताएं थीं। उसकी मोर की गर्दन दूर से चमकीली नीली चमक रही थी और उसकी पीठ एक बैल के सफेद कूबड़ की तरह मुड़ी हुई थी क्योंकि वह तीन अंगों, एक हाथी, एक बाघ और एक घोड़े पर खड़ा था। चौथा अंग एक उठा हुआ मानव हाथ था जिसमें कमल था, जिसे विचित्र प्राणी चट्टान पर आदमी को पेश कर रहा था। उसके सिर के नीचे से एक पूँछ निकली जो वास्तव में एक साँप थी। इस विचित्र, भयानक प्राणी को देखकर परशुराम और कृपाचार्य भयभीत हो गए लेकिन मोहित भी हो गए।

'हमने बर्थमार्क वाले लड़के को एक बच्चे से बड़ा होते हुए देखा है।
लेकिन ओम का कोई निशान नहीं है. ओम अपने ही अतीत से कैसे गायब हो सकता है?'

Machine Translated by Google

कृपाचार्य ने अपनी चिन्ता व्यक्त की।

इससे पहले कि परशुराम कुछ कह पाते, उनके सामने का दृश्य गायब हो गया और हवा के तेज़ झोंके ने उन्हें अब खुले दरवाजे के बाहर फेंक दिया।

कुलधरा में सब कुछ धूल-धूसरित हो गया था. परित्यक्त गांव, जो इसके अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करने वाली केवल कुछ खड़ी इमारतें थीं, अब इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है, रेत से रेत कर रेगिस्तान में मात्र टीले बना दिए गए हैं।

जब परिमल ने नागेंद्र को ओम के कंधे से मृत अवस्था में गिरते देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। एलएसडी अश्वत्थामा के शरीर पर दौड़ी और परिमल के पास रुकी, जो अपने स्वामी की रक्षा करने में असमर्थ होने की विफलता के बोझ तले दबा हुआ था। नागेंद्र मर चुका था, परिमल बिखर गया था, ओम और अश्वत्थामा न तो जीवित थे और न ही मरे, लेकिन एलएसडी की अभी भी उसकी भावनाओं, ताकत और कार्ययोजना पर अच्छी पकड़ थी। वह यह जांचने के लिए पीछे मुड़ी कि क्या अश्वत्थामा और ओम ने कोई हलचल दिखाई है। ओम को ऐसा लग रहा था मानो वह अनंत काल के लिए गिर गया हो, मानो सम्मोहित हो या सपना देख रहा हो, और अश्वत्थामा थोड़ा हिल रहा था, उसकी हड्डियाँ टूटी हुई थीं और उसका गला कटा हुआ था। यह संकेत एलएसडी के लिए उस समय का आकलन करने के लिए पर्याप्त था जब अश्वत्थामा का चेहरा उनके जीवन का अंतिम दृश्य बन गया था। उसने परिमल को स्तब्धता से बाहर लाने के लिए उसका नाम चिल्लाया और उसे कार में बैठने का आदेश दिया। परिमल धीरे से उठा और लड़खड़ाते हुए अंदर बैठा, फिर भी खोया हुआ लग रहा था। एलएसडी ने नागेंद्र की बिना चेहरे वाली लाश तक पहुंचाया। वह बाहर निकली, उसके सिरविहीन शरीर को आलू की बोरी की तरह खींचा और ट्रंक के अंदर डाल दिया। परिमल, अभी भी स्तब्ध और निरुत्तर, चुपचाप बैठा रहा और गुमसुम रहा। एलएसडी ने ट्रंक बंद किया और कुलधरा से बाहर चला गया, और रात में गायब हो गया।

उनके चले जाने के बाद, ओम शांति से खड़ा हुआ और सीधे चलने लगा अगर यात्रा पर निकल रहे हैं. अश्वत्थामा, जो अपनी आँखें खुली करके एक शव की तरह जमीन पर लेटा हुआ था, ने ओम को दूर जाते देखा। ओम तब तक चलता रहा जब तक कि अँधेरे ने उसे घेर नहीं लिया।

कुछ क्षण बाद, अश्वत्थामा गहरी साँस लेते हुए उठा। वह अपनी रक्षात्मक मुद्रा में उठ खड़ा हुआ और उसे एहसास हुआ कि वे सभी चले गये थे। अश्वत्थामा को पता था कि ओम किस रास्ते पर गया है, इसलिए वह उसी रास्ते पर चल पड़ा।

आधे मील की यात्रा में, अश्वत्थामा ने ओम को अकेला खड़ा पाया, स्तब्ध, आहत और अंधेरे में घूर रहा था। उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उसके साथ क्या गलत हुआ है, अश्वत्थामा ने उसे अपने कंधों से पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया और मानो गहरी समाधि से बाहर आ गया हो, ओम होश खो बैठा और

Machine Translated by Google

जमीन पर गिर गया. अश्वत्थामा ने ओम को अपने कंधों पर उठाया और जीवन का कोई निशान न छोड़ते हुए अंधेरे में गायब हो गया।

एलएसडी ने ट्रंक को बड़ी बर्फ की ईंटों से भरने के लिए जैसलमेर में रुका शरीर को ठंडा रखें. फिर वह चकित परिमल और नागेंद्र की लाश को सीधे कच्छ की खाड़ी तक ले गई और वापस पनडुब्बी तक ले गई।

जैसे ही वे पनडुब्बी में दाखिल हुए, परिमल ने नम्रता से कहा, 'नागेंद्र मर गया है और कारण हमेशा के लिए खो गया है।'

एलएसडी ने एक पल के लिए परिमल की ओर देखा और उसे निषिद्ध खोलने के लिए कहा चैम्बर का दरवाज़ा. परिमल असमंजस में था क्योंकि नागेंद्र के अलावा किसी और को इसमें प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। एलएसडी ने उस बैग को खोला जिसमें नागेंद्र के अवशेष थे और उसे प्रतिबंधित कक्ष के ठीक बगल वाले कक्ष के अंदर ले आया।

नागेंद्र की मौत को चौबीस घंटे से अधिक समय हो जाने के कारण शव से सड़न की दुर्गंध आ रही थी. परिमल अभी भी इतना उलझन में था कि यह जानने के बावजूद कि दरवाजा खुलने पर उन्हें अत्यधिक दर्द और नकारात्मकता का सामना करना पड़ेगा, फिर भी उसने बिना किसी सवाल या अपेक्षा के वही किया जो उससे कहा गया था।

एलएसडी और परिमल ने यह सब आंखों से आंसू और खून की तरह सहन किया उनके नाक और कान नीचे की ओर बह गए। उनके उदास विचारों ने उन्हें घेर लिया, पहले से कहीं अधिक मजबूत। ऐसा प्रतीत होता था कि वे वशीभूत और शक्तिहीन हैं और वे अपनी इच्छा से केवल अपनी आँखों को ही हिला सकते थे। उन्होंने कक्ष के दरवाजे की ओर देखा तो एक आकृति उसमें से निकल रही थी। घने सफेद बालों और लंबी दाढ़ी के बीच स्थित क्रूर आँखों वाली आठ फीट लंबी इकाई को देखते हुए, जैसे ही उन्होंने उस पर अपनी नज़र डाली, वे स्तब्ध रह गए। उसने नागेंद्र के शव का सड़ता हुआ मांस देखा और फिर परिमल के करीब जाकर उसकी आंखों में गहराई से देखने लगा। परिमल ने अनिच्छा से उसे वह सब कुछ दिखाया जो कुलधरा में हुआ था जिसके कारण नागेंद्र की मृत्यु हुई। जबकि आकृति ने घटनाओं की श्रृंखला देखी, परिमल की आँखों से तब तक आँसू बहते रहे जब तक कि उसकी आँखों का सफेद भाग रक्तरंजित नहीं हो गया।

तब आकृति ने परिमल के सिर पर अपना हाथ रखा और तभी वह वहीं था जादू से मुक्त हो गए. परिमल अपने घुटनों के बल गिर गया और ऑक्सीजन की कमी के कारण जोर-जोर से साँस लेने लगा। आकृति एलएसडी की ओर मुड़ गई और उसे भी मुक्त कर दिया। एलएसडी परिमल के पास पहुंचा, उसे सांस लेने में मदद की और उसका खून पोंछा।

उन्हें अपना संयम वापस पाने में एक पल लगा। वह आकृति तब तक धैर्यपूर्वक वहीं खड़ी रही जब तक कि वे दोनों अपने पैरों पर वापस खड़े नहीं हो गए। 'उसे अंदर लाओ,' नागेंद्र की सड़ी हुई लाश की ओर इशारा करते हुए आकृति ने आदेश दिया। एलएसडी नागेंद्र के शरीर को उठाने के लिए आगे बढ़ा और परिमल ने भी उसका अनुसरण किया। उन्होंने शव उठाया और चैंबर में चले गए। कक्ष क्षमता से अधिक विशाल था

Machine Translated by Google

इसके दरवाजे के आकार से बताओ. परिमल यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि एलएसडी को पता था कि शव को कहाँ रखना है, जैसे कि वह पहले से ही चेंबर को जानती हो। उन्होंने शव को एक आयताकार पीतल की सतह पर रखा।

जब परिमल की नजर इधर-उधर घूमी तो अंदर का नजारा देखकर वह हैरान रह गया। कमरे की दीवारों पर शेतपाल गांव में उनकी हवेली की दीवारों के समान पेंटिंग और तस्वीरें प्रदर्शित थीं। फ्रेम में उनके पूर्वजों को उनके पसंदीदा जानवरों और आंशिक रूप से घूंघट वाले चेहरे के साथ देखभाल करने वाले को उनके पूर्वजों के पीछे खड़ा दिखाया गया था। एक को छोड़कर सभी फ्रेम परिमल के घर जैसे ही थे। इसमें केयरटेकर अपने पिता के पीछे अपना चेहरा उजागर किए खड़ा था। परिमल के पिता के पीछे जो खड़ा था, वह नागेंद्र ही था. परिमल हतप्रभ रह गया. वह जानना चाहता था कि आख़िर वह आदमी कौन था जिसके आदेशों का एलएसडी चुपचाप पालन करता रहा। वह शांत और संयमित थी, जैसे कि यह कोई और सामान्य घटना हो। परिमल के दिमाग में सवालों की बाढ़ आ गई लेकिन एलएसडी शांत नहीं हुई, जैसे कि उसके पास पहले से ही सभी उत्तर हों।

परिमल एलएसडी की ओर चलने वाला था और पूछ रहा था कि वे क्या कर रहे थे और वह आदमी कौन था, लेकिन एक कदम उठाने से पहले ही गहरी आवाज ने उसका सारा ध्यान खींच लिया। 'लतिका, तुम्हें पता है कि अब क्या करना है।' एलएसडी उसके आदेशों का उतनी

ही ईमानदारी से पालन करती थी जितनी वह नागेंद्र के आदेशों का पालन करती थी। उसने परिमल को अपने साथ चैंबर से बाहर चलने का इशारा किया। परिमल ने चुपचाप उसके निर्देशों का पालन करने का फैसला किया। वे चैंबर से बाहर आये और एलएसडी ने उसे फिर से बंद कर दिया।

परिमल ने उस पर अपने सवालों की बौछार कर दी, जिनमें से पहला था, 'वह कौन था?' श्रीमती बत्रा के पास दो

दशक से अधिक समय के बाद 2020 में घटना के वास्तविक समय के बारे में पृथ्वी से पूछने के लिए एक ही सवाल था, 'वह कौन था?' पृथ्वी ने वही उत्तर दिया जो एलएसडी ने परिमल को दिया था, 'श्री

शुक्राचार्य!' उत्तेजित होकर श्रीमती बत्रा लगभग चिल्ला उठीं, 'शुक्राचार्य! अब वह कौन है और आप मुझे यह क्यों बता रहे

हैं? मैंने तुमसे पूछा था कि तेज कहाँ है? क्या वह जीवित है?' श्रीमती बत्रा हर गुजरते मिनट के साथ अपना धैर्य खोती जा रही थीं और यह जानने का इंतजार कर रही थीं कि उनके पति डॉ. बत्रा जीवित भी हैं या नहीं; लेकिन पृथ्वी ने फिर भी संयम बनाए रखा और धैर्यपूर्वक उत्तर दिया।

'यह जानने के लिए कि डॉ. बत्रा के साथ क्या हुआ, आपको यह समझना होगा कि 2020 में उनके लापता होने का कारण क्या था।' 'शुक्राचार्य

असुरों के गुरु, उनके महायाजक और गुरु हैं, सर्वोच्च भगवान के उपासक, लेकिन वे इसके समर्थक बने हुए हैं

Machine Translated by Google

सतयुग से असुर। नागेन्द्र शुक्राचार्य के सर्वोत्तम शिष्य थे।

शुक्राचार्य पहली बार नागेंद्र से सतयुग में मिले थे, इससे पहले नागेंद्र उस व्यक्ति की लाश को धन्वंतरि और सुश्रुत के पास ले गए थे, जिन्हें आप ओम शास्त्री के नाम से जानते हैं, जिन्होंने ओम को पुनर्जीवित किया और उसका नाम मृत्युंजय रखा। सत्य युग में, शुक्राचार्य को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले मंत्र को प्राप्त करने के बाद लोगों को पुनर्जीवित करने की क्षमता के लिए जाना जाता है। उन्होंने यह दुर्लभ विज्ञान स्वयं भगवान शिव से प्राप्त किया था, जिन्हें मृत्यु के विजेता के रूप में जाना जाता है।'

जैसे ही एलएसडी ने परिमल को बताया कि निषिद्ध कक्ष में शुक्राचार्य थे, परिमल का मन सवालों और संदेह से भर गया।

'आप यह कैसे जानते हैं? या मुझे पूछना चाहिए कि मैं तुम्हारे बारे में और क्या नहीं जानता?' 'तुम्हारे पास वह सब कुछ जानने के लिए

पर्याप्त समय होगा जो तुम नहीं जानते, लेकिन अभी, हमें अमावस्या से पहले ओम का खून प्राप्त करने की आवश्यकता है। तभी नागेंद्र को वापस लाया जा सकता है,' एलएसडी ने कहा।

'क्या तुम्हें पता भी है कि तुम क्या कह रहे हो? यह एक आत्मघाती मिशन है. हम एक बार रॉस द्वीप पर और फिर कुलधरा में उनका सामना हो चुका है। हमारी मृत्यु निश्चित है और वे अमर हैं। अगर हम इसके साथ आगे बढ़े तो हमारी हार अवश्यंभावी है। इसके अलावा, हम ओम को कैसे खोजेंगे?'

एलएसडी ने उसकी हथेली पकड़ी और उसमें एक पेन ड्राइव रख दी। 'मैंने कभी नहीं कहा कि हम ओम शास्त्री को खोजने की जरूरत है।'

परिमल ने हैरान होकर झिझकते हुए पेन ड्राइव ले ली. नागेंद्र की मृत्यु, शुक्राचार्य का परिचय, शुक्राचार्य के निषिद्ध कक्ष में परिमल की वंशावली के फ्रेम, एलएसडी के अभी तक खोजे नहीं गए रहस्य और नागेंद्र का संभावित पुनरुत्थान एक नश्वर व्यक्ति के लिए एक दिन में अवशोषित करने के लिए पहले से ही बहुत कुछ था, लेकिन पेन ड्राइव में परिमल के लिए और भी बहुत कुछ था। उसने इसे लैपटॉप में प्लग किया और पाया कि इसमें केवल एक फ़ाइल थी। उन्होंने फ़ाइल आइकन पर क्लिक किया, जो उन्हें रॉस द्वीप पर पूछताछ कक्ष में वापस ले गया, जहां उन्हें दिखाया गया कि कैसे डॉ. बत्रा ने फर्श से गिरा हुआ खून इकट्ठा किया और विस्फोटों से पहले सुविधा से बाहर निकल गए।

'आपने हमेशा सवाल किया कि हम शब्दों की तलाश करने के बजाय ओम का खून पाने के लिए उसकी तलाश क्यों नहीं कर रहे थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं डॉ. बत्रा को खोज रहा था!' एलएसडी ने अपने हाथ ऊपर कर दिये।

'क्या हमने उसे ढूंढ लिया?' परिमल ने पूछा.

'हाँ! हाल ही में मिला और पकड़ा गया,' उसने गर्व से कहा।

'और?' परिमल ने पूछा.

Machine Translated by Google

एलएसडी ने उत्तर दिया, 'और हमें उससे अपनी पत्नी का स्थान बताने के लिए कहना होगा।'

'कहाँ है वह?' यह सबसे स्पष्ट सवाल था जो परिमल पूछ सकता था और उसने पूछा।

'यहीं; मेरे पीछे आओ,' एलएसडी ने उत्तर दिया और चलना शुरू कर दिया।

तभी उनकी पनडुब्बी सामने आ गई। एलएसडी उसे खुले डेक पर ले गया, जहां वे दूर से एक स्पीडबोट को अपनी ओर आते देख सकते थे।

हालाँकि उसका सिर सवालों से घिरा हुआ था, लेकिन परिमल की जुबान बंद थी क्रोध से उसका जबड़ा भिंच गया था। एलएसडी उसके गुस्से को समझ सकता था क्योंकि यह उसके पूरे चेहरे पर लिखा हुआ था। उसने उसके आचरण को संबोधित करने का निर्णय लिया। 'यह क्या है?'

'आप कौन हैं?' इस बार, एलएसडी की तरह, परिमल ने सीधे पीछा करना शुरू कर दिया जब वे उसके केबिन में मिले थे तब किया था।

एलएसडी ने जवाब देने से पहले एक गहरी सांस ली, 'क्या आपने हर फ्रेम में अपने पूर्वजों के पालतू जानवरों और देखभाल करने वाले, जो नागेंद्र थे, के फ्रेम देखे?' 'हां, मैंने किया, लेकिन मेरा सवाल यह है कि आप कौन हैं?' परिमल को उसकी पहेलियों

से चिढ़ थी.

'क्या आप उन सभी पालतू जानवरों के नाम जानते हैं?' एलएसडी ने पूछा.

'मुझे कुछ याद हैं,' परिमल ने याद करने की कोशिश करते हुए कहा।

'मुझे वे सभी याद हैं,' उसने कहा और जारी रखा, 'आपके पूर्वजों के पास 1687 में जो स्टेलर समुद्री गाय थी, उसका नाम आठवी था। 1557 में भालू मकाक को कलाप कहा जाता था। आपके परिवार ने 1926 में जिस मगरमच्छ को पाला था उसका नाम पदम था। आपके परदादा के पास जो नेवला था उसका नाम साबरी था और उससे पहले उनके पिता के पास जो चित्तीदार उकाब था उसका नाम दर्श था।'

'तुम मुझे यह सब क्यों बता रहे हो?' परिमल ने झुँझलाकर सिर हिलाया।

'क्योंकि आप और आपके पूर्वज उन सभी फ़्रेमों में जो भी पालतू जानवर देख रहे हैं, वह मैं ही रहा हूं। आपके पिता और आप जिन पालतू जानवरों के साथ खेलते थे उनमें से आखिरी पालतू जानवर बादल था। परिमल! मुझे वह समय याद है जो मैंने बचपन में आपके साथ अपनी मृत्यु तक बिताया था। आपके प्रबंधक शुभेंद्र, जिनसे मैंने हमारी शादी की कार्यवाही करने का अनुरोध किया था, उन्होंने ही सेनेका सफेद हिरण के मेरे शरीर का उचित अंतिम संस्कार किया था। उसने वास्तव में मेरे शव को नागेंद्र द्वारा खाए जाने से बचाया। ऐसा करने पर उसे पीटा भी गया. मुझे याद है कि जब उन्होंने तुम्हें बताया था कि मैं मरने वाला हूं तो तुम मेरे पास बैठकर कैसे रोए थे।' उसके द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्द ने परिमल को और भी अधिक भ्रमित कर दिया और जब एलएसडी ने बात करना जारी रखा तो उसने अविश्वास के साथ सब कुछ सुना।

Machine Translated by Google

'हर फ्रेम में जो केयरटेकर खड़ा था, वह आपके पूर्वजों का नौकर नहीं था। एलएसडी ने बताया, 'जो उनके पीछे खड़ा था वह दो पालतू जानवरों का असली मालिक था।'

'दो पालतू जानवर?' परिमल ने हैरान होकर पूछा।

'नागेंद्र के पास हमेशा दो पालतू जानवर थे, परिमल! एक जिसने अपना शरीर बदल लिया और दूसरा जिसने अपनी आत्मा बदल ली; एक मैं और एक तू। आपको वह कहानी सुनाई गई थी जब लोपाक्ष और सरपुती नागेंद्र से मिले थे और वह एक दृष्टि और एक मानव शरीर के बदले में उनकी सेवा करने के लिए सहमत हुए थे। उस घटना के समय नागेंद्र के पास जो काला शेर बैठा था, वह मैं ही था। मैं उतना बूढ़ा हूं.

'मालती नाम की मृत पत्ती वाली तितली, जब मिलारेपा पहली बार नागेंद्र से मिला था, और कर्क नाम की छिपकली और कुरूप नाम का लकड़बग्घा, जिसने धन्वंतरि की तब तक रक्षा की थी जब तक कि मिलारेपा उसे मार कर भाग नहीं गया था - वे सभी मैं थे।

'आखिरकार एक इंसान के रूप में जन्म लेने के लिए हजारों जन्म लेने पड़ते हैं। गुजरने के बाद जानवरों, सरीसृपों, पेड़ों, कीड़ों और पक्षियों के रूप में हजारों जीव हैं, यहाँ मैं एक इंसान के रूप में हूँ। आपके वंश के पहले बच्चे, आधे मनुष्य और आधे साँप लोपाक्ष से शुरू करके, आपके आने तक, मैंने नागेंद्र के साथ यह सब देखा है, इस श्राप के साथ कि मैं अपने पिछले जन्मों में से किसी को भी कभी नहीं भूलूंगा।' 'क्यों?' परिमल के पास अभी भी सारे उत्तर नहीं थे.

'उस मुक्ति के कारण जिसके लिए मुझे धोखा दिया गया था,' एलएसडी ने उत्तर दिया।

स्पीडबोट रुकी और तेज, जिसे बंदी बना लिया गया था, को नाव पर लाया गया। परिमल और एलएसडी को दूसरे कक्ष में जाने के लिए अपनी बातचीत बीच में ही रोकनी पड़ी, जहां तेज को लाया गया था। जैसे ही वे अंदर गए, एक वरिष्ठ व्यक्ति उनका स्वागत करने के लिए आगे आया।

'हमने अब तक क्या पाया है?' एलएसडी ने पूछा.

'ज्यादा कुछ नहीं, बस कुछ पते, मेडिकल परीक्षण के कागजात का एक गुच्छा, उसके आईडी कार्ड, मोबाइल फोन, कुछ पैसे और एक गिनी पिग।'

'हमें उसके पास ले चलो,' एलएसडी ने कहा।

वे अंदर घुसे और डॉ. बत्रा को कुर्सी से बांध दिया। तेज ने उन्हें देखा और व्यंग्य किया, 'अगर तुम चाहो तो मुझे मार डालो। मैं तुम्हें यह नहीं बताऊंगा कि मेरी पत्नी कहां है।' एलएसडी उनके पास गया, उनके हाथ खोले और

कहा, 'आपने हमें गलत समझा है, डॉ. बत्रा। हम आपको या आपकी पत्नी को बिल्कुल भी ठेस नहीं पहुँचाना चाहते। हम तो तुम्हारी पत्नी भी नहीं चाहते. हम बस उस खून के कुछ औंस चाहते हैं जिसने उसे बचाया।

इतना ही। हम बस वही चाहते हैं जो हमें चाहिए और मुझ पर विश्वास करें, उसके लिए हम जीवन नहीं लेना चाहते हैं; हम बस एक को बचाना चाहते हैं। आपकी सहायता में हमारी मदद करें । . . और आपकी पत्नी।'

Machine Translated by Google

डॉ. बत्रा अपने विकल्पों पर विचार करते हुए चुप रहे। यह महसूस करते हुए कि उसे उस पर और भी अधिक दबाव डालना होगा, एलएसडी ने आगे कहा, 'हम एक ऐसी जिंदगी बचाने की कोशिश कर रहे हैं जो हमारे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी आपके लिए आपकी पत्नी की जिंदगी है। अगर वह मर गई तो क्या आपके लिए कुछ भी सार्थक होगा? या इसकी कल्पना करें - हम उसे केवल उस गलती के लिए हर दिन और हर रात यातना देने के लिए पकड़ते हैं जो आपने हमें समय पर खून की कुछ बूंदें न देकर की थी। हर गुजरते मिनट के साथ समय बर्बाद हो रहा है, डॉ बत्रा, और अगर मैं जिसे बचाने की कोशिश कर रहा हूं उसे खो दूं, तो मैं आपसे वादा करता हूं, मैं आपको तब तक मरने नहीं दूंगा जब तक कि मैं आपकी पत्नी को ढूंढ नहीं लेता, उसे आपके पास लाऊंगा और उसे लेवल नहीं दूंगा उस दुःख और पीड़ा के बारे में जिसे आप तब तक केवल कहानियों में ही मानते थे जब तक आप स्वयं मुझसे उसे मारने की विनती नहीं करते। और तभी मैं उसे मार डालूँगा. . . ठीक आपकी आंखों के सामने. . . तुम्हें मारने से पहले.

'यह आपके लिए एक आसान विकल्प है, डॉ. बत्रा - एक पुरस्कार और आपके लिए सबसे कीमती जीवन के बीच। आप दोनों के बीच बातचीत कर लें ताकि हम आपके बारे में फैसला कर सकें,' एलएसडी के अचानक निंदनीय स्वर ने खतरे को हवा में छोड़ दिया।

तेज ने कहा, 'तुम्हें खून चाहिए, मेरी पत्नी नहीं।'

'हाँ! लेकिन वह उसमें है। इसलिए हम उसे चाहते हैं,' एलएसडी ने जोर देकर कहा।

'तो, अगर मैं तुम्हें खून दे दूँ तो तुम उसका पीछा नहीं करोगे या मुझे मार नहीं डालोगे?' तेज ने उससे आश्वासन मांगा।

'हम क्यों करेंगे? हमने अपनी भोजन तालिकाएँ साझा कीं। हमने आपकी प्रशंसा की. आप देश के लिए एक संपत्ति हैं और हम आपके खिलाफ नहीं हैं,' एलएसडी धीरे-धीरे डॉ. बत्रा के करीब आ गया।

यह जानते हुए कि यही एकमात्र रास्ता है, डॉ. बत्रा ने एलएसडी को अपने अलावा और कुछ बताया
पत्नी, पूह, गिनी पिग, का भी खून था।

एलएसडी को आख़िरकार वही मिला जो वह चाहती थी। उन्हें गिनी पिग का परीक्षण करने और यह पुष्टि करने में कुछ घंटे लग गए कि डॉ. बत्रा झूठ नहीं बोल रहे थे। एक बार जब उन्हें वह मिल गया जो वे चाहते थे, एलएसडी गिनी पिग के साथ अकेले डॉ. बत्रा के पास वापस आये और कहा, 'मैंने आपसे कहा था कि हम राष्ट्र के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन यह केवल आधा सच था, डॉ. बत्रा। बात यह है कि हम सिर्फ एक राष्ट्र के नहीं बल्कि पूरी मानव जाति के खिलाफ हैं।' उसके बाद, एलएसडी ने लोगों को डॉ. बत्रा को रिहा करने का आदेश दिया। उन्हें राहत मिली लेकिन जल्द ही उन्हें दूसरे
छोटे कमरे

में ले जाया गया। लोगों ने उसे रस्सियों से बांध दिया और उसका मुंह बंद कर दिया। उन्होंने उसे एक हैच के सामने एक सीट पर बिठाया। डॉ. बत्रा ने उनसे हाथापाई करने की कोशिश की। वे जो करने की योजना बना रहे थे उसकी दहशत से उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। वे लोग बाहर निकले और वायुरोधी दरवाज़ा बंद कर दिया। कमरे में, समुद्र के किनारे का दरवाज़ा खुला और उसे पानी में छोड़ने के लिए सीट खोली गई। बंधे हुए और वजनदार, डॉ. बत्रा वहां से गुजरे

Machine Translated by Google

खोखला शाफ्ट बंदूक की गोली की तरह हैच दरवाजे से जुड़ा और कुछ ही समय में समुद्र के तल में डूब गया। काम पूरा होने के बाद, हैच को फिर से बंद कर दिया गया।

श्रीमती बत्रा की आँखों में आँसू थे क्योंकि उनके हाथ ने उनका मुँह दबा दिया था पृथ्वी चुप रही और उसे शोक मनाने का समय दिया।

गिनी पिग प्राप्त करने के बाद, एलएसडी और परिमल वापस चले गए गलियारा. एलएसडी ने गिनी पिग को अपने पास रखा।

'डॉ बत्रा ने कहा कि रिहा होने पर वह कहां जाना चाहते हैं?' परिमल ने पूछा.

एलएसडी उस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थी और इसलिए उसने खाली चेहरे से परिमल की ओर देखा। परिमल ने अपने सवाल को दोबारा दोहराया और पूछा, 'मेरा मतलब है, उन लोगों ने डॉ. बत्रा को कहां छोड़ा था?' 'मुझें नहीं पता। मैंने नहीं पूछा।' ऐसा

कहने के साथ, एलएसडी ने गिनी पिग को

सहलाना शुरू कर दिया, उसे प्यार से सहलाना शुरू कर दिया मुस्कुराओ और फिर से रास्ता दिखाओ। एक बार फिर, वे प्रतिबंधित कक्ष में प्रवेश कर गए जहाँ शुक्राचार्य मृत संजीवनी में निर्धारित प्रक्रिया पूरी कर रहे थे। जैसे ही वे अंदर आये, शुक्राचार्य ने एलएसडी के हाथों से गिनी पिग ले लिया और उसे नागेंद्र के सिर रहित शरीर पर रख दिया। उसने चीख़ते हुए छोटे जानवर को दबाया और उसकी हड्डियों के चटकने की आवाज़ दबाव वाले कमरे में गूँज उठी। गिनी पिग के खून की बूंदें नागेंद्र की कटी हुई गर्दन पर गिरीं और तुरंत अवशोषित हो गईं। आख़िरकार प्रक्रिया पूरी हुई.

जैसे ही नागेंद्र का सिर और शरीर पुनर्जीवित होने लगा, शुक्राचार्य पीछे खड़े हो गए। एलएसडी और परिमल आश्चर्यचकित रह गए जब उन्होंने अपनी आंखों के सामने सबसे बड़ा चमत्कार होते देखा।

कैलाश पर्वत पर, ओम ने अपनी आँखें खोलीं और खुद को अपनी कुटिया में पाया, अश्वत्थामा उसके पास बैठा था। कृपाचार्य और परशुराम भी अंदर चले आए। अश्वत्थामा उनका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ और दिल की धड़कन में पूछा, 'आप वापस आ गए! तुमने दरवाज़ा खोलने का प्रबंधन कैसे किया?'

'हमें ऐसा नहीं करना पड़ा; अब हमें अंदर रखने के लिए कोई दरवाज़ा नहीं था,'परशुराम ने समझाया।

'लेकिन वह कैसे हो सकता है?'

प्रतिक्रियास्वरूप ओम दूर की ओर दृष्टि करके उठ बैठा। 'ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे याद है अब सब कुछ. अब मेरे और मेरे छुपे हुए अतीत के बीच कोई बाधा नहीं है। मुझे याद है कि मैं कौन हूं।' 'आप कौन हैं?' कृपाचार्य ने पूछा.

ओम ने आँखें बंद कर लीं और गहरी साँस ली। 'मैं देवध्वज हूं।'

Machine Translated by Google

'लेकिन । . . ऐसा नहीं हो सकता! हम जाँच की। आपके पास जन्मचिह्न नहीं है!' अश्वत्थामा ने नए रहस्योद्घाटन के इर्द-गिर्द अपना सिर लपेटने की कोशिश करते हुए कहा।

पनडुब्बी के निषिद्ध कक्ष में, एलएसडी ने नागेंद्र के शरीर में फिर से हलचल देखी। अब अमर, वह धीरे-धीरे जीवन में वापस आ रहा था, उसका कमजोर, झुर्रियों वाला शरीर उनके सामने रूपांतरित हो रहा था। उसकी रीढ़ सीधी हो गई और चेहरे से झुर्रियाँ गायब हो गईं। जब युवा नागेंद्र की आंखों में गुस्सा झलक रहा था तो दोनों आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे।

'वापस स्वागत है, देवध्वज,' शुक्राचार्य ने गर्व के साथ घोषणा की, जब एलएसडी और परिमल ने नागेंद्र के बाएं पैर की एड़ी पर काला जन्मचिह्न देखा।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

* संस्कृत साहित्य में एक नियम या सूत्र या व्याकरण पर इनका एक सेट
हिंदू कानून और दर्शन

† अनुष्ठानों के संबंध में एक गूढ़ सिद्धांत , अनुशासन और ध्यान की रचना की गई
और शक्ति के बीच संवाद के रूप में

* स्वयं प्रकट

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

* – चंद्र राजवंश
* – सौर राजवंश †
– अग्नि के वैदिक देवता

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

* पवित्र अग्नि में पवित्र आहुति देने का स्थान।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

*
– पुजारी
*
– उत्तर-पूर्व का कोना, जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं।
*
– इच्छा प्रदान
*
– चिकित्सक

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

* वरिष्ठ प्रभाग

† भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

प्रतीक

जो सबसे छोटा प्रतीत होता है वह सबसे शक्तिशाली टुकड़ा हो सकता है।

युगों का अंतहीन ब्रह्मांडीय चक्र सत्य युग से शुरू होकर, त्रेता और द्वापर युग से होते हुए कलियुग पर समाप्त होता है और सत्य युग से फिर से शुरू होता है।

अतुल्य भारत में एक रहस्यमय खोज!
आगे क्या!

सात में से पाँच अमर मिले। अन्य (राजा महाबली और विभीषण) कहाँ हैं?

Machine Translated by Google

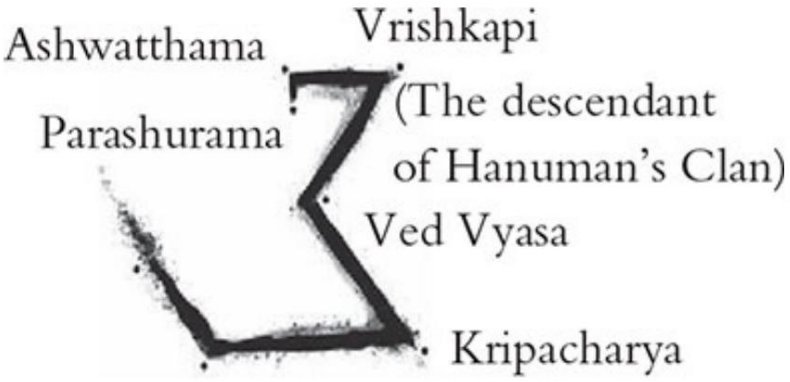

सभी युगों की कालातीत यात्रा में खोया हुआ, ओम कौन है?

क्या अमर लोगों के लिए भी समय ख़त्म हो सकता है? क्या वे समय के विरुद्ध दौड़ जीतेंगे?

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

स्वीकृतियाँ

वे कहते हैं, किताब लिखने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। लोग यह नहीं जानते कि एक लेखक की छाया बनने के लिए अविश्वसनीय मात्रा में धैर्य की आवश्यकता होती है।
संपादकों, प्रूफ़रीडर्स और प्रकाशकों के साथ समन्वय करना, कार्यभार को संतुलित करना, समयबद्धता का मिलान करना और रास्ते में धैर्य खोने पर लेखक की निराशा को सहन करना। बाकियों का ख्याल रखने के लिए धन्यवाद साशाने, ताकि मैं लिख सकूं; तुम मेरी चमकती छाया रही हो.

टूटना, आगे बढ़ना और फिर छब्बीस साल बाद अपनी जड़ों, अपने लोगों, अपने वंश और अपने भाइयों के साथ फिर से जुड़ना। मैंने सोचा कि यह सच होने के लिए बहुत अच्छा था, कल्पना के काम की तरह, वास्तविकता से बहुत दूर। मुझे लगता था कि यह केवल कहानियों में ही घटित होता है, जब तक यह मेरे साथ घटित नहीं हुआ।

पहले अपने सभी भाइयों के साथ औपचारिक मुस्कुराहट के साथ फिर से मिलने का, उसके बाद हँसी के आँसुओं से सराबोर पेय पीने का मेरा सपना सच हो गया। छब्बीस साल बाद हमारा पुनर्मिलन हुआ।

नाम से सौरभ गुप्ता, फिर भी मैं उन्हें मनु भैया कहना पसंद करता हूं, मेरे (हमउम्र), जिनके साथ मैंने अपना मासूम बचपन साझा किया।

अंकित और रोमी, हमारे पहले भाई-बहन, हमारी पहली ज़िम्मेदारी।

हालाँकि मुझे संकल्प और सलिल का उल्लेख करना चाहिए, सावन और हनी परिवार और भाइयों की तरह लगते हैं। मीठी, इकलौती बहन और हम सब में सबसे छोटी।

क्या मुझे निशांत गुप्ता और अविनाश गुप्ता को धन्यवाद देना चाहिए, जो हमें लेकर आए सभी एक साथ? नहीं! हम भाई उन्हें मिक्की भैया और अंकित कहते हैं.

बिना शर्त स्वीकृति और फिर से वही बचपन की गर्मजोशी और हँसी के लिए धन्यवाद।

बड़े भैया, ये हम सबकी तरफ से श्रद्धांजलि है. आप हमारे बीच हमारे बीच रहेंगे दिल और यादें जब तक हम अगली दुनिया में दोबारा नहीं मिलते। शांति से आराम करो, भैया।

शर्मा साहिल, आप मेरे शो के पर्दे के पीछे के आदमी हैं। मुझसे उम्र में छोटी, फिर भी बिना ज्यादा कुछ कहे, तुम अपने कामों से मुझे बहुत कुछ सिखा देती हो। मैं आपकी सराहना करता हूं, मेरे मूक साथी।

Machine Translated by Google

वर्तमान में एक सलाहकार और मेरी पुस्तक की एक ईमानदार पहली समीक्षक, वह एक सेवानिवृत्त मेजर, पेशे से पैराग्लाइडर, दिल से यात्री और एक खूबसूरत आत्मा हैं। आवाज नोट रानी! परांशु, आपने इसे परफेक्ट बनाया और मुझे दिखाया कि पाठक इस हिस्से को कैसे देखेंगे। मैं आपके साथ और अधिक काम करना चाहता हूं.

इसमें आपके द्वारा किए गए प्रयास को कभी नहीं भुलाया जाएगा।

शिखा मैडम, एक सफल आदमी पर भरोसा करना और विश्वास दिखाना आसान है। मैं जब तुमने मुझ पर प्रयास किए बिना और मुझे परखे बिना मुझ पर भरोसा किया तो तुम कुछ भी नहीं थे। मैं हमेशा आपका कर्जदार हूं और आपके साथ खड़ा रहना चाहता हूं और अंत तक आपके साथ चलना चाहता हूं।

मुझे अपनी दुनिया में आने देने के लिए धन्यवाद, प्रियांशु चोपड़ा और विकास हसीजा। जब संदेह और भ्रम उत्पन्न होता है, तो मैं आपके समर्थन के लिए आभारी हूं। यह जानकर तसल्ली हुई कि काम के दौरान हमने जो सम्मान और हँसी-मजाक किया, उसके कारण आप दोनों हमेशा मेरे साथ रहेंगे। उतार-चढ़ाव ने हमें मजबूत बनाया है और हम एक साथ मिलकर और अधिक चीजों को संभाल सकते हैं।

आप दोनों को प्यार।

एक दोषरहित लेखन रचना तैयार करने में बहुत मेहनत लगती है। रवि, श्रेया और सलोनी, इसे संभव बनाने के लिए आपने जो कुछ भी किया है, मैं उसकी सराहना करता हूं।

इसे संभव बनाने के लिए धन्यवाद.

सफलता का चेहरा भले ही एक ही हो, लेकिन वह कई कंधों पर टिकी होती है दुनिया को देखने के लिए. इस मामले में मेरे साथ चलने वाले कई कंधे हैं। मैं आप सभी को मिली एश्वर्या से मिलवाना चाहता हूं। महोदया, मुझे हमेशा मुस्कुराहट के साथ सहन करने के लिए धन्यवाद। वहां मौजूद रहने और मेरे सपनों की नींव को मजबूत बनाए रखने के लिए धन्यवाद।

हरीश शेनॉय, आपको करीब से जानना सुखद अनुभव है। तुम मेरे लिए खास हो।

विजेश कुमार, संगठन के पहले व्यक्तियों में से एक जिन्होंने पहचान की मेरी क्षमता और मुझ पर विश्वास दिखाया।

मैं आपके रात्रि भोज का ऋणी हूँ, समीर महाले, और मैं इसके लिए सदैव आभारी हूँ बिना शर्त समर्थन.

गोपाल जी, पिनाची दा, अनुज शर्मा, आशीष जी, संजय जी, रंजन जी, अंकित जी, मोलश्री, रिन्जिनी और राघवेंद्र जी, आप सभी इस उड़ान के पंख हैं।

इतने प्यार के लिए और इसे इतनी ऊंची उड़ान भरने के लिए धन्यवाद। इन सभी कंधों को मिलाकर 'टीम पेंगुइन' कहा जाता है.

मुझे नहीं पता कि तुम मेरे लिए यह सब क्यों करते हो क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हें कुछ नहीं मिलता। संदीप पाटिल, मेरी यात्रा में सबसे निस्वार्थ। एक बड़ा भाई घर से दूर.

Machine Translated by Google

समय और विश्वास दो सबसे कीमती चीज़ें हैं जो आप किसी को दे सकते हैं। श्रीमती दिव्या खोसला कुमार, मुझे दोनों उपहार देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनी और मेरे दृष्टिकोण पर विश्वास करना चुना। मुझे अपने साथ काम करने की अनुमति देने के लिए मैं तहे दिल से आपका आभारी हूं।

पर्ल, आप सबसे पवित्र आत्माओं में से एक हैं, एक स्व-निर्मित प्रतीक, एक सच्चे सज्जन व्यक्ति हैं और वास्तविक जीवन में बिल्कुल भी अभिनेता नहीं। आपको आशीर्वाद और प्यार, भाई। आपकी सफलता की कामना करता हूं, चाहे कुछ भी हो मैं हमेशा आपके लिए मौजूद रहूंगा।

मोल, तुम एक तरफ से दौड़ते हुए आए और दूसरी तरफ से उड़ गए, मैं आपका आभारी हूं आप। आपका भविष्य बहुत उज्ज्वल है, आपको शुभकामनाएँ।

रसेल भाई! मुझे क्या कहना चाहिए? खामोशी को मुस्कुराहट के साथ अपना काम करने दो। प्यार आप, भाई, मुझे हमेशा अपने दिल और दिमाग में रखने के लिए।

कुछ चीज़ें कभी नहीं बदलतीं, यह एक पुरानी कहावत है। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हूं जो कभी नहीं मेरे लिए बदल गया. उस समय ऐसी सीट पर होने के बावजूद, आपने हर चीज में मुझ पर भरोसा किया और अभी भी कुछ नहीं बदला है। यह बताता है कि आप कौन हैं. हर्षिल शाह, मेरा समर्थन करने के लिए धन्यवाद।

मेरा मानना है कि जॉर्ज और नीरज जी, आपने इस कवर में अपने दिल का एक टुकड़ा निवेश किया है। इसे जीवंत बनाने के लिए धन्यवाद, मेरे महान डिजाइन प्रतिभाओं।

मनीषा और सौम्या... मुझे ख़ुशी है कि हमारे रास्ते एक हो गए। मेरे साथ हंसने और रोने के लिए धन्यवाद।

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

शुरुआत

आइए बातचीत शुरू करें...

पेंगुइन Twitter.com@penguinbooks को फ़ॉलो करें हमारी

सभी कहानियों YouTube.com/penguinbooks से अपडेट रहें

'पेंगुइन बुक्स' को अपने Pinterest पर पिन करें

Facebook.com/penguinbooks पर 'पेंगुइन बुक्स' को लाइक करें

लेखक के बारे में अधिक जानें और Penguin.co.in

पर इस तरह की और कहानियाँ खोजें

OceanofPDF.com

Machine Translated by Google

ईबरी प्रेस

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यूजीलैंड | भारत | दक्षिण अफ़्रीका | चीन

एबरी प्रेस पेंगुइन रैंडम हाउस समूह की कंपनियों का हिस्सा है जिनके पते ग्लोबल.पेंगुइनरैंडमहाउस.कॉम पर पाए जा सकते हैं।

यह संग्रह 2022 में प्रकाशित हुआ

कॉपीराइट © धोनी एंटरटेनमेंट प्रा. लिमिटेड 2022

लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है

जैकेट छवियाँ ©नीरज नाथ

यह डिजिटल संस्करण 2022 में प्रकाशित हुआ।

ई-आईएसबीएन: 978-9-354-92671-6

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे व्यापार के माध्यम से या अन्यथा, प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना बाइंडिंग या कवर के अलावा किसी अन्य रूप में उधार नहीं दिया जाएगा, दोबारा बेचा नहीं जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या प्रसारित नहीं किया जाएगा। प्रकाशित किया गया और ऐसी ही किसी शर्त के बिना, जिसमें यह शर्त बाद के क्रेता पर थोपी जाएगी।

OceanofPDF.com